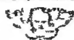
बीजापुरना शा मूलचंदभाइ सरूपचंदना पुन्यार्थे



मुनिमहाराज श्री हुकममुनिजी कृत

आत्मज्ञान ग्रंथमाला

भाग २ जो.

(ज्ञान भूषण.)

छपावी प्रसिद्ध करनार,
शा. सुरचंदभाइ स्वरुपचंद.
बिजापुर निवासी.

आवृत्ति २ जी.   नकल ५००

संवत १९७४   सने १९१८

अमदावाद
धी 'जैन विद्याविजय' प्रीन्टिंग प्रेसमां
शा. चुनीलाल अमथाभाइए छाप्यो.

किंमत वांचन अने मनन

ग्रंथ मळवानुं ठेकाणुं,

शा. झवेरभाइ भगवानदास.

मु. फलोधी (मारवाड.)



" महात्मा श्री हुक्म मुनी महाराज "

॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥

॥ ज्ञान भूषण ग्रन्थ. ॥

॥ पिठीका. ॥

॥ दुहो. ॥

वन्दुसिद्ध अवगाहना । आत्म स्वरुपास्ति
ज्ञान भूषण ग्रन्थ एह । करुं शुद्ध प्रणति ॥१॥

भूषण एटले आभूषण के जे वडे आत्मा शोभायमान छे, ज्ञानस्वरुप आत्मा अने जाणपणारुप ज्ञान, ते रुप आभूषण पहेरवाथी शोभायमान दखाय छे ते ज्ञान केवुं छे तेनुं महात्म कहिये छिये

वृक्षमां जेम कल्पवृक्ष, फलदायकमां जेम कामधेनु, घटमां जेम कामघट सर्व फलमां जेम अमृतफल, सर्व औषधोमां जेम पलंक (पुंख), सर्व शंखमां जेम दक्षिणावर्तशंख, रत्नमां जेम मणि-

रत्न, विहंगमां जेम गरुड, मनवंछीतमा जेम चिन्तामणिरत्न, मन्त्रमां जेम नवकारमंत्र, पर्वतमां जेम मेरु पर्वत, पर्वमां जेम पर्युषणपर्व, नदीमा जेम सीता सीतोदा, वर्षधरमां जेम निषध, नीख समुद्रमा जेम क्षीर समुद्र, सुखमां जेम संतोष, सतिमा जेम ब्राह्मिसुदरी, धैर्यवानमां जेम आदित जशा, देवमा जेम अरिहन्त, साधुमां जेम निर्ग्रंथ, धर्मपदमां जेम मुक्ति, तीर्थमां जेम शत्रुंजय, पुण्यमा जेम पुण्यानुबन्धी पुण्य, शास्त्रमा जेम उत्तम सूत्र, ध्यानमां जेम धर्मध्यान, शुक्ल ध्यान, ग्रहमा जेम चन्द्र, गजमां जेम ऐरावत, चोपदमा जेम सिंह, तेजमा जेम दिनकर, फूलमा जेम पुन्डरीक कमल, मेघमा जेम पुष्करावर्त मेघ, देवमां जेम इन्द्र, तेम सर्वज्ञानमा द्रव्यानुयोग, स्वअनुभव (अध्यात्म) स्वरुपनुं रमण करवु, स्वघरमा रहे तेवो जगत्रयमां बीजो पदार्थ देखातो नथी. कारण के अनेक शास्त्रनु ज्ञान छे ते परानुयायि होवाथी भवभ्रमण वधे अने संसार छुटे नही, अने मुक्ति वेगली रहे माटे तेने ज्ञान कहेता नथी परानूयायि रुप जाणपणाने पण

ज्ञान कहेवाय छे तेनो खुलासो आगळ आवशे अने स्वअनुयायिरुप ज्ञानथी संसार समुद्र्नो पार पामे, भवभ्रमण मटे, अनन्त सुखनो भोगी थाय. पण तेवुं ज्ञान क्यारे मळे के सद्गुरुनो योग मळे ते विना तेवा ज्ञाननी प्राप्ति न थाय, कारण गुरु केवा छे के आ संसारने विषे मुक्तिना दातार, संसारथी छोडावनार राग द्वेष मोहथी छोडावनार, जन्मजरा मरणनां दुःखथी छोडावनार, प्रत्यक्ष देव रुप साक्षात सूर्य सरिखा ज्ञान गुणे भरेला, निज परना जाण एवा जे गुरु दातार छे, ते गुरुने सेवो, जो पोताना आत्मानुं हित वाञ्छो तो एवा सद्गुरुनी सेवा करो, पण भेख देखीने भुला ना पडो. बहुश्रुत विना बीजाने सद्गुरु जाणवा नही. जे एवा सद्गुरु छे, ते पोते तरे छे अने बीजाने तारे छे, ते गुरु शुं शुं उपकार करे ? ते कहे छे, माठी बुद्धि तेनो नाश करे, अने भली बुद्धिनी प्राप्ति करे, कुगति जे नरक, तिर्यचादि गतिमां पडताने हाथ झाली पाछो लावीने स्वर्गादि गतिने विषे मोकले, पाप पुण्यनी ओळखाण करावे, करवा योग्य अने नहि करवा योग्य

पदार्थ ते यन्नेनु स्वरुप सद्गुरु बतावे, (जकवा) खावा योग्य अथवा नहि खावा योग्य, अथवा पीवा योग्य अथवा न पीवा योग्य, धर्म अथवा अधर्म, इत्यादि पदार्थना जणावनारा सद्गुरु छे, ते आ भवरुपी समुद्रने विशे जहाज समान जाणवा, वली सद्गुरु केवा छे के ससारमा माता, पिता, भ्राता, भगिनी, पुत्र, कलत्र, स्वजन, सबन्धी चतुरङ्गी सैन्य, राजपाट, इत्यादि ए सर्व छे ते नर्कना कुतुहल छे अर्थात् ते नर्के लइ जवाना हेतु छे, पण आपणने कोइ नर्के लइ जतां राखे तेवा नथी, एक सद्गुरु प्रकट धर्म अधर्म देखाडी अधर्मने छोडावी धर्म मार्गे प्रवर्तावी मोक्ष नगरे पहोंचाडे, ते विना कोइ आ ससारने विशे देखातो नथी, वळी गुरु केवा छे के सर्व ध्याननुं ध्यान तेज गुरु छे, एटले ध्यान कर्ये ते शु थाय, तेथी पण गुरु अधिक छे तथा विषय त्याग करवाथी पण शु थाय, ए सर्वेथी एक गुरुसेवा करे तेने अधिक फल थाय, माटे पूर्ण भाव राखी एक सद्गुरुनी सेवा करवी, इन्द्रियो जीते तो पण लेखामा नथी, ए सर्वनी प्राप्ति एक सद्गुरुनी

सेवाथी छे, सर्व भवनो नाश कर्ता गुरु छे, आ शासनने विशे वाकेफ करनार पण गुरु छे अने गुरुनो विनय करवाथी आत्मा स्वेत (उज्वल) थाय, अने सर्व अर्थनी सिद्धि थाय माटे हे भव्य-जीवो ! सद्गुरुने सेवो अने कुगुरुनो पक्ष तजो, श्री भगवतीजी, उपासक दशाङ्ग प्रमुख सिद्धान्तमां कुगुरु कह्या छे तेनी ओलखाण आचाराङ्ग प्रमुख सिद्धान्तने विशे खुलासो छे, तथा आवश्यक निर्युक्ति, आवश्यकनी ब्रहद्वृत्तीमां छे माटे कुगुरुनो पक्ष तजवो, अने सुगुरुनी सेवा करवी, सुगुरुथी ज्ञान स्वरुप पामशो ॥ उक्तंच)

॥ वंशस्थवृत्तम्. ॥

अवद्यमुक्ते पथि य प्रवर्त्तते ।
प्रवर्तयत्यन्यजनंच निस्पृह. ॥
स एव सेव्य. स्वहितैपिणा गुरु ।
स्वयं तरस्तारयितुं क्षम' परम् ॥ १ ॥

॥ मालिनी वृत्तम्. ॥

विदलयति कुबोधं बोधयत्यागमार्थ,
सुगतिकुगतिमार्गौ पुण्यपापे व्यनक्ति ॥

अवगमयति कृत्याकृत्यभेदं गुरुर्यो,
भवजलनिधिपोतस्तं विना नास्ति कश्चित् ॥१॥

॥ शिखरिणी वृत्तम्. ॥

पिता माता भ्राता प्रियसहचरी सूनुनिवहः,
सुहृत्स्वामी माद्यत्करिभटरथाश्व परिकर ॥
निमज्जंत जतु नरककुहरे रक्षितुमल,
गुरोधर्माऽधर्म्मप्रकटनपरात्कोऽपि न पर ॥३॥

॥ शार्दूलविक्रीडित वृत्तम्. ॥

किंध्यानेनभवत्वशेपविपयत्यागैस्तपोभि कृतं,
पूर्णभावनयाऽलमिंद्रियदमै पर्याप्तमाप्तागमै ॥
किंत्वेकंभवनाशनकुरुगुरुप्रीत्यागुरो शासन,
सर्वयेनविनाविनाथनलवत्स्वार्थायनाऽलंगुणा
॥ ४ ॥



॥ अथ श्री ज्ञान भूषण. ॥

॥ ग्रन्थ प्रारभ्यते. ॥

ज्ञानज भणीए ज्ञानज सुणीए,
ज्ञानमां काल ते काढो रे ॥
ते विना काल ते फोकट दाख्यो,
भव जंजाल ते वाधो रे, ज्ञान पद सेवो रे॥
ज्ञान विना तरे नही कोय, ज्ञान गुण मेवो रे ॥१॥
(ए आंकणी)

हे ! भव्यजीवो ज्ञान कहेतां जे आत्मस्वरुपनुं जाणपणुं ते निश्चयज्ञान छे अने बीजुं रह्युं ते व्यवहार ज्ञान कहेवाय अध्यात्म ज्ञान तथा द्रव्यानुंयोग (षड्द्रव्यनो विचार) ते व्यवहारज्ञान; अने (अने अध्यात्म) आत्मस्वरुपनो विचार अभेदपणे ते निश्चयज्ञान. ते ज्ञानने भणवुं ते ज्ञाननो एक अक्षर भणे तो अनन्त कर्मनी राशि निर्जरे अथवा कोइने

भणावे तोपण अनन्त कर्म राशिनी निर्जरा करे, माटे ज्ञाननु भणवुं ते आत्माने मुक्तिनो दातार छे, तथा ज्ञाननु सुणवु तेथी पण अनन्त कर्म निर्जरे, माटे ज्ञानने भणवु तथा ज्ञानने सुणवुं कारण के अज्ञान माणस एक क्रोम उपवास करी ने जेटला कर्म नार्कीनां निर्जरे, तेटला कर्म ज्ञानी एक स्वास नीचो लइने उचो मुके तेटलामां नीर्जरे, एवुं श्री वीर परमात्माए विवाह पन्नत्ति (विवाह प्रज्ञप्ति) मा कह्युं छे, तेथी (अहोनिश) दिवस तथा रात्रिनो काल ज्ञानना रमणतामा कहाडवो, पण ज्ञान विना जे टलु बीजुं कार्य करु ते सर्वे प्रमादभावमां छे तेथी ज्ञान विना फोगट काल खोवो नही, कारण के आर्य क्षेत्र, मनुष्यनो भव, पाच इन्द्रि संपूर्ण, निरोगी शरीर, श्री जिनराजनो धर्म, सद्गुरुनो उपदेश, एवी जोगवाइ फरीफरीने मले नही, अने शुभाशुभ कारण कार्य तो अनन्तवार कर्या, अने सुख दुःख आ जीवे अनन्तवार भोगव्यु, अने व्यवहार चारित्र, व्रत, पच्चखाण, तप, जप, आ जीवे अनन्तवार कर्या कारण के चारे, गति मा जीव अनन्तवार उपजी चुक्यो

" अनंत खुत्तो जीवाणं. "

एवो पाठ सिद्धान्तमां पण छे, तो कांई आत्मानुं कार्य थयुं नहीं माटे ज्ञानमां ज काल काढवो पण फोकट काल खोवो नहीं, केमके शुभाशुभ करणीथी संसार वधे पण कंई संसार घटे नहीं, माटे गत्यागति वधवाथी आत्मानुं अहित थाय छे, तेथी शुभाशुभनो पक्ष छोडीने एक ज्ञान पक्षने अङ्गिकार करो हवे "ज्ञान विना तरे नहीं कोई" एटले क्रिया, जप, तप, अनेक विध बाह्यनां कारण छे, पण तेथी मुक्ति थाय नहि अने आज दिन सुधी एकत्वथी कोई जीव मोक्ष गयो नथी अने जतो पण नथी अने जशे नहि माटे ज्ञान विना कोई जीव तरे नहीं, कारण के मुक्तिनां द्रव्यलीङ्ग पन्दर कह्यां छे, परन्तु भावलीङ्ग विचारीने जोइए तो एकज देखाय छे, कारण के साधु, गृहस्थ तथा अन्यमती ज्ञानस्वरुपना विशे स्थिर भाव थाय, त्यारे राग द्वेषनो नाश थाय, अने मोहनो नाश थाय त्यारे वितराग पद पामे

छे, त्यारपछी अभेद ज्ञान थाय छे,त्यारे अरि हन्त पद पामे छे, अने सर्व योगनो रोध कर अने मननी चराचर सर्व मटे अने शैलेषि करण थाय त्यारे सिद्ध पद पामे, माटे ज्यां सुधी मन वचन, कायानो व्यापार छूटो छे अने मननी च राचर मटी नथी, त्या सुधी तेने अने मुक्तिने छेटु अनन्त योजननु छे, ए अधिकार श्री भग वतीजीथी जाणवो, ते कारण माटे ज्ञान रुप मेवो एटले पद, प्रमाण, सप्तभङ्गि, चउभङ्गि, नय निक्षेप, पट्कारक, इत्यादि करीने आत्म स्वरुपनु विचारवु ए रुप मेवानो स्वाद क्रोडपूर्वना आयु ष्ये देवे तथा केवली होय ते पण कही शके नही, तो छद्मस्थनो तो शो भार जे कही शके पण जे एनो आनन्द जे हृदयमा प्रगट थाय ते अनुभवनो रस तो छद्मस्थ कयी रीते जाणे, का रण के ते कहेवानु सामर्थ्य नथी पण जाणवानु तेनामा सामर्थ्य छे, जेम घृतनो स्वाद कहेवानु कोइनामा सामर्थ्य नथी पण जाणवानुं सामर्थ्य छे तेम अही अनुभवी ए आनन्दनो रस जाणे छे पण बीजा बाह्यदृष्टिवाळा जाणता नथी, कारण

के तेने बाह्यदृष्टि छे. आत्म स्वरुपनी खबर नथी जेम बावना चन्दन छे ते खर उपर भरिये तो तेने कांई तेना गुणनी माळुम पडे नहि, एतो जे भाग्यवान माणस छे तेने गुणनी खबर पडे छे, तेम बाह्यदृष्टि अनेक शास्त्र भणे छे, वांचे छे, पण तेने कंई तेना रसना स्वादनी खबर नथी फोकट ते बिचारा काय कष्ट करे छे, अही कोई एम कहेशे के तमे महा कठोर वचन बोलो छो तेनो उत्तर के अमे कंइ कठण वचन बोलता नथी, पण पूर्वाचार्य, ग्रन्थोमां एवुं कही गया छे उक्तंच

॥ अनुष्टुपवृत्तम्. ॥ *

वेदानशास्त्रविक्लेशम्, रसमध्यात्म शास्त्रवित्,
भाग्य भृद्भोगमाप्नोति. वहते चन्दनं खरम् ॥१॥

ते कारण माटे ज्ञान रुप जे मेवो महापुष्टिनो करनार छे, जेम संसारना विशे शरदऋतु प्रमुखना मेवाथी शरीरनी पुष्टि घणी थाय छे, तेम अही पूर्वे कह्यो तेवा ज्ञान रुप मेवाथी आत्माने पुष्टि थाय, कारण के संसारना रस

करता अध्यातम रस घणो सुन्दर छे उक्तञ्च

॥ अनुष्टपवृत्तम् ॥ *

अध्यातम शास्त्र हेमाद्रि, मथितादागमोदधे ॥
भूयांसी गुण रत्नानि, प्राप्यन्ते बुद्धे न किं ॥१॥

रसो भोगावधि काम, सद्भक्ष्ये भोजनावधि ॥
अध्यातम शास्त्र सेवाय, रसो निरवधि पुन ॥२॥

अथवा विषय प्रमुख संसारना रस छे ते तुछ रस छे, पण अध्यातम रस महा आनन्दकारी छे, ए रसना तोले बीजो रस कशा लेखामा नथी, ईन्द्र, चन्द्र, नागेन्द्र, चक्रवर्ति प्रमुखना इन्द्रिय जनित सुखनो जे रस ते तुछ छे, अने आ ज्ञान रस ते महा अमृत रस छे, ए रस पाम्या ते फरीथी पम्या नहि अने आ रस आव्यो फरीथी जाय नहि एटले बीजा जे सुख रस छे ते विनाशिक छे, अने आ रस छे ते अविनाशिक छे

शिष्य वाक्य,—

स्वामिन् अध्यातम रस ते शाने कहो छो?

गुरु वाक्य,—

हे महानुभाव ! जे पुरुषनो मोह तथा राग, द्वेष मन्द पड्या होय, अने क्रोधादि त्रण चोकडी गइ होय, अने शुद्ध क्रिया अङ्गिकार करी छे, शुभाशुभ क्रियाने जाणे छे, सदा अन्तर आत्मामां शुभ ज्ञाननी रमणता छे, परभावनो त्यागी छे कृतिम् वस्तु उपर राग नथी, पुण्य-पाप जेने सम भासन् थयुं छे, सदा शुद्ध आत्म-स्वरुपनो उपयोग बे प्रकारे, साकार अने निरा कारथी षट् द्रव्यनुं स्वरुप जाणे, ते मध्ये पांच द्रव्यना स्वरुपने अजीव जाणीने छांडे अने एक आत्मस्वरुपने ज्ञान रुप चेतना जाणीने आदरे एम हेय, ज्ञेय उपादेयनी रीत जाणे, अने छां-डवा योग्य छांडे, अने जाणवा योग्य जाणे, अने आदरवा योग्य आदरे, एम आत्म स्वरुपमां अन्तर भावे रमे, ते शुद्ध क्रिया कहिये अथवा अध्यात्म कहियें. ॥ उक्तंच. ॥

अनुष्टुप्वृत्तम्. *

गतमोहाधिकारणा, मात्मानमधीकृत्यया. ॥

प्रवर्त्ततेक्रियाशुद्धा, तदध्यात्मजगूर्जिना ॥१॥

माटे एवो जे ज्ञान रुप मेवो महा पुष्ट छे, अने महा बलवान छे, माटे हे भव्यजीवो ! प्रमादभावने छांमीने ज्ञान रुप मेवो भक्षवाने अभ्यास करो, अहीं घणा शास्त्रमां एज रीते कहेल छे, पण बधा शास्त्रनी शाक्षि अपाय नहि तेथी अल्प श्लोक मुकेला छे, पण विचारीने जोशो तो सर्व शास्त्रमा एज वस्तु सिद्ध छे, माटे सद्गुरु मुखे शास्त्र समजीने ए अर्थ विचारशो तो तमने (समजाशे) घणो फायदो थशे

गाथा ॥ २ ॥

स्वधर्मग्राहिनिश्चेभाख्यो, परधर्मग्राहीव्यवहारो रे॥
तेकारणज्ञानमारमिये, शुद्धनिश्चेनयधारो रे ॥
ज्ञान० ज्ञान विना० ॥२॥

अर्थ –विशेषावश्यक ग्रन्थमा निश्चय तथा व्यवहार नयनु स्वरुप कह्यु छे तेमां तत्वार्थग्राही निश्चय नय छे, अने लोकाभिमतार्थग्राही व्यवहार नय छे, अने तत्वार्थ युक्ति ते निश्चयसिद्ध

अर्थ, अने लोकाभिमत ते व्यवहार प्रसिद्ध, यद्यपि प्रमाण तत्वार्थग्राही छे तो पण प्रमाणाश्रयि तत्वार्थग्राही निश्चयनये कह्यो छे, पण तेमां एक देशे तत्वार्थग्राही वचन व्यवहार अभेद छे, निश्चय नयने विशेज छे, अने व्यवहार नयनो विषय एकलो अनुभवीए तो सिद्ध भिन्न छे, ते तो नभ कुसुमवत् थाय छे, हवे निश्चय तथा व्यवहारने उलखवा माटे नयनो विचार संक्षेपथी कहे छे

अनन्त धर्मात्मक वस्तु छे, ते पदार्थ ज्ञान अने ज्ञानने विशे ज्ञाननो अंष छे, ते समजवा माटे नयनुं लक्षण कहे छे, एटले जीवादि पदार्थमां अनन्त धर्म रह्यां छे, तेनो एक धर्म गवेषवो,[1] अने अन्नत धर्मनो उछेद[2] नहि, अने ग्रहण पण नहि, एवो धर्मनो भेद करवो तेने नय कहे छे ते नयना विस्तारथी अनेक भेद छे पण (समास) संक्षेपथी बे भेद छे, एक द्रव्यार्थिक अने बीजो पर्यायार्थिक,

[१] सावीत मानवो [ग्रहण करवो].

[२] गौण तरीके श्रद्धामा कायम न राखे तो उच्छेद थाय, [एटले नाश करवो.]

त्या रत्नाकर अवतारिकाथी लखिये छिये

॥ द्रवति गछति तास्तान् सद्भाव पर्याया निति द्रव्यम् ॥

तदेवार्थ सुचक विशय छे जेनो ते निश्चय द्रव्यार्थिक, जे वर्त्तमान पर्याय द्रव्य छे, आगामि काले द्रव्य होशे, अतीतकाले द्रव्य हतो ते द्रव्य अने तेज अर्थनु प्रयोजन ते द्रव्यार्थ, अने पदार्थ एटले "पयार्य जन्य ज द्रव्य," तेथी द्रव्यने ज द्रव्य पर्याय मय एटले उत्पाद् विनाश अने ध्रुव रुप कह्यो छे, अने पर्याय ते —

" उत्पाद् विनाशो प्रापनोति, इति एव अर्थस्य अस्ति यस्य पर्याय सपर्यायार्थिकम् "

(परी) नय निक्षेपने पामे, एटले उपजवा विनसवानो अर्थ, तेज अर्थ प्रयोजन ते पर्यायार्थिक, त्या धर्मने द्रव्य तथा पर्याय कह्यो अही कोई पुछे के त्रीजो गुणार्थिक केहेता केम नथी ? त्या वली रत्नाकरात्रतारिकामां कह्यु छे के —

॥ गुणस्य पर्याये एवांतरभूतत्वात्, तेन पर्यायार्थिके नैव तत् संग्रहात् ॥

जे गुण ते पर्यायने विशे अन्तरभूत छे, ते पर्यायार्थिक मध्ये संग्रह्यो छे, ते पयार्यना बे भेद, एक सहभावी अने बीजो कर्म भावी, तेमां सहभावी ते गुण छे, ते पर्यायने विशे अन्तर्भूत छे, त्यां द्रव्य पर्यायथी व्यतिरक्त सामान्य अने विशेप एम बे धर्म छे, माटे सामान्य अने विशेप बे नय वत्ता केम कहेता नथी एम पुछे तेनो उत्तर।

॥ द्रव्य पर्यायभ्यां व्यतिरिक्तयो· सामान्य विशेपयोरप्रसिद्धे तथाहि द्विप्रकारं सामान्यमुक्त मूर्ध्वता सामान्यं तिर्यग्सामान्यंच तत्रोर्ध्व सामान्यं द्रव्यमेव तिर्यग्सामान्यं तु प्रतिव्यक्ति सदृश परिणाम लक्षणं व्यंजन पर्याय एव ॥

ए पाठथी उर्ध्व सामान्य ते द्रव्यनो धर्म छे, अने तिर्यक् सामान्य ते पर्याय धर्म छे.

॥ विशेपोपि वैसादृश्य विवर्तलक्षणं पर्याय एवांतर्भवति नैताभ्यामधिक नयावकाश ॥

विशेपपणे अनेक रीते वर्तवानो लक्षण छे ते पर्यायने विशे अतर्भाव छे ते माटे भिन्न नयनो अवकाश नथी ए बे नय मध्येज अंतर्भाव छे ते द्रव्यार्थिकना चार भेद. नैगम १, संग्रह २, व्यवहार ३, रुजुसुत्र. ४, तथा शब्द (१) समभिरुढ (२) अने एवम्भुत (३) ए त्रण भेद पर्याया र्थिक नयना छे, विकल्पान्तरे रुजुसूत्रने पर्याया र्थिकमा पण कह्यो छे

नैगम नय

॥न एक गमा आशय विशेपा यस्य स नैगम ॥

नथी एक गमो अभिप्राय जेनो ते नैगम नय एटले तेना अनेक आशय छे

तथाच —

॥ अनेके गमा सकल्पारोपांशाश्रयाद्या यत्र स नैगम ॥

ज्या अनेक नामादि गमा अहवाय तथा सकल्पे, आरोपे अने अशे पण वस्तुने माने ते नैगम नय तेना त्रण भेद आरोप, अंश, अने

संकल्प वली विशेषावश्यकने विशे उपचारने जुदो गणवाथी चार भेद कह्या छे तेमां आ रोपना चार भेद, द्रव्यारोप. (१) गुणारोप (२) कालारोप (३) कारणाद्यारोप. (४)

॥पंचास्तिकाय वर्तनागुणस्य कालस्य द्रव्य कथनं एतद्गुणे द्रव्यारोप. ॥

गुणादिकने विशे द्रव्यारोप–जेम वर्त्तमान पर्याय ते पंचास्तिकायने विशे परिणमन धर्म छे, तेने कालद्रव्य कहेवो एटले " काल " कहीने बोलाववो ते भिन्न पिण्डरुप द्रव्य नथी तो पण द्रव्य कह्यो ते द्रव्यनो आरोप कर्यो

॥ज्ञानमेवात्माः अत्र द्रव्ये गुणारोप. ॥२॥

द्रव्यने विशे गुणनो आरोप करवो ते गुणारोप, जेम ज्ञान गुण छे पण ज्ञान तेज आत्मा एम ज्ञानने " आत्मा " कहवो इत्यादिमां गुणनो आरोप कर्यो

" वर्त्तमान काले अतीत कालारोप. "

" वर्तमान काले अनागतकालारोप "

" एवं अतीतानागतेपि ज्ञेय "

कालारोप एटले कालनो आरोप करवो ते. जेम श्री महावीरस्वामीनु निर्वाण थये घणो काल थयो, पण आज लोक दीवालीने दीने निर्वाण कहे छे ते अतीत कालनो वर्त्तमान काले आरोप कर्यो वली आज श्री पद्मनाभ प्रभुनु निर्वाण छे आ वाक्यमां वर्तमानने विशे अनागत कालनो आरोपण छे, एम वर्तमानना बे भेद थया, तेवीज रीते अतीतना बे भेद तथा अनागतना बे भेद ए सर्व मलीने छ भेद थया

" कारणे कार्याद्यारोप "

कारणने विशे कार्यनो आरोप करवो ते कारणाद्यारोप बाह्य द्रव्य क्रिया ते साध्य साधननी अपेक्षावालाने धर्मनु निमित्त कारण छे तो पण ते " धर्म " करणी कहेवाय छे ते कारणाद्यारोप

श्री तीर्थंकर मोक्षनु कारण छे छतां " तारयाण " एटले तारक कह्या आ बन्ने दृष्टान्तमां कारणने विशेज कर्त्तापणानो (कार्यपणानो)

आरोप छे. ते कारणना च्यार भेद तेनां नाम.– उपादान कारण, निमित्त कारण, असाधारण कारण, अने अपेक्षा कारण एम आरोपना अनेक प्रकार छे

॥ अंशोपि द्विविध भिन्नाभिन्नश्चेत्यादि ॥

अंशना पण बे भेद छे, एक भिन्न, ते जुदो अंश स्कंधादिकनो, बीजो अभिन्नांश ते आत्माना प्रदेश तथा गुणना अविभाग ते.

॥ संकल्पो द्विविध स्वपरिणाम रूपः कार्यान्तर परिणाम रूपश्च ॥

संकल्प नैगमना बे भेद, एक स्वपरिणाम रूप जे वीर्य चेतनानो नवो नवो क्षयोपशम ते अने कार्यान्तरे नवे नवे कार्य नवो नवो उपयोग थाय ते. एम बे भेद थया इत्यादि नैगम नयना भेद जाणवा

संग्रह नय.

॥ सामान्य वस्तु सत्ता संग्राहक संग्रहः ॥

(सामान्ये) मूलसर्व द्रव्य व्यापक नित्य-

त्वादि सत्तापणे रहेला धर्म तेनो जे सग्रह करे ते सग्रह नय,

तथाच —

॥ संगृह्णाति वस्तुसत्तात्मक सामान्य स संग्रह ॥

जे सर्वने संग्रहे, सर्वनु ग्रहण करे, वस्तुनी छतीने सामान्यपणे ग्रहे ते संग्रह तेना बे भेद सामान्य सग्रह १॥ विशेष संग्रह २॥ त्यां सामान्य सग्रहना बे भेद, मूल सामान्य १॥ उत्तर सामान्य २॥ मूल सामान्यना अस्तित्वादि छ भेद छे, तेनां नाम अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, सतत्व -अगुरु लघुत्व, तथा उत्तर सामान्यना बे भेद एक जाती सामान्य १ ॥ बीजो समुदाय सामान्य २॥ गायना समुहमा गोत्वरूप जाति छे तथा घटना समुहमा घटत्वपणु, अने वनस्पतिने विशे वनस्पतिपणु ते जाति सामान्य, अने आंबाना समुहने " आंबवन " कहेवु तथा मनुष्यना समुहने " मनुष्य " कहेवु ते समुदाय सामान्य मूल सामान्य ते अवधिदर्शन तथा केवल दर्शनथी ग्रहाय छे (ग्राह्य छे) अने उत्तर सामान्य

चक्षु दर्शन अने अचक्षु दर्शनथी ग्रहवाय छे. वली संग्रह नयना बे भेद, एक सामान्य संग्रह, अने बीजो विशेष संग्रह. त्यां छ द्रव्यना समुदायने द्रव्य कहेवुं ते सामान्य संग्रह कारण के अही एक वचने सर्वनो ग्रहण थाय तथा जीवने "जीवद्रव्य" कही अजीव द्रव्यथी जूदो भेद पाडवो ते विशेष संग्रह वली विशेषावश्यक ग्रन्थने विशे संग्रहनयना चार भेद कह्या छे (संग्रहणं) एटले एकठो एक वचनमां एक अध्यवशाय उपयोगमां समकाले ग्रहण थाय, सामान्य रूपपणे सर्व वस्तुनो आक्रोडण ग्रहण करवो ते संग्रह अथवा सामान्य रूपपणे सर्व संग्रह करे ते संग्रह अथवा जेथी सर्व भेद सामान्यपणे ग्रहीये ते संग्रह तेना च्यार भेद कहे छे,–(१) संग्रहित संग्रह (२) पिन्डित संग्रह (३) अनुगम संग्रह. (४) व्यतिरेक संग्रह

१. सामान्यपणे व्हेंचण विना ग्रहण थाय एवो उपयोग अथवा वचन अथवा धर्म कोई पण वस्तुने विषे होय तेने संग्रहीत संग्रह कहिये.

२ एक जाति माटे एकपणो मानिने एक वचने सर्वनो ग्रहण थाय जेम “ एगे आया एगे पुग्गले ” इत्यादि वस्तु अनन्ति छे पण जाति एक माटे ग्रहवाय छे तेने पिन्डित संग्रह कहिये.

३ जे अनेक जीवरूप अनेक व्यक्ति छे ते सर्वमां पामिये, जेम “ सतचितमयो आत्मा ” एटले सर्व जीव, सर्व प्रदेश, सर्व गुण ते जीवनां लक्षण छे तेने अनुगम संग्रह कहिये

४ जेनी ना कहेवे तेथी ईतरनो सर्व संग्रह पणे ज्ञान थाय ते जेम अजीव छे तेवारे जे जीव नहि ते अजीव एटले कोईक जीव छे एम व्यतिरेक वचने ठेर्यो तथा उपयोगे जीवनो ग्रहण थाय छे तेने व्यतिरेक संग्रह कहिये, वली सग्रह नयना बे भेद कहे छे (१) महा सत्तारूप. (२), अवातर सत्तारूप

॥ गाथा ॥

सवतिन्नणिएणज, म्हासवन्नाणुप्पवत्तएवुद्धि ॥
तोसवसत्तमत्त, नन्नीतदतरकिंचि ॥ १ ॥

यद्यस्मान सदित्येवं, जणिते सर्वे त्रिजुवन त्रयान्तर्गत वस्तुनि बुद्धिरनुप्रवर्तते प्रधावतिन-हितत् ॥ किमपि वस्तु अस्ति यत् सदित्युक्ते जगति बुद्धो न प्रतिजासते तस्मात् सर्व सत्ता-मात्रं न पुन' अर्थान्तरं तत् श्रुत सामर्थ्यात् यत संग्रहेन संग्रह्यते तेन परिणमन रूपत्वादेव संग्र-हस्येति ॥

एटले त्रण जुवनमां एवी वस्तु काइ नथी जे संग्रह नयना ग्रहणमां आवे नहीं, एटले जे वस्तु ठे ते सर्वे संग्रह नयना ग्रहणमां आवे ठे

हवे व्यवहार नय

सग्रह ग्रहित वस्तु जेदान्तरेण,
विजजनं व्यवहरणं प्रवर्त्तनं वा व्यवहार ॥१॥

संग्रह नय गृहित जे वस्तु ठे, तेने भेद जेदान्तरे (विजजनं) व्हेंचवुं, ते व्यवहार अर्थात द्रव्य सामान्यपणे कह्यो तेनी व्हेंचण करवी ते व्यवहार नय द्रव्यना वे जेद. जीव द्रव्य, अजीव द्रव्य जीवना बे भेद सिद्ध, संसारी. सिद्धना बे जेद अनन्तर सिद्ध, परंपर सिद्ध

इत्यादि. हवे ससारीना बे भेद अयोगी, सयोगी. अयोगी ते चौदमा गुणस्थानना. बाकी सयोगी तेना बे भेद. सयोगी केवली, सयोगी छद्मस्थ सयोगी केवली तेरमा गुणस्थानना, बाकी छद्मस्थ तेना बे भेद अमोही, समोही अमोही ते जेनु मोहनीय कर्म क्षय थयु ते बारमा गुणस्थानना, बाकी समोही तेना बे भेद. उपशान्त मोही, उदीत मोही, उपशान्त मोही ते अगिआरमा गुणस्थानना, बाकी उदीत मोही तेना बे भेद एक सुक्ष्म कषायि, बीजा बादर कषायि सुक्ष्म कषायि ते दशमा गुणस्थानना, बाकी बादर कषायि तेना बे भेद एक अवेदी, बीजा सवेदी अवेदी ते नवमा गुणस्थानना, बाकी सवेदी तेना बे भेद श्रेणीवन्त, अने श्रेणी रहित श्रेणीवन्त ते आठमा गुणस्थानना, बाकी श्रेणी रहित तेना बे भेद, अप्रमत, बीजा प्रमत अप्रमत ते सातमा गुणस्थानना बाकी प्रमत तेना बे भेद विरती परिणामी, बीजा अविरती विरती परिणामीना बे भेद. सर्वविरती, बीजा देशविरती सर्व विरती ते छठा गुणस्थाने साधु, अने देश

विरती ते पांचमा गुणस्थाने श्रावक, हवे अविरतीना बे भेद. अविरती समकिती, बीजा अविरती मिथ्यात्वी. अविरती समकिती ते चोथा गुणस्थानना. बाकी मिथ्यात्वी तेना बे भेद, ग्रंथिभेदी, बीजा अभेदी. ग्रंथी भेदी ते समकित पामिने पाछा पड्या, मिथ्यात्वे गया तेमणे ग्रंथी भेद करलो छे फरीथी करवो न पडे विशुद्ध अध्यवसाये चोथा गुणस्थाने आवे ते ग्रंथीभेदी, बाकी अभेदी तेना बे भेद, भव्य, अभव्य, भव्यना बे भेद, कृष्ण पक्षिया, अने सुक्ल पक्षिया एम भेदनुं व्हेंचवुं तेने व्हेंचण रूप व्यवहार कहिये.

हवे प्रवर्त्तन व्यवहार कहे छे तेना बे भेद एक शुद्ध अने बीजो अशुद्ध, शुद्धना बे भेद. वस्तुगत शुद्ध, व्यवहार साधन शुद्ध. व्यवहार सर्व द्रव्यना शुद्ध स्वरुपनी प्रवृत्ति जणावे ते वस्तु गत शुद्ध व्यवहार. जेम धर्मास्तिकायमां गतिसहायकता तथा जीवने विशे ज्ञायकता, ईत्यादि वस्तुगत शुद्ध व्यवहार. बीजो साधन शुद्ध व्यवहार तेना बे भेद

उत्सर्ग साधन, अपवाद साधन जे द्रव्यनो उत्सर्ग (उत्कृष्ट०) नीपजाववा माटे रत्नत्रयिनी शुद्धता, गुणस्थाने श्रेणी आरोहण रूप, वली शुद्ध व्यवहारना वे भेद सद्भूत अने असद्भूत सद्भूत ते क्षेत्र अवस्थाने अभेदरूप रहेला ज्ञानादि गुण तेना भेद कहेवा ते सद्भूत, अने जे असद्भूत एटले हुं क्रोधी, हु मानी, हु देवता हु मनुष्य, इत्यादि देवतापणे हेतुपणे ग्रह्या जे देवगती विपाकी कर्म तेने ते उदयरूप परभाव छे पण यथार्थ ज्ञान विना भेदज्ञान शुन्य जीवने एक करी माने छे ते अशुद्ध व्यवहार जे आ शरीर म्हारु छे अथवा शरीर ते हु छुं, इत्यादि संश्लेषित व्यवहार अने जे धन्यधान्यादि राज्यरिद्धी वली पूत्र कलत्र कुंटुंवादि म्हारु छे एम कहेवु ते असश्लेषित व्यवहार वली व्यवहारना वे भेद कहे छे एक व्हेचणरूप व्यवहार, बीजो प्रवृति व्यवहार- ते प्रवृतिना त्रण भेद (१) वस्तु प्रवृति (२) साधन प्रवृति (३) लौकिक प्रवृति तेमा साधन प्रवृतिना त्रण भेद (१) जे अरिहतनी आज्ञाये शुद्ध

साधन मार्ग. इह लोक संसार पुद्गल भोग आसंसादि दोष रहित जे रत्नत्रयिनी परिणतिपर भाव त्याग सहित ते लोकोतर साधन प्रवृति (२) जे स्याद्वाद विना मिथ्याभिनिवेश सहित साधन प्रवृति ते कुप्रावचनिक प्रवृति (३) जे लोकना स्व स्वदेश कुलनी चाले प्रवृति ते लोक व्यवहार प्रवृति इत्यादि द्वादश सार, नय चक्र आदि ग्रंथोमां एक एक नयना सो सो भेद कह्या छे ते जैनशासन रहस्यना जाण महात्माओनी निश्राए ते ग्रंथोमांथी जाणवा धारवा ए व्यवहार नय कह्यो

ऋजुसुत्र नय

॥ रूजु अवकं वस्तु सूत्र यतीति रूजुसूत्र ॥

रूजु एटले सरल बोध एटले वर्तमानपणे उत्पन्न थयो वस्तुनो अवबोध ते रूजुसुत्र ते शीवाय–भुत अने भविष्यकाळ ते रूजुसूत्र नयनी अपेक्षाये अछतो छे केमके–अतितकाळ तो विणसी गयो अने भविश्यकाळ आव्यो नथी तेथी रूजुसूत्र नय तेने अवस्तु माने छे अने

जेम,—(१) ईन्द्आदि धातु परमैश्वर्यने अर्थे छे तेथी परम ऐश्वर्यवन्त ते ईन्द्र (२) शकन् एटले नविन विशक्ति युक्त ते शक्र (३) पुरदर एटले दैत्यने दरे एटले विदारे ते पुरदर (४) शचि एटले ईन्द्राणी तेनो पति ते शचिपति आ सघळा धर्म ईन्द्रमा छे तो पण जे देवलोकनो धणीछे तेनेज ईन्द्र ए नामथी बोलावे पण बीजा नामादि ईन्द्रने ईन्द्र कहे नहीं टुंकामां एटलुज के-पर्याय नामना जे जे अर्थ थाय ते सर्वने भिन्न भिन्न अर्थ सुचवे-कहे ते समभिरुढ नय पण एकार्थ न जाणे न ग्रहे ते समभिरुढ नयाभास कहेवाय छे

एवम्भूत नयनु स्वरुप

शब्दनी प्रवृतिनी निमित्तभूत जे क्रिया ते विशिष्ट सयुक्त जे अर्थ, तेने वाच्य जे धर्म तेने जे पहोंचतो होय, एटले कारण कार्य धर्म सहित तेने एवम्भूत नय कहिये जेम एश्वर्य सहित ते ईन्द्र, शक्र रूप सिहासने बेसे ते शक्र अने ईन्द्राणीनी साथे बेसे ते शचिपति एम

शब्दनां जेटलां पर्याय नाम थतां होय ते सर्वमां पहोंचता भावने ते नामथी बोलावे, अने जे पर्याय पहोंचतो देखे नही ते पर्यायनी ना कहे, ज्यां सुधी एक पर्याय ऊणो छे त्यां सुधी समभिरूढ नय कहेवाय अने सर्व वचन पर्यायने पहोंचे त्यारे एवंभूतनय कहेवाय हवे एवंभूत नयाभास कहे छे. जे पदार्थना नाम भेदनो भेद देखीने पदार्थनी भिन्नता कहे. जेम हाथी घोमा हिरण्य भिन्न छे तेम भिन्नपणुं माने जेम अर्थ भिन्नपणा माटे घटथी पट भिन्न छे तेम ईन्द्रथी पुरंदरादिपणो भिन्न माने तेने एवम्भूत नयाभास कहिये.

ए सात नयमां पहेला च्यार नैगम, सग्रह, व्यवहार अने रुजु सूत्र नय ते अविशुध्य छे. कारण के द्रव्यने सामान्यपणे कहेवाने पात्र छे. ए नयनुं नाम (अर्थ) द्रव्य नय अथवा द्रव्यार्थिक नय छे अने शब्द, समभिरूढ–अने एवम्भूत ए त्रण नय विशुद्ध छे कारण के— शब्दना अर्थनी एने मुख्यता छे पहेला चार नय ते भेदपणे वचनने वांछे छे. अने शब्दादि त्रण नय ते लिंगादि अभेद वचने अभेद कहे तथा

भिन्न वचनने भिन्नार्थ कही माने, अने समभि-
रूढ नय ते भिन्न शब्द तेने वस्तु पर्याय न माने,
तथा एवम्भूत ते भिन्न गोचर पर्यायने भिन्न
माने उदाहरण,-जे चेष्टा करतो होय तेने
"घट" माने पण घरना खूंणे पड्यो होय तेने
" घट " कहे नहीं तेम जे चित्रकळा करतो
होय अने ते उपयोगे वर्त्ततो होय तेने चित्र
कार कहे पण ते चित्रकार सुतो के जमतो होय
तेने चित्रकार कहे नहि, कारण के ते वखते
उपयोग रहित छे माटे ए नय ते शब्द अने
अर्थने अभेदपणे माने छे अने अर्थ शुन्य
शब्द ते ए नये प्रमाण नथी, शब्द प्रधान अर्थ
ते द्रव्यने गौणपणे वर्त्तता शब्दादि त्रण नय
छे एम " तत्वार्थ टीका " मां कह्युं छे ए सात
नयमां पहेलो नैगम नय ते सामान्य अने वि-
शेप बन्नेने माने (२) सग्रह नय ते सामान्यने
माने (३) व्यवहार नय ते विशेपने माने अने
द्रव्यार्थावलम्बी छे (४) रुजु सूत्र तो विशेष
ग्राहक छे ए च्यार ते द्रव्य नय छे अने पा
छला शब्दादि त्रण नय ते पर्यायार्थिक विशेपा-

वलम्बी भाव नय छे तथा शब्दादि नय ते नाम, स्थापना, अने द्रव्य ए (त्रण) निक्षेपाने अ-वस्तु माने छे

॥ तिन्ह सद्दनयाणं अवत्थु ॥

ए अनुयोगद्वारनुं वचन छे ए सात नय परस्पर सापेक्षपणे ग्रहे ते समकिती जाणवा अने जो ए नय परस्पर विरोधी होय तो मिथ्यात्वी जाणवा ए अधिकार श्री अनुयोगद्वार सूत्रथी कह्यो. ए रीते पहेला नैगमनयनो विस्तार घणो जाणवो अने बीजा संग्रह नयनो परिमित विषय छे एटले थोमो छे कारण के सत्ता मात्रनो ग्राहक संग्रह नय छे. छती सत्ताने संग्रह नय ग्रहे अने नैगम तो छता भाव अने संकल्पपणे अछता भाव सर्वने ग्रहे अथवा सामान्य विशेष वे धर्मने ग्रहे ते माटे नैगमनो विषय घणो छे. संग्रहनय ते सत्तागत सामान्य विशेष वन्नेने ग्रहे छे. अने व्यवहार ते सत् एक विशेष नेज ग्रहे छे, माटे संग्रह नयथी व्यवहार नयनो विषय थामो छे अने व्यवहार नयथी संग्रह नय

ते बहु विषयी छे रुजुसुत्रनय ते वर्त्तमान विशेष धर्मनो ग्राहक छे माटे व्यवहारथी रुजु सुत्रनय ते अल्प विषयी छे,अने रुजुसूत्रथी व्यवहार बहु विषयी छे रुजुसुत्र नय ते वर्त्तमान कालने ग्रहे अने शब्द नय कालादि वचन लिंगथी व्हेंचता अर्थने ग्रहे अने रुजुसूत्रनय ते वचन लिंगने भिन्न पाम्तो नथी माटे रुजुसूत्र थी शब्दनय अल्प विषयी छे अने रुजुसूत्र बहु विषयी छे शब्द नय सर्व पर्यायनो एक पर्यायने ग्रहता ग्रहे अने समभिरुढनय ते जे धर्म व्यक्त ते वाचक पर्यायने ग्रहे ते माटे शब्दनयथी समभिरुढनय ते अल्प विषयी छे अने समभिरुढ नय ते पर्यायनो सर्व काळ गवेष्यो छे) माटे समभिरुढ नयथी शब्दनय ते बहु विषयी छे एवम्भूतनय ते प्रतिसमये क्रिया भेदे भिन्नार्थपणो मानतो अल्प विषयी छे ते माटे एवम्भूत नयथी समभिरुढनय ते बहु विषयी जाणवो

नय सप्तभङ्गीनु स्वरुप

जे नय वचन छे ते पोताना नयने स्वरुपे

" अस्ति " छे अने पर नयना स्वरूपे तेमां " नास्ति " छे एम सर्व नयनी विधि निषेध (प्रतिषेधे) करिने " सप्तभङ्गी " उपजे, पण नयनी सप्तभङ्गी ते विकला देशीज होय अने सकला देशी सप्तभङ्गी ते प्रमाण छे माटे नयनी " सप्तभङ्गी " न उपजे

उक्तंच —रत्नाकरावतारिकायाम् —

॥ विकला देश स्वभावा हि नय सप्तभङ्गी वस्त्वंश मात्र प्ररुपकत्वात् सकला देश स्वभावानु प्रमाण सप्तभङ्गी संपूर्ण वस्तु स्वरुप प्ररुपक त्वात्॥

'यथायोग्यपणे नय अधिकार कह्यो

तेमां साधक आत्मानो शुद्ध परिणति रुप धर्म तो निश्चय नयमां शक्तिभावे तिरोभावीपणे रह्यो छे तेने प्रकट करवा माटे शुद्ध व्यवहारनी जरुर छे अने शुद्ध व्यवहार तो भेद ज्ञानपुंज नाम छे, ते उपयोगीपणे शुद्धनयनी अपेक्षाए स्वपर विभाग व्हेंचण पूर्वक भिन्नता करी स्व-स्वरुप रमणिपणे वर्ते, वली शुभाशुभ व्यवहारमां पोतानुं अहंकर्तापणु छोडे, बाह्यदृष्टि टाळे, अंतर्दृष्टि करे, मान अपमान लाभ अलाभ अने शाता अ-

शाता इत्यादि कारणे समजावे वर्त्ते, पर वस्तुनुं संबंधपणुं पूर्वकृत कर्मनु उदयानु-सार अनुकुळ प्रतिकुळ मनुष्यादि संबंध मळे, वळी सुखदु खादि जे जे प्राप्त थाय तेने समजाव पूर्वक काया योगे अव्यापकपणे समताभावे वेदीने निर्जरे एम अंतर्गत ज्ञानोपयोगे अने सहज वीर्यनी स्फुरणा शक्तिए वर्त्तनो जीव उपरना गुणस्थाने चढे अने आगळना गुणस्थानने ठोभे इत्यादि सर्व साधन निश्चयनयनी दृष्टिये अने शुद्ध व्यवहार अपेक्षाए करे. त्या आत्मसत्ताए शक्ति भावे तिरोभावीपणे रहेलो धर्म तेने व्यक्तिभावे कार्यपणे प्रकट करे ए पद्धत्ति छे. माटे हे भव्यात्मा -तमे शीव सुखना ईछक, अभिलाषी हो तो अतर्दृष्टिये स्वधर्मग्राही निश्चयनयनो पक्ष संवर निर्जरारुप तेने धारो एटले ग्रहण करो अने बाह्यदृष्टिए परधर्मग्राही शुभाशुभ व्यवहारनो पक्ष आश्रव बंध हेतु रुप, तेने तिक्ष्ण ज्ञान खड्ग धाराए छेदी सहजगत एकत्व रमणिपणे शुद्ध निश्चय-नय धारो एटले तेमा लय पामो ए बीजी गाथानो अर्थ कह्यो

ज्ञाननुं फळ ते शुद्ध प्रकास्युं,
तेथी समकित शुद्ध होवे रे ॥
एह अर्थ सुधो मन धारो,
विशेषावस्यक एम के'वे रे. ज्ञान पद० ३

अर्थः-(ज्ञान के०) जीव अजीवादि पट् द्रव्यनुं तथा नवतत्वनुं जाणपणुं थाय, तेनुं नाम ज्ञान अने ए ज्ञाननुं फळ ते ज्ञानभाव, तद्गत् परिणाम पामे, अने परानुयायि दृष्टि टळता अने स्वरुपानुयायि दृष्टि थतां, हेयोपादेय बुद्धि प्रकटे, तेनुं नाम ज्ञाननु फळ कहिये एटले हेय ते जीवने त्यागवा छोडवा योग्य, अने उपादेय ते ग्रहवा आदरवा योग्य शुं छे, तेनो विचार करवो, त्यारे पट द्रव्य कह्या तेमां धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, अने काळ ए चार द्रव्य तो पोतपोताना स्वभाव पर्याये करीने शुद्धज छे, (नोंखा छे) अने अनादि संबंधे जीव पुद्गळ बेहुनो संयोग खीर नीर दृष्टान्ते एकपणे मिलिन छे त्यां चर्मचक्षु ए नथी पण वस्तुताए जो-

तां भिन्न छे, जीवथी पुदगल जुदो अने पुदग लथी जीव जुदो, एम विभाग व्हेंचणपूर्वक दीव्य चक्षुवडे प्रत्यक्ष प्रमाणे निर्णय थाय वळी नव-तत्व कह्या तेमा सवर, निर्जरा अने मोक्ष ए त्रण तो जीवनाज गुण छे, ते जीवमा अभेद रूपे-अभिन्न छे (जुदा नथी) एम ए चार तत्व ग्रहवा-आदरवा योग्य छे अने पुण्य, पाप, आ-श्रव अने बध, ए चार तो पुद्गलनाज गुण भेद छे ते पुद्गलथी अभिन्न छे. (भिन्न नथी) अने पुदगल कह्यो ते अजीव छे एम पांचे तत्व छोडवा (त्यागवा) योग्य छे ए रीत्ये श्रद्धापूर्वक यथार्थ थाय त्यारे हेयोपादेय बुद्धि कहेवाय त्या ज ज्ञान कहेवाय, हेयोपादेय बुद्धिना अभावे जे ज्ञान होय (जाणपणु होय) तेनुंज नाम अज्ञान छे हवे हेयोपादेय बुद्धिनु प्रकटवु परा-नुयायिदृष्टि टळता, अने स्वरूपानुयायि दृष्टि-थता, उपर कह्यु त्याज अनुभव प्रकटे, ते अव-सरे चेतननु ईन्द्रि नोईन्द्रिगत व्यापक परिण मनरूपु होय नहि पालटीने सहज वीर्यनी श क्तिये, अत करणे तद्गत् परिणमान्यु छे, ते का-

रणे ईन्द्रिनो ईन्द्रिगत जम्तापणानो उपयोग शुन्य होवाथी पांच ईन्द्रियोना विषयनुं वेदवा पणुं (अनुभववापणुं) चेतनने होय नहि. तेम ईन्द्रियो पण उपयोग शुन्ये विषय ग्रहवामां शक्तिमान थाय नहि वळी मनना संकल्प विकल्प पण होय नहि त्यां चैतन्य शिवरुप अनुभव भुवने उपाधीथी अळगो स्थीर थयो, त्यांज सहज वीर्यनी स्फुरणाए पोतीकुं नित्यानित्यादि स्याद्वाद स्वभावमय स्वरुप सिद्ध निष्पन्न स्वभाव तद्रुप, द्रव्यास्तिक. पर्यायास्तिक नयापेक्षाए अनुभवे, प्रत्यक्ष प्रमाणे निर्धार थाय परमानन्द प्रकटे, अतिन्द्रियपणानुं अंशे अव्याबाध सुख अनुभवे–भोगवे–आस्वादे, ईहां शुद्ध परिणतिनो अंश प्रकट थयो तेनुंज नाम ग्रन्थी भेद छे इहां अचेतन सत्ता, अने चेतन सत्ता, एक एकथी भिन्नपणे भासी, चेतन सत्ताए आवरणपणे अचेतन सत्ता रही छे, ते नांखी भासी रही तो छे, पण नास्तिभावे स्थितिनी मर्यादाए रही छे तेमांथी औदयिक भावे प्राप्त थाय तो

 निर्जरवाने चेतनराय आ अवसरे

शक्तिवन्त छे, एम हेयोपादेय बुद्धि प्रकट थतां (शुद्ध प्रकाश्यु के०) आत्मसत्ताए परमात्मपद शक्तिभावे तिरोभावीपणे रहेलुं ते चिदानद स्वरुप, क्षायक लब्धि, ज्योतिमय, प्रत्यक्ष प्रमाणे अनुभवरुप, उद्योतमय प्रकाश थयो, (तेथी के०) उपर कह्यु ते प्रकाशथी वली शुद्धात्म स्वरुप स्पर्शयो (समकित शुद्ध हावेरे के०) शुद्ध समकित गुण मोक्ष प्राप्ति हेतु, चारित्र रायनो पक्षो, जिनेन्द्रदेवनो आज्ञा धारक, ज मतानो उच्छेदक पूर्ण समाधि हेतु, धर्मकार्यमा महा मगलिकरुप, चोथा गुणस्थाने प्रथम प्रकट थाय (एह अर्थ के०) उपर कह्यो ते अर्थ (शुद्धो के०) सरळभाववर्तिनो, स्वस्वरुपगत व्यापक-परिणमन-रमण-अनुभव करता गुण श्रेणी ए गुणस्थाने उत्तरोत्तर चढवानो, अने आगला गुणस्थानने भेटवानो मार्ग हे भव्या-त्मा तमे मूळ स्वरुपे समभावपणे ग्रहण करो, अने औदयिक भावमा परिणमो नहि औदयिक भावमा परिणमता राग द्वेष प्रकटे त्यां आत्माने आवरण लागे, तेनु नाम भाव. हिंसा

छे ते अनादिनी मिथ्याचाल, वक्रपणे, अज्ञान भावे बाह्य प्रवृत्तिए थइ रही छे, ते चाल ज्ञान द्रष्टिए छोडी (त्यागी) सहज भावे वर्त्तवुं (एम मन धारो के०) हे मोक्षार्थी भाइओ ?--तमारा मनमां आत्महित अर्थे अप्रमत्तादि शुद्ध उपयोगे धारो-ठसावो-अने वर्त्तो [विशेषावस्यक एम कहेवेरे के०] एमज विशेषावस्यक ग्रन्थमां जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण दश पूर्वधर तेमणे उपदेश कर्यो छे ते कह्यो अमारी मति कल्पनाए कहेता नथी ए तृतिय गाथार्थ-

तत्व अरथ जुगती आतम गुण
ए निश्चय नय धारोरे,
लोक प्रसिद्ध भाख्यो व्यवहार ते
तत्वारथ टीकाए विचारोरे. ज्ञान० ॥४॥

अर्थ.-(तत्व अर्थ के०) ज्ञान, दर्शन, चारित्रनो अर्थ हेतु युक्तिपूर्वक विचारीए तो एज आत्मगुण आत्मशक्तिये प्रकटे छे अने ए शक्ति व्यक्तिभावे थाय तेनुंज नाम निश्चय नय छे अने जे लोकोने विशे प्रसिद्ध अर्थुं एटले

जश शोभा बहु मान पामवुं, लोकमां धर्मी कहेवराववुं ए सर्वे व्यवहार जाणवो, एविशे कांइ धर्म छे नहि, तेवुं तत्वार्थ ग्रंथनी टीका आदिमां कह्यु छे ते अहि कहीए छीए क ज्यां ज्ञाननी रमणता नथी अने व्यवहार मार्गनी क्रिया कष्ट तप जप करे, लोको तेने तपशी तथा व्यवहार मार्गे चालवावाळा जाणे, घणु वखाणे, पण परमात्माताए तमने अधर्मी कह्या, धर्मी कह्या नथी ते श्री आचाराग सत्रे पावाअकम्मस्सववहारेणविद्धइकणाउवाहीजायइ इति ॥

जे स्वस्वरुप जाणतो नथी रमण करतो नथी, अने पर भाव जे व्यवहार क्रिया प्रमुख करे तेमणे विचारवु के धर्म तो स्वभावमा कह्युं छे अने परभावमा तो कर्म कह्यु छे, माटे ए छे काणे धर्म न कहेवाय, धर्म खेंचताण के हठवादे आवतो नथी, धर्म तो स्हेज स्वभावे छे परभावनो त्याग कर, अने राग द्वेष मोहथी रहित थाय, पोताना स्वरुपे रमण करे, ज्ञान दर्शनमा स्थीर भाव थाय, तेने धर्म तथा चारीत्र कहीए एवुं श्री हेमचंद्राचार्यजीए योगशास्त्रमा कह्युं छे ते श्लोक॥

आत्मैवदर्शनज्ञानचारीत्राण्यथवायन ॥
यन्नदात्मकएवैषशरीरमयितिष्टन्ति ॥ १ ॥
आत्मानमात्मनोवेत्तिमोहत्यागाद्यमात्मनि ॥
तदेवतस्यचारित्रंतद्ज्ञानंतचदर्शनम् ॥ २ ॥

मुक्तितो एक पोताना आत्म स्वरुपमां रमे तेनि थाय अने क्रिया कष्ट करे तेनुं फळ पुन्य, वा पाप एक भोगवे एथी धर्म थाय नहि. एवुं खट दरशन समुचय ग्रंथे कह्युं छे ॥ तत्राज्ञानादि धर्मेभ्यो, भिन्नाभिवि वर्त्तमान् ॥ शुभाशुभकर्म कर्त्ता, भोक्ताकर्मफलस्य ॥ १ ॥ ए रीते व्यवहार ते लोक रंजनपणामां शोभनीक छे, एम जाणीने निश्चेनी रमणता करवी इति चतुर्थ गाथार्थ. ॥ ४ ॥

एक जीव ज्ञान अभ्यासे,
बीजो कीरीया धारो रे,
अंतर बेहुमां सूर्ज खजुवो जेम,
योग द्रष्टि समुचये विचारो रे ॥ ज्ञा ५ ॥

अर्थ.—जीवने ज्ञान विना मुक्ति थाय नही, क्रिया तो शाशननी, उजवाळण मात्र छे

शा माटे जे कर्मनो नाश करवो अने मुक्तिनुं पामवुं ते तो निज स्वरुपने उळख्या विना न पामिये माटे ज्ञाने करिने परद्रव्य जाणे अने तेमां स्वपर भिन्न करे पछी पोतानु स्वरुप पोते धारे तेवुं जे ज्ञानोपयोगीपणुं तेथी कर्मनो नाश थाय अने मुक्ति मले ते माटे ज्ञान छे, ते सूर्य समान छे अने क्रिया ते परआगीं छे तेथी कर्म नाश थाय नही माटे खद्योतना तेज जेवु कह्यु अने ज्ञाननु तेज सूर्यना जेवुं छे तेम योगदृष्टि ग्रथमां कह्यु छे

उक्तच—

तात्विक पक्षपातश्च, भावशुन्या चया क्रिया ॥
अनयोरतर ज्ञेय, भानु खद्योत योरि व ॥ १ ॥

ते माटे समजीने ज्ञाननो अभ्यास करवो अने अतरग उपयोग राखवो ईति पंचम गाथार्थ ॥ ५ ॥

सोम्य प्रकरण माहे दाख्यु,
उत्तम ज्ञान सो रगरे ॥
मध्यम क्रिया रति ते भाख्या,
मूरख माने लीगरे ॥ ज्ञान० ६ ॥

ज्ञान साथे जेने रंग लाग्यो ते उत्तम, अने क्रिया साथे रंग लाग्यो ते मध्यम, अने वेश देखीने जे मोह्या छे तेने अज्ञानी कहीए एवुं पोम्पक प्रकरणमां कह्युं छे

(ज्ञान) ते जाणवापणुं तेना अनेक भेद छे एटले क्रिया आचारना जाणने ज्ञानी कहे, तथा गणीतानुं योग, धर्मकथानुं योग, तथा देवलोक, नरलोकनी रीद्धि संपदा, गती अगती, आयुप ईत्यादि जाणनारने ज्ञानी कहे. तथा वेद, पुराण, वइदक, ज्योतिष, सामुद्रिक ईत्यादि शास्त्रना जाणने ज्ञानी कहे पण ते ज्ञान व्यवहारथी छे पण निश्चयथी ज्ञान कहेवाय नही ज्ञान तो एक आत्म स्वरुप जाणे ते ज्ञानी बीजाने ज्ञान कहेवाय नहीं एवो जेने एक आत्म स्वरुप उपर रंग लाग्यो छे ते उत्तम पुरुष जाणवो तथा जे क्रिया रागी मध्यम कह्या तेनुं कारण ए छे के समकित सहित जीव छे अने क्रियामां राग धरे छे तेने मध्यम कह्या छे कारण के क्रिया छठ्ठा गुणस्थान सुधी छे, उपरांत क्रिया छे नही ते गुणस्थान सुधी

न्म मरण टले नही अने हजी अनता जन्म म-
रण परपराए रह्या पण होय ते माटे एने भव
अभवी कहीए

उक्तंच,—

भवाटवालय न तुल्य मेतत्,
प्रमत्त नाम क्रिया पदमेत ॥
गुण्ये स्थानम सरय वृथा,
प्रमाद हाने भवर ज्ञातव्या ॥ १ ॥

छठ्ठा गुणस्थान सुधी चढे अने आत्मानी
तद्वत् ओलखाणे खप न करे अने क्रिया उपर
राग राखे तो भवअटवी ओलगी शके नही जे
अप्रमादि साधु आत्मोपयोगी तेज ओलगे, बी-
जाथी ओलगाय नही अही कोई कहेशे जे
आटलु आटलु कष्ट सहिये छिये, ससारथी अ
लगा थया छिये, ते हमारु शु फोगट थयु ? तेनो
उत्तर जे एम कष्ट करवाथी कार्य सिद्ध थतु
होय तो तिर्यच पचेंद्री जीव बहु कष्ट सहे छे
एटले घोडा, बळद इत्यादि क्षुधा, तृषा, टाढ,
ताप, ताडना, तरजना, प्रमुख बहु परिषह सहे

छे माटे तेमनुं कार्य सिद्ध थवुं जोईए कारण के तमाराथी एना जेटलो परिषह सहेवातो नथी, माटे कष्ट सहेवाथी कार्यसिद्धि थती नथी, एतो लोकनां मन रीझववा अने पोताने लोको माने पुजे माटे ए कष्ट सहन करवुं एम ठरे छे पण आत्म स्वरुप जाण्या विना स्वपरनी व्हेंचण थाय नही, अने स्वपरनी व्हेंचण विना यथार्थ परिसह सहेवाय नही, अही तो हठवादथी सेवो छो तथा शास्त्रमां पण वचन छे

उक्तंच,— उपदेशमाला मध्ये

चालइंकठकरेइतिंवधम्मं धारेइजणाणुवित्तीएसोपवयणमगस्सवैरी हुजअहाछंदो ॥ १ ॥

एवा कष्टना करनाराने कंइ साधुपणुं मालम पम्तुं नथी इहां कहे के उग्रकुल, भोगकुल, राजानुकुल, क्षत्रीयकुल, शेठशाहुकार सेनापती, एवा मोटा मोटा कुलमां जन्मेला वैराग्य पामीने धन, धान्य, स्त्री, पुत्रादि रिद्धि छांमीने चारित्र लीधां छे अने लाज मूकीने घरघर भिक्षा मागवा जवी ए कंई न्हानुं कष्ट नथी,

केमके कुक्षिशंबळ मुनिने निरलोभि कह्या, ते-
मनु कार्य शु न थाय ? अवश्य थवुं जोइए.
तेनो उत्तर –भिक्षावृत्तिथी कार्यसिद्धि थतुं हो
य तो भिक्षावृत्ति करवावाला घणा जीव मालम
पडे छे तो तेनु कार्य सिद्ध थवु जोइए, ईहां
कहे के ते लोको दोप टाळीने आहार लेता न-
थी, माटे एनु कार्य न थाय अने आपणे दोप
टाळीने शुद्ध आहार लइए छिये तेथी कार्य थाय
तेनो उत्तर –ए भिक्षु दिन भिखारी दोप टाळता
नथी पण षट् दर्शनना भेखधारी सर्वे पोतपोताना
कल्प व्यवहार प्रमाणे दोप टाळी भिक्षा ले छे
माटे तेनु कार्य थवु जोइए, अहीं कहे के –ए
वीतरागनी आज्ञा बहार छे एतो अज्ञानी छे
माटे अज्ञान कष्टनु फळ कार्य सिद्ध छे नहीं,
अने आपणे आज्ञा सहीत छिये माटे आपणुं
कार्य सिद्ध थाय तेनो उत्तर –आपणा घरमा
कल्प व्यवहार एक रीतनो छे नहीं अने सूत्र
एम कहे छे जे कल्प उलघवाथी कर्म बंधाय एवो
तो निश्चय छे नहीं

उक्तंच,— सूत्र कृतांग मध्ये

आहागमांइभुंजंति । अणमणेसकम्मुणा ॥
जीवलित्तेवियाणिजा । अणुवलित्तेत्तिवापुणो ॥१॥
एतेहिंदोहिठाणेहि । ववहारोनविजई ॥
एतेहिंदोहिठाणेहि । अणयारभजाणए ॥२॥

एटले सूत्रकारे ए रीते कह्युं छे ते जोतां कल्पमां धर्म मालम पडतो नथी पछी तत्व तो केवली जाणे अने कल्पने विचारी जोइए तो ते कल्पथी भिन्न हरिभद्रसूरि कृत कल्प छे अने तेथी जे जे पण्डित पछीथी थया तेमना कल्प ए सर्वे अणमलता जुदा जुदा छे तो कयो कल्प सत्य मानवा योग्य छे अने कयो कल्प असत्य मानवा योग्य छे एटला माटे क्रियानी रुचि विशेष ज्ञान विना करे छे, अने समकित पामेला तेमने मध्यम कह्या छे. अही कहेशो के एथी पुण्य बन्ध थाय के न थाय ? तेनो उत्तर—जे जेवुं कष्ट ने जेवा भणाम तेवुं पुण्यबंध थाय पण एथी अधीक थाय नही कारण के,— श्री भगवती सूत्रे कह्युं छे जे भगवानना हाथ

दिक्षित् शिष्य तेमणे बार वरस सुधी चोक्खुं चा-
रित्र पाळ्युं, डपण लागवा दीधु नथी, अने ठठ ठ
ठनु पारणुं करता हता ते पहेले देवलोके गया,
मध्यस्थ आयुष्यनी स्थितिएतो एवी रीतथी चा
रित्र पाळ्युं ने आराधक कह्या ते पण एथी ऊ
ची गतीए गया नथी माटे तमे तमारा मनने
विचारी जुओ अने शास्त्रने विषे तो सप्त लवी
आ देव सर्वार्थसिद्ध विमाने जवावाला तेमने
भवछठवीमा कह्या छे

उक्तच,— उपदेशमाला मध्ये

जेतालवसत्तमसुरविमाणवासीविपरिवमति ।
सुराचितिज्जनसेसंससारमासयकयर ॥ २९ ॥
कहतभवश्मुस्वं ॥

सुचिरेणविजसस्फुखमल्लियह ।
जचमरणावसाणे । भवसंसाराणुवधीच ॥३०॥

टीका —जइश्रुतियदितावतलवसत्तमा सुरा
सर्वोऽनुत्तरविमानवासिनोदेवा स्तेषाविमानानि
अनुत्तरविमानानितन्निवासिनोपिअर्थादनुत्तं वि
मानस्थिताअपिदेवाइत्यर्थ ॥ तादृशाअपिसुरादे

वायदितावत् प्रतिपतंतिआयुप क्षयेतातश्चवंतिता-
न्यायुंपिअपिपूर्णानि भवंतितर्हिचित्यमानंविचा-
र्यमाणंशेषं असारं अनुत्तरसुरापेक्षयाहीनंसंसारे
अस्मिन्जीवलोकेशाश्वतं स्थिरकरंकिंवस्तुशाश्वतं
अपितुनकिम पीत्यर्थो ऽतोधर्मएवनित्य॰ ॥२९॥क-
ह्इतिकथंतद्भवएवतेतसुखंअपितुतत् सुखंसुखंनक
श्यतेसुचिरेणाऽपिवहुकालेनापि पव्योपमसागरोप-
मानंतरमित्यर्थः जस्ससुखंस्यातेदु खंआलीयनेआ
श्लिष्यतियत् सखाऽनंतरदु खं तत्सुखदुःखमेवत्ये
र्थ यत्यस्मात्कारणात्मरणावसानेमरणप्राते मर-
णावस्थायामित्यर्थ सुखंकथंभूतंभवोनारकादिअव-
तारस्तस्मिन्संसार परिभ्रमणतुअनुबंधतेइत्येवंगा
त्नयदनंतरंगर्भावासादिदु खंप्रवतेतत्कथंसुराणाम-
पि ॥ ३० ॥

एवा जे सप्तलवीआ सुर कहेतां सर्वार्थ-
सिद्ध वैमाननुं सुख ते कोण भोगवे जेने सात-
लव आयुष्य बाकी रहे एवा जे साधु ते भोग-
वेतो एवो जे आत्मानो उपयोग तीक्ष्ण अने
अगीयारमु गुणस्थान पामेला ते धणी भोगवे
जो कदापि आयुष्य वधारे होय, अने

एवो ने एवो भाव रहे तो ते अवस्य मोक्षे जाय एवु श्री भगवतीजीमा वचन छे पण उपशमश्रेणि वाळो अवश्य मरे अथवा पाछो पडे ते माटे मरे तो सर्वार्थसिद्ध विमाने जाय, पडे तो निचेना गुणस्थाने आवे एमा संदेह नहीं पण ए श्रेणि आरोहण कर्यु त्या अंतरगत उपयोग होय वाह्योपयोग होय नहि त्या सर्व अंतरक्रिया अने श्रुत ज्ञानोपयोगी होय पण अवधी मन पर्यव ज्ञानोपयोग होय नहीं एवा आत्मोपयोगी शुक्ल ध्याननाध्याता उपशमश्रेणि पामीने सर्वार्थसिद्ध विमाने देव थाय तेमनु पुन्य भवअटवीरुप कह्युं पण ज्ञानिए वखाण्यु नहीं ते टीकाथी विचारवु एटले पुण्य तो भवनी वृद्धी करनारुं कह्यु छे एथी संसार घटे नहीं ए बीजो मध्यम आत्मानो भाव कह्यो

हवे त्रीजो अधम आत्मानो भाव कहिये छिये अधम आत्मा कहेता अज्ञानी समकित रहित ते अथवा कृष्णपक्षीआ जीव जाणवा,– अधम आत्मा ते ज्ञान पाम्या नहीं, अने एक

वेश देखीने (वेश) लींग धारण कर्यु छे एटले माथुं मुंडाव्युं छे, डंगो मुहपत्ती राखे छे पण व्रत्तादि कशुंए रह्युं नथी एटले कन्चन कामीनि कशुंए छुट्युं नथी, एवा जे परिग्रहधारीने साधु करी माने तेने बाल अज्ञानी जाणवा अथवा पोते एवो लींग राखे अने कहे के हुं साधु महावीरनो भेखधारी भीक्षावृत्ती करु छु तेनो उत्तर जे महावीरे एवो भेख राख्यो न्होतो अने महावीरना शासनमां एवो भेख कह्यो नथी जे केश समारवा, पटीयां पाडवा, तेल, फूलेल, अत्तर घालवां, सारां बुटमां धोवडावीने धोतीजोडा कसबी भारे कीमतना पहेरवा, कपडा सारां डंढवां, काछडी खोसवी, पाटलीउं पाडवी, (बुट) पगरखां पहेरवां एवो वेश भगवानना मार्गमां छे नही, ए भगवाननुं शासन कहेवाय नही एतो तमारी खुशीथी छेलबटाउ थइने फरो छो पण वीतरागनो मार्ग एवो नथी, वली तमो कहो छो के भिक्षावृत्ती करिये छिये ते तो जेम ग्रहस्थनी पाछळ भांड भोजक भाट लागेला छे तेम तमे

एक वधारे लागेला गे तमने दीधाथी एमनु कल्याण थयु नही, तेम तमारुए नीक्षावृत्तीथी कल्याण थयु नही, कारण के जे साधु मुनिराज निग्रथ ठे कचन कामिनीना त्यागी ठे, क्रिया आचार रूपी रीते शास्त्रमां कह्या प्रमाणे पाळे तेज भिक्षा लईने आजीवीका करे ठे, तोपण शास्त्रवाला तेमने कहे ठे के पाठला भवे व्रत लईने भाग्या तेनुं फल तमने उदय आव्यु ठे, एटले पापने उदये ए भिक्षा तमने लेवी ठरी ठे, जो ज्ञान मार्गे होत तो ए भीक्षाथी तमारु कल्याण थात पण आ भिक्षा ज्ञान विना बाह्य क्रिया करीने ल्यो ठो ते जाणीए ठिये. जे पुर्व कृत पापनो उदय छे एवु श्री पच वस्तु गथमा कह्यु ठे —

॥ उक्तंच ॥

यउक्त ब्वसिक्कयवयजगोअविहिपावरा।
पुएये नह चेव ईति ॥

उक्तंच.— ॥ गाथा ॥

चारित्त विहिणस्स,
अभिसग यस्स मू अकलुस भावस्स ॥

ख्रणाणिणो यजा पुण,
सा पम्सिद्धा जिनवरे हि ॥ १ ॥
निरकं ख्रमंतिख्रारं,
व्रमंगया ख्रपरिसुद्ध परिणाया ॥
दीणा संसार फलं,
पावाउ फुत्त मेयंत्त ॥ २ ॥

एटले शास्त्रमां एकान्ते व्यवहार मार्गे चाले तेने पापनो उदय कह्यो तो फक्त एक लीग धारण करीने फरे तेथी मुक्ति थाय नहि ते माटे ख्रधम ख्रात्मा तेने कहिये एटले उत्तम ते ज्ञानरागी मध्यम ते क्रियारागी ख्रने ख्रधम ते लीगरागी एवु पोडशक प्रकरण मध्ये कह्युंछे

॥ उक्तंच ॥

बाल पश्यतिलिगंम्। मध्यमबुद्धिर्विचारयतिवृत्तिम्॥
ख्रज्ञानक्रियागमनत्वं । बुद्ध परीक्षतेसर्वयत्नेन
॥ ईति ख्रष्टम गाथार्थ ॥

मेडकचूर्णसम ते निर्जरा,
क्रिया कष्टथी जाखीरे ॥

एक वधोरे लागेला ठे तमने दीधाथी एमनु क ल्याण थयु नही, तेम तमारुए भीक्षावृत्तीथी क ल्याण थयु नही, कारण के जे साधु मुनिराज निर्ग्रंथ ठे कचन कामिनीना त्यागी ठे, क्रिया आचार रूपी रीते शास्त्रमा कह्या प्रमाणे पाळे तेर्ज भिक्षा लईने आजीवीका करे ठे, तोपण शास्त्रवाला तेमने कहे ठे के पाठला भवे व्रत लईने भाग्या तेनु फल तमने उदय आव्यु ठे, एटले पापने उदये ए भिक्षा तमने लेवी ठरी ठे, जो ज्ञान मार्गे होत तो ए भीक्षाथी तमारु कल्याण थात पण आ भिक्षा ज्ञान विना बाह्य क्रिया करीने ल्यो ठो ते जाणीए ठिये जे पुर्व कृत पापनो उदय छे एवु श्री पच वस्तु ग्रथमां कह्यु ठे —

॥ उक्तच ॥

यडुक्त इक्कसिकयवयभगोअविहिपावग।
पुएये तह चेव ईति ॥

उक्तच,— ॥ गाथा ॥

चारित्त विहिणस्स,
अजिसग यस्स सु अकुसम भावस्स ॥

थ्याण थाय नही. अही कोई कहेशे जे एक पुद्गलपरावर्त्त बाकी रह्या पछी धर्म स्हामा थाय अने तमे तो ते पहेला व्रतादि धर्म बतावो छो तेनो उत्तर जे अही संज्ञाए कहेवत छे पण धर्मतो अनंता पुद्गल परावर्त बाकी होय ते करवा च्हाय अने धर्मकरणी आदरे, सत्य असत्य करे एटले सत्य कहेता वीतरागना मार्गनी करणी ते आदरे असत्य कहेतां जे अन्य धर्मनी करणी ते पण आदरे, ए वातमा शंका राखवी नही कारण के कृष्णपक्षिया व्रतादि धर्म नही पामे तो अभवी जीव केम पामशे अने प्रत्यक्ष अभवी जीवोये दिक्षाउ लीधी अने ले छे तेमज व्यवहारे छकायनी पांख दुभवे नही, रक्षा करे एवां दृष्टान्त कथानुयोगे प्रत्यक्ष छे तो ए अभवी होवा छतां व्यवहारथी चारित्र धर्म पामे तो कृष्णपक्षियो केम न पामे ? अपितु पामे ए वातमां शका राखवी नही एवा पाठ शास्त्रमां छे पण ते धर्म व्यवहारथी कह्यो छे माटे निर्जरानी तो भजना हवे जे शुक्लपक्षिया जीव ते कोई कारणथी अथवा गुरु उपदेशथी दीक्षा ले अथवा

समुद्रसम निरजरा ठे जेहनी
ज्ञान सुधारस दाखी रे ॥ ॥ ज्ञान ७ ॥

उपयोगशुन्य क्रिया कष्ट करे तेने निर्जरा देम्कानां चूर्ण जेटली थाय अने स्वरूपोपयोगी एवा ज्ञानीने समुद्र जेटली निर्जरा थाय हवे ज्ञान रहित क्रिया तेना बे भेद अन्य दर्शन वाळा अज्ञान कष्ट करे तेने बाल तपस्वी कह्या ठे तथा समकित रहित तेना बे भेद शुक्लपक्षिया १, कृष्णपक्षिया २, हवे जेने एक पुद्गलपरावर्त काळ बाकी रह्यो ते शुक्लपक्षिया कहेवाय अने तेथी वधारे ससारकाळ स्थिती बाकी होय ते कृष्णपक्षिया कहेवाय अही जे कृष्णपक्षीया जीव तप, क्रिया, कष्ट, व्रत नेम करे तेने तो ससार उपर राग द्वेष उदयमा होय तेने निर्जरा थती नथी एटले अश निर्जरा ते अही गणाती नथी तेने तो कर्म बध थाय एटले ते व्रतादि आश्रवरूप जाणवु तथा जेने ससारादि उपर राग द्वेषनो उदय नथी अने व्रतादि करे तेने मेडक कहेता देम्कानां चूरण जेटली निर्जरा थाय पण एथी एनु क

थाए थाय नही. अही कोई कहेशे जे एक पुद्गलपरावर्त्त बाकी रह्या पछी धर्म स्हामा थाय अने तमे तो ते पहेला व्रतादि धर्म बतावो छो तेनो उत्तर जे अही संज्ञाए कहेवत छे पण धर्मतो अनंता पुद्गल परावर्त बाकी होय ते करवा च्हाय अने धर्मकरणी आदरे, सत्य असत्य करे एटले सत्य कहेता वीतरागना मार्गनी करणी ते आदरे असत्य कहेतां जे अन्य धर्मनी करणी ते पण आदरे, ए वातमां शंका राखवी नही कारण के कृष्णपक्षिया व्रतादि धर्म नही पामे तो अभवी जीव केम पामशे अने प्रत्यक्ष अभवी जीवोये दिक्षाउ लीधी अने ले छे तेमज व्यवहारे छकायनी पाख डुभवे नही, रक्षा करे एवां द्रष्टान्त कथानुयोगे प्रत्यक्ष छे तो ए अभवी होवा छतां व्यवहारथी चारित्र धर्म पामे तो कृष्णपक्षियो केम न पामे? अपितु पामे ए वातमां शंका राखवी नही एवा पाठ शास्त्रमां छे पण ते धर्म व्यवहारथी कह्यो छे माटे निर्जरानी तो भजना हवे जे शुक्लपक्षिया जीव ते कोई कारणथी अथवा गुरु उपदेशथी दीक्षा ले अथवा

श्रावकना व्रत अङ्गिकार करे तप, जप, क्रिया उत्कृष्टी करे अने ससारादि उपर राग द्वेषनो उदय मट्यो नथी ते जीवने ए सर्व कर्तव्यनु फल आश्रव छे, एटले कर्मबंध छे, निर्जरा कहेवाय नहि तथा जे एवी रीते व्रतादि ग्रहण कर्या छे अने राग द्वेषनो उदय नथी अने वैराग-वासी छे तेमज कष्ट क्रिया करे छे तेने देमकाना चूर्ण जेटली निर्जरा थाए कहेवाय पण एना आत्मानु कल्याण थाय नही

हवे जे समकित पामेला जीव तेना त्रण भेद समकिती अविरती ॥१॥ बीजा समकिती देशविरती ॥२॥ त्रीजा समकिती सर्वविरती ॥३॥ ते मध्ये प्रथम भेद समकिती अविरती तेने व्रत पच्चखाण कशु छे नही अही कहे के मिथ्यात्वी ने वृत पच्चखाण कह्यु अने समकितीने व्रत तप पच्चखाणनी ना केम कहो छो तेनो उत्तर के– ए गुणस्थानकनी परिणती एवी छे ए गुणस्थाने सर्वथा व्रत पच्चखाण होय नहीं अत्र दृष्टांत– जेम कोइ व्यापारीने पासे पुंजी नथी अने जो

धीरनार मळे तो लाखो रुपैयानो व्यापार करे
पण अही व्यापार करवो ते सर्व लाजनी आशाए
छे पण खोट जाय तो घरमांथी देवा छे नही
तेथी निश्चिन्तपणे व्यापार करे पण जेनी पासे
पांच रुपीआनी शक्ति छे ते प्रमाणे पोतानो
धंधो करी रोटला पेदा करे छे तेने लोक कहे
के तमे नामरदा छो रांमीरांमनी गोमे व्याज
खाइने पमी रहो छो तमारी गोमे अमारी पासे
धन होत तो अमे व्यापार करता आ वखत
पेदाश सारी छे एवुं सांभळे तो पण वीचारे के
लांबु करतां धन खोइ वेसिये माटे आपणुं धन
रहे ने रोटला पेदा थाय तेवो धन्धो करवो अही
उपनय जोम्ये छिये जेम ते निर्धन पुरुष तेम
अही मिथ्याद्रष्टी ते जेम लांबो व्यापार करे तेम
आ व्रत्तनेम कष्टक्रिया घणी करे जेम पेलाने
खोट जाय तो घरमांथी कंइ देवुं नथी तेम
आने व्रत्तादिमां दोष लागे तो समकितादि धन
जावानुं छे नही. जेम ते अल्पपरिधिवाळो
धनसाचवी वेसी रहे तेम समकित्ती जीव सम-
कित गुणने साचवी वेसी रहे ए रीते जाणवुं

हवे उपला गुणस्थानवाळा जिव व्रतादि व्य-
वहार करे पण ज्ञानगुणनी समज विशुधीये
वरती नथी अने व्रतनेम तपजप क्रिया रुडी
रीते करे तेने देडकाना चुर्ण जेटली निर्जरा थाय
अही कोइ केशे जे समकित प्रगटयू तेने ज्ञानी
कहिये ॥ तेनो उत्तर ॥ समकित गुण चोथा
गुणस्थाननो छे अने आ व्रतादि गुण ते पा
चमा छठा गुणस्थानके व्यवहारथि छे एटले सम-
कित बे प्रकारनु छे शुद्ध समकित ॥ १ ॥ अ
शुद्ध समकित ॥ २ ॥ हवे शुद्ध समकित ते
आत्मस्वरुप तद्वत् जाणे तेने कोइ रीतथी शुभा-
शुभ कर्म लागु थता नथी ते क्षायिक समकित
कहेवाय ते तदभवे पण मोक्षे जाय तेने ज्ञानी
कहिये एटले विशेप जाणे एटलो विशेप कहीसु
पण ज्ञानी छे अही तरतम जोग रह्यो छे, हवे
जे अशुद्ध समकिती छे तेना बे भेद उपसम
समकित १ क्षयोपसम समकित २ उपसम सम
कित तो अंतर मुहुरत स्थीतीनु छे ते अधीक
रहेतु नथी एटले तेनु अही कहेवानु नथी हवे
क्षयउपसम समकित तेना रुचक आदि अनेक

भेद छे पण क्षय उपसम एवुं नाम ते शुं जे उदय आवी कर्म प्रकृत्ति तेने क्षय करे अने आत्म प्रदेशे सत्तामां होय तेने उपसमावे एटले बे मलीने क्षयोपसम समकित कह्युं एटले मिथ्या तक्षय कर्यो ते समकित अने उपसमावी ते मोहनी एटले एनु नाम मीश्र समकित थयुं अही समकित मोहनीनो उदय वच्ये वच्ये जणाय तेथी तेने खरो ज्ञानी कहेवाय नही अने व्रत पच्चखाण ए समकितने अनुसारे घणुं करीने छे अथवा मिथ्यात्विने पण होय ते माटे अही कह्युं के समकिती ज्ञान वीसुधि विना व्रतादि कष्ट करे तेने देस्काना चूर्ण प्राय निर्जरा कही एटले वृत्तादिक धर्म अनेक भेदे छे कारण के भगवतीजीमां दश पच्चखाणनो अधिकार छे त्यां चारित्र पण ते मांहेलो एक भेद छे. अथवा उपवासादी तप ते ए दश पच्चखाण मध्ये एक काल पच्चखाण छे तो अही निर्जरा शुं भाग आवे तथा उतराध्यनमां मुनि ज्ञानीने कह्या छे ते माटे क्रियाकष्ट तपजप तेथी निश्चय साधुपणुं थाय नही ए कंइ संवर निर्जरा कहेवाय नही एतो

व्यवहारथी छे. माटे कष्टक्रिया तो सर्व जीवने सरखी छे पण फळभेद उपयोग तथा प्रणामथी छे अने क्रियाकष्टथी कर्मनु आववुं थाय पण जेवो जेवो प्रणामवर्ते तेवो तेवो बन्ध पडे एटले प्रणामथी बन्ध पडे अने धर्म तो उपयोगमा छे माटे क्रियाकष्टथी निर्जरा केम सम्भवे माटे देरू-काना चूर्ण प्रमाणे कही अने जोएम नहि मानो तो शास्त्रथी विरुद्ध थाशे कारण के भग-वान श्री वर्धमान स्वामीना शीष्य हाथ दक्षित १४००० साधुछे तेमां जमालीआदे बेजणा नि-न्हवथया ते क्रियाकष्ट तपजप कर्ता हता तेमां कशोए भीन छे नहि एटले तेनी क्रिया उत्-कृष्ट कही छे पण ते निची गतीए गया तथा बीजा साधु रह्या तेमा सातसें ७०० साधु मोक्षे गया बाकीना साधु मोक्षे गया नथी कदापि कोइ कहेशे जे अन्य क्रिया तप ओछो कर्यो हशे तेनो उत्तर खधकमुनि तापसी दिक्षा छो-डीने भगवान महावीर पासे चारित्र लीधु गुण रत्नाकर सवत्सर प्रमुख तप कर्यो अने मासख-मण पाशखमणादि तप कर्यो छेवटे एनां हाडका

खम खमथां ए अधिकार भगवतीजीमां छे. वली धनाकाकंमी प्रमुख बीजा साधुओनां तपथी शरीर शोषाणां तेमने खंधकनी उपमा आपी छे. पण खंधकने कोइनी उपमा नथी एवुं शरीर दुर्बळ थयुं त्यां कोयलाप्रमुख घणां दृष्टांत कह्यां छे छेवटे शरीरनी शक्ति मंद पमी त्यारे अणशण कर्युं तेने भगवंते आराधक कह्या छे पण देवलोक १२ मे गया एम मेघकुमार आदे साधु महातपस्वीथया पणमोक्षेनगया. तो प्रत्यक्ष अही समजवामां आवे के जेवो उपयोग तेवी निर्जरा ते ज्ञानने आधिन छे बीजाने आधिन उपयोग नथी तथा श्रीभगवतीजीमा कह्युं छे के करोमउपवासे जेटलां कर्मनारकीनां खपे एटलां कर्म ज्ञानीने एकस्वास उंचो लेइने निचो मुके एटलामां खपे एवा अधिकार सूत्र तथा प्रकरणे छे तथा श्रीजिनविजयजी महाराजे पांचमना स्तवनमां कह्युं के ज्ञानी एकक्षणमां सर्व कर्म नाशकरे तथा जशविजयजी महाराजे कह्युं के करोमभवसुधी आकरो तपकर्ते करमनखपे एटलां कर्मज्ञानी अर्धक्षणे खेरवे (श्रीपालना

रासमा चोथे खंमे) ॥ देशनानी ढाले ॥

क्षण अर्धे जे अघ टले,
ते न टले भवनी कोमीरे ॥
तपस्या करता अतिघणी,
नही ज्ञानतणी छे जोमीरे ॥
नही ज्ञानतणी छे जोमी,
संवेग गुण पालिये पुण्यवन्तरे ॥ ३ए ॥

वळी हेमाचार्यजीये योगशास्त्रमां कह्यु छे —

॥ अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

प्रणिहंति क्षणार्धेन, साम्यमालम्ब्य कर्मतत् ॥
यन्न हन्या न्नरस्तीव्र, तपस्या जन्म कोटिन्नि ॥५१॥

तथा ज्ञानार्णवे —

॥ अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

यज्जन्म कोटिन्नि पापं, जयत्यज्ञस्तपो बलात् ॥
तद्विज्ञानी क्षणार्धेन, दहत्यतुल विक्रम ॥ १ए ॥

इत्यादि वर्म समजी लेवु के क्रियार्थी कर्मनी निर्जरा विशेष नथी क्रियाने चालनय कही छे एटले अज्ञानपणु छे अज्ञानी एकरे अने ज्ञानी एकरे एमां विशेष नथी तेथी क्रियानु

वहु मान नथी हवे जे ज्ञानी छे ते समुरू जेटली निर्जरा करे ते शा माटे के ज्ञानी आत्मोपयोगे छे अने आत्मा छे ते स्वधर्मग्राही छे, स्वधर्ममां वर्ते त्यां कर्मवन्ध होय नहि कारण के कर्मवन्धनां हेतु मिथ्यात्वादि ते स्वधर्ममां वर्ततां लागु थाय नहि. अने पोते पोताना धर्मे वर्ततां परधर्मी जे पुद्गलादि कर्म एटले कारमण वर्गणा ते रही शके नहि जेम आपणे घरे घणा लोको पोताना काम अर्थे आवे पण आपणे काममां होइये त्यारे तेने बोलावीए नही एटले तेओ तेने स्वभावे पाछो जाय तेम आपणे आत्मोपयोगे रमिये त्यारे वर्गणाओ कोनी साथे बेसे ? एतो एनी मेळे सर्व नाश पामे एमां कंइ सदेह नही अने भगवतीजीने विशे निर्जरा एवुं नाम आत्मानुं छे एटले आत्मा नीज घरमां रमे एटले निर्जरा थाय अने एम न होय तो ऐवंता मुनि केवल ज्ञान पाम्या ते स्या बळथी पाम्या अही क्रिया तप कंइ छे नही एनी बाल अवस्था छे एटले आठ वर्षनी ऊमर छे ए अधीकार भगवतीजी तथा अन्तगम्द दशाङ्गांथी

जाणवु तथा प्रश्नचन्द्र राजरुषि क्षण एक पहेला तो सातमी नर्कनां दल मेलवेलां हतां तो तेवा दलनो क्षय करीने केवल ज्ञान पाम्या क्रिया कष्ट तो पूर्वे हतु तेथी सातमी नरकनां दरवाजा मेलव्यां तो क्रिया कष्टनु कइ उपज्यु नही अने तो ज्ञानभाव रुप लाग्यो एटले उपयोग करतां श्रेणिआरोहणकरीने कर्मदल क्षय करी केवल ज्ञान पाम्या एम अनन्ता साधु मोक्षे गया जाय छे अने जशे ने सर्वे ज्ञाननु बळ जाणवुं माटे ज्ञान सहीत जे पुरुष तेने कर्मनी निर्जरा समुरू जेटली थाय एटले ज्ञानीनी क्षण घणी सारी छे पण अज्ञानीनो भव रुपनो नथी अने जे निर्जरानु थवु एतो ज्ञान उपयोगमा रह्यु छे कारण के समकित गुणस्थानथी मांमीने यावत सिद्धि वरवु त्या सुधी निर्जरा थाय ते अंशे अ-शे समजवी सिद्धिवर्या एटले सम्पूर्ण निर्जरा थइ चुकी अने गुणस्थान चोथाथि माडीने विशुधिपणे जेटलो जेटलो आत्मोपयोगे चढतु चढतु तेने गुणस्थान कहेवाय अने त्या त्या आवरण ते-टलां तेटला अधिक टलता जाय ते माटे उप-

योग ज्ञानीने घेरज छे ते प्रत्यक्ष देखो भर्त चक्रवर्ति महाआरंभ परिग्रहनो धणी अरीसाभुवने एक क्षणे केवल ज्ञान उपार्जी चोथा गुणस्थान वाला तेरमे गुणस्थाने गया. ज्ञानी एम निर्जरा करे छे ते माटे ज्ञानीनी निर्जरा समुद्र (प्रत्ये) जेटली करे अही कहे के आवष्यकमां जे भर्तादिकनो दृष्टांत दइने व्यवहारने उथापे तेने पासथ्या कह्या छे तेनो ॥उत्तर॥ जे आवष्यक सुत्र व्यवहारनुं छे माटे एतो व्यवहारनी पुष्टी करे ते एकज शास्त्रग्रन्थ उपर चित्त देवुं नहि पण सर्व शास्त्र उपर द्रष्टि देवी जोइए अने आपणा मनथी विचार करवो के आवष्यकादि क्रिया तो सर्व साधु श्रावक व्यवहारे करे एथी मुक्ति कोइनी थइ नही अने थाय नहि ए बाह्य योग छे पण अन्तरगत आत्मोपयोगे रमणताथी निर्जरा थाय एटले ज्ञानीने समुद्र जेटली निर्जरा थाय ए वात सत्य छे एवुं उपदेश पद ग्रंथमां कह्युं छे उक्तंच उपदेश पदग्रंथे मंडुक चुन्न कप्पे ॥ क्रीयाजाणिज कुअकिलेसाणं ॥ तदङ

रचुन्न कप्पो नाणकत्ततच आणाए
इति सप्तम गाथार्थ.

जपदेश पद ग्रथे ए भाख्यु,
तेह विचारीने जोजोरे ॥
सर्व आराधक भगवइए ज्ञानी,
देश आराधक क्रिया केजोरे ज्ञान० ॥८॥

आ गाथामा कह्यु के जपदेश पद ग्रथे जो जो ते पूर्वे सातमी गाथाना अर्थे कही गया ते विचारी जोजो एटले समजमा आवशे पूर्वार्धना बे पदनो अर्थ आगलनी गाथामा कह्यो हवे उत्तरना बे पदनो अर्थ एम छे के ज्ञानी सर्वथी आराधक अने क्रिया देशथी आराधक तेनो खुलासो एम छे के-भगवतीजीना दसमा सतकना विषे आराधक अण आराधकना चार प्रश्न श्री गौतमस्वामीए पुछया अने भगवान श्री वीरस्वामी उत्तर आपे छे ते आ प्रमाणे छे

प्रथम प्रश्न पुछयु के क्रियावाळो आराधक के विराधक बीजु प्रश्न ज्ञानी आराधक के विराधक त्रीजु प्रश्न ज्ञानक्रिया सहित आराधक के विराधक चोथु प्रश्न ज्ञान क्रिया रहित आराधक

के विराधक एवी रीते चार प्रश्न पुछया तेनो जे उत्तर दीधो ते वताविये छिये पहेला प्रश्नमां क्रियानो करनारो देशथी आराधक ने सर्वथी विराधक वीजु प्रश्न ज्ञानी छे अने क्रिया नथी ते सर्वथी आराधक अने देशथी विराधक, त्रीजु प्रश्न जे ज्ञान क्रिया सहित ते सर्वथी आराधक विराधक नथी चोथु प्रश्न ज्ञान क्रिया रहित ते सर्वथी विराधक आराधक नथी हवे तेनो विशेष खुलासो निचे मुजब छे.

क्रियाना करनारापर भावरंगी थया एटले पुद्गल भावने विशे राग छे जेने तेने पर भावरंगी कहे छे एटले वाह्य क्रिया, कष्ट, तप. व्रत. नेम उपर राग रह्यो पण तेने आत्म स्वरुपनुं जाणपणुं करवानो राग नथी फकत क्रिया उपर वाह्य द्रष्टि थयो तेने वहीरात्मा कहे छे तेना आत्मानुं कल्याण थाय नही एतो चारे गती संसारमां रखमे अहो कहे के एने देश आराधक कह्यो छे अने तमो भव भ्रमण वतावो छो तेनो उत्तर के भगवाननी आज्ञा प्रमाणे व्यवहारे असुभ आचर्ण वृजीने सुभ प्रवर्तीये चाले

छे तेथी तेने देश आराधक कह्यो पण निश्चय अपेक्षाये आत्माने जाण्यो ओळख्यो नथी ते जोतां आराधक नथी कारण के व्यवहारे आज्ञा प्रमाणे अज्ञानी चाले तेने देश आराधक कह्या अने समकित धारी जिव आज्ञाथी एक जरा मात्र बहार पड्या तेने विराधक कह्या ते वसे ने छ अध्यन (२०६) ज्ञाताजीना बीजा सुतस्कंधमां छे ते (२०६) ए देवीओ चारनी कायनी थइ तेतो आज्ञा विरुद्ध केटलु काम करे छे जे हाथ पग पखाल्या तेथी ए विराधक कही पण समकित सहित छे अने आवते भवे केव्हक मोक्षे जशे तो पण एने विराधक कहि ते सूर्य चन्द्र प्रमुख निराणीयो थइ एटला कारणे विराधक कहेवाणी तो अही व्यवहारथी ए सुत्र क्रिया पक्ष अपेक्षाए आराधक विराधक कहे छे पण पर्मार्थे जोतां आराधकपणुं छे नहि वली देश आराधक कह्या पण एना भावनो नेम बांध्यो नहि अथवा समकित पाम्या न पाम्या ते पण कह्यु नहि अने आ काळे जे क्रिया करे छे ते आज्ञा प्रमाणे थती नथी शा माटे के बीजु तो छेटे रह्यं

पण हाथपग धोवा शरीरना मेल परां करवा वस्त्र धोवां रंगवां ए सर्वे भगवाननी आज्ञा बहार छे केम के पूर्वे हाथपग धोया तेने विराधक कह्या तेना स्वामी उपर देखाड्या छे, अने अहींयां तो हाथपग उपर ए नेमनथी केमके सुत्रमां तो " नवीरंगेजा नवी धोवेजा " एवा पाठ छे अने अहींयां तो आपणे सर्वे करिये छिये तथा वस्त्र जिरण राखवानो अधिकार छे नवां लेवानो अधिकार नथी. ते पण सर्व साधुने वस्त्र राखवा अधिकार नथी कोइ साधु आश्रयि छे तथा सर्वथा साधुने मास कल्प उपरान्त रहेवानो शेष काले मार्ग नथी. अने चतुर मास उपर वर्षाकाले रहेवानो अधिकार नथी कदापि जीवनी उत्पत्ति रही होय अने विहार करवाथी हंसा थती होय एवुं मालम पडे तो एक पखवाडीयुं विशेष रहेवानो अधिकार छे तथा जे वृद्ध साधु होय अथवा गलान होय अने विहार थाय एवुं न होय तो एक गाम मध्ये नव उपाश्रयमां रहीने वर्ष पुरु करे अथवा तेथी पण गलान होय अने जंघा बलहिण थइ गयुं होय बीजे

उपाश्रये जवानी शक्ति न होय तो एक उपा-
श्रयमां नव भाग कल्पे अने अकेको भाग वा
परे बीजा भागने वापरे नहि एम नव कल्प
पूर्ण करे एवी रीतनी आज्ञाओ कल्प आश्रये
छे तेमां आपणे शी आज्ञा पालीए छिये ते वि-
चारी जो जो एटले समजासे के आराधकमां छु
के विराधकमां छु कदापि कोइ क्रियाना आडंबरी
वृद्ध तथा गलानपणा विना एक गाममा नव
उपाश्रय कल्पीने रहे छे अथवा एक उपाश्र-
यमां नव भाग कल्पीने रहे छे ए सर्वे कपट
क्रिया छे लोकमां मनावा पुजावा माटे एवा काम
करे ए आज्ञा विरुद्ध छे तो विचारी जुवो के शी
रीते आराधक थाय अने देश आराधक अहीं
कह्या छे तो देशनाम किन्चितनु छे एटले आ
ठेणमां देश ते किन्चित मात्र वस्तु छे ते आ-
राधकपणामां शु कल्याण थाय अहि कोइ कहे
के ज्ञानीने आराधक कह्या ते पण तेवुज के
नहि तेनो उत्तर ज्ञान तो सब्दनयनि प्राप्तिये
आतम धरम छे अने ए नयनि प्राप्ति अभावे
रुजुसुत्रनय सुधि ज्ञान होय तेनेज अज्ञान कहे छे

वळी अज्ञाननुं नाम मिथ्यात्व छे त्यां सुधि ज-
न्मत्व द्रष्टि छे एटले कायाने विशे चेतनपणानि
भ्रांति छे यथार्थ रीते टलि नथी परन्तु रुजुसुत्र-
नय सापेक्ष द्रष्टिये सब्दनयनुं कारण छे ते कारणे
कार्यरुप शब्दनय पाम्यां अनुभव प्रगटे स्वस्वरुप
अनुभवे त्यारे सम्यक् ज्ञान कहेवाय त्यां जड
चेतनना विभाग एटले जुदापणुं व्हेंचणपुर्वक
थाय जडसत्ता, चेतनसत्ता, भिन्नभासे असंकि-
तपणे निर्धार श्रद्धापुर्वक निश्चल थाय त्यां स-
मजे के आत्म सत्ताये शक्तिभावे तिरोभावीपणे
गुणपर्यायादि अनन्तो धर्म रह्यो छे तेमांथी व्य-
क्तिभावे प्रगट थाय ते म्हारो धर्म एम श्रद्धा
छतां एने कंइ दुषण लागतुं नथी कारण के
ए आत्मानो मूल स्वभाव सतवस्तु छे तेने बाह्य
क्रिया वलगाम्वी ते कलप आश्रय छे एटले क-
लपनी मर्याद राखवा आपणा शासननी ओळ-
खाण शासनने दीपाववा माटे छे. वळी कलप
तो अनेक रीतना छे जे वस्तुनी एकमां हा पाडी
ने बीजामां ते वस्तुनी ना पाडी छे जेम पच
सुमती त्रण गुपती ब्रह्मचर्य इत्यादिनी पुष्टी सर्वे

शास्त्रमां ठे अने भगवतीजीने विशे पण. तेनी पुष्टी ठे अने तेना पाळवावाळाने आराधक ठाम ठाम कह्या ठे अने तेज भगवतीजीने विशे तेना पाळनारने विराधक कह्या ठे कल्पनो एक पक्ष नथी केमके साधुने आहारने विशे दूषण लगावे तो ते साधु नरके जाय एवुं दश वैकालीक कहे ठे अने भगवतीजी कहे ठे के चारीत्रनो विराधक भुवनपतिथी नीचो जाय नही अने सुधर्म देवलोकथी उपर जाय नही तेमज सुकमणा साधवी बीजे देवलोके गइ ते चारित्र विराध्या छतां गइ तथा ईशान इन्द्रनी आठे अग्र महिषीओ चारित्र विराधीने बीजे देवलोके गइ तो अहियां कल्पनो एक पक्ष मानता विरोध आवे एटले तेने मिथ्यात्व लागे तथा समकित धारी जीव देवलोकथी नीचु आयुष्य बाधे नहि . जो प्रथम बांध्यु होय तो ते गतिमा जाय . नहि तो अवश्य देवलोक विना बिजु न बाधे तो श्रावक विराधक भुवनपती तथा व्यन्तरमा जाय तेथी उपर न जाय अने नीचो न जाय ते वचननु मळवु कये ठेकाणे छे कारण के साधु तथा श्रा-

वक विरतिपणाथी विराधक थया पण समकित गुण तो गयो नथी अने नरक बतावे छे अथवा भुवनपति व्यंतरज्योतिषि बतावे छे तेनी शी रीत छे ते विचारी जुओ कल्प तो अनेक तरेहना छे माटे कल्प उपर एकान्ते भरोसो राखवो नहि अने जे आहारनुं दूषण कह्युं हतुं ते पण सुगमाङ्गने विशे आधाकरमी आहारना दोष गणता नथी ते माटे ते कल्प आश्रये गाथाओ सुगमाङ्गजिनी पूर्वे लखी गया छिये तथा आवश्यकने विशे आधाकरमी आहार नित्यपिंड, सय्यातरपिंड, राजपिंड इत्यादि कारणे छुटी छे तथा कल्पसूत्रने विशे बहुश्रुतने कंइ कल्पनो नियम राख्यो नथी इत्यादि शास्त्र विचारी जोशो तो खबर पडशे माटे क्रियाने देश आराधक कही ते व्यवहारआज्ञा आश्रये छे, बीजो परमार्थ मालम पडतो नथी पछी तत्वतो केवली जाणे अने ज्ञानीने सर्वथी आराधक कह्या छे, एटले ज्ञानी तो स्वस्वभावना रमणीक, अने परभावना त्यागी छे, ते ज्ञानीपणुं जेने आत्म स्वरुपनुं जाणपणुं अने रमणता श्रद्धा सहित होय तेने ज्ञानी

कहिये ते पुद्गलनो अनुभव करे नहि एटले पुद्गलभावनो भोगि न थाय, जे जे करणि करवी तेतो पुद्गलीक छे अने पुद्गलभाव विनाशी छे ते आत्माने गुण करता नथी ए तो आत्माथी भिन्न पुद्गल द्रव्य छे तेथी आत्मानु कल्याण थाय नहि, अथवा बे द्रव्य मळीने पण आत्मकार्य थाय नहि विभाग वहेचण थया एक आत्मअनुभवथी कार्य थाय एवु सुमति प्रमुख ग्रन्थोमां कह्यु छे माटे पुद्गल तो पुद्गलनु कार्य करशे एटले पुद्गल पुद्गलने मेळवशे जो शुभ करणि करशे तो शुभ कर्मबन्ध थशे अशुभ करणी करशे तो अशुभ कर्मबन्ध थशे, एटले अशुभथी नरक तीर्यचादि गती मळशे अने शुभ करणिथी देव मनुष्यनी गती मळशे त्या शुभाशुभ भोग मळशे ते सर्वे पुद्गल छे, आत्मानु हित तेमां छे नहि ए तो सर्वे जगतनी अंठ छे एटले अनन्ता जीवे पुदगल ग्रहीने वम्या छे एटले अकेके जिव ए पुद्गल सर्वे अनन्ती वार ग्रहण करी करीने वम्या छे तथा सिद्ध जिव अनन्ता ते पण वमीने गया छे माटे ते जगतनी एठ क्हेवाय अने ज्ञानी एठनो चाहनार न होय, अ-

ज्ञानी होय ते चाटे ए पुद्गलनो अनुजव ज्ञानी-ने घरे ठे नहि तेतो एक आत्मानो अनुभव करे ठे एटले आत्मस्वरुप ज्ञानदर्शन चारित्र सहित तेने आत्मा कहिये अथवा जीन्न कल्पनाए जिन्न पणे ज्ञानदर्शन चारित्रनो अनुजव करे ते जेद ज्ञान कहेवाय पण त्यां अशुद्ध उपयोग ठे अने अजेद अनुजव करवो ते शुद्ध उपयोग ठे ते विचार पूर्वे नय अधिकारने विशे कह्यो ठे तेथी जाणजो एम अंतर आत्मानुं लक्षण जे जीवमां ठे ते ज्ञानी कहेवाय. बहिरात्मानुं लक्षण जे जी-वमां ठे ते अज्ञानी कहेवाय एटले बहिरात्मा ते बाह्य क्रियारागी तेने देशथी आराधक कह्या ते व्यवहार आज्ञा आश्रये जाणवा अने ज्ञानीने सर्वथी आराधक कह्या ते आतमअनुजव आश्रये निश्चयथी जाणवा एटले ए आठमी गाथानो अर्थ संक्षेपथी कह्यो

इत्यादिक ज्ञान जे पाम्या, समकित शुद्ध तस कहीएरे,तेह ज्ञानी पम्रे नही पाठ, एवुं माहानिशी-थये लहीएरे. ज्ञान०ए अर्थ–जे जीव अजीवादि द्रव्यनुं स्वरुप जाणे ते ज्ञानिने समकित शुद्ध होय ते

ज्ञानी समकितथी पाग पमे नहि एवुं महानिसिथ सूत्रमा कह्यं छे द्रव्यादिकनुं जाणवुं एटले पट्द्रव्यनु जाणपणुं जेने छे तेने ज्ञानी कह्या छे ते पट द्रव्यना नाम कहे छे धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ पुद्गलास्तिकाय ४ जीवास्तिकाय ५ अने काल ६ ए पटद्रव्यनु जेने जाणपणु होय ते ज्ञानी हवे ते पटद्रव्य मध्ये पुद्गलास्तिकायनी ओळखाण प्रथम करवी जोइए अही केहेशे के जीवद्रव्यनी ओळखाण करवी जोइए, पुद्गल द्रव्यनु शुं काम छे तेनो उत्तर के जीव द्रव्य तो अमुर्त छे ते दृष्टीगोचर छे नहि एतो भगवानना वचनथी सर्दहवानु छे अथवा विशेष जाणपणु थाय तेने पोताना ज्ञानवमे समज्यामा आवे पण प्रथम जीवद्रव्यने ओळखवा जाय तो नहि ओळखाय केमके अरुपी पदार्थ छे माटे प्रथम रुपीद्रव्यने यथार्थ ओळखवो जोइए तो अरुपी पण ओळखाय ते विना अरुपी ओळखाणमा आववो मुस्केल पडे जे प्रत्यक्षरुपी पुद्गल द्रव्य छे तेने यथार्थ समजता घणी महेनत छे अने प्रतक्ष छए दर्शनवाळा एना स्वरुप जुदा

जुदा बांधे छे पण एकसरखु बंधातुं नथी तथा जैन दर्शनने विशे दिगम्बर, श्वेताम्बरना मानवामां केटलीक स्वरुपने विशे भिन्नता पडे छे तथा श्वेताम्बर पक्षना पंम्तिोना बांधवामां पण भिन्नभाव पडे छे केमके पुद्गलद्रव्य समजवो ते सहज नथी कठण छे. माटे आत्म स्वरुप अरुपी पदार्थ होवाथी तुरत समजवामां आवे नही माटे प्रथम पुद्गलद्रव्यनुं जाणपणु करवुं जोइए तो आत्मद्रव्य सुखे समजवामां आवे माटे अही पुद्गलद्रव्यनुं स्वरुप शंक्षेपथी कहे छे ते तमे ध्यान पूर्वक एकाग्र चित्ते धारशो अने तेमां रमणता करशो तो तमने एटले श्रोता तथा वक्ताने घणो फायदो थशे हवे जे पुद्गलनो अधिकार ते वर्णादिक तथा संस्थान अवगाहना तथा स्थिति साथे कहेवाशे पुद्गलद्रव्यनी मूळ वर्गणा आठ छे तेनां नाम—औदारीक १ वैक्रीय २ आहारक ३ तैजस ४ भाषा ५ स्वासोस्वास ६ मन ७ कार्मण ए आठ भेद छे. वळी ते पुद्गलद्रव्य बे प्रकारे छे एक १ जीव सहीत अने बीजा २ जीव रहित अही तो पुद्गलद्रव्यनुं कहेवुं छे परन्तु जीव रहितनी

अपेक्षाए विविक्षा (वर्णन) करतां जीव सहितनी अपेक्षाना वर्णननो अन्तर्भाव आवे तेम जीव सहितनी अपेक्षाए विवक्षा करतां जीव रहीत ए भेद पण उत्पन्न थाय कारण के अन्योअन्य अनादि सबन्धीछे अने ह्वां तो पुद्गल स्वरुपने ओळखावबु छे तेथी सबन्ध बन्नेनो ज्या जेनो खप हशे त्या ते आवशे ते समजी लेवुं हवे पुद्गलद्रव्यना मुख्य चार भेद-स्कंध १ देश २ प्रदेश ३ अने परमाणु ४ हवे स्कन्धनु स्वरुप कहे छे-जे पुद्गल स्कंध छे तेना भेद त्रण छे संख्यात् १ असख्यात २ अनन्त ३ हवे सख्यातिक छे तेमा द्वि प्रदेशीय स्कंध अनन्ता छे, त्र्यणुक प्रदेशिय स्कंध अनन्ता छे एम चतुष्क प्रदेशिय स्कध अनन्ता छे एम यावत दश प्रदेशिय स्कंध अनन्त छे यावत सख्यात प्रदेशिय स्कन्ध ते पण अनन्ता छे एटले अकेक प्रदेश वृद्धि करता तेना संख्याता भेद थाय ते सर्वे अनन्त छे एम उत्कृष्ट संख्याताथी एक परमाणु वृद्धि थाय एटले जघन्य असख्यात प्रदेसिय स्कन्ध थाय अने उत्कृष्ट असंख्यात सुधी अकेक प्रदेश वृद्धि करतां तेना

असंख्यात भेद थाय ते सर्व भेदना स्कन्ध अनन्त छे तथा अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध ते अनन्ता छे एटले एक एक प्रदेश वृद्धि करतां अनन्ताना अनंता भेद थाय ते सर्व भेदना पुद्गल स्कन्ध अनन्ता छे. १ एक स्कन्धमांथी कींचित लइने पुछिये ते देश कहेवाय, २ अने जे स्कन्धना जेटला प्रदेश होय ते प्रदेश कहेवाय ३ जे स्कन्धथि जुदा एकपणे रह्या ते परमाणुं कहेवाय हवे प्रथम परमाणुं पुद्गलना स्थीति पर्याय कहे छे, तो परमाणु पुद्गलनी स्थीति जघन्यथी एक समयनी छे अने उत्कृष्टथी असंख्यात काळनी छे एटले अहीं चतुस्थानक (चोभङ्गी) लागे एटले एक समयनी छे ते असंख्यातगुणी हीन छे अथवा असंख्याताना असंख्यात काळभेदमांथी एक समयने आदिदइने उणी (ओछी) होय तो संख्यात भाग हानि अथवा संख्यातगुणी हानि होय अथवा जेने संख्यातमो भाग न लागे तेने असंख्यात भाग हानि कहे छे एम चार हानिनां अने चार वृद्धिनां स्थान लागु थाय तेथी तेने चतुस्थान पतित कहिये. तेमज द्वीप्रदेशिय स्कन्धथी संख्यात

परदेशिय स्कन्ध एम असंख्यात प्रदेशिय स्कन्धथी अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध सुधी होय अही एक परमाणु पुद्गलमा अनता पर्याय रह्या छे त्यां कोइ पुछे के एक परमाणुमा अनता पर्याय ते शु छे? तेनो उत्तर के द्रव्यथी तो एकज छे अने प्रदेशथी एने बीजा प्रदेश होय नहि पण तेमां एक वर्ण, एक गध, एक रस अने बे स्पर्श एम एक प्रमाणु पुद्गलमा पाच गुण होय अने अकेक गुणमा अनन्ता पर्याय रह्या छे तेने विशे षट गुणी हानि वृद्धि लागे तथा एक परमाणु पुद्गल अन्य एक परमाणु पुद्गल साथे द्रव्यार्थे तुल्य छे केमके एक द्रव्य छे तेथी अने प्रदेशार्थे पण तुल्य कहेवो कारण के एक प्रदेश छे तथा अवगाहनानी अपेक्षाए तुल्य छे कारण के एक प्रदेश वनेनी अवगाहना छे अने स्थीति आश्रये कोइनी स्थीति हीन होय १ तूल होय २ अधिक होय ३ जो हीन होय तो असख्यात भागे हीन होय अथवा सख्यात भागे हीन होय अथवा सख्यातगुणी हीन होय अथवा असंख्यात गुणीहीन होय अथवा अधीक होय तो

असंख्यात भागे अधीक होय अथवा संख्यात भागे अधीक होय अथवा संख्यात गुणी अधीक होय अथवा असंख्यात गुणी अधीक होय एटले ए चतुस्थान पतित होय एटले तेने विशे चतुर्गुणी हानि वृद्धि लागे पण षट गुणी हानि वृद्धि तेने न लागे एटले ते स्थीति आश्रये कह्युं हवे जे काळा वर्णना पर्याय अनन्ता छे तेने विशे छगण वडीआ लागे एटले एक काळा वर्णनो परमाणु अने बीजा पण काळा वर्णना छे तेमां जे पर्यायनु भिन्नपणु एटले श्याम वर्ण वत्तो के ओछो होय तेने भिन्न कहिये हवे काळा वर्णनो परमाणु कोइ हीण होय १ कोइ तुल होय २ अने कोइ अधीक होय ३. हवे जे परमाणु वर्णे हीन होय ते केटलो हीन होय ते कहे छे—अनन्त भागहीन १ असख्यात भागहीन २ संख्यात भागहीन ३ संख्यात गुणोहीन ४ असंख्यात गुणोहीन ५ अनन्त गुणोहीन ६ हवे अधीक होय तो केटलो अधिक होय अनन्त भाग अधीक १ असंख्यात भाग अधीक २ संख्यात भाग अधीक ३ संख्यात गुणो अधीक

धिक जे हीन ते एक प्रदेशहीन, कोइ बे प्रदेशे हीन अधिक ते कोइ एक प्रदेशे अधिक कोइ बे प्रदेशे अधिक एम एनी स्थापना शास्त्रथी जाणवी ए सर्व बे स्थान पतीत छे वर्णादि सर्व छ स्थानपतित छे ते पूर्वनि पेठे जाणवु, एम यावत दश प्रदेशिय स्कन्ध सुधी अवगाहनार्थे जेटला प्रदेशनो स्कन्ध तेटला प्रदेशनी हानि वृद्धि करवी जे नव प्रदेशनो स्कन्ध अने बिजो नव प्रदेशनो स्कन्ध तेने विशे द्रव्यार्थे, प्रदेशार्थे तुल्य कहेवो, अवगाहनार्थे कोइ हीन कोइ तुल्य कोइ अधिक जे हीन ते कोइ एक प्रदेशहीन कोइ बे प्रदेशहीन एम यावत् कोइ आठ प्रदेशहीन एम जे अधिक होय तेने विशे कोइ एक प्रदेशे अधिक कोइ बे प्रदेशे अधिक यावत् आठ प्रदेशे अधिक एम दश प्रदेशिय स्कन्ध होय तेने विशे द्रव्यार्थे प्रदेशार्थे तुल्य होय अवगाहनार्थे कोइ हीन कोइ तुल्य कोइ अधिक, जे हीन ते कोइ एक प्रदेशहीन, कोइ बे प्रदेशहीन, यावत् नव प्रदेशहीन एम अधिक होय ते कोइ एक प्रदेशे अधिक, कोइ बे प्रदेशे अधिक यावत् नव प्रदेशे

अधिक एम संज्ञाए अवगाहनार्थे हानि वृद्धि करवी ते सर्वे द्विस्थानपतित छे अने वर्ण १ गन्ध २ रस ३ स्पर्श ४ तेने विशे षट्स्थानपतित छे, उपरना चार स्पर्श विना कहेवुं, एम संख्यात प्रदेशिय स्कन्धने विशे अनन्तापर्याय कह्या छे, ते कहिये छिये-संख्यात प्रदेशिय स्कन्ध संख्यात शा माटे जे संख्यातिक द्रव्यना संख्याताभेद होय तेथी अधिक न होय ते माटे द्विस्थानपतित कह्या तेवा तेवा प्रदेशिय स्कन्ध साथे द्रव्यार्थे तुल्य अने प्रदेशार्थे कोइ हीन कोइ तुल्य अने कोइ अधिक जे हीन ते संख्यात् भागहीन १ संख्यातगुणोहीन २ अधिक ते संख्यातभाग अधिक ३ संख्यातगुणो अधिक ४ एम अवगाहनार्थे कोइ हीन कोइ तुल्य अने कोइ अधिक जे हीन ते सख्यात भागहीन १ संख्यात गुणोहीन २ अधिक ते संख्यातभाग अधिक, संख्यातगुणो अधिक एम ए द्विस्थानपतित होय अने वरणादि छ स्थानपतित होय. उपरना चार स्पर्श विना कहेवुं असंख्यात परदेशिय स्कन्ध छे तेने विशे अनन्ता पर्याय कह्या छे. असख्यात प्रदेशिय

स्कन्ध अन्य असंख्यात परदेशिय स्कन्ध साथे द्रव्यार्थे तुल्य अने प्रदेशार्थे कोइ हीन १ कोइ तुल्य २ अने कोइ अधिक ३ जे हीन ते कोइ द्रव्यना प्रदेश असरयात भाग हीन १ कोइ सख्यात भाग हीन २ कोइ सख्यात गुणो हीन ३ कोइ असख्यात गुणो हीन ॥ जे अधिक ते कोइ असख्यात भाग अधिक १ कोइ संख्यात भाग अधिक २ कोइ सख्यात गुणो अधिक ३ कोइ असरयात गुणो अधिक ४ एम अवगाहनार्थे पण हीन १ तुल्य २ अधिक ३ प्रदेशार्थनी पेठे कहेवु ए चतुस्थानपतित छे कारण के असख्यातिक द्रव्यना प्रदेशनी अवगाहना असरयात भेदे छे माटे तेने चतुस्थान पतित कहिये पूर्वनी पेठे हवे अनन्त प्रदेशिय स्कन्धने विषे अनता पर्याय छे ते देखाडीए छीए अनन्त प्रदेशीय स्कध अने अन्य अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध साथे द्रव्यार्थे तुल्य अने प्रदेशार्थे कोइ हीन १ कोइ तुल्य २ कोइ अधिक ३ जे द्रव्यना प्रदेश हीन ते कोइ अनन्त भाग हीन १ कोइ अस

ख्यात भागहीन २ कोइ संख्यात भागहीन ३ कोइ संख्यात गुणोहीन ४ कोइ असंख्यात गुणोहीन ५ कोइ अनन्त गुणोहीन ६ एम कोइ अधिक ते अनन्त भाग अधिक १ कोइ असंख्यात भाग अधिक २ कोइ संख्यात भाग अधिक ३ कोइ संख्यात गुणो अधिक ४ कोइ असंख्यात गुणो अधिक ५ कोइ अनन्त गुणो अधिक ६ एम षट्स्थान पतित छे कारण के अनन्त प्रदेशिय स्कन्धना अनन्ता भेद छे माटे षट्स्थान पतित होय जेम ए परदेशार्थे कह्युं, तेमज अवगाहनार्थे न होय कारण के अवगाहना आकाश प्रदेशनी छे अने आकाश प्रदेश लोकने विशे असंख्याता छे अने पुद्गलनुं स्थान लोकमां छे अने लोकनो आकाश षट्स्थानपतित नथी ते माटे अहियां चतुस्थानपतित होय वरणादि सर्वे षट्स्थानपतित छे स्थीति सर्वे स्कन्धनी चतुस्थानपतित छे हवे स्थीति आश्रये भाव देखाडिये छिये एक समयनी स्थीतिना जे पुद्गल स्कन्ध तेने विशे अनन्तपर्याय छे एटले एक समयनी स्थीतिना जे पुद्गल स्कन्ध ते अन्य एक

समयना पुद्गल स्कन्ध साथे द्रव्यार्थे तुल्य, अने प्रदेशार्थे पट्स्थानपतित होय अने अवगाहनार्थे चतुस्थानपतित होय स्थीति तुल्य होय वर्णादि वगाणवमीआ होय तेम यावत् दस समयनी स्थीतिने वली सग्याता समयनी स्थीति सुधि एमज कहेवु पण एटलो विशेप के स्थीति द्विस्थानपतित होय जे स्थानक पट्गुणीहानि वृद्धि पुर्वे कही गया छिये ते प्रमाणे समजजो असख्यात समयनी स्थीतिना जे पुद्गल स्कन्ध तेने एमज कहेवु पण एटलो विशेप के स्थीति चतुस्थानपतित होय एटले ते स्थीति आश्रये कह्यु हवे वर्णादि आश्रये कहिये छिये अकेका वर्णने विशे अनन्त पर्याय रह्या छे तेमा प्रथम काळा वर्णने लइने कहिये छिये एटले एक गुणोकालो पुद्गल अने अन्य एक गुणाकाला पुद्गल साथे द्रव्यार्थे तुल्य अने प्रदेशार्थे पट्स्थानपतित होय अने अवगाहनार्थे चतुस्थानपतिन होय अने स्थीति चतुस्थानपतित होय अने कालावर्णने कालावर्णना पर्याय पणे तो तुल्य होय अने वाकी जे चारवर्ण तथा

गंध १ रस २ स्पर्श ३ रह्या तेना जे पर्याय तेने विशे षट्स्थान पतित होय एम यावत् दशगुणा-काला सुधी कहेवुं अने जे सख्यातगुणा काला वर्णना पुद्गल छे तेने एमज कहेवुं पण एटलो वि-शेष के कालावर्णना जे पर्याय छे तेने विषे द्वी स्थान पतित कहेवुं बाकिना वर्ण रसादि जे पर्याय छे तेने विशे षट्स्थानपतित कहेवुं बाकी सर्व पुर्व पेठे एम असंख्यात गुणकाला वर्णना जे पुद्गल छे तेने विशे एमज कहेवुं पण एटलो विशेष के जे स्थाने कालावर्णना पर्याय छे तेने विशे चतु-स्थान पतित कहेवुं बाकिना वर्ण रसादि जे पर्याय छे तेने विशे षट्स्थानपतित कहेवुं एम अनन्त गुणा कालावर्णना पुद्गल छे तेने विशे सर्व पुर्वनी पेठे कहेवुं पण एटलो विशेष के जे स्थाने का-लावर्णादि पर्याय छे ते षट्स्थानपतित छे एटले ए कालावर्णनी वाख्या कही तेमज कालावर्णनी पेठे रक्तवादि वर्णने विशे सर्व वक्तव्यता कहेवी पण प्रत्येक वर्णना स्थानके सहुसहुना वर्णो कहेवुं, नाम जे वर्णनु होय तेज कहेवु, एटले ए वर्णनो अधिकार कह्यो. एम गंधनो अधिकार तथा र-

सनो अधिकार तथा स्पर्शनो अधिकार कहेवो सर्वे ए प्रमाणे जाणवु हवे जघन्य तथा उत्कृष्टि अवगाहना आश्रये कहिये छिये जे जघन्य अवगाहना तो द्विप्रदेशिय स्कन्धनी छे तेने विशे अनन्तपर्याय रह्या छे ते कहिये छिये जघन्य अवगाहनानो द्विप्रदेशिय स्कन्ध, अने अन्य जघन्य अवगाहनाना द्विप्रदेशिय स्कन्ध साथे द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य अवगाहनार्थे तुल्य स्थीतिपणे चतुस्थानपतित छे वर्णादि आश्रये षट्स्थानपतित छे उपरना चार स्पर्श न कहेवा एटले असख्यात प्रदेशिय स्कन्ध लगे तो चार स्पर्शज होय एटले ए जघन्य अवगाहना द्विप्रदेशिय स्कन्धने विशे अनन्तपर्याय कह्या हवे एमज उत्कृष्ट अवगाहनाना द्विप्रदेशिय स्कन्धमां पर्याय अनन्ता जाणवा ए जघन्य उत्कृष्ट अवगाहनानो द्विप्रदेशिय स्कन्ध तेमा जघन्य अवगाहनानो द्विप्रदेशिय स्कन्ध तेतो एक प्रदेशि अवगाढ होय अने जे उत्कृष्ट अवगाहनानो द्विप्रदेशिय स्कन्ध छे ते द्विप्रदेशिय अवगाढ होय एक १ अने बे २ वच्चे अन्तर नथी तेथी द्विप्रद-

शिय स्कन्धने अजघन्य अवगाहना न होय एवुं भगवाननुं वचन छे तथा त्रण प्रदेशिय स्कन्धने विशे अनन्तपर्याय कह्या छे जेम जघन्य तथा उत्कृष्ट अवगाहनाना द्विप्रदशिय स्कन्धनु कह्युं तेम जाणवुं. अजघन्यो अउत्कृष्ट अवगाहनाना त्रण प्रदेशिय स्कन्धने पण एमज कहेवो जे जघन्य अवगाहनानो त्रण प्रदेशिय स्कन्ध एक प्रदेश अवगाहीने रहे अने उत्कृष्टथी त्रण प्रदेशिय स्कन्ध ते त्रणे प्रदेश अवगाहीने रहे छे अने अजघन्य अउत्कृष्टथी त्रण प्रदेशिय स्कन्ध त द्विप्रदेश अवगाहीने रहे कारण के सादृष्य अवगाहना माटे अवगाहना अर्थे तुल्य होय हवे चतुप्रदेशिय स्कन्ध जघन्य तथा उत्कृष्ट तथा अजघन्य अउत्कृष्ट अवगाहनानो तेना विशे अनन्ता पर्याय छे ते कहे छे जेम जघन्य तथा उत्कृष्ट अने मध्यस्थ अवगाहनानो द्विप्रदेशिय स्कन्ध आदिनुं कह्युं तेम सर्व वक्तव्यता जाणवी पण एटलो विशेप जे अवगाहनार्थे कोइ हीन कोइ तुल्य कोइ अधिक होय जे हीन अवगाहना ते एक प्रदेशे हीन अधिक होय तो एक प्रदेशे अधिक तेने विशेष,

रीते देखाडे छे जे चतुप्रदेशिय स्कन्ध अने जघन्य अवगाहना करे तो आकाशना एक प्रदेशने अवगाही रहे तेने जघन्य अवगाहना कहिये जे उत्कृष्ट अवगाहनानो स्कन्ध चतुप्रदेशिय ते आकाशना चार प्रदेश अवगाहीने रहे तेने उत्कृष्ट अवगाहना कहिये हवे जे अवगाहना जघन्य नथी अने उत्कृष्ट नथी तेने मध्यम अवगाहना कहिये ते चतुप्रदेशिय स्कन्ध आकाशना बे प्रदेशने, अवगाहे कोइ त्रण प्रदेशने अवगाहे, एटले ते एक प्रदेशे अधिक न्युन थइ माटे तेने अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहना कहिये, ए रीते आगल सर्व भावने विशे जाणी लेवुं यावत् दश प्रदेश सुधी कहेवु एटले जघन्य अवगाहनानो दश प्रदेशीय स्कन्ध छे, ते आकाशनो एक प्रदेश अवगाहे तेने जघन्य अवगाहना कहिये जे उत्कृष्ट अवगाहनानो दश प्रदेशिय स्कन्धते दश प्रदेशने अवगाहे जे अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहनानो दस प्रदेशिय स्कन्ध, ते बे प्रदेशथी मांडीने नव प्रदेश सुधी अवगाहे तेने सात प्रदेशनी हानि वृद्धि कहिये, ए अजघन्य अनुत्कृष्ट

अवगाहना कही. हवे संख्यात प्रदेशिय स्कन्ध जघन्य अवगाहनावाळो तेने विशे अनन्ता पर्याय छे, हवे संख्यात् प्रदेशिय स्कन्ध जघन्य अवगाहनावाळो तेथी संख्यात प्रदेशिय स्कन्ध जघन्य अवगाहनावाळो ते द्रव्यार्थे तुल्य, प्रदेशार्थे द्विस्थान पतित होय अने अवगाहनार्थे तुल्य होय अने स्थीति चतुस्थान पतित होय वर्णादि सर्वे षट्स्थान पतित होय तेमज उत्कृष्टि अवगाहनाना संख्यात् प्रदेशियने जाणवुं, अजघन्य अनुत्कृष्टने तेमज कहेवुं, पण एटलो विशेष के अवगाहनार्थे द्विस्थान पतित होय, तथा असंख्यात प्रदेशिय स्कन्ध जघन्य अवगाहनावाळाने अनन्ता पर्याय छे ते असंख्यात प्रदेशिय जघन्य अवगाहनावाळो अने अन्य असंख्यात प्रदेशिय जघन्य अवगाहनावाळा स्कन्ध साथे द्रव्यार्थे तुल्य, प्रदेशार्थे चतुस्थान पतित छे अवगाहनार्थे तुल्य अने स्थीति चतुस्थान पतित छे, वर्णादि सर्वे षट्स्थान पतित छे. तेमज उत्कृष्टि अवगाहनावाळा असंख्यात प्रदेशिय स्कन्धने जाणवा, अजघन्य अनुत्कृष्ट अ

वगाहनाना असंख्यात प्रदेशिय स्कन्धने तेमज जाणवो, पण एटलो विशेष के ते अवगाहनार्थे चतुस्थान पतित छे हवे जे जघन्य अवगाहनानो अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध, तेने विशे अनन्ता पर्याय रह्या छे ते देखाडिये छिये जे जघन्य अवगाहनानो अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध अने बीजा जघन्य अवगाहनाना अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध साथे द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे षटगुणी हानि वृद्धि लागे, अवगाहनार्थे तुल्य स्थीति आश्रये चतुस्थान पतित छे अने वर्णादि आश्रये षटस्थान पतित छे, एटले ए जघन्य अवगाहनानु कह्यं तेमज उत्कृष्ट अवगाहनाना अनन्त प्रदेशिय स्कन्धमां जाणवु तथा अजघन्य अउत्कृष्ट अवगाहनाना अनन्त प्रदेशिय स्कन्धने विशे एमज जाणवु, पण एटलो विशेष के अवगाहनार्थे षट्स्थान पतित जाणवु, इत्यादिक पुद्गलद्रव्यनु वर्णन कर्यु इहाकोइ पुछेके उपर गवेषु तेमा आठ स्पर्शी 'पुद्गल स्कन्धनी व्याख्या आवी नही' तेनो उत्तर के पुदगलनी आठ वर्गणा छे तेमा 'प्रथमनी' चार वर्गणा 'बादर' कही

छे अने पाछलनी 'चार वर्गणा' सुक्ष्म कहि
छे तेनां नाम भाषा स्वासोस्वास मन अने कार्मण
ए चार वर्गणामा तो चतुस्पर्शिज छे आठ स्पर्शि
होय नही अने प्रथमनी औदारीकादि चार वर्गणा
बादर छे तेमा पण द्विप्रदेशिय स्कन्धथी मांडीने
संख्यात प्रदेशिय तथा असंख्यात पदेशिय स्क
न्ध सुधि तो सर्वे स्कन्ध चतुस्पर्शिज छे अने अ-
नन्त प्रदेशिय स्कन्ध बादर भावे प्रणमेला तेमां
आठ स्पर्श होय एम समजी लेवुं पण सामा-
न्ये पुदगल द्रव्यनुं वर्णन कर्युं तेथी समुदाये
चतुस्पर्श कह्या ते अपेक्षित छे आठ स्पर्शि पु-
दगल स्कन्ध चक्षु दर्शनथी ग्रहवाय पण चतु-
स्पर्शि पुदगल स्कन्ध चक्षु दर्शनथी ग्रहवाय नही
एम जाणवुं इत्यादि पुद्गल द्रव्यनुं वर्णन शा-
स्त्रोमां घणुं छे ते जाणवुं तेमज षट द्रव्यने
जाणे तेने शुद्ध समकित कहिये वली तेने ज्ञा-
नी कहिये अने ते ज्ञानी पाछो पडे नही एटले
समकीत तथा ज्ञानथी भ्रष्ट थाय नहि एवुं महा
निषिथ सुत्रमां कह्युं छे, तो पण कोइ कर्मना
उदयथी पतित थाय तो तेनो विचार आगली

गाथामा कहे छे इति गाथा ए नो अर्थ सम्पूर्ण

कदापि जो कर्म उदयथी,
मिथ्यात्व पाछु आवेरे ॥
तो पण सागर कोडाकोडी उपर,
बंध एहने न होवेरे ज्ञान० १०

अर्थ —हवे कदापि जो कर्म उदयथी एट ले पूर्वकृत मिथ्यात्व मोहनी कर्मदल ते सत्ताए रहेला ज्ञानी थया पछी उदय आवे अने जीवनी सक्ति मरोभाय तेथी मिथ्यात्व गुणठाणे जाय तो पण एक कोडाकोडी सागरोपम उपरान्त बन्धन पडे कारण के समकित पाम्या त्यारे एक कोडाकोडी सागरोपममा पल्योपमने असख्यातमा भागे उणी स्थीति साते कर्मनी रही हती एटली ने एटली स्थीतिना कर्म बान्धे पण अधिक स्थितिनो बन्ध थाय नहि समकित गुणप्राप्ति अवसरे जे स्थिती रह्यो हतो तेथी कदापि काले बन्ध स्थिति वधारे नहि ॥ उक्तंच ॥ कहा वीती वचनात् ए अभिप्राय नंदिषेणने अधिकारे महानिषिथ सूत्रथी जाणवो एटले ज्ञान गुण ते अप्रतिपाति कह्यो छे तथा उतराध्ययन सुत्र मध्ये कह्यु छे

उक्तंच— गाथा.

सुइ जहाम सुत्ताण,
एस्सई कयवरंमि पम्मियावि,
ईयजीवेवि समुत्तोणं,
एस्सईग जवि ससारे. ॥ १ ॥

इत्यादि घणा शास्त्रोमां ज्ञाननुं अप्रतिपातिपणु कहे छे माटे ज्ञानी सर्वथा एक कोडाकोडी सागरोपममां, पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्युन एटली स्थितीना पमना उपर कर्म बांधे अधिक न बांधे एवो अधिकार छे अत्र बन्धाधिकार आश्रये किञ्चित् बन्ध प्रकृतिनो विचार पन्नवणा सूत्रथी कहे छे, अहिं श्री गौतमस्वामीए वीर भगवान् प्रत्ये पुछ्युं के केटली कर्म प्रकृति छे. त्या भगवान् कहे छे हे गौतम आठ प्रकृति छे तेनां नाम —ज्ञानावरणीय १, दर्शनावरणीय २, वेदनीय ३, मोहनीय ४, आयु ५, नाम ६, गोत्र ७ अने अन्तराय ८, ए आठ कर्म छे ते ज्ञानावरणीय उदय दर्शनावरणमेनो उदय , अने द

णीय कर्मना उदयवम्मे दर्शन मोहनीय कर्मनो उदय प्राप्त थाय अने दर्शन मोहनीय कर्मना उदयथी मिथ्यात्व पामे, अने मिथ्यात्व एटले तत्वने अतत्व जाणे अने अतत्वने तत्व जाणे ए मिथ्यात्वना उदयवके आठे कर्मनो उदय प्राप्त थाय एम उदय भोगवतां निश्चय करीने सात आठ कर्मनी प्रकृति बन्धाय छे एम अनुक्रम जोता ज्ञानावरणीयथी आठे कर्म बन्धाणा हवे आठे कर्मनो जे जे प्रकारे बन्ध पमे ते कहे छे ज्ञानावरणीय केटले ठेकाणे बांधे तेना बे भेद रागथी बाधे तथा द्वेषथी बांधे ते रागना बे भेद, (माया) ते कपट अने लोभ हवे द्वेषना बे भेद, क्रोध अने मान ए चार स्थानके जीवना प्राकम वम्मे उदेर्याजे कर्म ते वम्मे करीने जीव ज्ञानावरणीय कर्म बाधे १ हवे दर्शना वरणीय कर्मथी लेइने यावत अंतराय सुधी पुर्वे कह्या जे राग द्वेष ते थीज कर्म बधाय छे, हवे ज्ञानावरणीय कर्म राग द्वेषने वश पड्यो थको अत्यत गाढापणु बांध्युं ते आत्म प्रदेश साथे सकर्खीरपणे बंधाणा, यावत ते पुद्गल परमाणु प्रत्ये पामीने दस भेदे भोगवे,

श्रोत इंद्रीयना आवरणे १ श्रोत इंद्रीयनो उपयोग न लाधे २ चक्षु इंद्रीयना आवरणे ३ चक्षु इंद्रीयनो उपयोग न लाधे ४ घ्राण इंद्रीयना आवरणे ५ घ्राण इंद्रीयनो उपयोग न लाधे ६ रस इंद्रीयना आवरणे ७ रस इंद्रीयनो उपयोग न लाधे ८ फरस इंद्रीयना आवरणे ९ फरस इन्द्रीयनो उपयोग न लाधे १० ते ते दसे स्थानकनां पुद्गल प्रत्ये अथवा विशेष पुद्गल आदे दइने जे छेदाय भेदाय तथा अहार पाणी प्रमुख आदे दइने ए ज्ञानावरणीय कर्मना जोरथी जाणवामां न आवे अथवा जाणवा घणु वांछतो थको पण आवरणे करी न जाणे अथवा पुर्वे जाण्यु होय तेन पछे न जाणि सके ते ज्ञानावरणीय कर्मना उदयथी अथवा पुर्वे ज्ञानी कहेवाता हता ते पुरुष ज्ञानावरणीय कर्म उदय आव्याथी अज्ञानी कहेवाय एटले ते ज्ञानावरणीयना दस भेद अनुभववा आश्रये कह्या हवे दर्शनावरणीय कर्म बांध्युं तेना पुद्गल पामीने नव प्रकारे अनुभवाय छे तेनां नाम निद्रा १ निद्रा २ प्रचला ३ प्रच-

ला प्रचला ४ स्थीनद्धि ५ चक्षु दर्शनावरणीय ६ अचक्षु दर्शनावरणीय ७ अवधि दर्शनावरणीय ८ अने केवळ दर्शनावरणीय ए ए दर्शनावरणीय कर्म कह्यु हवे शाता वेदनीय जे जिवे बान्ध्यु तेना यावत ८ भेद भोगववाना कह्या छे मनगमता शब्द प्रमुख पामे १ मनगमतु स्त्रीआदिकनु रुप पामे २ मनगमती सुगंध पामे ३ मनगमतो रस पामे ४ मनगमतो स्पर्शादि पामे ५ मननु सुख ६ वचननु सुख ७ अने काया नु सुख ८ एम शाता वेदनीय अनुभववी एटले पुष्पमाला, चदनादि एम अनेक जातीनुं भोग वबु तथा विशेषादि पुद्गल सीत उष्णादिकनुं भोगवबु पोताने अनुकुल ते शाता वेदनीय कहिये अथवा मनोज्ञ शब्दादि सर्व स्वअनुकुल वर्ते तेने शाता वेदनिय कहिये तेमज अशाता वेदनीय कर्मने उदये करीने ए पुर्वे कह्या जे आठ भेद ते अकार सहित लइए एटले अमनोज्ञ कहिये ए सर्व उपराठा भेद शाता वेदनीय कर्मथी जाणवा तेने अशाता वेदनीय कहिये त्रीजु वेदनीय कर्म कह्यु

. हवे चोथुं मोहनीय कर्म तेनुं स्वरुप कहे छे जे मोहनीय कर्म जीवे बांध्युं तेने पांच प्रकारे भोगवे तेनां नाम.-सम्यक्त्व मोहनिवर्मे अनुभवे १ मिथ्यात्व मोहनिवर्मे अनुभवे २ मिश्र मोहनिवडे अनुभवे ३ कषायवर्मे अनुभवे ४ अने नोकषायवर्मे अनुभवे ५ ए पांच प्रकारे मोहनीय कर्मनुं अनुभववुं छे एटले मोहनीय कर्म कह्युं हवे आयुपकर्म जीवे बांधेलुं ते चार प्रकारे भोगवे तेना नाम नारकीनुं १ तिर्यचनु २ देवतानुं ३ अने मनुष्यनुं ४ ते शुभाशुभ वेदे ए आयुपकर्म कह्युं हवे नामकर्मनुं स्वरुप कहेछे शुभ नामकर्म जे जीवे बांध्युं छे ते जीव चौद प्रकारे अनुभवे तेनांनाम कहे छे रुडो शब्द १ रुडुं रुप २ रुडो गंध ३ रुडो रस ४ रुडो स्पर्श ५ भली गति ६ रुडी स्थीति ७ रुडो लावण्य एटले शरीरनी शोभा ८ रुडी यश कीर्ति ए रुडी शरीरनी चेष्टा बलवीर्य ते जीवनु सामर्थ जे पुरुषाकार अथवा संग्रामने विशे बलनुं स्फुरावबुं ते १० रुडो स्वर ११ कान्ति मनोहर १२ अति प्रियपणुं १३ मनने गमता सूखनुं पामवुं १४ ए चौद प्रकारे शुभ नाम क-

मेना पुद्गलने अनुभवे हवे तेहीज़ चौद बोल अशुभ नाम कर्मने विशे अनुभवे पण ते अनिष्टपणे भोगवे शुभ कर्मवालो ईष्टपणे भोगवे अशुभ कर्मवाळो अनिष्टपणे भोगवे एटले नाम कर्मनुं स्वरुप कह्यु हवे गोत्र कर्मनु स्वरुप कहे छे, ते गोत्र कर्म जीवे बाध्यु ते उदय आवे त्यारे ते आठ प्रकारे भोगवे तेनां नाम उत्तम जातिपणु १ उत्तम कुलपणु २ विशेष बलपणु ३ विशेष स्वरुपपणु ४ विशेष तपपणु ५ ज्ञाननु विशेषपणु ६ लाभनु विशेषपणुं ७ मोटु ऐश्वर्यपणु ८ ए आठ भेदे उच गोत्र अनुभवे अने वळी ते आठे भेद नीच गोत्रने विशे लेवा पण अनिष्ट लेवा एटले पूर्वे कह्या तेथी (उपराठा) प्रतिपक्षि जाणवा एटले गोत्र कर्म कह्यु हवे अन्तराय कर्म कहे छे जे जीवे अन्तराय कर्म बाध्यु ते उदय आवेथी पाच प्रकारे भोगवे, तेनां नाम दान दइ लइ शके नहि १ लाभ पामी शके नहि २ भोग पामी शके नहि ३ उपभोगनी प्राप्ति थइ शके नहि ४ अने वीर्य स्फुरावी शके नहि ५ ए रीते अन्तराय कर्म पाच

प्रकारे अनुभवे एटले अन्तराय कर्म कह्युं एटले ए आठे कर्मनुं अनुभववुं किन्चित् शब्द मात्र कह्युं हवे आठे कर्मनी प्रकृति कहे छे ज्ञानावरणीय कर्मनी ५ प्रकृति तेनां नाम मति ज्ञानावरणीय १ श्रुत ज्ञानावरणीय २ अवधि ज्ञानावरणीय ३ मनपर्यव ज्ञानावरणीय ४ अने केवल ज्ञानावरणीय ५ दर्शना वरणीय कर्मना बे भेद निद्रा पंचक १ अने दर्शन चतुस्क २ निद्रा पंचकना ५ भेद. निद्रा १ निद्रा निद्रा २ प्रचला ३ प्रचला प्रचला ४ अने स्थीनद्धि ५ तथा दर्शन चतुस्कना चार भेद चक्षु दर्शना वरणीय १ अचक्षु दर्शना वरणीय २ अवधि दर्शना वरणीय ३ अने केवल दर्शना वरणीय ४ हवे वेदनीय कर्मना बे भेद कहे छे शाता वेदनीय १ अने अशाता वेदनीय २ हवे मोहनीय कर्मना बे भेद दर्शन मोहनीय १ अने चारित्र मोहनीय २ दर्शन मोहनीयना त्रण भेद, समकीत मोहनीय १ मिथ्यात्व मोहनीय २ मिश्र मोहनीय ३ चारित्र मोहनीयना बे भेद कषाय मोहनीय अने नोकषाय मोहनीय कषाय मोहनीयना १६ भेद अनन्तानुबन्धी, क्रोध १ अन-

न्तानुबन्धी मान २ अनन्तानुबन्धी माया ३ अ
नन्तानुबन्धी लोभ ४ अप्रत्याख्यानीय क्रोध ५
अप्रत्याख्यानीय मान ६ अप्रत्याख्यानीय माया
७ अप्रत्याख्यानीय लोभ ८ प्रत्याख्यानीय क्रोध
९ प्रत्याख्यानीय मान १० प्रत्याख्यानीय माया
११ प्रत्याख्यानीय लोभ १२ संज्वलन क्रोध १३
संज्वलन मान १४ संज्वलन माया १५ संज्वलन
लोभ १६ एटले ए कषाय मोहनीय कही, हवे नोक-
षाय मोहनीयना नव भेद कहे छे स्त्रीवेद १ पुरुषवेद
२ नपुंशकवेद ३ हास्य ४ रति ५ अरति ६ भय
७ शोक ८ दुगंछा ९ हवे आयुष्य कर्म कहे छे तेना
चार भेद नारकीनुं आयुष्य १ त्रियंचनुं आयुष्य २
मनुष्यनु आयुष्य ३ देवतानु आयुष्य ४ हवे नाम
कर्मना बेतालीस भेद कहे छे नरकादि गति १ एके-
न्द्रिआदिनी जाति २ औदारिकादि शरीर ३ शरी
रनां अङ्गोपाङ्ग ४ बन्धना ५ सङ्घातना ६ संघयण ७
संस्थान ८ वर्ण ९ गन्ध १० रस ११ स्पर्श १२ अगु
रुलघु नाम कर्म १३ उपघात नामकर्म १४ पराघात
नामकर्म १५ आनुपुरवी नामकर्म १६ उस्वास ना
मकर्म १७ आताप नामकर्म १८ उद्योत नामकर्म

१ए विहायोगति नामकर्म २० त्रस नामकर्म २१ स्थावर नामकर्म २२ बादर नामकर्म २३ सुक्ष्म नामकर्म २४ पर्याप्ति नामकर्म २५ अपर्याप्ति नामकर्म २६ साधारण नामकर्म २७ प्रत्येक नामकर्म २८ स्थिर नामकर्म २ए अस्थिर नामकर्म ३० शुभ नामकर्म ३१ अशुभ नामकर्म ३२ सौभाग्य नामकर्म ३३ दूर्भाग्य नामकर्म ३४ सुस्वर नामकर्म ३५ दूस्वर नामकर्म ३६ आदेय नामकर्म ३७ अनादेय नामकर्म ३८ यश नामकर्म ३ए अयश नामकर्म ४० निरमाण नामकर्म ४१ तीर्थंकर नामकर्म ४२ तथा बन्धन सङ्घातन आदे घणा भेद छे तथा पनवणाजीमां पांच पद कर्म प्रकृति आश्रये ठे तथा भगवतीजीमां कषायनी चोरासी आदे ठे तथा कर्म ग्रंथने विशे चोवीशीउं प्रमुख मोहनीय कर्मनी ठे तथा स्थान परत्वे भंगजाल घणी ठे ते सर्वे ते ग्रंथोथी जाणवुं अत्रे ग्रंथ गौरव थाय ते माटे कह्युं नथी तथा चोथा कर्म ग्रंथमां बंध हेतु चार कह्या छे तेना उत्तर भेद सत्तावन ठे अने अहियां तो राग द्वेष वडे — बंधाय एवुं कह्युं ठे तो तेमां

कंड भीन्न जेवु मालम पडतु नथी कारण के मिथ्यात्व १ अव्रत २ कषाय ३ अने योग ४ ते सर्वे राग द्वेषथीज कारण दीसे छे अने ज्यां सुधी राग द्वेषने विषे प्रवर्ते त्यां सुधी स्वस्वरुपनी प्राप्ति थाय नहि अने स्वस्वरुपनी प्राप्ति विना ज्ञानी कहेवाय नहि पूर्वे बधाधिकार कह्यो ते सर्वे व्यवहार छे हवे मुल स्वरुपे आत्मा साथे बध पडे तेनु स्वरुप कहे छे त्यां प्रथम जीवनुं स्वरुप तो द्रव्यास्तिकनय पक्षे सदा शुद्ध छे ते कोइ काले मलीन थतु नथी अने ज्ञानरुप ज्योति युक्त विराजमान प्रकटपणे छे आद्यन्ते चेतनालक्षणेकरी शुध ज्ञानमय जीवनु स्वरुप छे अतिन्द्रिय सुखनो भोगी अव्याबाध सुखसुखी छे वली अतिन्द्रिय एटले इन्द्रियो रहित तथा मन रहित एटले पुद्गलीक भाव शुन्य एवु स्वस्वभावीक शात सुधारसरुप अपूर्व लब्धि युक्त रसनो निरन्तरपणे भोगववानो आचारवन्त छे वळी स्फटिक रत्नसम निर्मलपणे सहज अवस्थानरुप शुद्ध स्वरुप प्रकट छे तथापि केवो छे के अविनीस्वर छे एवी सत्ता सदाकाळ प्रवाह धारारुप प्रणमन स्वभाव छे सर्वे

दुःखथी रहित आधीव्याधीथी रहित निरुपाधी छे एटले शुभाशुभ कर्मथी रहित छे कारण के पोते एक शुद्ध ज्ञानमय ज्योतिरुप स्वरुप छे एवो जीव पण कर्मने वसे बन्धाणो छे एटले विटाणो छे ते कर्म बे प्रकारनां छे द्रव्यकर्म १ तथा भावकर्म २ द्रव्य कर्म ते ज्ञानावरणादि ८ आठ अने भावकर्म ते रागद्वेष अशुधपरिणति हवे जे ज्ञानावरणादि कर्मरुप पुद्गलपिंड छे ते पुद्गल पिंड चेतन साथे एनी वर्गणानुं वलगवुं तेने बन्ध कहे छे ते बन्धनो नाश करवाने चेतन स्वस्वरुपे रमे तो सामर्थछे परन्तु ए बन्ध जुवो दृष्टि करीने देखो केवो जोरावर छे पोताने प्राक्रमे गाजी रह्यो छे क्रीडा करी रह्यो छे एटले पोताना रसवडे करीने जगत्रयवासि समस्त जीव राशिने वश करी मुक्यो छे तेथी महा अहंकार कहेतां जे अभीमाने भरेलो छे कोइथी पाछो टलतो नथी एम अनादी अनन्त काल थयां एक नाटकसालानो अखाडो बांधीने रह्यो छे अने समस्त जीवने नाटक करावे छे एटले ए बन्ध ते शुं करे छे के जगत्रयवासी सर्व संसारी जीवने शुद्ध स्वरुप पोतिकु तेने

पामवा देतो नथी अने ते स्वरुपथी भ्रष्ट करे छे कारण के रागद्वेष मोहरुप अशुद्ध परिणतिने विशे प्रिणमावे छे, मोहरुप मदिरापान करावीने सहज स्वरुपथी भ्रष्ट करे छे जेम कोइ पुरुष मदिरापान करीने बेभान थयो तेनी पासेथी सर्व वस्तु लोक लै जाय तो पण तेने खबर पडती नथी पोतानी वस्तुनु भान भुली जाय छे तेम आ चेतन मोहने वश पड्यो ज्ञानावरणादि कर्मनो बंध करे छे त्यारे शुद्ध स्वरुपनुं ज्ञान अनुभव ते करी शके नहि तथा शुद्ध ज्ञाननो उपयोग रहे नहि

उक्तच — शार्दूल विक्रिडित वृतम्.

रागोद्गार महारसेन सकलं कृत्वा प्रमत्त जगत्,
क्रीडत रसभावनिर्भर महानाट्ये नतधधुनत्,
आनदामृत नित्यभोजि सहजावस्था स्फुटं नाटय,
धारोदार मनाकुल निरुपधि ज्ञानं समुन्मज्जति॥१॥

हवे जे चेतन छे तेतो उपयोगवंत चेतना गुण सहित छे ते उपयोगना बे भेद १ द्रव्य उपयोग २ अने भाव उपयोग ते मध्ये भाव उप

योग तो स्वस्वरुपनी रमणता करे ते अवसरे छे ते भाव उपयोगतो कोइ जीवने सादिसान्त भांगे छे तथा कोइ जीवने सादि अनन्त भांगे छे अने द्रव्य उपयोग तो अनादि कालनो चेतनने छे ते मुल वस्तु चेतन तेने रागद्वेप मोहरुप अशुद्ध परिणाम तेणे करीने मिश्रित् भाव थयो माटे अशुद्धपणे परिणम्यो छे तेथी केवल पोते परनी साहाय इच्छे एम परानुयाइपणे संसार ग्राही जीवरासी तेने बन्ध हेतु भवति कहेता ज्ञानावरणादि कर्म वर्गणा बन्धनुं कारण थाय तेनाथी चेतन बन्धाय हवे बन्ध अवसरे जीव केवी वर्गणा ग्रहे ते कहे छे. त्रणसे ने तेतालीस राजप्रमाण लोकाकासना प्रदेशनी राशी पुर्वक कार्मण वर्गणाना प्रमाणु दळनो समुह अने आत्माना प्रदेशनुं परस परस संबन्धिपणे लोहअग्नी उष्ठाते एकत्वपणे मलवु तेनु नाम बन्धाय छे एम समय समय सात, आठ कर्मनो बन्ध बांधे एवी रीते चेतन कार्मण वर्गणाथीज बन्धाय छे इहां कोइ कहे के कार्मण वर्गणाज कर्म बन्धनु कारण थइ तेने गुरु उत्तर कहे छे के ए वात तो त्रणे काले संभवे नहि कारण के सिद्ध

सील कहेता आचार छे एटले ज्ञानी जीवने वाह्य सामग्रिना कारणथी कर्मनो बंध पडे नहि ए वस्तुनु स्वरुप एमज छे परन्तु प्रमादि थइने विषयादिने भोगवशे अथवा जीव हिंसा करशे अथवा आर्तरौद्र ध्यानने विषे मनादि योग वर्तशे ए सर्वे ठेकाणे जीव हिंसानुंज काम छे ते पोते प्रमादि थै निरंकुशे वर्ते तेनी आज्ञा उपर दृष्टि नथी कर्म बंधनो भय नथी अने बे प्रकार विद्यानुं भणतर थयु अथवा जाणपणुं थयु तेथी ज्ञानीपणु मनमा धारे तो शु ते कर्म नहि बांधे अवस्य ते कर्म बांधशे कारण के तेने स्वस्वरुप परस्वरुपनी ओलखाण नथी तथा उदय अनुदयनी खबर नथी एक मस्तिनो भर्यो एवा कर्म करशे ने ज्ञानी नाम धरावशे तेने तो अवस्य कर्म लागशे जेने स्वस्वरुप परस्वरुपनु जाणपणुं छे ते उदय जाणीने तेमा अव्यापकपणे वर्ते तेने कर्म नहि लागे एवो रहस ज्ञानीनो छे एटले पूर्वोक्त नीर्मल व्यावते कहेतां विकल्प बुधिरुप सुस्क जाणपणु छे अने अंतरंग रुचि करीने वीषय कषायादि सेवे नीरअकुशपणे आचरे तो ए निश्चय

मिथ्या दृष्टि छे अने राग द्वेष मोहरूप अशुद्ध परिणाममां खुतेलो तेने ए कारण सर्वे कर्मबंध हेतु छे एवा थैने ज्ञानी नाम धरावे तेने भगवन्ते भाव मिथ्यादृष्टि कह्या छे ते मिथ्यादृष्टि तो निश्चयथी कर्मबंधनो कर्ता छे अने जे ज्ञानी जीव छे ते तो शुद्ध स्वरुप अनुभवी छे तेने कोइ पूर्वकृत कर्म उदय थयुं तेने विशे तेनी रुचि नथी॥ सर्वथी ते इच्छा रहित छे ए अवांछक रुप क्रिया कही ॥ तेने विशे रुचि पचिने करता नथी अने केवल पोताने ज्ञान ध्यानने विशे व्याघात थाय छे ॥ अने उदययोगे कारण सामग्री तेवीज मले तेवारे तेने ए अकार्य जाणे तेने परभाव जाणीने अरुचि साथे कार्य करे तेने ज्ञानी कहिये अने ते ज्ञानीने कर्म बंधातुं नथी एवो सिद्धांतनो रहस्य जणाय छे॥ हवे अहियां कोई कहे के कर्मने उदयथी भोग सामग्रि मळे तेमां तेने अन्तरङ्ग रुचि छे के नहि? रुचि विना तो कंइ वनतुंज नथी अने शुद्धस्वरुपने अनुभवे छे समस्त कर्मने जाणे छे ॥ ए परभाव छे माटे त्यागवा योग्य छे एम कोइ वोले तो ते वात सर्वे जूठी छे का-

रणके ए बन्ने वस्तु एक घरमा लाधती नथी ॥ ज्या ज्ञाननो अनुभव छे त्यां विषयादिनो अनुभव न होय अथवा ज्यां विषयादिनो अनुभव छे॥ त्यां ज्ञाननो अनुभव न होय ए बे क्रिया प्रतिपक्षी ते एक ठामे केम रहे? माटे एतो उदय माफक छे ॥ जेम कोइ पुरुषने ताव ज्वरनो रोग थयो तेवारे करू प्रमुखनो काथ पीवो पमे त्यारे काथने ते प्रत्यक्ष जाणे के कमवो छे पण शु करे ताव ज्वरने काढवा ते पीवो पमे ते उपर रुचि वा अभिलाप तेने होय नहि, दृष्टांत जेम चक्षुने गरमीनी व्याधि थए ॥ दुधनां तथा घीनां पेल मुकी पाटो बांध्यो तो जाणे छे के पाटो बाधवाथी हु देखीश नहि ॥ पण व्याधि काढवा पाटो बाधवो पडयो ते पाटा उपर तेने वल्लभपणु हशे? तो अवश्य पाटो वहालो न लागे ॥ तेम ज्ञानीने पूर्वोक्त कह्या जे दृष्टांत तेने विशे रुचि न होय केमके विरुध काम एक जगामां होय नहि॥ तथा जेम अगारु अजवालु एक क्षेत्रे अने एक काले न होय तेम ए बे अनुभव एक जीवने एक काले न होय॥ एवुं संभवे छे॥ अने पूर्वाचार्य पण एम

ज कहेता आव्या छे ॥ पछी तत्वतो केवली जाणे ॥ ॥ उक्तं च ॥

तथापि न निरर्गलं चरितुमिष्यते ज्ञानिना ॥
तदा यतनमेव सा किल निरर्गलाव्यावृति ॥
अकाम कृतकर्म्म तन्मतमकारणं ॥

ज्ञानिनां ह्यं नहि विरुध्यतेकिमुकरोतिजानातिच ॥ ४ ॥

अर्थ–हवे जे ज्ञानी पुरुष छे ते शुद्ध स्वरुपनो अनुभव करे अने शुद्धस्वरुपनुं जाणपणुं थयुं छे ते ज्ञानीपुरुषने जे जे कर्मनो उदय थाय ते ते उदय सामग्रिने विषे अभीलाषा करे नहि, तो अभिलाषा कोण करे? के जे मिथ्यादृष्टि छे, ॥ जेने आत्म स्वरुपनुं जाणपणुं नथी, शुद्धस्वरुपनु ज्ञान प्रणम्युं नथी, तथा शुद्ध स्वरुपनो उपयोग वर्तमानकाले छे नहि ॥ एवा जीव ते बाह्यथी वैराग घणो राखे ॥ मन इंद्रियोने वश करवा चाहे ॥ वहेवार शास्त्र वांचवा भणवानो अभ्यास करे, ते सर्वे सहज दशाना अजाण, तेने मिथ्यात्वी कहिये ॥ ते जीव

कर्मनो बंध पामे ए वात अवश्य करीने एमज छे ॥ पण ज्ञानी पुरुषने बंध पमे नहि ॥ तेनुं कारण कहु ते सांभळो के जे ज्ञानी पुरुष छे तेणे पोतानुं स्वरुप निर्मल अविनाशि अमुर्ति अने अलिप्त जाण्यु तथा मुर्तीवत अने विनाशिक वर्णादि स्वरुप पुद्गलनु जाण्युं तेथी एम समजे के वर्णादिनो भोग ते अरुपी. चेतनने होय नहि अरुपिनो भोगता अरुपी छे अने रुपिनो भोग तो रुपी छे माटे ए भोग मारे होय, नहि परतु विचारे के पूर्वे में अशुद्ध उपयोगे राग द्वेष मोहने वश रहिने शुद्ध स्वरुपने अजाणपणे शुभाशुभ कर्म बांधेलां ते अत्यारे उदय आव्यां छे ते भोगव्या विना छूटको नथी दृष्टांत जेम कोइ पुरुष वनमां चाल्यो जाय छे ते वन काहमनो अजाण शहेरमा वसवावाळो सुकोमल अने सदाए सुगंधिमा रहेवावालो ते पुरुष वनमांथी कौंअचना फाफमा हाथमां लइने जोवा लाग्यो अने घणा सुकोमल जाण्या केटलाक वस्त्रमा लीधा पछी ते हाथनो तथा वस्त्रनो ज्यां ज्यां शरीरे स्पर्श थयो त्या त्या चल तुटी ते चलनी वेदना थइ

वहु गजराणो तेवारे तेने लोके कह्युं के आतो कौंछचना फाकमाथी तने थयुं छे तुं नाखी आव्य त्यारे ते नाखी आव्यो, पण चलनी वेदना मटी नहि त्यारे लोके कह्यु के छाण शरीरे घसो पछी पाणीए करीने नाहो एटले चल मटी जशे तेणे तेम कर्यु त्यारे वेदना मटी तो जुवो ते सुगंधिमां रहेवावालो तेने छाण चोलवुं पड्यु ते छाण चोलवानो तेने अभिलाप हतो नहि तेम ज्ञानी पुरुपने पुर्व कृतकर्म उदय आवे त्यारे ते ते कारण सामग्रीने विपे रुचि वा अभिलापा होय नहि कारणके ए परभावथी सदा ए उदास रहेछे अने जेनुं चित्त सदाए वैरागमां वसेलुं छे तेथी ते ज्ञानी जीव उदय भोगवतां कर्म न बांधे ते वात निश्चय छे कारण के कर्मनो बन्ध तो राग छेशथी पडे अने राग द्वेप अज्ञानीने होय ज्ञानीने होय नहि ते माटे कर्मबंध होय नहि ॥ शिप्य वाक्य ॥ स्वामी तमे ज्ञानी कहो छो ते सर्वज्ञने कहो छो के सम्यक्त्विने कहो छो? जो सर्वज्ञने कहेशो तो तेने घरे तो भोग सामग्रि छे नहि तेने राग द्वेप पण छे नहि जो समकिती देश विरति अने सर्व

विरतीने कहेशो तो तेना राग द्वेष अने मोह गया नथी ते १० दसमा गुणस्थान अन्ते जशे ते कर्म बांधे के न बांधे ॥ तेनो उत्तर गुरु कहे छे सर्वज्ञ तथा समकित आदे ते तें गुण स्थानना भासनु कह्यु ते तो व्यवहारनयनी अपेक्षा छे ते ए नय अपेक्षाए सत् छे अने अहीया तो अध्यात्म अपेक्षाये ससारी जीवना बे भेद करिये एक स्वभाव ग्राहि १ अने बीजा विभावग्राहि २ तेमा जे विभावग्राहि छे ते तो अज्ञानी राग द्वेष सहित छे अने जे स्वभावग्राहि छे ते ज्ञानी छे तेने राग द्वेष नथी पण बाह्यद्रष्टि लोको तेना उदय भावने देखी तेने रागी द्वेषि कहे छे जेम सुकडाल मंत्री उपर राजा कोप्यो त्यारे जाण्यु के ते मने मारी नाखशे तेम जाणी ओकराने कह्यु के हु झेहेर खाउं छु तु राजानी सभामा मने मारजे एटले त्हारु प्रधानपणु कायम रहेशे आपणे घेरथी प्रधानपणु जश नहि ते पुत्रे तेमज कर्यु तो लोके जाण्यु के दीकरे बापने मारी नाख्यो अने राजाए प्रधान पदवी दीकराने आपी पण दीकराए तो बापने मा

स्यो नथी बाप तो पोताने हाथे झेहेर खाइने मुवो तेम अहि कर्मनु स्वरुप ज्ञानीए जाण्युं तेथी पूर्व बंध उदयमां आवेलो तेने खरे पण तेमां राग द्वेप करी नवु कर्म बांधता नथी जेम ते छोकराने बाप उपर द्वेप नहोतो तद्वत ते माटे मिथ्यादृष्टि जिव आत्माने जाणतो नथी तेथी कर्मबंध करे अने ज्ञानी जिव आत्मस्वरुपने जाणे तेथी तेने कर्मबंध थतो नथी ए वात सिद्ध थइ ॥

॥ उक्तं च ॥

जानाति य. सनकरोति करोति यस्तु ॥
जानात्ययं न खलु त किलकर्म्म राग ॥
राग च बोधमयमध्यवमीयमाहु ॥
मिथ्यादश सनियतं स च बंध हेतु ॥ ९ ॥

अर्थ हवे जे मिथ्यादृष्टि जीव छे तेने समजवामा सर्व वस्तु अवली छे तेनुं स्वरुप किञ्चित् देखाडे छे के अमुक पुरुपने अमुके, मारी नाख्यो अमुक पुरुपने अमुके जीवाड्यो अथवा ए सुखी छे दुःखी छे अथवा ए पुरुपने अमुके सुखीयो कर्यो अने अमुके दुःखीयो कर्यो ए वात सर्व मिथ्या

छे जे पूर्व कृतकर्म जेणे जेवा बांधेलां तेवा ते भोगवे मरण जीवन सुखी दुखी कोइ को इने करवा समर्थ नथी पोतपोताना कृत्य प्रमाणे भोगवे ॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी एतो प्रत्यक्ष जोवामा आवे के एक बीजाने मारी नाखे, अने एक एकने ठगावे, एक एकने सुखीयोये करे, एक एकने दुखीआये करे ते सर्व जोवामां आवे छे अने तमे असत्य केम कहो छो तेनो उत्तर गुरु कहे छ ॥ हे भद्रे जेणे जेवा कर्म उपार्ज्या अने जेवो सबध बाधेलो छे तेवे सबधे उदयमां प्राप्ति थाय जेम कोइ पुरुपने सहज भूमि खोदतां निधान मले कोइ पुरुपने व्यापारथी मले एम अनेक प्रकारे प्राप्ति थाय अने कोइ पुरुपने सर्वथी महेनत करता मलतु नथी माटे जेने जे सबंधे प्राप्ति थवानी होय तेम मले आहि कोइनु कर्यु थतु नथी पूर्व कृतकर्म प्रधान्य छे आयुष्य कोइनु तो स्यु तुट्तु नथी अने सांध्यु सधातु नथी माटे परनी आश तथा त्रास एकल्पना करवी ते सर्व असत्य छे ॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी सात प्रकारे

आयुष्य तुटे एवुं संगेण प्रकरणमां कह्युं छे अने तमे ना केम कहो छो ? ॥ तेनो उत्तर ॥ हे भद्रे ! संगेणमां सात प्रकारे आयुष्य तुटवानुं कह्युं नथी त्यांतो कह्युं छे के ॥

सता ए आयु सी जंती इति वचनात्–ए सात प्रकारे आयुष्य पुरु थाय एम कह्युं छे आयुष्य तुटवानुं कह्युं नथी ते साते प्रकारनां नाम ॥ शस्त्रथी १ झहेरथी २ अग्निथी ३ पाणीथी ४ फांसाथी ५ सर्पादिकना झहेरथी ६ अने झंपापात थी ७ ए साते प्रकारे आयुष्य पुरु थाय पण जेनुं आयुष्य आवी रह्युं होय तेनुंज अने जेनुं आयुष्य बाकी होय तेने ए सात उपक्रममां कोइ नाश करवा समर्थ नथी कारणके जे शस्त्रनुं उपक्रम कह्युं ते केटलेक पुरुषने सामो फटका छग उपर देखिये छिये तथा बाण, गोली प्रमुख वागेलां एम घणा जोवामां आवे छे पण ते पुरुष मुवा नहि अने जेनुं आयुष्य आवी रह्युं होय तेने केटलेक शस्त्र, छाकडी, अथवा पत्थर अथवा बीजां शस्त्र अडकवाथी तुरत मरे माटे जेनुं आयुष्य तुट्युं होय ते मरे छे हवे बीजुं उपक्रम झहेर

कहेता सोमल, अफीण, वछनाग सर्गीमोरो आ दे दइने ए झेरनी जाती छे ते खावाथी प्राण नो नाश थाय ते खरी वात पण सर्वे जीव मरता नथी ए सोमल प्रमुखना खानारा अत्यारे केटलाक जीवता देखीए छिये अने जेनुं आयुष्य आवी रह्यु होय ते मरेछे माटे एम निश्चय न थयो के तेथी आयुष्य तुटे एटले ए उपक्रम बीजु कह्यु हवे त्रीजु उपक्रम अग्निथी सर्वे जीव मरे एम निश्चय छतु नथी कारण के अग्निमां पड़ेला जीव जीवे छे अने घणा मरी पण गया छे तथा चरितानुवादे घणा जीव अग्निमा पेठेला तथा अग्नि फरी वळेली तेमाथी जीवता निकळ्या छे तो अग्निथी आयुष्य तुटतुं नथी ए त्रीजु उपक्रम तथा चोथु उपक्रम पाणी, तेथी जीव मरे पण जेनु आयुष्य आवी रह्युं होय ते मरे कारणके केटलाक माणस तो चार हाथ पाणीमां डुबी मरे छे अने समुद्रमध्येथी कोइ जीवतो घेर आवे छे ते मध्ये तारा डुबे अने वगर तारा निकळे एवुं पण जोवामां आवे छे तो पाणीथी आयुष्य तुटे ए वात साबीत थ

इ नहि हवे पांचमुं उपक्रम फांसाथी जीव मरे पण सर्वे जीव मरे एम निश्चय नथी, कारण के फांसाना खावावालाने फांसो गले वेसतो नथी अथवा तुटी पमे तेथी तेने जीवता जोवामां आवे ठे तो फांसाथी आयुष्य तुट्युं एम नथी तथा सर्पादि फ्हेरी जनावरना करडवादिथी जीव मरे छे पण जेनुं आयुष्य आवी रह्युं होय ते मरे ठे, अने जेनुं आयुष्य उर्त्तुं होय तेने ए फ्हेर लागु पडतुं नथी अथवा जेने लागु पमे तेने उतारनारा मले अथवा औपधीथी पण उतरी जाय ठे तेथी मरता नथी ए वात प्रत्यक्ष ठे एटले फ्हेरी जनावरना फ्हेरथी पण आयुष्य तुटतु नथी ए ठ्ठुं उपक्रम तथा सातमुं उपक्रम फंपापातथी मरे पण जेनुं आयुप तुट्युं होय ते मरे. जेनुं आयुप उर्त्तुं होय ते मरे नही, शामाटे जे सात माळनी हवेली उपरथी पडे ते जीवता रहे, अने एक हाथना ठेटला उपरथी अथवा ठेस वागवाथी पमे ते मरे माटे फंपापातथी आयुप तुटतुं नथी, एम ए साते उपक्रमथी जेनुं आयुप आवी रह्युं होय ते पुरुं थाय एवुं संग्रहणी-

सुत्रमा कह्यु छे के सात प्रकारे आयुप पुरु थाय तेनो अर्थ कोइए अनास्मृतीथी तुटवानो कह्यो ते उपर श्रद्धा करवी नहि शामाटे के श्री भगवतीजीमा आयुप बाधवाना बे प्रकार कह्या छे एकनी रुपक्रमी १ अने बीजु स्रोपक्रमी २ हवे जे रोगादीथी तथा वगासुं, छीक, प्रमुख आववाथी मृत्यु थाय तेने नीरुपक्रमी कहीए अने जेने ए उपक्रम कह्यां ते उपक्रमादी लागवाथी मरे तेने स्रोपक्रमी कहीए, एटले पुर्वे जेवो बध बाध्यो हशे, तेवी रीते मरशे, पण कोइनो मार्यो मरतो नथी, अने कोइनो जीवाड्यो जीवतो नथी तथा आयुप कर्मने हेमय सरखुं कह्युं छे, तेथी कोइ जीव अनेक उपाय मरवा सारु करे पण ते आयुप आवी रह्या विना सर्वथा मरे नहि, ते वारयाश्री पन्नवणाजीमा तथा कर्मग्रंथमा छे ते माटे कोइ जीवने कोइ मारवा समर्थ नथी तेम जीवाड्वा समर्थ नथी, जेवो पुर्वे बध बाध्यो हशे तेवी रीते भोगवशे तथा सुख दुःख पण कोइ कोइने देवा समर्थ नथी जेम ब्रह्मदत्त चक्रवर्तिये ब्राहणने सुखीउ करवो धार्यो

पण ते दुःखीज रह्यो तद्वत् तथा श्री श्रीपाळरायने धवळशेठे दुःख देवाना घणा उपाय कर्या पण ते सुखीआज रह्या तद्वत् माटे मरण जीवन सुख दुःख ए सर्वे पोतपोताना पुर्वकृत्य प्रमाणे छे. पण मिथ्यादृष्टि जीव एम जाणे छे के, अमुके मारुं नबुं कर्युं अथवा अमुके मारुं बुरुं कर्युं. ए जीवने ज्ञान प्रगट्युं नही अने शुभाशुभ कर्मनुं जाणपणु थयुं नहि, तेथी एम जाणे पण एम नथी समजतो के ए सर्वे संसारी जीवराशी छे, ते सुख दुःखादी पोतानां कृत्यकर्म भोगवे, जेणे शुभकर्म उपार्ज्या ते सुख भोगवे, जेणे अशुभकर्म उपार्ज्या ते दुःख भोगवे एटले पोताना परिणाम शुभ कहेतां करुणामय छे तेथी सर्व जीवनी दया चितवे, पण कोइ जीवनुं बुरुं चितवे नहि अथवा देवगुरु धर्म उपर रुडो भक्ति राग करे, तेथी शुभकर्मनुं बांधवुं थाय अने ते जीव सुखीज पण थाय वली अशुभकर्म कहेतां संक्लीष्ट परिणाम एटले राग द्वेष मोह विषय कषाय प्रमुख करवा अथवा देवगुरु . प्रत्यनीक अथवा साधु

प्रमुखनी निंदा करवाथी अथवा अनेरानु बुरु ताकवाथी अशुभकर्म बंधाय तेथी दुःखनी पर परा पामे माटे पोतपोताना कृत्यथी सुख दुःखा दी पामे पण अहीआ कोइनु कर्यु थतुं नथी ए वातमा शका छे नहि इहां मिथ्यात्वी जीवो परने माथे दोप दे छे ए वात सत्य छे नही

उक्त च–

सर्व सदैव नियत भवती स्वकीयं
कर्मोदियान्मर जीवीत दुःखसौख्य
अज्ञानमेतदि हयत्तु परपरस्य
कुर्यात्पुमान् मरण जीवित दुःखदुरय ॥६॥

हवे अज्ञानी जीवराशीनु स्वरुप कहे छे ए अज्ञानी जीवो केवा होय के में अमुकने मारी नारयो हु अमुकने जीवाडु छु, में एने दुःख दीधु, में एने सुखीउं कर्यो, हु आवा आवा कामो करु छु, हु करु ते वी जाथी न थाय अथवा में धन उपार्ज्यु, अथ वा में राज्य लीधुं, अथवा हु साधु छु अथवा हु श्रावक छु, अथवा हु धर्मीष्ट छुं, अथवा हु

तपस्वी छुं, अथवा हुं विरती छुं, एवो पोते अहंकृत पद पोताने विषे, माने अथवा हुं मनुष छुं, अथवा हुं तीर्यच छुं, अथवा हुं पुरुष छुं, अथवा हुं स्त्री छुं, अथवा नपुंसक छुं इत्यादि अहंकृत पद पोताने विषे माने ते शाथी के ए जीव अज्ञानी छे, एनी दृष्टि मिथ्यात्वरुप छे, एना परिणाम अशुद्ध छे, तेथी ए अशुद्धना जोगे पोते कर्त्तापणुं तद्रुप थइने माने तेथी ए निश्चय मिथ्यादृष्टि छे सर्व प्रकारे जोतां ए महा अज्ञानी छे शा-माटे जे ए कर्म जनीत पर्याय छे, तेने विषे आत्म बुद्धि धरीने मग्न थाय, तेथी तेने कर्मनो उदय यावत् जे जे कीरीया करे, शुभ वा अशुभ, तेनो पोते मालीक बने. ते माटे एने अज्ञानी जीव कहीए शामाटे के अज्ञानी विना पुद्गळ नुं वस्तु चेतनने विषे माने नहि, अने एम मा-नवाथी पोताना आत्मानी घातनो करनार थ-यो, एटले आत्मगुणनो नाश करनार थयो. ते-थी आत्मानी सत्ता दबाइ गइ, अने पुद्गळनी सत्ता दीपावी, ते माटे ए अज्ञानी जीव आत्म-घाती छे

उक्तं च —

अज्ञानमत्त दधीगम्य परात्परस्य,
पस्यंती ये मरण जीवीत दु:ख सौख्यं
कर्म्माण्यहद्द कृतीरसेन चीकीर्ष वस्ते
मिथ्यादृशो नियत मात्महनो भवति ॥७॥

हवे मिथ्यादृष्टि जीव विभावशील छे एटले एनो अभिप्राय परभाव देखीने पोतापणो मानवो एज एनो आचार छे एटले अमुके अमुकने मार्यो, अमुके अमुकने जीवाड्यो, इत्यादि अभिप्राय ते कर्मबंध हेतु. एटले अज्ञानी जीवो ते विभावने ग्रहण करवाथी ज्ञानावरणादि कर्मनो बंध करे ए परिणाम ते सर्व मिथ्या छे, एटले तेनी बुद्धि एवी रहे के फलाणाने मार्यो, फलाणाने जीवाड्यो, एटले ए अज्ञानरुप मिथ्याभाव देखाय छे, एटले मिथ्या दृष्टि जीव पोतानुं आत्म स्वरुप परमानंद स्वरुप तेनो स्वाद लेतो नथी, अने पर्याय वस्तु विकल्पे करी ने सत्य माने, ते वात सर्वथा त्रण लोकमां अथवा त्रण काळमां छे नही एतो

नी केवळ विनाशीक वस्तु छे अने अज्ञानी जीवनो स्वभाव एमज रह्यो, जेवा पर्याय पोते अंगीकार करे, अथवा जेवा पर्याय पोते देखे, तेवे भावे परिणमे, तो समस्त ए पर्यायने पोताना जाणी अनुभवे पण ते कर्मनुं स्वरुप तथा जीवनुं स्वरुप जुदुं जुदुं करी जाणतो नथी, एक मिश्रभावने जीव जाणी अनुभव करे, एना अध्यवसाय परने पोतानुं मानवाना छे, हवे परीणामे करीने एम जाणे के हुं सुखी छुं, हुं दुःखी छुं अथवा अनेराने पण एमज जाणतो थको ए अज्ञानपणे प्रवर्तावे एज पोतानी घेलछा छे, शामाटे के सुख वा दुःख आदे देइने जे जे जीवने थाय, ते पोतपोतानां कृत्कर्म उदयमां आवीने प्राप्ति थाय पण अहींयां कोइने वश नथी, अने कोइनु कर्युं थतुं नथी, इहां तो सर्व उदय माफक थाय, पण ते जीव पोते पोताना अज्ञानने लीधे सुख दुःखादी वीकल्प करे ते वीकल्प सर्व जुठा छे अथवा कोइनुं सुक्ष्म रुप अथवा कोइनुं स्थुळ रुप देखीने एवा वीकल्प करे अथवा मुखथी एमज कहे के एणे

मार्या, एणे जीवाज्यो, एटले पृथ्वी १ पाणी २ अग्नि ३ वायु ४ वनस्पती ५ बेंद्री ६ तेंद्री ७ चउरीद्री ८ इत्यादी सुक्ष्म जीवोने काया नहा नी देखी तेने हणवानो भय राखतो नथी अथवा केटलीक जातीना पचेंद्रीने पण हणवानो भय राखतो नथी शामाटे के काया नहानी होय ते जीव एनी गणतरीमा नथी अने मोटी कायाना जीवोने बचाववानी फीकरमा रहे ए पण अज्ञान पण छे, शामाटे के जीव तो सर्व असंख्यात प्रदेसि लोकाकास प्रमाणे सरखा छे तथा ज्ञान दर्श नादि गुणे करी जोइए तो ए सर्व जीवो बराबर छे, नींगोदथी मांडीने चारे गतिमा भिन्नभाव छे न हि जेवा सिद्ध परमात्मा छे तेवाज सत्ताये जोतां ससारी जीव छे, तेनी काया नानी मोटी देखी तेने अधिका ओछा जाणे ते मुर्खाइ छे शामाटे के कायानी प्राप्ति तो कर्मथी छे, तो ए सर्व पर्या यने कर्म भावी कहीए कर्म भावी पर्यायरूपे चार गति छे जेणे जेवी गति उपार्जी तेने तेवी का- या मळे अने कायाना नाना मोटापणे जीवनु सुक्ष्म तथा स्थुलपणु थयु नहि जीव तो पोताना

स्वभाव पर्यायवने सदाय छे तेवो ने तेवो छे ए-
टले जीव सुक्ष्म अथवा स्थुळ थयो नहि. माटे
जे सुक्ष्म जीवने हणशे तो ते जीवमां अने मो-
टा जीवमा कांइ फेर नथी माटे ए अज्ञानना
लीधा थका एवा विकल्प करे, ते विकल्पोथि
तेने नवां कर्म अनंतां बंधाय अने जीवतो को-
इनो हण्यो हणातो नथी तेने तो पोताना उ-
दय माफक थाय ते वारवा पुर्वे कही गया छी-
ए तथा कंइ जीव जीवने हणे नहि शामाटे के
ए तो जीवे जीव स्वजाती छे अने तेने अवि-
नाशी पद छे तेनो नाश होय नहि पण इहां
तो प्राणनो घात थाय अने प्राण छे ते पुद्गळ
छे, वळी विनाशी छे ते हणाय पण तेनी स्थिती
पुर्ण थया विना तो हणातो नथी, अने फोकट
हणवानो मालीक थइने कर्म बांधे ए सर्वे अ-
ज्ञानी जीवनुं लक्षण छे तेना एवा अध्यवसाय रहे
के आ मारु आ तारुं एम राग द्वेषमां परिणाम वर्ते
ते सर्वे अज्ञानी जीव तेपर पर्यायने पोताना
मानी अनुभवे तेथी कर्म बंधाय, अने ज्ञानी
जीव तोपर पर्यायने पर जाणे अने उदय मा

फक्त भोगवे तेमां पण रची पचीने भोगवता न
थी एटले ज्ञानीए परवस्तुने पर जाणी तेमां प
रिणाम पामता नथी अव्यापकपणे उदय भो-
गवे छे स्वरुप उपर तद्गत द्रष्टि स्थापी छे
स्वभावीक पर्यायनो अनुभव करे तेथी ज्ञानी
जीवने कर्म बधातां नथी, ए रीते ज्ञानी
अज्ञानीनो परंतर समजीने अज्ञान दशा दुर
करवी पर्यायद्रष्टि राखवी नहि, स्वभाव द्रष्टि
आदरवी ए ज्ञानीनु लक्षण छे ते कह्यु

उक्तंच–

मिथ्याद्रष्टे स एवा रुप बधहेतुर्विपर्य्ययात
य एवाध्यवसायो य मज्ञात्मास्य द्रश्यते ॥८॥
अनेनाध्यवसायेननी फले नवि मोहिता
नकिं च नापी नैवास्ति नात्मात्मानं करोति यत् ९
विश्वाद्दीभक्तोपि हि यत्प्रभावा । दात्मानमात्मा
विदधाती विश्वं । मोहैक कदोध्यवसाय येप ।
नास्तीहयेपाय तपस्तयेव ॥ १० ॥

हवे जे ज्ञानी जीव ते केवा होय के
आपणु शुद्ध स्वरुप चिदानद रुप तेने विषे

स्थिर भावे रहे छे. सुखनुं घर जाणीने पोते पोताना स्वभावमां स्थिरता करी छे पोतानो महीमा शुद्ध स्वरुपनो जाणवामां आव्यो छे एटले शुद्ध स्वरुप केवुं छे ? के राग द्वेष मोह करीने रहित एवुं जे ज्ञान कहेतां चेतना गुण तेनो जे आणंद तेनो घन कहेतां समुह छे एवुं जे चिदानं द घननुं स्वरुप जाणयुं ते स्वरुप सम्यक प्रकारे अविनाशी छे, संकल्प विकल्पे करीने रहित छे एवुं वस्तु धर्म मुळ स्वभावे जुवे तो तेवुंज अनुभव गोचर छे ते विनातो मालुम पडे नहि एम निश्चय करीने समजवुं, वळी आत्मा केवो छे के उपाधिए करीने रहित एटले विषय कषाय आदि शुभाशुभ उपाधीए करीने रहित एवुं मुळ स्वरुप आत्मानुं तेने ज्ञानी जाणे एवुं श्री परमात्मा परमेश्वर केवळज्ञाने विराजमान तेमणे कह्युं छे ते जाणीने मिथ्यात्वभाव अवश्य छोडवो, ए ज्ञानीनुं लक्षण छे ते कह्युं ॥ नीखील अपि व्यवहार त्याजीत एव ॥ हवे जे व्यवहार मार्गे चालवु कल्प आश्रये अथवा परंपरा आश्रये ते सर्वने मिथ्याभाव कहे छे. सतरुप व्यव-

हार होय अथवा असतरुप व्यवहार होय पण शुद्ध स्वरुपथी तो विपरीत ए वाह्यजाव ठे. हवे जे सत व्यहार ते शेने कहीए एटले पच महाव्रत पाळवा पंच सुमति, त्रण गुप्ति, दश विधी यती धर्म इत्यादिने सत व्यवहार कहीए, एथी जे उपरांत तेने असत व्यवहार कहीए तथा कल्प व्यवहार कहेता साधु, साध्वी, श्रावक, श्रावीका ए चतुर्विधी सघने वर्तवा आचरवा योग्य जे मार्ग वांध्या तेने कल्प व्यवहार कहीए तथा परपरा व्यवहार कहेता परा पुर्वे माहा पुरुषो आचरण करता आव्या ते करवु तेने परपरा व्यवहार कहीए. तेना अनेक जेद ते तो प्रवर्तन रुप ठे आत्म स्वरुपना स्वजावमा ते समाय नहि, तेथी तो सदाय काळ विपरीतपणे ठे तथा सिद्धातकारे पण कल्प व्यवहार उपर जरोसो राख्यो नथी केमके श्री जगवतीजीमा चारित्र मवर, निर्जरा आदे देइ तेने आत्मा कह्यो ठ. एटले आत्मस्वरुपमा रमे तेने ए पद ठे पण परस्वरुपमा रमे तेने कइ चारित्र आदि गुण ठे नहि तो अही आ कोइ कहेशे के दशविधी यतिधर्मने तमे ध-

र्ममां कहो गे के नहि तेनो उत्तर के अमे कंइ ते वस्तुने उत्थापता नथी पण वस्तुमां जेटलुं धर्म होय तेटलुंज कहेवाय तथा उपाध्याय श्री यशोविजयजी महाराजे अध्यात्मसार ग्रंथ आदि घणा शास्त्रोमा ठाम ठाम कह्युं छे तथा बीजा पंडितो पण सर्वे कहेता आव्या छे तथा शुद्ध स्वरुपने विषे खंती प्रमुख विकल्प छे नहि अने जो विकल्प सहित आत्माने मानीशुं तो ए अशुद्ध आत्मा थशे अने अशुद्ध आत्मानी मुक्ति त्रण काळमां थवानी नथी, वीतराग अथवा अरिहत अथवा मुक्ति शुद्ध स्वरुप थया विना ए पद मळे नहि, माटे ज्यांसुधी विकल्प भाव छे त्यांसुधी मिथ्यात्व छे शिष्य वाक्य स्वामी, विकल्पने तमो मिथ्याभाव कहो गे तो आपणे एम कहीए छीए के आत्माने विषे अनंतु ज्ञान, अनंतु दर्शन छे, इत्यादि भेद कहीए छीए ते पण विकल्प छे के शुं छे ? तेने शु मिथ्यात्व कहो गे तेनो उत्तर, के ए पण मिथ्यात्व छे कइ सत्य वस्तु नथी शिष्यवाक्य स्वामी एतो भेद ज्ञान छे, अने शुक्लध्यान ध्याता छे तेने मिथ्यात

केम कहेवाय तेनो उत्तर जे भेद ज्ञान छे ते सत्य छे, परंतु वस्तु तो अभेद छे तेनो भेद करीए ए असत्य खरु के नहि माटे मिथ्यातज छे, अने ए भेद वहेंचवा ते व्यवहार छे, तथा शुक्ल ध्यान जे कह्यु ते सत्य छे पण पहेलो पायो छे तो ए पायामां भेद वहेंचवाना छे एटले ए पण व्यवहार छे अने ज्यांसुधी व्यवहार, त्यांसुधी मिथ्यात्व छे शामाटे के सत्यने असत्य माने अने असत्यने सत्य माने तेने मिथ्यात्व लागे अथवा ए भेद ज्ञान दशमा गुण स्थानक सुधी छे तो त्यांसुधी मिथ्यात्व पण छे, हजु मिथ्यात्वनो नाश थयो नथी शा माटे? जो नाश थयो होय तो नीगोद आदि गतिमां जात नहि अने ए थानकने विषे प्राप्त थएला निगोद आदि गतिने विषे असख्याता अथवा अनत जीव रखडे छे तथा मिथ्यात्व एवु नाम मोहनीनुं छे ते मोहनीकर्मनो नाश शुद्ध स्वरुपमां प्रवेश थए थाय एटले अभेद ज्ञान आव्याथी मोहनीनो नाश, तथा वितरागादि पदवीनी प्राप्ति छे माटे ज्यां सुधी भेद ज्ञान छे त्यां सुधी पण विकल्प छे

अने ज्यां सुधी विकल्प छे त्यां सुधी अशुद्ध आत्मा छे अने अशुद्ध आत्मा छे एज मिथ्यात्व छे. माटे जे व्यवहार छे ते शुद्ध आत्माथी तो विपरीत छे माटे मन, वचन अने कायाना जोग वडे जे जे विकल्प उठे अथवा एवा विकल्पवडेज व्यवहारनुं बांधवु छे एटले व्यवहार तथा मिथ्यात्वमां काइ भिन्नपणुं जणातुं नथी माटे अवश्ये ए मार्ग छांडवो अने ज्यारे ए मार्ग छांडशो त्यारे शुद्ध स्वरुपनी प्राप्ति थशे.

उक्तंच—

सर्वत्राध्यवसानमेवमखिलं त्याज्यंयदुक्तंजिनै।
स्तन्मन्येव्यवहारएवनिखीलोप्यन्याश्रयस्त्यजित॥
सम्यग्निश्चयमेकएव तदमीनि कंपमी क्रम्याकि ।
शुद्धज्ञानघनेमहिम्नि ननिजेवघ्नंतिसंतोधृति ॥१०॥

हवे शुद्ध स्वरुप वस्तुनी प्ररुपणा थाय छे तो एक प्रश्न इहां करवामा आवे छे के ए चीना रागादि अशुद्ध भाव एटले राग द्वेष मोह इत्यादि असंख्यात लोक मात्र विभाव परिणाम बंध निदान कहेतां ज्ञानावरणादि कर्म बंधको कारण एवु

शास्त्रमां कह्यु छे ते प्रमाणे जाणवामां मानवामां पण छे अने शुद्ध भावना कहेतां शुद्ध चिन्मात्र एटले शुद्ध ज्ञान चेतना मात्र छे एम एवो ज्यो ति स्वरुप वस्तु ते तो अतिरिक्त कहेता तेथी जु दो छे मगनि एक प्रश्न तो ए छे तथा रागद्वेष मोहादि परिणामनु थवु तेनु कारण कोण छे एटले आत्मा कहेता जीवद्रव्य कारण छे के पररुप कहेतां मोहरुप पण ॥ छे अथवा पुदग- लद्रव्य छे ते पीमरुप कारण छे हवे ते बन्ने प्र श्नो उत्तर एवी रीते छे के वस्तुस्वभाव कहेता ए वस्तुनु स्वरुप तो प्रगटपणे सदाय निर्लेप छे तथापि जे कारण आश्रीने कहेवु छे तेनो वि चार कहे छे जीवद्रव्य छे ते त्रणे काल एटले भूत, भविष्य अने वर्त्तमानकालमांहि जे आत्माने विषे रागादि अशुद्ध परिणति ने तो निमित मात्र ए पोता सबधि छे एटले आत्माज इहां राग द्वेषनु जो निमित्त कारण छे जे राग द्वेष मोह इत्या दि अशुद्ध परिणाम तेनुं कारण तो आत्मस्वरुप परिणम तो नथी एटले इहां भावार्थ समजवानो एवी रीत छे के द्रव्यना परिणमननुं कारण बे

प्रकारे छे एक उपादान कारण अने बीजुं निमित्त कारण ते मध्ये जे उपादान कारण छे ते तो द्रव्यने अंतर्भूत रहे छे एटले पोतपोताना परिणाम पर्याय रुप परिणमन शक्ति छे ते तो जे जे द्रव्यनी शक्ति ते ते द्रव्यमांहिज छे एम निश्चे छे तथा निमित्तकारण कहेतां अन्य द्रव्यनो संजोग पामवाथी ते अन्य द्रव्य पोताना पर्यायरुप थइने परिणमे छे ते तो जे द्रव्यनो ते द्रव्यमांहि अन्य द्रव्य गोचर थाय एम निश्चय जोवामां आवे छे अत्र दृष्टांत जेम मृतिका द्रव्य घटपर्यायरुप परिणमे छे तेनुं उपादान कारण मृत्तिकामांहि छे एटले घटरुप परिणमवानी शक्ति मृतिकामां छे हवे जे निमित्तकारण छे ते तो बाह्यरुप छे एटले चक्र, चीवर, दंड इत्यादि बाह्य थी दीसे छे ते कइ घटरुप परिणमता नथी तेमज जीवद्रव्य अशुद्ध परिणाम मोह, राग द्वेष रुप परिणमे छे ते तो उपादान कारण छे के नथी अपितु नथी शामाटे के जीवद्रव्यमांहि अंतर्गर्भितरुप भाव नथी अने जीवद्रव्यने विषे जे विभावरुप अशुद्ध परिणाम शक्ति ते तो निमित्तकार-

एमां छे शामाटे जे चारित्रमोहनी तथा दर्शनमोहनीते हेतुवमे कर्म बांधे छे ते जीवना अने कर्मना प्रदेश एकक्षेत्र अवगाही रहे छे ते पुद्गल द्रव्यनो पर्याय तेनो उद्योत कहेतां जे उदय मोहनीकर्म रुप पुद्गलनो जे छे तेने बाह्यथी जे कर्मनी प्रकृतिनो उदय होय ते नाम कहीने बोलावे छे जेम देव अथवा मनुष्य इत्यादि पण ते चेतन तो एथी न्यारो छे ए रुप तो पुद्गलनु देखाय छे शामाटे जे पुद्गलद्रव्य शु कर्म व्याप्य व्यापक रुप छे पण जीवद्रव्य शु व्याप्य व्यापक नथी तथापि मोहनीकर्म उदय थतां जीवद्रव्य आपणे विभाव परिणामरुप परिणमे छे एवो वस्तुनो स्वभाव छे ए वात तो कही छे नहि इहां दृष्टांत कहे छे

जेम स्फटीक रत्न रातुं, पीळु इत्यादि देखाय छे ते निमित्तकारणथी छे पण उपादान कारण ते नहि शामाटे के स्फटीक रत्न स्वभावे निर्मळ छे तेनु-उपादान कारण ए पोते छे हवे उपादान ते आत्मस्वरुप स्वस्वभाविक छे हवे निमित्तकारणनु स्वरुप किंचित् देखाडे छे के जेने

जेवी संगत मळी ते तेवुं थयुं. जो सत्संगत मळी तो साधु कहेवाणो असत्य संगत मळी तो असाधु कहेवाणो पण ए सारो वा नरलो कहेवाणो ते आत्मा नहि एतो संगतना जोगथी छे अथवा धर्म आश्री जेने जेवा गुरु मळ्या तेणे तेवु धर्म कर्युं, पण ते ॰इ धर्म वस्तु नहि धर्म तो एक न्यारुं छे, एक निमित्त वा उपादान एक आत्माने विषे परिणति छे ते आत्मा विषय साथे बंधाणो तेथी जेवी संगत तेवु धर्म करे छे.

उक्तं च,—अध्यातम सारग्रंथे

विषयात्मानुबंधैर्हि, त्रिधाशुद्धयथोत्तरं ।
ब्रुवते कर्म तत्राद्य, मुक्त्यर्थं पतनाद्यपि ॥२२॥
अज्ञानिनांद्वितीयंतु, लोकदृष्टायमादिकं ।
तृतीय शांतवृत्या तत्तत्व संवेदनानुगं ॥ -३ ॥

आद्यानाज्ञानबाहुल्यान्मोक्षबाधकबाधनं ।
सद्भावाशयलेशेनो, चितंजन्मपरेजगु ॥ २४ ॥
द्वितीया दोषहानि स्यात् कचिन्मंडूकचूर्णवत् ।
आत्यंतिकितृतीयातु, गुरुलाघवचितया ॥२५॥

अर्थ—जे ए धरमने विषे त्रणे प्रकार कह्या

ते त्रणे प्रकार एक एकथी शुद्ध छे ते मध्ये प्रथम भेद कहे छे जे पोताना आत्माने कर्मथी मुकावीने सिद्धि वरवाने वास्ते कोइक तो क्रिया करे कोइक कान फडावे, कोइक जटा वधारे, कोइक राख चोले, कोइक पाणी माटीथी पवित्रपणुं माने, कोइक पचाग्नि तापे कोइ उंधे माथे झुले, कोइ अन्न पाणीनो त्याग करे कोइ झपापात करे, अथवा कोइ जनावरना चखेवरमां पेसीने वाघ पासे पोतानु शरीर खवरावे, इत्यादि अनेक तरेहथी कष्ट करीने मुक्ति माने ते सर्व अज्ञान छे ए पहेलो भेद कह्यो हवे अज्ञानिना द्वितीयनु कहेता जे अज्ञानी जीव आत्मशुद्धिने वास्ते करणी करे ए बीजो भेद तेनो अर्थ कहे छे के लोकदृष्टि यमादिक एटले लोकदृष्टिए पाच यम, त्रण नियम तेनु स्वरुप किंचित् कहे छे के जे पोताना मनना इंग थाय तेने स्थिर करे, एटले व्रत, नियम आदि देशने करे ए निज शक्ति एटले पोतानी शक्ति प्रमाणे करे हवे तेमा प्रथम यमने विषे जे हिंसादि कारण त सर्व तजे

अहिंसादिनी वारता उपर बहु प्रेम राखे अने पाळवानो तथा सांभळवानो ए जीवने प्रेम घणो छे वळी एम जाणे के हु भगवाननी आज्ञा आराधुं छु अने बीजी वात सर्व एने माठी लागे ए प्रथम यम कह्यो १ बीजे यमे प्रवृतता थको भगवाननी आज्ञामांहि घणो अग्रेसरी थइने चाले व्रत, नियम आज्ञा प्रमुख पाळवाने वास्ते ए साधु तत्पर रहे, पण त्यां प्रमाददशा घणी छे ए बीजो यम जाणवो २ हवे त्रीजा यमने विषे निरतिचार चारित्र पाळे अप्रमत्तभावे अने शुभरुपे रहेतोथको ज जे परिसह उपजे देव, मनुष्य, अने तिर्यचना करेला अनुकूल प्रतिकूल ते रुडी रीते समभावे तेनुं सहन करतो थको संतरुप रहे ए त्रीजो यम कह्यो ३ हवे चोथा यमने विषे शुद्ध भाव भेद ज्ञान साथे अथवा चतुर्थ गुणस्थान अथवा ध्याता, ध्येय शुद्धपणुं व्यवहारथी इत्यादि भावे वर्ते, एम जोगद्रष्टि समुच्चयमां कह्युं छे ए बीजो भेद जाणवो

हवे त्रीजे भेदे शात वृत्ति एटले ज्ञान, दर्शन चारित्रनुं वेदवुं ए त्रीजो भेद छे ए त्रण

ते त्रणे प्रकार एक एकथी शुद्ध छे ते मध्ये प्रथम भेद कहे छे जे पोताना आत्माने कर्मथी मुकावीने सिद्धि वरवाने वास्ते कोइक तो क्रिया करे कोइक कान फडावे, कोइक जटा वधारे, कोइक राख चोले, कोइक पाणी माटीथी पवित्रपणु माने, कोइक पचाग्नि तापे कोइ उंधे माथे झूले, कोइ अन्न पाणीनो त्याग करे कोइ झपापात करे, अथवा कोइ जनावरना कलेवरमां पेसीने वाघ पासे पोतानु शरीर खवरावे, इत्यादि अनेक तरेहथी कष्ट करीने मुक्ति माने ते सर्व अज्ञान छे ए पहेलो भेद कह्यो हवे अज्ञानिना द्वितीयतु कहेतां जे अज्ञानी जीव आत्मशुद्धिने वास्ते करणी करे ए बीजो भेद तेनो अर्थ कहे छे के लोकदृष्टि यमादिक एटले लोकदृष्टिए पाच यम, त्रण नियम तेनु स्वरुप किंचित् कहे छे के जे पोताना मनना इछा थाय तेने स्थिर करे, एटले व्रत, नियम आदि देइने करे ए निज शक्ति एटले पोतानी शक्ति प्रमाणे करे हवे तेमा प्रथम यमने विषे जे हिसादि कारण त सर्वे तजे

अहिंसादिनी वारता उपर बहु प्रेम राखे अने पाळवानो तथा सांभळवानो ए जीवने प्रेम घणो छे वळी एम जाणे के हुं भगवाननी आज्ञा आराधुं तुं अने बीजी वात सर्व एने माठी लागे ए प्रथम यम कह्यो १ बीजे यमे प्रवृततो थको भगवाननी आज्ञामांहि घणो अग्रेसरी थइने चाले व्रत, नियम आज्ञा प्रमुख पाळवाने वास्ते ए साधु तत्पर रहे. पण त्यां प्रमाददशा घणी छे ए बीजो यम जाणवो २ हवे त्रीजा यमने विषे निरतिचार चारित्र पाळे अप्रमत्तभावे अने शुभरुपे रहेतोथको जे जे परिग्रह उपजे देव, मनुष्य, अने तिर्यचना करेला अनुकूल प्रतिकूल ते रुडी रीते समभावे तेनुं सहन करतो थको संतरुप रहे ए त्रीजो यम कह्यो ३ हवे चोथा यमने विषे शुद्ध भाव भेद ज्ञान साथे अथवा चतुर्थ गुणस्थान अथवा ध्याता, ध्येय शुद्धपणुं व्यवहारथी इत्यादि भावे वर्ते, एम जोगद्रष्टि समुच्चयमां कह्यु छे ए बीजो भेद जाणवो

हवे त्रीजे भेदे शात वृत्ति एटले ज्ञान, दर्शन चारित्रनुं वेदवु ए त्रीजो भेद छे ए त्रण

भेद मध्ये जे प्रथम भेद कह्यो तेने विषे तो अ
ज्ञाननी बहुलता कहेता घणुज अज्ञान भरेलु छे
तेने विषे ज्ञाननो लेश छे नहि एतो उलटो ध
र्मनो नाश करे छे न्मोक्षबाधक बाधन कहेतां
जे मोक्ष जाता बाधक कहेता आत्मोपहारम थइने
पने छे तथा बाधन कहेना निबन्ध बन्धरुप कर्म बन्धन
आत्माने थाय तथा सद्भावाशय लेशेनो कहेतां
एक सद्भावे शुभ प्रकृतिनो लेशमात्र गुण प्रगट्यो छे
तो एथी शु प्राप्ति थशे उच्यते कहेता ते कहे छे
चितं जन्मपरेजगु कहेता जगदीश एटले परमात्मा
केवली भगवान एम कहे छे जे जन्म मरणनी
परपरा वधारे एटले अनतो ससार चार गतिमा
ए जीव रखडे ए जीवने कष्ट करवाथी कइ पो
तानु कल्याण थाय नहि एटले ए पहेला भेद
नो अर्थ कह्यो

हवे बीजो भेद आत्मशुद्धि नामे छे तेनो
अर्थ कहे छे जे यमादि" कह्या ते अप्रमादि
साधु निरतिचार चारित्र पाळनावाळा आदि पूर्वे
कह्या ते जोग पाळवाथी केवळ क्लेश छे ए क्लेश
मात्र आदियां दोषनी हानि थाय पण परपरा ए

दोष वृद्धिनुं कारण छे जेम एक देरूकाना कलेवरनुं चूर्ण करीए त्यां कोई एम समजे के देरूकानुं हवे बीज बळी गयुं पण ए चूर्णना जेटला कणीया थाय एटलाने वरसादना जळना छांटा श्रमवाथी तेटलाए देरूकां नवां उत्पन्न थाय, एटले एकनो नाश करतां हजारो उत्पन्न थइ गयां तेम ए जे यमादि बाह्य कारण तेथी जाणे जे, मारा कर्मनो नाश थयो, अने मारी मुक्ति थशे ते सर्व असत्य कल्पना छे. तेणे किंचित कर्मनो नाश करतां नवां कर्म घणां उपार्ज्यां शामाटे जे निश्चय स्वरुप पोतानुं शुद्ध मार्गानुसारीपद ते हाथमां आव्युं नहि अने अशुद्ध आत्माना जोगथी ए कारण सर्व मेळव्यां, तो कर्मबंध शावमे टळे, कष्ट प्रयोगे तथा जोग प्रयोगे किंचित कर्म हानि छे पण नवा कर्मनुं आववुं तो बंध थयुं नहि माटे ए बीजी शुद्धि पण मोक्षसाधन मार्गे खपनो नहि ए बीजो भेद कह्यो.

हवे त्रीजा भेदे जे तत्त्व शुद्धि छे एटले ए शुद्धिथी कर्मनी हानि घणी घणी थाय ते कहे छे गुरु कहेतां पुद्गल पीड तेनो विचार

करवो, तथा लघु कहेतां आत्म स्वभाव तेनो विचार करवो एटले पुद्गलपीन अनती कर्मनी वर्गणाओ आत्मा माये लागी छे तेनो विचार करता शुक्लध्याननो पहेलो पायो प्रगट थाय तथा आत्म स्वरुप अरुपी पदार्थ एकत्वपणे अने सर्व प्रभावरहित ए विचार शुक्लध्यानना पहेला पायामा छे एटले ए त्रणे शुद्धि कही एज द्रव्य, गुण, पर्याय एकत्वभावे स्थिर थाय त्यारे शुक्लध्याननो बीजो पायो आवे ए जे यमादि बाह्य प्रवर्तन ते निमित्त कारण छे ते कइ आत्मस्वरुपनु उपादान कारण नथी बाह्यद्रष्टि अज्ञानी जीव निमित्त कारण देखीने तद्रुप तेने माने छे जेम कोइ कहेशे के घीनो घडो लाव्य तो तेने अज्ञानपणे निमित्त उपादाननी खबर विना बोलवु थयु पण घट तो माटीनो छे घृतनो घट थाय नहि ते घटमा घी भर्यु ते निमित्तमात्र छे अने निमित्त ते कंइ ते द्रव्यमां छे नहि तेम आत्माने विभावपर्यायना जोगथी अनेक कर्म उपाधि उदय थया ते तो निमित्तमात्र छे त्या तेवे भावे परिणमे तेने बाळजीवो तेवोज करी मान,

पण जे निमित्तकर्मादि ते, आत्म द्रव्यमां छे नहि, तेथी आत्मद्रव्य तो भिन्न छे माटे निमित्त तथा उपादान कारण नयना ग्रंथथी समजवां उक्तं च –

न जातु रागादि निमित्तभावमात्मानो याति यथार्कवक्त, तस्मिन्निमित्तं परसग एव वस्तु स्वभावो यमुदेति तावत् ॥ १२ ॥

हवे जे ज्ञानी जीव केवा होय ते कहे छे, पूर्वे कही गया जे जे भेद ते द्रव्यथी तथा भावथी पोते जाणे एटले वस्तुनो धर्म कहेता जे द्रव्यनुं स्वरुप शुद्ध चेतननुं स्वरुप जाणे अने तेनो अनुभव सदाय करे ते धणी सरागभाव करे नहि एटले राग द्वेप मोहरुप अशुद्ध परिणाम तेमा न प्रवृते पोते तेनो अनुभव न करे अने जे जे कारण बने ते सर्वे पूर्वकृत्य कर्मना उदयनी उपाधी छे एम जाणे पण पोते ते रागादि अशुद्ध परिणामनो कर्ता न थाय. पोते तो शुद्ध स्वभावमा रमे पण परनुं स्वामीत्वपणुं न करे ए ज्ञानीनुं लक्षण छे एम जाणवुं

उक्त च

इति वस्तु स्वभावंहि, ज्ञानी जानाति तेनस ।
रागादीन्नात्मन कुर्य्यान्नात्योभवतिकारक ॥१९॥

एवी रीते आत्मस्वरूपनो जाण ते पुरुष कांइ कर्म बांधतो नथी ए अध्यात्मपदार्थी विचार लख्यो, तथा कर्मग्रथना पदार्थी बंध शी रीते बांधे ? ते कहे छे अपितु कर्मपयमीने विषे तो राग द्वेष भावकर्म एहीज चेतनने दुःखदाइ छे, अने एवमेज ससारमां रखडवु थाय तथापि कर्मग्रंथने विषे द्रव्यकर्म ग्रहण कर्या तेना आठ ८ भेद तेनी प्रकृतिबंध आश्रीने १२० एकशो ने वीश कहीछे तेनो विचार पूर्वे पन्नवणाजीना अधिकारमां कह्यो छे अने इहा पण किंचित् बंध आश्रीने कहे छे केमके ज्ञानीने बंधनी ना पाडी अने कदापि कोइ कर्मना उदयथी मिथ्यात्व गुणठाणामा जाय तो पण तेने एक कोडाकोडी सागरोपमनो बंध कह्योछे, ते माटे ज्ञानी पदतो कइ पहेले गुणठाणे नथी, ए तो चोथा गुणठाणाथी उपला भागमा लाधे, हवे अढीआ गुणठाणे बंधनी प्रकृति कहे छे इहां गुणठाणानो शब्दमात्र अर्थ साथे नाम कहे छे के,

प्रथम मिथ्यात्व गुणठाणुं १ मिथ्या (कहेतां) अ-
सत्य पोताना स्वरुपने ठले परस्वरुपने पोतानु माने
एवो विपरीत भाव तेने मिथ्यात्व गुणठाणुं
कहीए बीजुं सास्वादन गुणठाणुं, ते औपशमिक
समकित भाव वमीने पाछो पम्तो मिथ्यात्वे
पहोच्यो नहि, वचमां खट आवळीना काळ प्र-
माण रह्यो तेने सास्वादन समकित कहीए, ए-
टले खीर वमन समान समकितनो स्वाद रहे २
त्रीजुं मिश्र गुणठाणुं (कहेतां) स्वस्वरुप अगर
परस्वरुप उपर सरखो भाव रहे ए अज्ञानपणुं छे
सत्य असत्य स्वरुपनुं ग्रहण नथी, ए त्रीजुं मिश्र
गुणठाणुं ३ हवे चोथुं अविरति समकित गुण-
ठाणुं, ए गुणठाणे समकितनी प्राप्ति छे शुद्ध
स्वरुपनी श्रद्धा, परभावनो त्याग, पांच ज्ञान षट
द्रव्यनुं जाणपणुं, आतम स्वरुपनी ओळखाण किं-
चित् भाग छे, तेने अविरति चोथुं गुणठाणुं क-
हीए ४ पांचमुं देशविरती गुणठाणुं तीहां देश-
थी परभावनो त्याग करे, ते पांचमु ५ छठुं प्रमत्त
गुणठाणु प्रमत्त (कहेतां) पांच प्रमाद रह्याछे तथा-
पि परभावनो त्याग विशेषे छे तोपण ते ठेकाणे

जीवने प्रमाद छु खदाइ छे, ए छठ्ठुं ६ तथा सातमुं अप्रमत्त गुणठाणु ते ठेकाणे प्रमादनो प्रवेश नथी एक आत्मस्वरूपनी रमणता स्वभावानंदीपणुं छे, ए सातमु गुणठाणु ७ आठमु अपूर्व गुणठाणु एटले पुर्वे आत्मानो स्वभाव प्रगट न थयो अने अहियां थयो माटे अपूर्व, ए आठमु गुणठाणु ८ नवमु अनिवृत्तिबादर गुणठाणु (कहेता) अहिया बादर कषायनो तथा वेदनो आदि देइने त्याग थाय अने आत्मज्ञान विशेषे प्रगटे, ए नवमु गुणठाणु ९ दशमु सुक्ष्म संपराय गुणठाणु (कहेता) एक सुक्ष्म लोभ अणुमात्र उदयमां होय, अहिया बाकी सर्व मोहनीकर्मनी प्रकृतियो उदयमा नथी कोइक जीवने सत्तामा पण नथी अहिया आत्मगुण पर्याय, स्वभाव लक्षण विशेषे प्रगटे ए दशमु गुणठाणु १० अगीयारमु उपशांत मोह (कहेता) मोहनीकर्म संपुर्ण उपशमी गयु त्या वीतरागपद थयो पण ते उपशम भावनो छे, सत्ताये मोहनीकर्म मोजुद छे, ए अगीआरमु गुणठाणु ११ बारमु क्षीणमोह (कहेता) मोहनी कर्मनो क्षय थयो ए संपुर्ण वीतराग हवे पाछा

पम्वाना नथी, ए बारमुं गुणठाणुं १२ तेरमुं सजोगीकेवळी गुणठाणुं, सजोग कहेतां मन वचन अने कायाना जोग छे परंतु ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य सपुर्ण क्षायकभावनु पाम्या छे ए अरिहंत थया, ए तेरमुं गुणठाणु १३ चौदमु अयोगी केवली गुण ठाणुं त्यां सर्व जोगरहित छे ए चौदमु गुणठाणु १४ हवे ए चौदे गुणठाणे जे जे कर्मप्रकृतिनो बंध छे छा:वा नथी ते कहे छे प्रथम मिथ्यात्व गुणठाणे १२० एकशोने वीश प्रकृति जे पूर्वोक्त कहीछे तेमांहेली एकशोने सत्तर ११७ प्रकृतिनो बंध होय ते त्रण प्रकृति ओछी थई तेना नाम तीर्थंकर नामकर्म १, आहारक शरीर २ अने आहारक अंगोपाग ३, ए त्रण घटामीए एटले एकशोने स त्तर प्रकृति रहे ए पहेले गुणठाणे बंध कह्यो १, बीजे सास्वादन गुणठाणे एकशोने एक १०१ प्रकृतिनो बंध होय त्यां सोळ प्रकृति घटाम्वी, तेनां नाम नरकनी गति १, नरकनी आनुपूर्वी २, नरकनु आयुष्य ३, एकेंद्रीनी जाति ४, बेरद्रीनी जाति ५, तेरद्रीनी जाति ६, चौरेंद्रीनी जाति ७, स्थावर नामकर्म ८, सुक्ष्म नामकर्म ९, अपर्या-

सो नामकर्म १०, साधारण नामकर्म ११, हुंमक सस्थान १२, आताप नामकर्म १३, छेवठ्ठ संघयण १४, नपुंशकवेद १५, मिथ्यात्व मोहनी १६ ए सोळ प्रकृति ११७ एकशोंने सत्तरमांहिथी काढीए एटले एकसोने एक प्रकृति रही ए १०१ प्रकृतिनो बंध बीजे गुणठाणे लाभे हवे त्रीजे मिश्रगुणठाणे ७४ चुमोतेर प्रकृतिनो बंध होय, त्या प्रकृति २७ घटी तेना नाम तिर्यचनी गति १, तिर्यचनी आनुपूर्वी २, तिर्यचनुं आयुष्य ३, थीणद्धी निद्रा ४, प्रचलाप्रचला निद्रा ५, अने निद्रा निद्रा ६, दुर्भाग्य नामकर्म ७, दुस्वर नामकर्म ८, अनादेय नामकर्म ९, अनतानुबंधी क्रोध१० अनतानुबधी मान ११, अनतानुबधी माया १२, अनतानुबधी लोभ १३, मध्यनां चार सस्थान १७ अने मध्यना चार सघयण २१, नीच गोत्र २२, उद्योत नामकर्म २३, अशुभवीहाजे गति २४, स्त्रीवेद २५, मनुष्यनु आयुष्य २६ अने देवतानु आयुष्य २७, ए सत्तावीश प्रकृति १०१ माथी घटाडीए एटले ७४ चुंमोतेर प्रकृतिनो बंध रहे, ए त्रीजा गुणठाणानो विचार कह्यो ३ हवे

चोथा अविरति समकिति गुणठाणे पूर्वोक्त ७४ चुंवोतेर प्रकृतिमां ३ त्रण प्रकृति वधारीए त्यारे सीतोतेर ७७ प्रकृतिनो बंध थाय ते त्रण प्रकृतिनां नाम तीर्थंकर नामकर्म १, मनुष्यनुं आयुष्य २ अने देवतानुं आयुष्य ३, ए सीतोतेर ७७ प्रकृतिनो बंध चोथा गुणठाणे होय. ४ हवे पांचमुं देशविरति गुणठाणे ६७ सम्सेट प्रकृतिनो बंध होय. पूर्वे चोथा गुणठाणे ७७ कही हती तेमांथी १० घटी तेना नाम वज्ररिषभनाराच संघयण १, मनुष्यनी गति २, मनुष्यनी आनुपूर्वी ३, मनुष्यनुं आयुष्य ४, अप्रत्याख्यानीय क्रोध ५ अप्रत्याख्यानीय मान ६, अप्रत्याख्यानीय माया ७, अप्रत्याख्यानीय लोभ ८, उदारीक शरीर ९, उदारीक अंगोपाग १० ए दश प्रकृतिनो नाश थये पांचमे गुणठाणे ६७ सम्सेट प्रकृति लाधे-५ हवे छठे गुणठाणे ६३ त्रेसेट प्रकृतिनो बंध होय इहां ४ चार प्रकृति घटी तेनां नाम. प्रत्याख्यानीय क्रोध १, प्रत्याख्यानीय मान २, प्रत्याख्यानीय माया ३, प्रत्याख्यानीय लोभ ४, ए चार प्रकृतिनो नाश करेथी संयतीपणु होय ए छठे

प्रमत्त गुणठाणे जाणवुं ६ हवे अप्रमत्त सातमा गुणठाणे ५९ ओगणसाठ प्रकृतिनो बंध होय, तो अहिंआं प्रकृतिनो विवरो कहे छे. शोक १, अरति २, अस्थिर नामकर्म ३, अशुभ नाम कर्म ४, अयश नामकर्म ५, अशाता वेदनीय ६, ए छ प्रकृति अथवा देवनु आयुष्य बांधे तो सात प्रकृति ए सात घटना ५६ छपन प्रकृति रही जो देवनानु आयुष्य न बाधे तो, अने बाधे तो सत्तावन रही देवनानु आयुष्य बांधे त्यारे देवतानां अंगोपांग पण बाधे तो ५८ अठावन प्रकृतिनो बंध थाय अथवा ए देवतानुं डुग न होय तो ५६ प्रकृति ठरे अहिंआ चरचा घणी छे पण ६३ त्रेसटमाथी ६ काढीनाए एटले ५७ प्रकृति रही अने तेमां २ प्रकृति वधारीए एटले ५९ ओगणसाठ प्रकृति रही एम समजवु ए सातमा गुणठाणानो विचार तेमां देवतानु आयुष्य बांधीने आव्यो होय तो अंगोपाग इहा बाधे तो अठावन प्रकृतिनो बंध होय ७ हवे अपूर्वकरण आठमु गुणठाणुं तेनो विचार कहे छे तेना सात भाग छे तेना पहेले

भागे तो ए अठावन प्रकृति बांधे तथा बीजे भागे निद्रा १, अने प्रचला २, ए बे प्रकृतिनो अंत करे एटले छप्पन ५६ प्रकृति बांधे. छेवटे सातमे भागे २६ छवीश प्रकृति बांधे एटले त्रीश प्रकृति घटे तेनां नाम कहे छे देवतानी गति १, देवतानी आनुपूर्वी २, पंचेंद्रिनी जाति ३, शुभविहाउं गति ४, त्रस नामकर्म ५, बादर नामकर्म ६, पर्याप्तो नामकर्म ७, प्रत्येक नामकर्म ८. स्थिर नामकर्म ९, शुभ नामकर्म १०, सौभाग्य नाम कर्म ११, सुस्वर नामकर्म १२, अनआदेय नामकर्म १३, वैक्रीय शरीर १४, अहारक शरीर १५, तेजस नामकर्म १६. कार्मण नामकर्म १७, वैक्रीय अंगोपांग १८, अहारक अंगोपांग १९. समचौरस संस्थान २०, निर्माण नामकर्म २१. जीन नामकर्म २२, वर्ण २३, गंध २४, रस २५, स्पर्श २६, अगुरुलघु नामकर्म २७, [illegible] नामकर्म २८, उपघात नामकर्म [illegible] श्वासोश्वास नामकर्म ३० ए त्रीश प्रकृतिनो [illegible] थके छेल्ले सातमे भागे २६ छवीश [illegible] होय. ए अपूर्व गुणठाणनो [illegible] हवे न

वमुं अनिवृति बादर गुणठाणे पहेले भागे २२ बावीश प्रकृतिनो बंध होय त्यहां च्यार प्रकृति घटे तेनां नाम. हास्य १, रति २ दुगंछा ३ अने भय ४, ए च्यार प्रकृति छवीसमाथी काढीये त्यारे २२ बावीश प्रकृतिनो बंध रहे अने छेल्ले भागे १८ अढार प्रकृतिनो बंध रहे ए च्यार प्रकृति घटे तेना नाम पुरुषवेद १, सज्वलनो क्रोध २, सज्वलनो मान ३, सज्वलनी माया ४ ए चार प्रकृति बावीशमांथी घटामीए एटले १८ अढार प्रकृतिनो बंध रहे सज्वलनो लोभ घटामीए तो दशमे सुक्ष्म संपराय गुणठाणे १७ सत्तर प्रकृतिनो बंध रहे अगीआरमु तथा बारमुं तथा तेरमुं ए त्रण गुणठाणे तो एक शातावेदनीयनोज बंध छे अने चउदमु गुणठाणुं अबंध छे ए कर्मग्रंथना पाठथी गुणठाणे गवेखीने कर्म बंध कह्यो हवे ए प्रकृतिओना बंधनी जे स्थिति ते पांचमा कर्मग्रंथथी जाणजो अहिंआं कही नथी शामाटे के ग्रंथ वधी जाय. हवे ए कर्मनो बंध शावडे थाय छे ते चोथा कर्मग्रंथने विषे चार बंध हेतु कह्या छे मिथ्यात्व) १ अव्रत, २

कषाय ३, अने योग ४ ए चार कर्मबंधना हेतु कह्या छे पण ए सर्वनो हेतु एक अशुद्ध उपयोग छे ते अशुद्ध उपयोगने तजवानी खप करवी अने कर्मग्रंथने विषे प्रकृतिओ कही ते व्यवहारनयथी कही छे अने जे गाथानी साक्षी माहानिशीथसुत्रनी आपी छे ते रीते समजवी तथा भावग्रंथनो भावार्थ आ गाथामां जे कह्यो ते उपर उपयोग राखीने ज्ञाननी खप करवी ए दशमी गाथानो अर्थ कह्यो.

द्रव्यादिक जाणे जे ज्ञानी, तेहने केवली कहीएरे;
केवलीने ए बेमां अंतर नही, बृहत्कल्पभास्ये
लहीएरे ज्ञान० ११

अर्थ—द्रव्यादिक चिताए कहेतां जे द्रव्यानुयोगनो जाण एटले चारे अनुयोगनो जाण थाय पण त्यारमांहि द्रव्यानु योगनुं जाणपणुं ते घणुंज कठण छे. ते बाळ जीवना जाणवामां न आवे, शामाटे के त्रण अनुयोगने तो बाळ जीव समजे पण चोथो द्रव्यानुं योग छे तेने तो ज्ञानीज समजे. ए सद्गुरुनी सेवाथी तथा क्षयो-

पशमना बळथी जाणवामां आवे छे, ए लक्षण स्वभाव स्याद्वादशैलीए जे जाणपणुं थाय ते यथार्थ स्वरुपने जेळखे तेने केवळज्ञानी कहीए एटले केवळज्ञानीमां अने द्रव्यानुयोगना जाणवावाळा पुरुषमां कइ पण अंतर न जाणवो. जेम केवळज्ञानी केवळज्ञानवमे जाणे अने केवळ दर्शनवमे देखे छे तेमज श्रुतकेवली अनुभव ज्ञानवमे जाणे देखे छे स्वरुप यथार्थ प्ररुपे छे अने जाणवामां पण यथार्थ छे माटे ए बेमां कांइ भीन्नपणुं जाणवुं नहि एवु बृहत्कल्पनी भास्यने विशे कह्यु छे अने समजवामा पण एमज आवे छे. पछी तत्व तो केवळी जाणे.

उक्त च–

गीयत्थोय केवलीण चउव्वीहे जाणणेय कहणेय ॥
उक्षे रागद्वेशे अणंत कायस्सवंझ जाणवा ॥

एम जाणीने जे द्रव्यानुयोगना जाण ज्ञानी पुरुष तेमनो अविनय न करवो तेमनी सेवा भक्ति करवी तेमनी आज्ञा माथे चढाववी एम करे ते जीवने सुखे सुखे धर्मनी प्राप्ति थाय

अने ते जीव वहेलो कर्मनो नाश करीने मोक्षे पण जाय. अने अविनय आदि करवावाळा ते दुर्लभबोधी थाय, तथा बहुल संसारी थाय एम समजवुं हवे प्रसंगे द्रव्यानुयोगनी वारता किंचित् कहे छे ते द्रव्यनां नाम. धर्मास्तिकाय १, अधर्मास्तिकाय २, आकाशास्तिकाय ३, पुद्गलास्तिकाय ४, जीवास्तिकाय ५ अने काळ ६. ए छ द्रव्य छे. हवे ते द्रव्यनी ओळखाण करवी एटले द्रव्य कहेतां शुं तो जे गुण पर्याय सहित होय अने त्रणे काळ एक रुपे रहे तेने द्रव्य कहीए. जेम पर्याय पलटे, तेम द्रव्यनुं पलटवुं न थाय तेने द्रव्य कहीए एटले गुण पर्याय कहेतां जीवद्रव्यनो ज्ञानादि गुण अने पुद्गल द्रव्यनो रक्तत्वादि गुण इत्यादि पर्यायनी पेठे द्रव्य पलटे नहि. जेम मृत्तिका द्रव्य तेनो जे गुणपर्याय घटादि ते सर्वे पर्याय छे मृत्तिका ते द्रव्य छे आधाराधेय ते गुण छे ए रीते समजवुं इहां द्रव्य शक्ति भावे गुणपर्यायमां रही छे अने व्यक्ति भाव ते गुण पर्यायनो प्रगटपणो आवरणना अभावे थाय. हवे ते द्रव्य बे प्रकारना

छे एक सामान्य, अने बीजो विशेष. सामान्य ते द्रव्य स्वरुप छे, अने विशेष ते गुणपर्यायरुप छे एम जुदो जुदो भिन्नपणानी वक्तव्यताने सुमतिग्रंथथी जाणजो हवे एम भिन्नपणु एकांते जो मानीए तो द्रव्य गुण अने पर्याय ए त्रणे भिन्न थइ जाय तो मोटो विरोध आवे शामाटे के गुण पर्यायने ज्यारे जुदा मानीए त्यारे द्रव्य ते शाने कहीए ? जेम सुवर्ण द्रव्य छे अने तेना घाट अनेक छे ते कइ सुवर्णथकी भिन्न नथी. तेमज ज्ञानादि गुणो ने आत्माथकी जुदा नथी आत्मा एज ज्ञान, अने ज्ञान एज आत्मा छे. अहिंयां कोइ एकांतवादी एम जाणशे के अमो एमज मानीए छीए, शामाटे के मृत्तिकाथकी घट जुदो नथी, तेमज आत्मा अने ज्ञान एक रुपेज छे पण भिन्न कोइ काळे सम्भवे नहि तेने उत्तर के, जे एकत्व वचन तुं कहे छे ते एकत्व मार्ग वितरागनो नथी अहिंयां तो स्याद्वादमार्ग छे कोइ जगाए भेद होय अने कोइ जगाए अभेद पण होय एमां कइ विरोध नथी अहिंयां शिष्य प्रश्न करे छे. के स्वामी एक

द्रव्यने विषे भेद अने अभेद ए बे धर्म केम पामीए एतो प्रत्यक्ष विरोध छे ज्यां भेद होय त्यां अभेद न होय, अने ज्यारे ए बे धर्मनी एक स्थानके प्राप्ति थाय त्यारे तो महा विरोधकारी दीसे. जेम जे जगाए अंधारुं होयते जगाए अजवाळुं न होय तेम जे जगाए अजवाळुं छे त्यां अंधारुं न होय तेमज एक द्रव्यमां भेद अने अभेद केम संभवे तेनो उत्तर जे श्रुतज्ञाननी रमणता करो एटले तमोने समज पडशे, अने ज्यांसुधी श्रुतज्ञाननी रमणता न थाय, त्यांसुधी चारित्रधर्म पण फळदायक थतो नथी, अने कोइ चारित्रीउं समाधि पण पामे नहि. ते श्री आचारांगजीमां कह्युं छे. यदुक्तं—

वीतीगीछ समावनेणं अप्पाणेणं तं लभंती समाहि

जे घट घट भावादिकने यद्यपि विरोध छे तो हे पण भेदाभेदने विरोध नथी शामाटे के सर्व द्रव्यने विषे अथवा सर्व ठामने विषे बन्ने धर्म रह्या छे. भेद धर्म छे अने अभेद धर्म पण छे. ए बे धर्म अविरोधी भावे रह्या छे. एकत्व

वर्तीपणे दीसे छे, एटले एकत्वभाव अभेद स्वभाव ते साचो, अने भेद स्वभाव उपाधिपणे माटे जुदो एम कोइ कहे ते पण अनुभव सत् भासन थतो नथी एटले व्यवहारनयपर अपेक्षा ए बेहुनो गुणादिकनो भेद, अथवा गुणादिकनो अभेद ए वचन तो एक ठामे नथी जे घटादि द्रव्यने विषे सर्व लोकनी शाखे प्रत्यक्ष प्रमाणे दीसे छे के रक्तत्वादि गुण पर्यायनो भेदाभेद जे लहीए छीए तो तेनो विरोध कहो केम कहीए जे प्रत्यक्ष ते घटने विशे वर्ण गंध रस स्पर्श रह्या छे, अने सर्व नोखा नोखा कार्यना कर्ता छे अने एक द्रव्य आश्रीने वर्त्ती छे ते आपणने प्रत्यक्ष अनुभव थाय छे तो विरोध कहो केम कहेवाय ? तेज रीते सर्व द्रव्यने विषे भेदाभेदनु जाणवु

उक्तं च—नहि प्रत्यक्ष दृष्टऽर्थविरोधाना मत था प्रत्यक्ष दृष्ट हवे द्रष्टान्तनु पण कार्य नथी उक्तंच-केदमन्यत्र दृष्टता मोहनी पुर्णता तव दृष्टान्त पाच सेयत्व प्रत्यक्षाप्यनुमानवत् ॥१॥

हवे ते भेदाभेदनु स्वरूप प्रत्यक्षपणे पुद्गल

द्रव्यमां देखाडे छे जेम प्रथम जे घट हतो ते श्यामवर्णो हतो तेज घट पाछो रक्तवर्णो थयो तो ए प्रत्यक्ष भेद जाणवो तेज घट घणे काळे जोइए तो मृत्तिकारुप छे त्यां अभेद छे ते ठेकाणे पुद्गल स्वभावनो भेद तथा अभेद स्वरुप विचारतां सप्तभंगी लागु पडे ते कहे छे स्यात् अस्तित्व १, स्यात् नास्तित्व २, स्यात् अस्तिनास्तित्व ३, स्यात् अवक्तव्य ४, स्यात् अस्ति अवक्तव्य ५, स्यात् नास्ति अवक्तव्य ६, स्यात् अस्ति नास्ति युगपत् अवक्तव्य ७. ए सप्तभंगी जे छे, ते प्रत्येके प्रत्येके करीए तो करोडो गमे सप्तभंगी थाय तथापि लोकने विषे प्रसिद्ध वाक्य जे घटनी ग्रीवादि पर्याय सहित घट छे तो तेहिज घट स्वक्षेत्र, स्वद्रव्यादि के अस्ति छे पररुपे जोइए तो नास्ति छे एम समजीए हवे ए सप्तभंगीनुं स्वरुप देखाडे छे. स्वद्रव्य १, स्वक्षेत्र २, स्वकाळ ३ अने स्वभाव ४ अपेक्षाए घट छे परद्रव्य, परक्षेत्र, पर काळ, अने परभावनी अपेक्षाए घट नथी एक वखते स्व, पर बेहुनी साथे विवक्षा करतां अवाच्य छे शामाटे के जे बे पर्याय एक शब्दे मुख्य रुपे न

स्यंतो तस्सउ बालाइया पज्जवन्नेया बहू विय-
प्पा ॥ १ ॥ इति सुमती गाथाय ॥

हवे जुना न्यायकने एवी शङ्का रहे छे के, ज्यां भेद होय त्यां अभेद न होय अने अभेद होय त्यां भेद न होय एवी शंका राखे छे ते शंका टाळवाने वास्ते तेने समजावे छे के इहां श्याम वर्ण अने रक्तवर्ण धर्मनो भेद भासे पण घट धर्मनो भेद न भासे, एम जो कहीए तो जम चेतननो भेद जुदो पमे पण जमत्व चेतनत्व धर्मनो भेद पण जम चेतन धर्मनो भेद नहि एटले शुं कह्युं के जमपणुं अने चेतनपणुं भिन्न थयां पण द्रव्यपणुं जुदुं न थयुं एम अध्यवसाय थाय. धर्मीने प्रतियोगपणे जेळखे तो बेहु गाम सरखा छे एटले द्रव्य एकनो एकज रह्यो अने भेद अभेद बन्ने जणाया ए अर्थ प्रत्यक्ष सिद्ध थयो एम जम चेतनमांहे भेदाभेद कहेतां शुद्ध अर्थ थाय छे ते माटे जे भिन्नरुप जीवाजीवादि तेमांहे रुपांतर द्रव्यत्व पदार्थत्वादि अभेद पण आवे एटले भेदाभेदने सर्वत्र व्यापकपणुं कह्युं छे ए पदार्थ संक्षेपे कह्यो, तेने हवे वि-

भावे होय त्यांतो सप्तभंगी करो, पण ज्यां प्रदेशना प्रस्तावादिक विचार होय त्यां त्रिजा नयथी मांमीने सातमा नय सुधी अथवा पांच नयनो अथवा ठ नयनो अथवा सात नयनो इत्यादिक भिन्न भिन्न विचार होय त्यांतो अधिक भंग जाळ होय तेवारे सप्तभंगीनो कंइ नियम रहे नही तो अहींयां शो विचार करवो? त्यारे गुरुराय उत्तर कहे ठे के त्यां पण एक नयना अर्थनो मुख्यपणे विधि ग्रहीए बींजा सर्व नयोनो निषेध करीए एम लेइने प्रत्येके प्रत्येके अनेक सप्तभंगीउं करीए. अमारा समजवामां तो एमज् ठे के सकल नय अर्थ प्रतिपादक तथा पर्यायारथीक कारण वाच्य ठे एटले पर्याये करीने नयभेद सर्वे थाय ए लक्षण लेइने सर्व नयनो सत्कार करवो. अने सर्व नयना समुदायनुं आलंबन ग्रहवुं कोइ भंगनो अहियां निषेध नथी अहियां कोइ अज्ञानी मूढ दृष्टिनो घणी व्यवहार कल्प शुभाशुभ नये ग्रहवा चाहे ठे पण एम नथी समजता जे प्रथमनी चार नयोमां तो व्यवहार कल्प आश्रीने जोतां धर्मज नथी अने कहेशे के

ए नये बधीये प्रमाण खरी के नहि तेने कहीए के भाइ ए नयो कंइ कल्प व्यवहार वास्ते प्ररुपी नथी, अने तमे कल्प व्यवहारमां ए लगावीने शुभाशुभ मार्गने स्थापो छो, ते कुनय थाय शा माटे के व्यवहार छे ते मूळमा त्रीजो एकज नय छे तेमां तमे सात नय शी रीते उतारो छो? ए तो प्रत्यक्ष कुनय थाय माटे सवळु समजीने नयनो विचारनय अयोथकी जाणवो जोइए अने भगवाने नय अधिकार प्ररुप्यो छे ते द्रव्य पर्याय ग्रहण करवा वास्ते छे एटले वस्तु धर्म ग्रहण करवा अने अंशे अंशे भिन्नपणुं देखाडवुं, अने वस्तु स्वरुपनुं ओळखावनु, तेने वास्ते नयो कही छे पण कंइ कल्प व्यवहार वास्ते कही नथी, ए तो कुनय छे. ए अधिकार सम्मति ग्रंथ मध्ये छे एटले द्रव्यार्थिक अने पर्यायार्थिक ए बे नय अद्यापि छे, ते मध्ये द्रव्यार्थिकनी चार (४) नय अने पर्यायार्थिकनी (३) नय ए द्रव्यार्थिकनि द्रव्य ग्रहण करता छे, अने पर्यायार्थिकनी पर्याय ग्रहण करता छे, ए तो वस्त धर्ममा छे, पण कल्प व्यवहारमा लगाववी ते

कुनय छे. एम समु समजो. अथवा आहिंयां सप्तभंगी कही ते बन्ने नय जे द्रव्यार्थिक अने पर्यायार्थिक वस्तु ग्रहण आश्रीने कही छे व्यंजन पर्यायने ठामे बे भंग कह्या छे ते अर्थ सिद्धिना अधिकारने विषे. उक्तं च.

एवं सत्त विअप्पो, वयण पहो होइ अठपज्जेये. वंजणपज्जोए पुण, सविअप्पो निव्विअप्पावीतिन्न अतिन्न अ वाच्यो रे ॥ १ ॥

अर्थ–ए जे पूर्वे कह्या ते प्रकारे ए सात विकल्प छे. ते साते प्रकारे वचन प्रवेश सप्तभंगी रुप वचनमार्ग ते अर्थ पर्याय छे एटले सात प्रकारना वचनवडे अर्थनी प्राप्ति थाय तेने अर्थ पर्याय कहीए. अस्तित्व नास्तित्वपणाने विषे होय, हवे जे व्यंजन पर्याय छे, ते घट कुंभादिक शब्दवाच्यक छे ते सविकल्प जे विधिरुप अने निर्विकल्प ते निषेधरुप एटले घटादिकने विषे विकल्प सहित विचार करवो, अने एक निर्विकल्प विचार करवो, ए बे भांगा होय पण अवक्तव्यादिक भांगा न होय शामाटे जे अवक्तव्य शब्द

विषे कहीए तो विरोध आवे, ए नय अहियां लागु पमतो नथी जे समभिरूढ नयने मते सविकल्प ठे, अने एवंभूत नयने मते तो विकल्प छेज नहि ए नय तो निर्विकल्प ठे एम भेद जाणवा अथवा अर्थ नय प्रथमनी चार नय तो व्यंजन पर्यायने मानेज नहि, एटले व्यंजन पर्यायवाळो तो प्रथमनी चार नयोने मानतोज नथी ते माटे नयनो अहिया प्रवृत्ति नथी, अने अधिकु जोवु होय तो अनेकांत विवक्षाथी जाणवु ते माटे सप्तभंगनो दृढ अभ्यास करवो, सर्वने विषे ए सप्तभंगी लागे जे जे देशे जे जे वस्तुने ग्रहण करीए त्यां सप्तभंग प्रमाण होय सिद्धमा पण सप्तभंगी लागे, अने नयो तो कोइ जग्याए लागे अने कोइ जग्याए न लागे, अथवा सिद्धमां तो लागेज नहि. माटे सप्तभंगनो अभ्यास करवो. अहियां परमार्थ जीवाजीवादिक भेद अथवा द्रव्य पर्याय ग्रहण कराने वास्ते स्याद्वाद परिज्ञान ठे. ते जैनशासननु मूळ ठे अने ए तर्कवाद ठे तेने जैनी कहीए अने तेनोज जैनन्याय लेखे ठे एम

निश्चयथकी समकितादि परिज्ञान तेने समकित कहीए तेने साधु पण कहीए तेने ज्ञानी कहीए. अने तेनीज मुक्ति थाय छे ते विना जे व्यवहार क्रिया करे छे अथवा चरणसित्तरी अने करणसित्तरी जे पाळे छे ते जीव तो संसारमां रखडशे तेनी मुक्ति थवानी नथी ज्यारे त्यारे ए स्याद्वाद परिज्ञान पूर्वोक्त थशे, ते दहाडे ते आत्मानुं कल्याण थशे, अने सर्व कर्मथी रहित थइने मुक्तिनां सुख भोगवशे एवुं सम्मतिग्रंथमां कह्युं छे. उक्तं च.

चरण करणप्पहाणा,
ससमय परसमय मुक्कवावारा ॥
चरण करणस्ससारं,
नच्चिय सुद्धं न याणंति ॥ १ ॥

हवे नय प्रमाणे किंचित् विवेक करीने देखाडे छे के जे घट पटादि पदार्थ अथवा जीवाजीवादिक पदार्थ अथवा द्रव्य गुण पर्यायरुपे त्रण त्रण स्वरुप भेद थाय तेनो अर्थ एकज छे शामाटे के घटादिक पदार्थ मृतिकारुप छे. ते

गुण ग्रहण थयो ए उपाधिसहित छे तेने अ शुद्ध निश्चयनय कहीए तथा चौदे गुणठाणां ते पण अशुद्धतामांज लखे छे शुद्ध स्वरुपना द्रव्य ते देखवावाळो जे चेतनद्रव्य तेनेज शुद्ध माने छे ए द्रव्य संग्रहने विषे कह्यु छे उक्तं च

मग्गण गुणठाणेहिं, चउदसहि हवंतितह ॥
अशुद्धनया विणेयाससारी, सवशुद्धाहु शुद्धनया ॥१॥

अर्थ अथवा व्यवहार नयपदे सिद्ध अने संसारी जीवना भेद वेहेंचीए त्यां पण चउदे गुणठाणे व्यवहार कह्यो तो ए पण अशुद्धज छे शामाटे के सदाय काळ उपाधिसहित ते अशुद्धज छे, अने उपाधिरहित ते शुद्ध छे, एटले निश्चयनयना शुद्ध अने अशुद्ध ए बे भेद कह्या एटले निश्चय कहेतां भेद ज्यां न होय एकलो अभेद वस्तुने ग्रहण करे तेने निश्चयनय कहीए, अने व्यवहार नय कहेतां भेद वेहचे वस्तुने अंशथकी भिन्नभिन्न दर्शावे तेने व्यवहारनय कहीए ते व्यवहारनयना बे भेद एक सद्भूत व्यवहारनय अने बीजो असद्भूत व्यवहारनय एक द्रव्य आश्रित ते सद्-

भूत व्यवहार; परविषयता ते असद्भूत व्यवहार. हवे पहेलो भेद जे सद्भूत व्यवहार कह्यो तेना बे प्रकार छे एक उपचलित सद्भूत व्यवहार, १ अने बीजो अणउपचलित सद्भूत व्यवहार २, जे उपाधिसहित गुण गुणी भेद देखाडे जेम जीव शमतिज्ञानी ते उपाधिसहित थयो. उपाधि ते उपचारे छे अने जीव ज्ञान ए सद्भाव छे, एटले ए सद्भूत उपचलित ए पहेलो भेद कह्यो. हवे अणउपचलित सद्भूत व्यवहार ते गुणगुणी भेद करे. ए बीजो भेद जेम जीव ते केवळज्ञानी तो केवळज्ञान. उपाधिरहित छे एटले उपचार अहिंआं छेज नहि अने जीवने, ज्ञान ए बे भेद थया एटले ए त्रणे भेदमां उपचलित सद्भूत व्यवहार थयो हवे असद्भूत व्यवहारनयना पण बे भेद छे, एक उपचलित असद्भूत व्यवहार अने बीजो अणउपचलित असद्भूत व्यवहार. त्यां पहेलो भेद असंसलेषित योगे जेम जीवनां कर्म ए ससंबंध स्वस्वामित्व भाव रुप कल्पित छे, शामाटे के कर्म छे ते जुदां उपचारे छे, केमके ज्यारे त्यारे [illegible] थ्या , अने जीव ते कर्म बंधन

छेदिने जुदो पमे अथवा कर्म सर्व सादी सांत भांगे छे ते स्थिति प्रमाणेज आत्मप्रदेशे रहे माटे ए उपचलित अने जीवथि कर्म जुदां तेथी असद्भूत एम समजवु, एटले ए असद्भूत उपचलित व्यवहार कह्यो हवे बीजो भेद जे छे ते संसलेक्षितजोगे छे ए संबध एम जाणवो के जेम जीवने रागादिक परिणाम ए संबध कर्मनी परे नज जाणवो, तेनो अनादि संबध छे, तो ए विपरीतभावथकी आत्मा जुदो थायज नहि ए तो श्रेणीग ते शुक्लध्याननो पहेलो पायो ध्याइ रहे, अने बीजे पाये ध्यानारूढ थको वितराग भावे जाय ते वखते पुद्गलथी आत्मा लाछ्रश जुदो पमे ते माटे ए कइ उपचारकृत्य छेज नहि माटे अनुपचलित कहीए, अने जीवनो विषय शुद्ध अने रागादिकनो विषय अशुद्ध एम भिन्न विष्य छे माटे अणउपचलित असद्भूत व्यवहार थयो, एम नयभेदना अनेक विकल्प थाय छे. वस्तु धर्म अंशे ग्रहीने द्रव्यना अनेक भेद थाय छे, ते पण द्रव्यनी ओळखाण करवा वास्ते मुळभेद त्रण कह्या छे उत्पाद ॥१॥ व्यय ॥२॥ अने ध्रुव ॥३॥

ए त्रण पदे करीने सहित होय तेनेज द्रव्य कहीए. हवे ए त्रणे पदनी उळखाण. सर्व अर्थ व्यापकपणुं धारवुं एटले जीनशाशनने मते ए त्रण गुण विना कोइ द्रव्य छेज नहि. इहां केटलाएक आत्मादि द्रव्यने नित्य माने, केटलाएक अनित्य माने, अने केटलाएक द्रव्यना एकाकि भेद वहेंचे छे ते रीत सत्य छेज नहि. नित्य अनेकांत अने अनित्य अनेकांत, एवुं जे बोलवुं ए पक्ष पण लोकथकी विरुद्ध छेज ते माटे सर्व पदार्थने विषे उत्पादव्यय ध्रुवसहित द्रावणे मानवुं एम श्री हेमचंद्राचार्यजी कृत्य स्याद्वादमंजरी ग्रंथमांहे पण प्रमाण छे. उक्तं च.

आदिप्टमाद्यां समस्त वस्तु स्याद्वादमुद्रानती भदी वस्तु तन्नीत्यमे वैक मनित्यमन्य, दितित्वदाज्ञाद्विशतां प्रलाप. ॥ १ ॥

अर्थ—के अदीपं एटले दीपादार कहेतां भुवन प्रकाश दीपक वोम्य मरजादा करे त्यां सर्व वस्तु पदार्थ स्वरुप समस्त भाव एटले सर्व पदार्थने देखाडे के आपदार्थ स्वरुप द्रव्यपर्यायात्मी-

कमिति तथा च वाचक मुख्य उत्पाद व्यय अने ध्रुव उक्तंच स्तदीति समसभाव करत येहीज भाव वीतरीने कहेले के उत्पाद १, व्यय २, अने ध्रुव ३ ए त्रण लक्षण तो षट्द्रव्यमाही समय समय प्रणमे ले अहिंया कोइ एवी शका करशे के ज्यां उत्पादव्यय होय त्यां ध्रुवपणुं होयज नहि, अने ज्यां ध्रुवपणु होय त्या उत्पादव्यय होयज नहि, ए तो विरोधनी वारता ले तो त्रण लक्षण एक ठामे होय ले ते केम मनाय ? ज्या छाया ले त्यां ताप होयज नहि, अने ज्या ताप ले त्या छाया होयज नहि ए एक ठामे बे वाना होयज नहि, तेम ए त्रण लक्षण पण एक ठामे होयज नहि, एम कहेनारनी शका टाळवाने वास्ते सद्गुरुराय उत्तर कहे ले के जे सीत तथा उष्ण जळने विषे तथा वह्निने विषे परस्पर मांहोमांहे एक एकना विरोधी होय ते एक ठामे नज होय ए प्रत्यक्ष विरोधी लेज पण अहिंया तो आ त्रणे लक्षण सर्वे पदार्थने विषे प्रत्यक्षपणे दीसे ले तेहनो परस्पर त्याग केम थाय ? प्रत्यक्ष सिद्ध ले तेनी ना केम पमाय? अहिया विरोध केम कहेवाय? अनादि काळना

एकांतवासनाए मोहदृष्टिमां व्यापीने तथा प्रणमी-
ने रहेला जे जीव होय तेने एनो विरोध जासे
पण जे ज्ञानि जीव होय ते परमार्थ विचारीने जुवे
तो तेनो विरोध आवतोज नथी, समय तत्त्वज्ञ परती
एज वचन विरोधजंजकछे तेहिज स्वरुप देखाम्छे.
के एकज कंचन ऽव्य छे. तेनो पूर्वे कुंमळ घाट हतो
ते कुंमळघाटनो नाश थयो अने मुगटाकारे उत्पत्ति
थइ अने कंचनाकारे स्थिति छे ए त्रणे लक्षण
प्रगट दीसे छे शामाटे के हेम कुंमळ जागीने मु-
गट कर्यो छे तेवारे घाटनो नाश थयो माटे कुं-
मळाकारे व्यय थयो ए सत्य छे अने हेम मुगटाकारे
उत्पत्ति थइ एटले उत्पात ए पण सत्य छे अने
हेम ऽव्ये स्थिरजाव छे एटले ध्रुव छे एम उत्पाद
व्यय साधीए अथवा बीजो द्रष्टांत कहे छे यथा
गोरस एटले गोरस शब्द एक छे हवे गोरस कहेतां
ऽधनो नाश, त्यां दधिनी उत्पत्ति. अने गोरसजावे
स्थिति एटले ऽधनो नाश एटले व्यय कहीए
अने दधिनी उत्पति ते उत्पात कहीए अने
गोरसजावे स्थिति एटले ध्रुव कहीए ए रीते उत्पाद
व्यय. अने ध्रुव ए त्रणे लक्षण एक द्रव्यमां छे अ-

दिख्यां उत्पादव्यय विना कोइ द्रव्य दीसतोज नथी तेम ध्रुवतापणा विना कोइ द्रव्य दीसतोज नथी जे मुगटाकारे स्पष्ट उत्पाद छे ते पण हेम द्रव्य विना नथी अथवा हेम द्रव्य पण कोइ घाट विना नथी हेम पर्यायनु परावर्तन धर्म छे त्यां उत्पादव्यय थाय छे अने ध्रुवतापणानुं ध्रुवता धर्म छे त्यां ध्रुवपणुं रहे छे एम ए त्रणे गुण मळीने द्रव्य थाय छे तेवारे ध्रुवतापणानी परतीत पण थाय छे तेमाटे तद्भाव आत्मा ए नित्य ए लक्षणे परिणमे माटे ध्रुव छे अने अभेदपणामां आद्रव्य एम सर्व भाव उपचारे छे. हवे उत्पाद व्यय ध्रुवनो अभेद संबंध तेनो भेद सरुप पणे देखाडे छे के जेम हेम घाटनो व्यय अने मुगटनी उत्पत्ति ते एकाकार जाणीए छीए ते माटे विभाव पर्यायनी उत्पत्ति तथा व्यय ते सतान छे तेथी घाटनो नाश थाय एम व्यवहारे संभवे छे ते माटे उत्तर पर्यायनी उत्पत्ति त्या पूर्व पर्यायनो नाश जाणवो, अने कंचन द्रव्यनी ध्रुवता पण तेहीज छे. ए त्रणे लक्षण एक द्रव्यमां एक समये वरते छे, एम भिन्न तथा अभिन्न शक्तिभेदे अने कारणभेदे समजवुं, सामान्यरुपे द्रव्य

जाणवो अने विशेषरूपे उत्पादव्यय जाणवो एमां कसोये विरोध आवे नही, एम आत्माने विषे त्रण लक्षण मानवां, पूर्व पर्यायनो नाश त्यां नवा पर्यायनी उत्पत्ति अने आत्मद्रव्ये स्थिति एटले पूर्वे जे द्रव्यनुं जाणवुं हतुं ते द्रव्य बीजे समये न्यून्य वृद्धिपणे जाणवामां आव्यो, तेवारे पूर्वना जाणपणानो नाश थयो, नवा जाणपणानी उत्पत्ति थइ अने ज्ञानभावे ध्रुव छे एम त्रण लक्षण जाणवां, अथवा पहेले समये दीठुं बीजे समये जाण्युं अने आत्मभावे स्थिति एटले पूर्व पर्यायनो नाश, त्यां नवा पर्यायनी उत्पत्ति अने द्रव्य स्वरूपे ध्रुव एम षट गुण हानि वृद्धि ते पण पर्याय छे,- त्यां स्व परपर्यायनो विचार जाणवो, त्यां नाश उत्पत्ति तो थइज रही छे, पण आतमस्वरूपे ध्रुव छे एम स्वभाव लक्षण गुणपर्याय आदे विचार घणो छे ते सद्गुरुना मुखथकी जाणजो अहियां पण प्रसंगे आवशे ते आ ग्रंथमां नाखीसुं, इत्यादिक द्रव्यानुयोगनुं जाणपणुं जे पुरुषने तादृश्य थयुं छे तेने केवळज्ञानी कहीए, ते पुरुषमां अने केवळज्ञानीमा

कश्पण भिन्नपणु जाणवु नहि, जे भिन्नपणुं जाणे ठे ते मिथ्यादृष्टि ठे, अने समकितदृष्टि तो सरखा जावे जाणे, शामाटे जे गणधरदेवे तो बन्नेने सरखा कह्या ठे तेनी साख बृहत्कल्पना भाष्यनी गाथा साथे पूर्वे कही गया ठे तेथी जाणजो

एटले गणधरदेवना कहेवामां तो बन्ने सरखा ठे तेमणे तो उंगा अधिकतापणुं कह्यु नहि अने ते वचनने अणसद्दहतो उंगा अधिकतापणु कहे ठे ते गणधरदेवना वचनथकी उपरांग थया तेवारे भगवान्ना वचननी श्रद्धा तेमने ठसी नहि तेथी प्रत्यक्ष तेमने मिथ्याभाव प्रगट थयो माटे एने मिथ्यादृष्टि कहेवा, ए वातमां काइ दूषण ठे नहि, एटले ए अगीयारमी गाथानो अर्थ कह्यो

चारित्र गुणे जे ठे हीणा, पण ज्ञानगुणे जे वासी रे। इग योग लक्षण कालादिके, ललीत विस्तार साख खासी रे ॥ ज्ञान० ॥१२॥

अर्थ–चारित्र गुणे जे ठे हीणा कहेता जे व्यवहार चारित्र एटले चरणसीतरी अने करणसी-

तरीथकी जे हीण छे तोपण ज्ञानगुणने विषे जेनी रमणता छे ते पुरुषनी मुक्ति थशे एवुं पूर्वे अगीयारमी गाथाना अर्थ विषे सम्मति ग्रंथनी शाख आपेली छे त्यांथी जोइ लेजो एटले इच्छा योग कहेतां सूत्र अर्थ ज्ञानने विषे रमणता तेमने कांइ प्रमादी साधु कह्या नथी, अने कालादिक विकल योगी एटले काल ग्रहणादिक व्यवहार क्रियाथकी जे उपरांठा छे अने इच्छा जोग ज्ञानने विषे रह्या छे, ते विशेषे करीने मुक्तिपंथनो साधक छे एवुं ललित विस्तरा टीकामां कह्युं छे.

उक्तं च–

कर्तुमिछो' श्रुतार्थस्य, ज्ञानिनोपि प्रमादिनः ।
कालादिविकलोयोग, इतीछायोग लक्षणं ॥१॥
॥ ललित विस्तरादौ ॥

अर्थ–एने विषे ज्ञाननुं बहुमान कह्युं पण व्यवहारनुं बहुमान कह्युं नथी, माटे आत्मा ज्ञान गुणमां वासेलो होय तो तेने कांइ व्यवहारादिकनी जरूर नथी, पण जेनो आत्मा ज्ञानगुणमा वासित न थयो होय तेने व्यवहार खपनो छे,

जेम रतनना आभुषण जे पुरुषने पहेरवा मले तेमने काइ कथीरनां आभुषणनी खप नथी, पण जेने रत्नादि आभुषण न मले तो ते पुरुष कथीरादि आभरणनो खप करेज, जे पेलो आ भुषणरहित फरे तेथी तो ए घणो सारो देखाय छे एटले जेने ज्ञान गुण प्रगट छे तेमने कल्प व्य वहारनी खप नथी तेमने तो एक ज्ञाननी खप छे ॥ उक्त च अध्यात्मसारग्रथे योगा अधिकारे ॥

नपर प्रतिबधोस्मिन्नल्पोप्येकात्मवेदनात् ।
शुभ कर्मापि नैवात्र व्याक्षेपायोपजायते ॥ ६ ॥

अर्थ-एटले शुभकर्म तो ज्ञानमारगने वि षे खपनुं नथी ए तो मोक्षे जतां आग्नोज लगल थइने पडे छे, माटे अहीयां व्यवहारमार्ग आ त्माने अहितकारी छे, आत्माने हीतकारी तो एक ज्ञानमार्ग छे, ते ज्ञानीने तो कोइ वस्तुनो प्रतिबध होयज नहि तो शुभ व्यवहारनो प्रतिबध केम होय, अने जे वारे शुभ व्यवहार ग्रहण करे तेवारे ज्ञान ध्याननो नाश थाय, ए तो मोटो विक्षेप आवी पडे तो धर्म रहे नहि अने आत्म स्वरुपनी रमणता थाय नहि अने आत्म

स्वरुपनी रमणता थया विना आत्मानी तादृश्य ओ-
ळखाण थाय नहि, अने आत्मा ओळख्या वि-
ना समकितगुण आवे नहि तो चारित्र धर्मनी
आशा सेनी राखवी, माटे प्रथमज आत्मद्रव्य-
ने ओळखे पछी धर्म आवे माटे धर्मनी खप होय
तेमने पहेली आत्मानी ओळखाण करवी ते आ
त्मानी ओळखाण शावडे थाय ते कहे छे; आ-
त्माउनां लक्षण तथा स्वभाव ए वे वस्तु प्रथ-
म जाणवी जोइए, ते लक्षण वे प्रकारनां छे
तथा स्वभाव पण वे प्रकारना छे ते स्वरूप
नाम साथे कहे छे; आत्माने विषे सामान्य ल-
क्षण ८ छे विशेष लक्षण ६ छे अने सर्व द्रव्य
आश्रीने कहेतां सामान्य लक्षण १० छे अने
विशेष लक्षण १६ छे तथा सामान्य स्वभाव ११ छे,
अने विशेष स्वभाव १० छे ए सर्व ओळखवां जो-
इए ते अनुक्रमे नाम कहे छे पछी तेनो अर्थ
आगळ कहीशुं; १ अस्तित्वं २ द्रव्यत्वं ३ प्र-
मेयत्वं ४ अगुरुलघुत्वं ५ प्रदेशत्वं ६ चेतनत्वं
७ अचेनत्व ८ मूर्तत्वं ९ अमूर्तत्वं १० ए
दश सामान्य लक्षण कह्यां, हवे विशेष

३ प्रमेयत्वं कहेता प्रमाण परिछेदरूप ते प्रमाण एनो जे विषय तेने प्रमेयत्वं कहीए ते पण कथंचित ते अनुगतरूप सर्व साधारण गुण छे, ए नो परपरा सनधे प्रमाणत्व ज्ञाने प्रमेयत्व व्यवहार थाय छे, ते माटे प्रमेयत्व गुण रुपथी अनुगत छे पण साधारण गुण छे माटे अहीयां गणेलो छे ४ हवे अगुरुलघुत्व कहेता अगुरु लघु गुण आज्ञाग्राही छे वली सूक्ष्मतत्व एटले एकेनो हेतु निर्वाहनो कर्त्ता छे अहिया आज्ञा सिद्ध छे अन्यथा वादीजन समजे केमके अगुरुलघु पर्याय ते सूक्ष्म अविगोचर छे ५

प्रदेशत्व अविज्ञागी पुद्गल, खेत्र स्वभाव जे थापियोजी । चेतनता अनुभूति अचेतन, भाव अननुभव थापियोजी ॥ मूरतता रुपादिक सगति, अमूर्त्तता तदभावोजी । ए दस सामान्य गुण प्रत्येके आठ आठ ए भावोजी ॥

अर्थ–हवे प्रदेशत्व कहेतां अविभागी पुद्गल एटले एक परमाणु जेना बे भाग न थाय तेने परमाणु पुद्गल कहीये ते एक क्षेत्र अवगाही कहेता, एक आकाशप्रदेशेज अवगाहीने

रहे; तेने एकप्रदेशत्वं कहीये ३ हवे चैतन्यत्वं कहेता जीवात्मानो अनुभवरुप गुण कहीये, ते सुख अथवा दुःख चेते छे (जाणे) छे अथवा तेथकी जाति, कुल, वृद्धि, हानि इत्यादिक स्वरूपने जे जाणे छे ते धर्म चैतन्यपणानो छे ७. अचैतन्य कहेतां चेतनापणारहित एटले चेतनपणाना गुणथकी रहित एटले तेथकी उपरांत मुक्ति संसार सुख दुःख न जाणे तेन अजीव कहीए एटले अचैतन्यत्वं ८. मूर्त्तित्वं कहेतां जे मूर्त्तिगुण ते रूपादि समावेश कहेतां जे वर्ण गंध रस स्पर्शादि ए पुद्गलद्रव्यमां छे ९ अमूर्त्तित्वं कहेतां जे अमूर्त्तिगुण ते वर्णादिकरहित ए स्वभाव छे, तेने अमूर्त्तित्वं कहिये १० हवे अचेतनत्वं अने मूर्त्तित्वं अने सचेतनत्वं अने अमूर्त्तित्वं भावरूपत्वान गुणत्वं मीतिनासकं नोहं एटले अचेतनपणुं अने अमूर्त्तिपणुं अने सचेतनपणु अने अमूर्त्तिपणुं ए गुण चेतनने विषे नहि लाधे अने अचेतनपणुं अने मूर्त्तिपणु ए जे बे गुण छे, ते कार्य कारणने विषे हेतु छे ए व्यवहार विशेषने माने छे ए प्रथकत्वगुणत्वात्

एटले ए नोंखानोंखा गुणनु देखाम्वुं नोंखानों खा अर्थनु साधवु, अथवा गर्जपदवाचक जोतां शीत उष्ण इत्यादिक जावनु जे विचारपणे जे परीक्षानु आपवु, ए सर्व व्यवहारनु जोम्वु ए सर्व कार्य कारणपणे खपनु ठे ए दश सामान्य गुण जे ठे ते मध्ये चेतन अचेतना मूर्त्ति अमूर्त्ति ए चार लक्षण परस्पर विरोधी ठे, ते माटे प्रत्येके एक द्रव्यने विशे आठ आठ गुण पामिये शामाटे? ज्या चेतनपणु ठे त्या अचेतनपणु नथी, अने ज्या अचेतनपणु ठे त्या सचेतनपणु नथी मूर्त्तिपणु ठे त्यां अमूर्त्तिपणु नथी, अने अमूर्त्तिपणु ठे त्यां मूर्त्तिपणु नथी एटले चेतनने विषे मूर्त्तिपणु अने अचेतनपणुं ए बे गुण नथी, बाकीना आठ गुण ठे तथा धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय अने काल ए चार द्रव्यने विषे चेतनपणु तथा मूर्त्तिपणुं ए गुण नथी बाकीना आठ गुण ठे पुद्गल द्रव्यने विषे अमूर्त्तिपणु तथा चेतनपणु ए बे गुण नथी बाकीना आठ गुण ठे एटले ए षट द्रव्यने विषे सामान्य लक्षण संक्षेपथी कह्या

हवे विशेष लक्षण कहे छे

ज्ञान दृष्टि सुख वीर्य स्पर्श रस, गंध वर्ण ए जाणोजी । गति स्थिति अवगाहना वर्तन, हेतु भाव मन आणोजी ॥ चेतनादि चारे भेला, विशेष गुण ए सोलेजी । षट पुद्गल आतमने तिनह, अन्य द्रव्यने टोलेजी ॥ ३ ॥

अर्थ—आत्मानां छ लक्षण विशेष छे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, चेतनत्वं, अमूर्त्तित्वं ए छ गुण आत्माने विषे छे वर्ण, गध, रस, स्पर्श मूर्त्तित्वं, अचेतनत्वं ए छ गुण पुद्गलद्रव्यने विषे छे. अमूर्त्तिपणुं अने अचेतनपणुं ए चार द्रव्यने विषे छे अने अकेको गुण जुदो छे, ते कहे छे. गतिहेतुत्वं, स्थितिहेतुत्व, अवगाहनाहेतुत्वं अने वर्तनाहेतुत्वं ए गुण अकेक तथा प्रथमना बबे गुण लइने जोम्बा, एटले त्रण त्रण गुण थाय ए प्रमाणे विशेष गुणने समजवा अहियां कोइना मनने शंका पडशे जे, चेतन, अचेतन, मूर्त्ति, अमूर्त्ति ए चार गुण सामान्य स्वभावमा कह्या छे अने विशेष स्वभावमां पण क-

ह्या छे तेनु शु कारण छे? तेनो उत्तर-के स्व अपेक्षाए सामान्य छे अने ते परअपेक्षाए विशेष छे, एटले स्वअपेक्षा कहेता स्वजाति एटले पोतानी जाति आश्रीने सामान्य छे अने परअपेक्षा कहेता विजाति एटले परजाति आश्रीने विशेष छे एटले ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य आत्मद्रव्यने विषे छे, बीजा द्रव्यने विषे नथी पुद्गलद्रव्यमा वर्ण, गंध, रस, स्पर्श ए विशेष गुण छे ए कह्यु ते स्थूल व्यवहार जाणवो, शामाटे जे सिद्धना आठ गुण छे अथवा एकत्रीस पण कह्या छे अने तो चार गुणज लीधा छे अथवा जीवनां लक्षण कह्या छे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, अने उपयोग ए छ लक्षण पण सिद्धांतमां ह्या छे अने अहिया तो चार लक्षण लीधां माटे स्थूल व्यवहार छे एम विशेष गुण गणीए तो अनंता छे, ते छद्मस्थथी शी रीते गणाय, अथवा पुद्गलना पण एक गुणो कालादिक अनंता भेद छे, ते कइ गणाइ दि सामान्य विशेष लक्षण

अहियां तो संक्षेपथी कह्युं छे, एटले ए गुण लक्षण अनुवर्ति, व्यावृत्ति संबंधे धर्म मात्रनी विविक्षा करीने पोताना स्वभाव गुणथी तो ए वेगळोज छे, पण पोतपोताना रूपनी मुख्यता लइने अनुवर्ति संबंध मात्र अनुसरीने स्वभाव छे ते माटे गुण विभाग कहीए छीए, हवे स्वभाव विभाग कहीने देखाडे छे. त्यां सामान्य स्वभाव प्रथम अगीयार छे, ते मध्ये प्रथम भेद अस्तित्व स्वभाव छे ते कहे छे, हवे आप आपणेरूपे प्रत्येके प्रत्येक द्रव्यने विषे अस्तिस्वभाव स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वभावरूपे अस्तिपणुं छे जेम स्वस्वभावे अस्तिपणुं अने परभावे नास्तिपणुं एम अनुभव थाय छे, एटले स्वभावेज अस्तिपणुं छे कदापि अस्ति स्वभाव न मानीए तेवारे परभावनी अपेक्षाए नास्तितापणुं छे तेमज स्वभावनी अपेक्षाए अस्तितापणुं थाय तेवारे सर्व शून्यता थइ जाय, नास्तिकनो मत आवे माटे स्वद्रव्यनी अपेक्षाए अस्ति स्वभाव मानवो, हवे परभाव परद्रव्य अपेक्षाए नास्तिस्वभाव कहीए, कोइ कहेशे के,

स्नावपणे सत् असत् कहेतां सर्व स्वरूप अस्ति थयु, तेने कहीए के एम न थाय, परजाव ठे ते स्वजावनी अपेक्षाए असत्यज ठे, माटे नास्तिपणुंज ठे ने एम नहि माने तेवारे स्वपरनु भिन्नपणु नहि रहे, तेवारे जगत्रये बधे एकरुपे थइ जशे ते तो सकल शास्त्रथकी विरुद्ध थाय तेवारे द्रव्याद्रव्यनी उंलखाण रहे नहि, तेवारे परमजावनी अपेक्षाए नास्तिस्वजाव मानवो ते सत्य ठे, ए बीजो नेद हवे त्रीजो नित्यस्वजाव कहेता, सत्ताने विषे जे स्वाजाविक वस्तु ठे तेने उंलखावे ठे, ते माटे ए सत्य ठे, तथा असत्यने स्वज्ञान प्रमुखनुं रक्षण करे ठे ते माटे एने कल्पना ज्ञान कहीए, ए ज्ञानना विषयने असत्य माने ठे एवो बौद्धनो मत ठे ते मतने खम्न करवा वास्ते हवे कहे ठे के ते जे सत्तानी पेरे असत्ता मानी तेम नथी हवे स्फूर्ति कहेता ते व्यजक अणमलवाना वशथी पण शून्यपणाथी नहि तेम तुपणाथी पण नहि जेम ठतो ए सर्वनो गध, रस, स्पर्श विना जणाय नहि, एता [illegible] असत्य नथी, केटलीएक वस्तुना गुण स्व

जावे जणाय छे, केटलीएक वस्तु आश्रीने ज-णाय छे एम विचित्र प्रकारनी छे, पण कोइनी तुलता कहीए तो व्यवहारनो लोप थाय

उक्तं च—

समालिलीणा रहस्य प्रकरणे ॥ ते हुंति परावेर कालंज मुह दांसिणो तिणाय उगा ॥ दिठमिणं वेचीत्तं सराया कप्पुर गंधाणंति ॥१॥

हवे तेज कहीए छीए, आपणा जे कर्म-भावि पर्याय नाना प्रकारना छे श्याम, रक्त, इ-त्यादिक भेदक छे एटले जुदा देखाय छे, पण ए द्रव्य तेहिज जे पूर्वे अनुभव्यां हतां ते ज्ञा-न तेथीज थाय छे, ते माटे तेने नित्य स्वभाव ज कहीए, तद्भावाऽव्ययं नित्यं पर्यायनी परिणति-ने विषे अनित्य स्वभाव लहीए एटले ए रुपे उत्पाद, व्यय ग्रहण थाय छे, तेणे रुपे अनित्य स्वभाव छे, छती वस्तुने रूपांतरथकी पर्याय वि-शेषथी नाश थाय छे तेणे करी ए द्विविध छे, आ रुपे नित्य छे, आ रुपे अनित्य छे एटले द्रव्यथकी नित्य छे, पर्यायथकी अनित्य छे,

अथवा विशेषनय सामान्य रुपथी अनित्य त्या जेम घट द्रव्यनो नाश थये थके पण मृत्तिका द्रव्यनो नाश नथी, तथा सामान्यनये मृत्तिकादि पण स्थूलादिके घटादिनो नाश ए अनित्यता घट रुपेज एम प्रतित थाय छे, अथवा सामान्य रुपे मृत्तिकाने विषे स्वस्वरुपे घट एम युक्त तो छे अने नयपक्षे अनेक रीतना भेद थाय, पण कुनय टाळीने भेद करजो अने जो नित्यपणु नहिज मानो तो अनित्यपणु मानतां एकांत क्षणिकवादिनो मत आवे छे ते कहे छे, के एकात क्षणिकज स्वस्व लक्षण छे, तेवारे समये समये पर्यायनु पलटवुं ते अनित्यपणुं थयु तेवारे नित्य स्वरूप न रह्यु, अनित्यपणाथकी कारणनो अनुवर्तन थाय अने अनुवर्तन विना कार्य निपजे नहि, शामाटे के कारण क्षण रह्यु तो कार्य पण क्षण थाय त्यारे उत्पत्तिकाळे नाश थयो एवो अनुभव ए अछतानो थयो, तेवारे कार्यने क्षणभणती केम करीए, एतो अछतु कारण क्षण कार्य क्षण करे तो विनीष्ट कारणथी कार्य नीपजवु जोइए, अथवा अणउत्पन्न कार्य

नीपनुं जोइए एम तो कोइ काले वनेज नहि, एतो कार्य कारण नावनी विटंबना थाय ठे, अवविहित जे कारण क्षण ते कार्य क्षण करे एम कहीए तो ए रूपतो लोकमांही तिरस्काररूप थाय, शामाटे के क्षण रूपादिकने विषे तो उपादान मानीए अने आलोकादिकने विषे निश्चित मानीए तो ए विवक्षा केम घटे? जे माटे अनुव्यय विना शक्ति मात्रे पण उपादानमां निमित्त नहि पण कही न शकीए ते माटे उपादान ठे तेहीज अनुव्यय जाणवो अने अनुव्यपण तेहीज नित्यस्वनाव ठे, हवे जो सर्वथा नित्य स्वनावज मानीए अने अनित्य स्वनाव सर्वथा न मानीए तो अर्थ क्रियारूप न घटे, शामाटे जे दलने कारण नय कारणरूपता परिणति कथंचित् ए उत्पन्नपणुंज आव्युं सर्वथा अनउत्पन्नपणुं विघटे ठे, अने जो एम कहीए के तेहीज नित्य तद्वर्तिकार्य ते अवर्जे तो कार्य कारणने अन्नेद संबध ते केम घटे? अने न्नेद संबंध माने तो ते संबंधने जुदीजुदी गवेपणा थाय, ते वारे समय फेरे अवस्था थाय त्यारे अनवस्था

तेन धर्म छे, माटे पर्यायना भेद नोखा करवा पडे अने जो भेद स्वभाव नहि मानो तो पर्यायने नाशे द्रव्यनो नाश थशे तो अभेद पण केने मानशो ? माटे भेद स्वभाव छे ते सत्य छे अने जो अभेद स्वभाव नहि कहीए तो गुण पर्याय शा आधारे रहेशे तेवारे निराधार पद थशे तेवारे शशशृङ्गवत् थयु एटले रक्तादि पर्याय आधारा आधेयादिक गुण ते घटद्रव्यने अभेद सबंध नहि मानीए तो ए शा आधारे रह्या माटे अभेद स्वभाव पण मानवो जोइए ते उपरीए प्रवचनसारोद्धारनी गाथा कहे छे.

॥ उक्तं च ॥

पविकत्त देशत्ता पुवत्तमिति सासणं हि वीरस्स ॥ अणत्त मत्तना वोणत्तपत्त वशवविकसमगेति ॥ १ ॥

एटले भेदस्वभाव तथा अभेद स्वभाव ए बधे मानवा ए आठमो भेद थयो ८ हवे भव्य स्वभाव कहे छे अनेक कार्य [illegible] शक्तिए करीने द्रव्यनो जे [illegible] ते

अतिक्रमीने अन्य स्वभाव परिणमे, तेने पलटन स्वभाव कहीए तेनुं नाम भव्य स्वभाव छे ए नवमो भेद कह्यो ए. हवे अभव्यस्वभाव एटले त्रणे काल परद्रव्यमांहि रहेतां थकां पण परस्वभावमां न प्रणमे, तेने अभव्यस्वभाव कहीए

॥ उक्तं च ॥

अनोन्नं पविसत्तादिना ॥ उगासमं एास्समे लतावियणिचं ॥ सगसगभावं णविजहंति ॥१

तो भव्यस्वभाव विना शुभाशुभ कार्यने विषे शून्यपणुं थाय तो भभावमां भवेश न होय अने स्वभावेज रहे, अथवा भव्यस्वभाव मानीए अभव्य स्वभाव नहि मानीए तो द्रव्यने संयोगे द्रव्यंतरपणुं थवुं जोइए, शामाटे जे धर्माधर्मादिकने अने जीव पुद्गलादिकने एक अवगाहना त्याग कारणे कार्य संक्र स्वभाव अभव्य न थाय, एतो द्रव्यने तत्त्व कार्यहेतु त्यां कल्पना पण अभव्य अभावगर्भित छे आत्मा देश विरति अननकार्ये जननी शक्ति ए भव्यत्व स्वभावने सहकारी संबंध छे शामाटे के भव्यस्वभाव

तथा अनन्यस्वभाव सर्वे द्रव्यमां छे एटले सर्वे द्रव्य पोताना मूल धर्म वस्तुता जोतां अनन्य स्वभाव छे अने परसंगते मळना भव्यस्वभाव छे जेम चेतन स्वरूपनो मूळस्वभाव वस्तुताए निर्मल, निरावण, निष्कलक, अक्षय, अमूर्त्ति स्वभाव छे, ते अनन्य स्वभाव छे अने कर्मादिसयोगे पर्यायनु पलटवु ते भव्य स्वभाव छे, अथवा ज्ञाननुं जाणवापणु ए अनन्य स्वभाव छे परज्ञेयनी सगाते उपजवु, वीणसवुं, हानि वृद्धिनुं थवु ते सर्वे भव्यस्वभाव छे पर्याय कहेतां जेम घट जळधारणादि करवु ते अनन्य स्वभाव छे अने श्याम रक्त नवादिनु पलटवु ते भव्य स्वभाव छे एम सर्वे द्रव्यने विषे भव्य तथा अभव्य स्वभाव जाणवो ए दसमो भेद थयो १०

हवे अगीयारमो प्रमेयत्व स्वभाव कहीए छीए स्वलक्षभूत परिणामिकभाव ते प्रधानताए परम भाव कहिये जेम ज्ञानस्वरूपी आत्मा परमभाव स्वभाव न कहिये तो द्रव्यने विषे प्रसिद्ध रूप केम कहेवाय ? अनत धर्मात्मिक वस्तु छे एक धर्म पुरुषाकारे बोलावीये तेने परमभाव कहिये.

ए अगीयारमो स्वभाव जाणवो ए अगीआरे सामान्य स्वभाव कह्या. हवे दस विशेष स्वभाव कहे छे विशेष कहेतां ते कोइमां लाधे अने कोइमां न लाधे, तेन विशेष स्वभाव कहिये हवे प्रथम चेतन स्वभाव कहिये जे चेतनापणानो व्यवहार थाय छे तेने चेतनस्वभाव कहिये. तेथी उलटो ते अचेतन स्वभाव जो जीवने चेतन स्वभाव न कहिये तो राग द्वेष न ठरे, तेवारे ज्ञानावरणादिकर्मनो अभाव थाय.

उक्तं च

स्नेहाभ्यक्तशरीरस्य, रेणुनाश्लिष्यते यहा ।
गात्रं रागद्वेषाक्लिन्नस्य, कर्मबंधोभवत्येवमिति ॥१

जो जीवने सर्वथा चेतन स्वभाव कहिये अने अचेतन स्वभाव न कहिये, तो अचेतन कर्म अने नोकर्म तो ए द्रव्य उपलक्षितजनित विकार विना थाय, तेवारे शुद्ध सिद्धिपणुं ता दृश्यपणे थाय तेवारे ध्याता ध्येयपणुं न रहे, गुरु शिष्यनी परवा न रहे. सिद्ध संसारीपणुं कहेवुं न रहे, तेवारे सर्व शास्त्र व्यवहार ते फोक थइ

जाय तेवारे शुद्ध नये जे अविद्या छे तेनी निवृत्ति करवी तेनो शो उपकार थाय तेमाटे अचेतन आत्मा एम पण कथचित् कहिये ए वातमा काइ दूषण नथी स्याद्वाद मतनुं लक्षण एज छे हवे त्रीजो मूर्त्ति स्वभाव कहिये छीए मूर्त्ति कहेतां जे वर्ण, गध, रस स्पर्शादि सनिवेष ते जेथी धारिये, तेने मूर्त्ति स्वभाव कहीये तेथकी विपरीत ते अमूर्त्ति स्वभाव जो जीवने कथचित् मूर्त्तिभाव न मानीये तो शरीरादिक संबध जीवने संभवे नहि अने शरीरादि संबंध विना गतागति केम थाशे? अने गतागति नहि थाय त्यारे ससारनो अभाव थशे अने जे लोकव्यवहार छे ते पण सर्वे दृष्टिमान् छे अने दृष्टिमान्ने तो मुर्त्तिस्वभावज आत्मा मनाय छे ते मूर्त्तिस्वभावना हेतु शास्त्रगम्य छे पण अमूर्त्तिनो हेतु नथी, एम ज्यारे अमूर्त्तिपणु पण न मानीये तेवारे मुक्ति न घटे अने मुक्ति न घटे त्यारे धर्मादिक कारणनो नाश न थाय तेवारे शून्यवादि मत साचो ठरे तो ए वात खोटी, माटे अमूर्त्तिस्वभाव मानवो जोइए, केवी रीते मानवो के, संसारीजीव

कर्मना जोगथकी आज मूर्त्तिपणुं पाम्या छे ए पण अंतरथकी चेतनस्वभाव वस्तुने जोतां तो अमूर्त्ति स्वभावज छे, एम सम्यु समजवुं अथवा ए चर्चा पूर्वे पण केटलीक आवी गइ छे एटले मूर्त्ति ने अमूर्त्ति स्वभाव कह्योज हवे एक प्रदेश स्वभाव कहे छे. एक प्रदेश कहेतां एकत्वपरिणती अखंम आकारबंध कहेता सन्निवेप तेनो निवास कहेतां भाजनपणुं छे, अनेक प्रदेश स्वभाव कहेतां भिन्न प्रदेश संयोगे तथा भिन्न प्रदेश कल्पनाए थाय, अनेक प्रदेश व्यवहार कारणयोगपणुं छे, जो एक प्रदेश स्वभाव न होय तो असंख्यात प्रदेशादि योगे बहुवचन प्रवृत्ति थाय तेवारे एक द्रव्य धर्मास्तिकाय कहिये छीए, ते व्यवहार न रहे, तेवारे घणा धर्मास्तिकाय थया जोइए एम सर्वे द्रव्यमां आरु आवे छे, तथा अनेक प्रदेश स्वभाव द्रव्यमान कहीए तो घटादिक अवीअवी (अवयवी) देशथी सकर्म अथवा निसकर्म देखीए छीए ते केम मलशे एवी एव कंपेण अवी हवी न कंपे एम जो कहीए तो चलीत एम प्रयोग केम थाय एटले देशविरति कंप-

ज्ञानावर्णीयादि अने नोकर्म जे मन, वचन अने कायादि तेने चेतन कहीए. ते चेतन कृत सयोग माटे तेहीज मारु शरीर, हु आम करुं इत्यादि परमन्नाव ग्राहक नये ते अचेतन स्वन्नाव. शामाटे जे कर्म अने नोकर्म सर्व अचेतन ठे, असद्भूत व्यवहारनयथी जीवने अचेतन स्वन्नाव कहीए, शामाटे ए जन्म हुं चेतन इत्यादि व्यवहार ठे ते अनुमान जाणीने प्रतीत विलक्षण एटले ज्ञानशुद्धि वेदांतने मते सद्भूत व्यवहार जाणवो, परम न्नाव ग्राहकनये कर्म अने नोकर्म ए मूर्त्ति स्वन्नाव एटले असद्भूत व्यवहारनयथी जीवने मूर्त्तिस्वन्नाव पण कहीए एटले एम आत्मा हुं देखु तु जाणुं तुं ए व्यवहार ठे, परम न्नाव ग्राहक नय पुद्गल द्रव्य विना बीजा सर्व द्रव्यने अमूर्त्ति स्वन्नाव कहीए जेम चेतनने संयोगे दयादिकने विषे जेम चेतनत्व उपचारे ठे तेम अमूर्त्ति उपचारता नथी तेमाटे असद्भूत व्यवहारथी पण पुद्गलने अमूर्त्ति स्वन्नाव न कहीए, त्या केम न उपचार कहीए के जो एक सम्बधने देखी जे न्नाव ते व्यवहार ठे, ते

पण सर्व धर्मनो उपचार न होय ए भाव सम्मति ग्रंथमांही कह्यो छे एटले अनुगत संबंध अत्यंत एटले सर्व अर्थ क्षीर नीरनी पेरे गएयुं, विशेषे करीने शुद्ध पुद्गल जीवलक्षण तथा औदारिकादिक वर्गणा निष्पन्न छे अने ज्ञान ध्यान आत्माने असंख्यात प्रदेशी भिन्न छे.

॥ अत्र गाथा—उक्तं च ॥

अणुन्नागयाणं इम वंतवम्त विन्नयणमजुत्तं ॥
जह डुद्धपाणियाण जावंत विशेषपज्जाया॥१॥

तेथी उपचारे पण अमूर्त्ति स्वभाव पुद्गलने न होय एम कहेतां तो एकवीसमो स्वभाव लोपाइ जाय तेवारे एकवीसन्ती भावासु जीव पुद्गलोउ मानो ए वचन अन्यथा थइ जाय, ते वचनने राखवाने वास्ते असद्भूतव्यवहारनय करीने परोक्ष जे पुद्गल परमाणु छे तेने अमूर्त्ति कहीए. स्यामाटे के व्यवहारथकी कंइ दृष्टिगोचर आवतो नथी, अने मूर्त्ति होय तो दृष्टिगोआववुं जोइए, अने व्यवहार छे ते प्रत्यक्षने ग्रहणकर्त्ता छे, हवे काल तथा पुद्गल परमाणुने ए बन्नेनो परमभाव ग्राहकनय एकप्रदेश स्वभाव

छे ए बे द्रव्यने टाळी बीजा द्रव्यने विषे भेद कल्पनारहित शुद्ध द्रव्यार्थिकनये एकप्रदेश स्वभाव कहीए, अने भेद कल्पनासहित शुद्ध द्रव्यार्थिकनयनुं कहेतां प्रमाण विना सर्वे द्रव्यने अनेकप्रदेश स्वभाव थवानी योग्यता छे, ते माटे उपचारे करीने अनेकप्रदेश स्वभाव कहीए शामाटे जे द्विप्रदेशथी मांमीने अनंतप्रदेशी सुधी खध थाय छे ते सर्व उपचरित छे, तथा कालमांही तो उपचारे पण थवानी शक्ति नथी.एक सामान्ये बीजो समय चलतो नथी शामाटे जे प्रथम समयनो नाश थाय अने नवा समयनी उत्पत्ति थाय, तेमाटे तेने विषे सर्वथा उपचार स्वभाव लागु थाय नहि तथा शुद्धाशुद्ध द्रव्यार्थिकनये समुगधी अग तेने विभाव स्वभाव कहीए एटले बे मलीने विभाव स्वभाव थाय छे एटले चेतन ते शुद्ध अने राग द्वेष ते अशुद्ध ए बे मलीने विभाव थयो, अथवा पुद्गलने विषे रक्त तथा स्याम मलीने जांबु जेवो रग थाय छे ते विभाव छे. तेम बे द्रव्यना मलवाथकी अथवा परिणतिना मलवाथकी विभाव स्वभाव

थाय छे ते जाणवो. शुद्ध द्रव्यार्थिकनय शुद्ध स्वभाव एटले शुद्ध स्वभावे ज्ञान, दर्शन, चारित्रनो पुंज भेद कल्पनासहित एकत्व भावे शुद्ध वस्तु तेने सुद्ध स्वभाव कहीए ते सुद्ध द्रव्यार्थिके सुद्ध ग्रहण थाय, तथा असुद्ध द्रव्यार्थिकनये अशुद्ध ग्रहण थाय, जेम रागद्वेषनी परिणति तथा विषय कषाय सर्व अशुद्ध चेतन छे तथा ज्ञानआत्मा दर्शनात्माए कहेवुं ते सर्व अशुद्ध चेतन छे, ज्यां परपरिणतिनुं मलवुं अथवा एक वस्तुना भेद करवा ए सर्व अशुद्ध स्वभाव छे, असद्भूत व्यवहारनयथी उपचरित स्वभाव छे एटले चेतनने मूर्त्तिपणुं अचेतनपणु कहेवुं ते सर्व उपचरित स्वभाव छे. ए एकवीसे स्वभाव भेदज्ञाननी अपेक्षाए करीने देखाड्या छे, अने ए एकवीश स्वभाव जाणवामां घणो सार छे. ए स्वभाव ओलखवाथकी जीव अजीवादि षड्द्रव्यनी ओलखाण थाय अने जीवनी परिणतिना स्थानकने पण ओलखवामां आवे. तथा सत्य स्वरूप सर्व द्रव्यनुं ओलखवामां आवे संसारीनुं तथा सिद्धनुं स्वरूप स-

मजवामा आवे माटे ए लक्षण गुण स्वभाव जे जाणे तेने कोइक दिन सिद्धि वरवानी वखत पण आवे, पण ते विना जे कांइ कार व्यवहारादिकथकी सिद्धि वरवानी आशा राखे छे ते आकाश कुसुमवत् जाणवुं शिष्यवाक्यं–तमोए कह्युं जे ए जाणवाथकी सिद्धि केम थाय ? करवा विना सिद्धि थशे ? अजवी पण जाणे छे तो तेनी सिद्धि थवी जोइए तेनो उत्तर–जे ते कह्युं जे जाणवाथकी सिद्धि थाय, कर्या विना ते जाणवाथकी सिद्धि छे शामाटे जे यथार्थ वस्तु जे ओलखवामां आवी तेवारे सद्वस्तु होय ते ग्रहण थाय अने असत्य वस्तु होय ते पडी रहे तेने कोइ ग्रहण करे नहि जेम बाल्यावस्थाने विषे, धूललीलाने विषे अनेक क्लेश करे छे तेज युवावयथकी ते धूलनी लीलाना घर केम करतो नथी तेणे जाण्यु जे ए घर कइ रहेवा खप लागे नहि माटे असत्य हतु ते छुटी गयु ने सत्य हतु ते अंगीकार कर्यु एम सत्य धर्म पोताना चिदानन्द भगवाने जाण्यु तेवारे शुद्ध धर्म अंगीकार कर्यो, परधर्म हतो ते

पर जाएयुं ते छुटी गयुं एटले ए चेतननुं कल्याण थइ गयुं हवे तें कह्युं के कर्या विना नहि थाय ते केने कराय छे जे सुद्ध चैतन्य छे तेमां तो करवानी शक्ति नथी अने जे करवानी शक्ति तो विभावमां रही छे अने विभाव तो अनादि कालनो चेतनने वळगेलोज छे ते विभाव ज्यारे छुटशे अने स्वभाव आदरशे त्यारेज चेतननी मुक्ति छे पण करवामां मुक्ति छे नहि करवाथकी तो चारगति संसारज छे. शिष्यवाक्य– जे अनादि विभावनुं छुटवुं अने स्वभावनुं आदरवुं ते कर्या विना शी रीते छुटशे? तेनो उत्तर जे विभावनुं छुटवुं अने स्वभावनुं आदरवुं ते कंइ बे काम नथी, एकज काम छे. जेम सूर्यनुं उगवुं, अने अंधारानुं नासवुं ए बन्ने एकज छे, तेम अहियां स्वभावनुं उत्पन्न थवुं एटले विभावनो नाश छेज हवे तें कह्यु के, कर्या विना केम थाय? तेनो उत्तर–के अहियां कृत्य बे प्रकारनां छे एक परानुयायी, बीजो स्वानुयायी तेनां करावनारा आचार्य बे छे एक शुभाशुभ आचार्य, शुभाशुभ आचार्य, बीजो शुद्ध आ

चार्य जे कर्माशुभ आचार्य छे तेनो उपदेश अने तेना उपदेशने विषे परानुयायी कृत्य छे, एटले परानुयायी कहेतां प्रभाव, व्रत, नियम, तप, जप, तीर्थयात्रा, क्रिया, आचार तेने विषे ते मुक्ति माने छे पण ए कारण शुभाशुभ छे तेने विषे पुण्यबंध थाय, तो एतो चार गति संसारमां रखडवानुं छे, एमां कइ मुक्ति छे नहि अकृत्यने धर्म माने छे ए मोटुं अज्ञानपणुं छे, अने एथकी पुण्यबंध थाय. कदापी सुख मळे तेपण कइ सुखमां गण्युं नथी एतो एक औपचारिक सुख छे एवुं विशेषावश्यकग्रंथे पण कह्युं छे

उक्तं च–

जत्तोबीय पचक्खं, सोम्म सुह नत्थि दुखमेवेदं ।
न पम्यिारविभत्तं, तो पुन्न फलंति दुकति ॥१॥

अर्थ–ते सुख जे छे ते पौद्गलिक छे. ए कंइ आत्मानुं सुख नथी, अने पौद्गलिक सुख छे ते पण दुःखरूपज छे, जे तत्त्वज्ञानना अजाण छे ते पोताना अज्ञानना लीधाथकी पुण्यने सारु कहे छे पापने नवठ्ठ कहे छे. सुखदुःख पौद्गलिक अनुभवे छे पण एम नथी समजता के, पूर्व

कृत्य जे कर्म ते पोताने भोगववुं तेमा आत्माने शुं फायदो थयो. एतो उलटा आत्माने हानि करता एक विषयसुखनी इच्छाना भर्या थका तत्त्वस्वरूप आत्मधर्म,पामता नथी अने एक पुण्य पाप पोकारता फरे छे पण ए बन्ने दुःखरूप छे

उक्तं च–

औत्सुक्यमात्रमवसाय्यति प्रतिष्ट ॥क्लाति लब्ध परिपालन वृत्तिरेव ॥ नतिश्रमापगमनाय यथा श्रमाय ॥ राज्यं स्वहस्तधृत दंडमिवातपत्रं ॥ १ ॥ विसयसुहं दुःखंमिय दुखपडिआर उत्तिग छव ॥ तं सुहमुवयाराउ न उयारो विणा तचं ॥ १ ॥ सायासायं दुःखं,सविरहंम्मि य सुहं जउ तेणं ॥देहं दियसु दुःखं,देहं दीयाभावो ॥

अर्थ–जे पुण्य फल छे ते तत्त्वथी एनुं स्वरूप विचारीने जोइए तो दुःखरूप छे अने विषयसुख छे ते पण तत्त्वथी विचारीने जोइए तो तद्दन दुःखरूपज छे जेम रोगी छे, एक काथनुं पीवुं अथवा शस्त्रप्रमुखे छेदवुं अथवा अग्निप्रमुखे इत्यादिके चिकित्सानुं करवुं जेम हि

तन्नापण थाय ठे तेमज ए पुण्यहित न्नापण था य पण परिणामे जोता तो दुःखरूपज ठतु ठे एमा कइ शका करवी नहि ए सुखतो एक उपचारमात्र न्नासे छे, एने उपचार ठे ते तो परमार्थे जोतां सुख नथी सुखतो एक उपचाररहित आत्माने मुक्तिरूप स्वन्नाविक ए प्रतिकार रूप आत्मिक आनदज छे, तेज सुख सत्यरूप छे, तथा जे सत्ताने उदये पण दुःख ठे, तेनु कारण कहु ते सांन्नळो जे शाता ठे ते पण कर्म छे, अने ते कर्मनो विपाक ते गुणरोधक ठे, अने स्वगुणनो ज्यां रोध ठे, तेने सुख कोण कहे ठे तेतो अज्ञान होय ते सुख माने छे, ते माटे ससार सर्व दुःखरूप ठे, एटले शुन्नाशुन्न सर्वं दुःखज ठे, सर्व प्रन्नावथकीरहित तेज सुख स्वन्नाविक आनद ठे, तेने परमानंद कहीए, एम समजीने जे करवु, करावचु, ते सर्वं परानुयायी ठे, तेना उपदेश करनारा जे आचार्य ते शुद्ध स्वरूप पाम्या नथी हवे जे शुद्ध आचार्य छे ते तो स्वअनुयायीवृत्तिवाळा ठे, ते प्रन्नावनी पोषणता करता नथी, एक स्वन्नावनो उपदेश

करे बे के जेथी संसारमां रखमवुं न पमे, अने प्रनाव बे, एतो संसारमां जन्म मरण करवानुं कारण बे, माटे करवु करावबुं एतो मोटुं अज्ञा- बे, ते पूर्वे सम्मतिनीगाथा साक्षी माटे लखी बे तेमां पण चरणसित्तरी अने करणसित्तरीनुं फळ चार गति संसारमां रखमवानुं बतावेलुं बे, माटे शुद्धस्वरूप निरावरणता तेज मुक्तिनो हेतु बे, ते ज कल्याणकारी बे, तथा पूर्वे तें जे कह्युं हतुं के, अनवी पण जाणे बे तो तेनी पण मुक्ति थवी जोइए? तेनो उत्तर–जे अनवी बे ते कंइ जाणतो नथी, अहीयां कोइने शंका पमे के अ नवी नव पूर्व सुधी जाणे ते केम नथी जाणतो तेनो उत्तर–ए अधिकार कंइ सिद्धांतमां बे न हि, एक प्रकरणथकी लइ लागवुं दृष्टांत बे, तथा जे जाणवापणुं बे तेना पण बे प्रकार बे एक तो पोताना क्षयोपशमथकी पोताना स्व- रूपने जाणे, एक कोइना कीधाथकी जाणे, ह- वे जे पोताना क्षयोपशमथकी जाणे तेनुं तो कल्याण थायज, अने जे कीधाथकी जाणे ते ना बे ... ...हित, २ श्रद्धारहित एटले

कहेवा मात्रज हवे जे श्रद्धावान् छे ते सद्गुरुना उपदेशथकी तथा शास्त्रना वांचवाथकी आत्मस्वरूपनी श्रद्धा करी छे, तेनुं पण कार्य थाशे अने जेने श्रद्धा नथी तेना सद्गुरुना वचनथकी अथवा शास्त्रना वांचवाथकी आत्मस्वरूपनी वार्त्ताउ करीने जाणे पण पोताने श्रद्धा नथी, यथा शुकवत् एटले जे पोपट छे ते राम कृष्ण इत्यादिक नाम ले छे, पण तेने राम कृष्णनी उळखाण नथी, ते मूर्त्ति उपर बेसीने विष्ठा करे छे, तेमज बीजा जे जीव छे ते श्रद्धारहित अनेकातमानी चर्चा करे छे ते ए पोपट सरीखा जाणवा, अने अज्ञानीने तो श्रद्धा होयज नहि, अने उळखाण पण होय नहि माटे एनु जाणपणु तो कशाए खपनु नथी, जेम मावठानो वरसाद कमोय पण गुणकारी नथी, तेम तेनु जाणपणु ते कइपण कामनु नथी माटे शुद्ध स्वरूपनुं जाणवु एज सत्य छे, करवु कराववु ए असत्य छे माटे जे शुद्ध स्वरूप जाणे ते कर्म खपावीने सिद्धि वरे, एटले सिद्धपद छे ते महा सुखदायी छे, तेने फरीथकी जन्म मरण नथी,

माटे एवा सिद्धपदनी जेने खप होय ते तो शुद्ध स्वरूपनेज समजे अहींयां करवाथकी कंइ मुक्ति छे नहि, शामाटे के करवु तो एक भेद छे, अने सिद्धना तो पंदर भेद छे, जेम कोइ जैन धर्मनुं वा नोकारनुं नामे नथी जाणता ते पण स्याद्वाद रीते आत्मतत्त्व प्राप्त करीने मोक्षे जाय छे माटे सिद्धपद तो एक आत्मस्वरूपमां छे, ते सिद्धना भेद पंदर प्रकारे छे ते कहे छे ॥

उक्तं च पन्नवणासूत्रे ॥

१ तित्थसिद्धा, २ अतित्थसिद्धा, ३ तित्थयरसिद्धा, ४ अतित्थयरसिद्धा, ५ स्वयंबुद्धसिद्धा, ६ प्रत्येकबुद्धसिद्धा, ७ बुद्धबोहियसिद्धा, ८ स्त्रीलिंगसिद्धा, ९ पुरुषलिंगसिद्धा, १० नपुसकलिंगसिद्धा, ११ स्वलिंगसिद्धा, १२ अन्यलिंगसिद्धा, १३ गृहिलिंगसिद्धा, १४ एकसिद्धा अने १५ अनेकसिद्धा.

१ तित्थसिद्ध–तीर्थ प्रवर्त्या पछी मोक्षे जाय तेने तीर्थसिद्ध कहीए.

...त्थसिद्ध–तीर्थ प्रवर्तावेला मोक्षे जाय.

मरुदेवाजी प्रमुख जाणवा ए अतिर्थसिद्धा.

३ तीर्थकरसिद्ध–जे ऋषभादिक, तीर्थ प्रवर्तावीने मोक्षे गया तेमने तीर्थकरसिद्ध कहीए

४ अतीर्थंकरसिद्ध–जे तीर्थकर विनाना मोक्षे गया गौतमस्वामी प्रमुख जाणवा ए अतीर्थसिद्ध

५ स्वयबुद्धसिद्धा–गुर्वादिकनो उपदेश सांभल्या विना पोतानी मेळे बोध पामीने मोक्षे गया ते कपिलादिक जाणवा ए स्वयबुद्धसिद्ध कह्या

६ प्रत्येकबुद्धसिद्धा–कारणादिक पामीने पोतानी मेळे बोध पामीने मोक्षे गया करकंडु प्रमुख ए प्रत्येकबुद्ध जाणवा,

७ बुद्धबोधितसिद्धा–जे गुर्वादिकनो उपदेश पामीने मोक्षे गया ते, पुंडरिक प्रमुख जाणवा ते बुधबोधितसिद्ध जाणवा

८ स्त्रीलिंगसिद्ध–चंदनबाळा प्रमुख जाणवा ए स्त्रीलिंगसिद्ध जाणवा

९ पुरुषलिंगसिद्ध–जे पुरुषवेदे वेदना विषयनो

क्षय करीने मोक्षे पहोच्या वरदत्त प्रमुख जाणवा. ए पुरुषलिंगे सिद्ध जाणवा

१० नपुंसकलिंगसिद्ध–जे नपुंसकवेदे सिद्धि वर्या गंगीया प्रमुख जाणवा ए नपुंसकलिंगे सिद्ध ते कृत्रिम नपुसक जाणवा

११ स्वलिंगसिद्ध–जे जैनदर्शननुं लिंग पामीने मोक्षे गया. जंबु प्रमुख ते स्वलिंगे सिद्ध जाणवा.

१२ अन्यलिंगसिद्ध–जे जैनना लिंग विना जे सिध्या तेमने अन्यलिंगसिद्ध कहीए ते वकचूल प्रमुख जाणवा.

१३ गृहस्थलिंगसिद्ध–जे जैन गृहस्थना वेषसाथे मोक्षे गया. मरुदेवा प्रमुख जाणवा ए ग्रहस्थलिंगसिद्ध कहेवा

१४ एकसिद्ध–जे एकलाज मोक्षे गया. साथे कोइ नहि ते वीर प्रमुख जाणवा

१५ अनेकसिद्ध–जे घणासाथे मोक्षे गया ते पार्श्वनाथ प्रमुख ते अनेकसिद्ध जाणवा.

पंदर भेदे सिद्ध कह्या तेमनो शब्दार्थ

करीने कह्यो हवे विस्तारीने कहे छे. हवे तीर्थसिद्ध कहेता जे तीर्थ चतुर्विधसंघमांही उपजीने कहेतां जे साधुपणु तथा साध्वीपणुं तथा श्रावकपणुं तथा श्राविकापणु पाम्या पछी अथवा एज चतुर्विधसंघ स्थापना थया पछी, अने सिद्धांतनु प्रवर्तन थया पछी सिध्या तेमने तीर्थसिद्धया कहीए तथा तीर्थ कहेता जे ससारसमुद्रनो त्याग ए नित्यतीर्थ कहेवाय यथार्थथी तथा जीवाजीवादिक पदार्थ प्ररुपक परमगुरु प्रणीतवचन देशना प्रवर्ते छे तेमने तीर्थसिद्ध कहीए अथवा निराधार न प्रवर्ति कहेतां सिद्धात प्रवर्तन थया विना नहि, अथवा सघ स्थापन थया विना पण नहि, ए रीते जे सिद्धिवर्या तेमने तीर्थसिद्ध कहीए, अथवा गणधरादिक व्यवहार प्रवर्तन उत्पादव्यय ध्रुव निरुपण थया पछी मोक्षे जाय तेमने तीर्थसिद्ध कहीए ए पहेलो भेद जाणवो १. हवे बीजो भेद कहे छे अतीर्थसिद्ध कहेता तीर्थकरना वारा विना तीर्थ प्रवर्त्या वी सिद्धांत गणधरादि व्यवहार थया पहेलां मोक्षे गया तेमने अतीर्थसिद्ध कहीए, ते मरुदेवा

प्रमुख सिद्धिवर्या अथवा श्रीसुविधिनाथथी मांडी ने धर्मनाथसुधी वच्चे आंतरे आंतरे धर्म विछेद गयो छे त्यां कोइ जीव शुद्ध स्वरूप स्वभावे अनुभवी एकलभाव ग्रहीने कर्म खपावी मोक्षे गया तेमने पण अतीर्थसिद्ध कहीए ए बीजो भेद २. हवे त्रीजो भेद तीर्थकरसिद्ध कहेतां, जे तिर्थंकर पदवी पामीने चोत्रीश अतिशय, पांत्रीश वाणी गुण, बार गुणे करी विराजमान एहवी पदवी पामीने मोक्षे गया. ऋषभादि चोवीसे तीर्थंकर अथवा अनंता तीर्थंकर मोक्षे गया तेमने तीर्थंकरसिद्ध कहीए, ए त्रीजो भेद ३ हवे चोथो भेद अतीर्थंकरसिद्ध कहेतां जे तीर्थंकरनी पदवी पाम्या विना सामान्यकेवली गौतमादिक अनंता सिद्धि वर्या अथवा, अंतगडकेवली गजसुकुमार प्रमुख अनता सिद्धि वर्या, तेमने अतीर्थंकरसिद्ध कहीए, ए चोथो भेद ४ हवे स्वयंबुद्धसिद्ध कहेतां जे गुर्वादिकना उपदेश विना पोतानी मेळे प्रतिबोध पामीने दीक्षा प्रमुख अंगिकार करे, कर्म खपावी मोक्षे जाय ते तीर्थंकर सर्व, अथवा सामान्यकेवली, कपिल केवली आ

दे देइने, अथवा अंतगम्केवली मरुदेवानी आ दे देइने जे सिद्धि वर्या तेमने स्वयबुद्धसिद्ध कहीए ५ हवे ठठो प्रत्येकबुद्ध ते कोइ निमित्त कोइ कारण देखी धर्म पामीने मोक्षे गया तेमने प्रत्येकबुद्धसिद्ध कहीए, करकंडु प्रमुख ए ठठो जेद ६ शिष्यवाक्य-स्वामी स्वयंबुद्धमां अने प्रत्येकबुद्धमां शो फेर हशे? बन्ने पोतानी मेळे बोध पामीने मोक्षे जाय ठे तो जिन्नपणुं शाथी कहो गे? तेनो उत्तर गुरुराज कहे ठे के हे जाइ बन्नेमां जिन्नपणु कारणे ठे ते कहे ठे, तेना चार जेद ठे १ बोध, २ उपधि, ३ श्रुत, ४ लिंग ए चार प्रकारे स्वयबुद्धमांही विशेष ठे हवे बुद्ध कहेतां कोइना उपदेश विना अने कोइ कारण पण दीठु नथी अने सहेजेज जातिस्मरणादिक ज्ञान पामीने बुजे शिष्यवाक्य-स्वामी मृगापुत्र साधुने देखी बोध पाम्या तथा कपिलकेवली जातिस्मरण विना प्रतिबोध पाम्या तो तमे कारणनी नापामी अने जातिस्मरणज्ञाननी हा पामी तो ए वात शी रीते ठे? तेनो उत्तर के सिद्धांतमाही तो कारण वा जातिस्मरण कह्यु नथी, प-

रंतु टीकाकारे आ गवेषणा करी ठे ते वचनो प्राइक छे, ते उपरथी कंइ शंका कंखा राखवी नहि. हवे जे स्वयंबुद्ध ठे तेना बे भेद. १ तीर्थंकरबुद्ध, २ तीर्थंकर विनाना स्वयंबुद्ध, एटले ए बोध कह्यो हवे उपधि कहे छे के स्वयंबुद्धने बार उपगरण पण होय बार ते मध्ये सात तो पात्रांना होय, त्रण पोताना, अने उंघो, मुहपत्ति होय, ए बार उपगरण होय अने प्रत्येकबुद्धने तो उंघो ने मुहपत्ति ए बे उपकरण ज होय ते जघन्यथकी जाणवा तथा उत्कृष्ट नव उपगरण होय ते मध्ये सात पात्रांना होय अने उंघो, मुहपत्ति होय एटले ए नव थया, ए उपधिनो अधिकार कह्यो तथा हवे सूत्रनो अधिकार कहे छे, स्वयंबुद्धने पूर्वभवनुं श्रुत होय, कोइने न पण होय, जेने न होय ते गुरु पासे जइने पण सीखे अथवा अन्य हरकोइ गछमां रहीने शीखे, जेने पूर्वभव रहित सूत्र होय तेने तो लिंग देवता आपे, जेने पूर्वाधित श्रुत नथी अने अनेरा पासे श्रुत पामीने पोतानुं सामर्थ्य होय तो एकाकीपणे विचरे, स्व इछाए विहार

करे ए पूर्वाधीत श्रुतवाळाने तो ए निश्चयज छे अने जेने पूर्वाधीत श्रुत नथी ते तो सामर्थ्य होय तो एकाकी विचरे, नहि तो हरकोइना गछ भेगो विचरे, अने प्रत्येकबुद्ध जे छे तेमने तो पूर्वाधीत श्रुत निश्चय छे, जघन्यथकी ११ अंगनुं श्रुत होय अने उत्कृष्ट देशे उणो दश पूर्वनुं ज्ञान होय, तथा लिंग जे छे ते प्रत्येकबुद्धने देवता आपे तथा कोइ लिंगरहित पण होय इति स्वयंबुद्धमां तथा प्रत्येकबुद्धमां एम विशेषाधिक जाणवानु छे ए अधिकार टीकाथकी जाणजो ए वचनमां शंका कदा करवी नहि, वमानु वचन प्रमाण करवुं ए छठो भेद ६. हवे बुद्धबोधितसिद्ध कहेता जे तीर्थंकर, केवली, गणधर, साधु आदे देइने उपदेश करीने जे जीवने प्रतिबोध पमाड्यो ते जीव बोध पामी मोक्षे गया तेमने बुद्धबोधित कहीए ए सातमो भेद ७ हवे स्त्रीलिंगसिद्ध कहेता ते स्त्रीलिंगना त्रण भेद छे वेद १, शरीराकार २, गतिपथ ३ तेमांही स्त्रीलिंग ते शरीराकार जाणवो एटले जे शरीरनो आकार तेने लिंग पण कहीए जे माटी वेद त्रण छे ते

वेदने ज्यारे छेदे तेवारे केवल पामे अने पथ कहेता जे वस्त्र आभुषणादिक वेष पहेरवो तेने स्त्री कहीए, तो ते वातनो तो कंइ निश्चे नथी ते तो पुरुष पण स्त्रीनो वेष पहेरे छे तथा स्त्री पण पुरुषनो वेष पहेरे छे तेथी ए वात अप्रमाण छे ए भेद तो कंइ खपना नथी तथा लिंगने शरीराकार ए बे भेद कह्या ते एकज छे, शामाटे जे शरीरनो आकार तेनेज लिंग कहीए, अहियां भिन्नपणुं नथी, एकज भाव जाणवो, अहियां कोइ दिगम्बरमती एम कहे छे जे स्त्री तो कंइ मोक्षे जाय नहि ए तो असत्य वचन छे अने अशुद्ध पण छे जे माटे जे शुद्धज्ञान, शुद्धदर्शन, शुद्धचारित्र जे जीव पामे ते जीव मोक्षे जाय त्यां कांइ लिंगनुं कारण छे नहि, पुरुष वा स्त्री वा नपुंसक ए त्रण वेदमां एके वेदे मोक्षे जता नथी श्यामाटे के अवेदी पदनो मोक्ष छे, अने ए तो त्रणे वेद छे ते कंइ मोक्षे जता नथी अहियां तो शुद्ध ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए रत्नत्रय तेज मोक्षे जाय, मोक्षनो मार्ग तो ए त्रण रत्नत्रय शु[illegible] थये मोक्षे जाय, तथा व्य-

वहार मार्गे पण स्त्रीउं पुरुषनी पेठेज धर्म आराधे ठे श्यामाटे के स्त्रीउं पण सूत्र ज्ञान, अगीयार अंग सुधी जाणे तथा स्त्रीउं शुद्धसमकित तथा व्यवहारसमकित पण धारण करे ठे, सत्तर भेदे संयम पाले ठे मासक्षमणादि तप पण करे ठे ते माटे स्त्रीउं मोक्षे केम न जाय? दिगम्बरोवाच ॥ जे स्त्रीउंने शुद्ध ज्ञान दर्शन होय पण चारित्र होय नहि श्यामाटे जे स्त्रीउंने वस्त्रनो परिग्रह घणो होय ठे अने ज्यां परिग्रह होय त्या चारित्र ठे नहि अने वस्त्र ते तो नव प्रकारना परिग्रहमा गणेलां ठे अने स्त्रीवस्त्र न राखे तो नग्नमुद्राए विकृताकार दीसे अने पुरुषने अभीलनी पण होय तथा लोकमध्ये पण घणी हासी निंदा थाय ते माटे वस्त्रनो परिग्रह होय अने परिग्रह होय त्यां चारित्र होय नहि तेनो उत्तर जे परिग्रह ते तो मूर्छा नथी त्यां परिग्रह मानता नथी अने जो परिग्रह मानीए तो सिद्धांतथकी विरुद्ध थाय, अने ग्रहस्थ लिंगादि भेद सर्वे जुठा पडे श्यामाटे जे भरतचक्रवर्त्ति महापरिग्रह आरंभमां रह्याथका केवल

ज्ञान पाम्या जो मूर्छा नहि हती तो एटलावधा परिग्रहथका केवलज्ञान पाम्या ते परिग्रह तो कंइ केवलज्ञान पामतां नड्यो नहि तो शुं वस्त्रनो परिग्रह मोटो जतां अथवा केवलज्ञान पामतां आमो पम्दो थइने रहेशे, माटे विचारी जुवो के *मूर्छा तेज परिग्रह छे के मुछा परिग्गहो* वुत्तो इति वचनात्, माटे जे वस्त्र छे ते तो चारित्रना उपगरण छे ते परिग्रहमां केम गणाय? दिगंबरो उवाच ॥ सर्वथकी उत्कृष्टु पुरुपनुं स्थानक परिग्रह आरम्भना योगथी सातमी नरके जाय, एटली शक्ति पुरुपमां छे, अने वीर्य ए शक्ति स्त्रीने विपे नथी केमके सातमी नरके तो स्त्री जाय नहि तो सर्वथकी सुखनुं स्थानक उत्कृष्टमां उत्कृष्टु मुक्ति छे तो त्यां केम करीने जशे, अथवा वासुदेवादिक पदवी पण तेमने प्राप्त होती नथी तथा पूर्वधर लब्धि ते पण एमने न होय एटले पूर्वनुं ज्ञान पण एमने आवे नहि एटलो दयोपशम तो एमने छे नहि अने केवलज्ञान तो दायिकभावनुं छे ते केम प्राप्त थशे? [लब्धि तेपण एने आवे

नहि तेनो उत्तर जे सातमी नरके न जाय तेनुं कारण ए छे के सग्रामादिक आकराकर्म विशेपे स्त्री बांधती नथी वळी जमीन फोडवानु काम ते पण स्त्री करती नथी, ए कामनो करनावाळो तो पुरुष छे तेणे करीने स्त्री सातमी नरके न जाय शामाटे के उत्कृष्ट मनना अध्यवसायनुं बल नथी तथापि तोए ज्ञान दर्शन चारित्र अने तप प्रमुख स्त्रीने उत्कृष्टपणे करीने विशेपे होय तथा जे वासुदेवादिक पदवी ते तो पुरुषवेदे छे, माटे जे संसारव्यवहार सर्वे पुरुषथकी छे पुरुष प्रधानो धर्म इति वचनात् राज्यकाजव्यवहार ए सर्वे पुरुषथकीज छे स्त्रीथकी नथी तथा चारणादिक लब्धि ते तो उत्कृष्ट मनना अध्यवसायवमे तथा तपोबले करीने प्राप्त थाय छे ते कइ स्त्रीना अध्यवसाय मनना तथा तपोबल ते अधिक छे नहि कदापि तमो कहेशो के एटला बदल मोक्षे न जाय ए तमारु कहेवु असत्य छे शामाटे जे मोक्षे जावुं ए तो आत्मबलवमे छे अने आत्मबल तो स्त्री वा पुरुष सर्वेने सरखु छे अने मन वचन कायादिक बल ते पूर्वक्त

कर्म ठे तो ए तो कर्मनी प्रकृतियो छे माटे कर्मनी प्रकृतिजथकी जे बलनुं पामवुं ते तो गति आश्रित वा वेदआश्रीयने ठे, तेमां कंइ मुक्तिनुं जवुं काम आवे नहि अने योगाश्रिय तथा वेदाश्रिय तथा बलाश्रिय जो धर्म मानता होय तो देवता मोक्ष जाय, केमके ए सर्वे वाते अधिक ठे पण तेने तो एक श्रावकनुं पण व्रत आवतुं नथी अने जे विचारा पशु तिर्यंच पंचेंद्रिय ते पण पांचमुं गुणठाणुं पामे ठे, पण देवता तो पामता नथी माटे पौद्गलिक शक्तिने धर्मशक्ति हारे (साथे) मेलवशो तो ए प्रत्यक्ष अजुक्तं (अयुक्त) ठे शामाटे? जे वासुदेवादिक लब्धि ते पण पूर्वकृत कर्मनी शक्ति ठे, अने स्त्रीवेद उपार्जवो ते पण पूर्वकृत कर्मनी शक्ति ठे, ते घणी निर्बल ठे, तेना पुद्गलनी शक्ति एवी नथी के लब्धि पामे, एतो एना वेदमांज उदय नथी पण कंइ मोक्षे जावुं त्यां पूर्वकृत कर्म वा वेद एके खपनां नथी, अहियां तो आत्मशक्ति प्रगट करीने मोक्षे जावुं ठे, ए वातमां, कंइ शंका नथी तथा तमे [illegible] जाय अने हेठल सा-

तमी नरकसुधी केम न जाय ? एनो उत्तर-जे भुजपरिसर्प बीजी नरकसुगी जाय अने खेचर पंखी त्रीजी नरकसुधी जाय तथा वाघ, सिंह चो थी नरकसुधी जाय तथा उरपरिसर्प पांचमी न रकसुधी जाय तथा मछादिक सातमी नरकसुधी जाय, एम अधोगति तिर्यंच पंचेंद्रिय सर्वनी भिन्न भिन्न छे, अने उर्ध्वगतिए तो सर्वे तिर्यंच पंचेंद्रिय आठमा सहसार देवलोकसुधी जाय तो अहिया उर्ध्वगति तथा अधोगतिनुं कंइ स रखु प्रमाण नथी जे कंइ उर्ध्वगतिए आटलो जाय ते अधोगतिए आटलो जाय एवो तो कंइ नियम छे नहि, ते माटे स्त्री सातमी नरके न जा य पण मोक्षे तो जाय अहियां तो केवलज्ञान केवलदर्शन अने क्षायकचारित्रना आराधनवडे जावु छे, पणे तो कर्मप्रकृतिना बंधवडे जावु छे माटे आत्मिकस्वभाव अने पौद्गलिकस्वभाव ए बे मलता न होय पौद्गलिकभाव पुद्गलमां राखो अने आत्मिकभाव आत्मामां राखो. एम सत्य स्वरूप समजीने स्त्रीने मोक्षे जवुं कबुल राखो ते करतां अमारु कह्यु कबुल न करो तो भले तो

पण तमारा मतनो ग्रंथ " गोमट्टसार " नामे छे तेने विषे पण स्त्रीने मोक्षे जवानुं कह्युं छे. ते ग्रंथनी गाथा साक्षी माटे लखीए छीए

॥ उक्तं च ॥

अठ्ठसयाल पुंवेया, इत्थिवेयायहुंतीचालीसा ॥
वीसनपुंसकवेया, समएगेण सिज्झंति ॥ १ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट पुरुषवेदे सिझे तो एकसोने आठ सिद्धि वरे अथवा अडतालीस पण सिद्धि वरे अने स्त्रीवेदे तो एकसमये चालीस सिद्धि वरे अने नपुंसक सीझे तो एकसमये वीस सिद्धि वरे, ए उपर लखेली गाथानो अर्थ छे तथा अडतालीस कह्या अथवा एकसोने आठ कह्या तेनो विचार आगल वर्णवामां आवशे ए गाथामां तो अडतालीसज कह्या छे पण बन्नेनो भाव आगल कहीशुं, एम तमारा ग्रंथने अनुसारे स्त्री चालीस मोक्षे जवानी कही छे ते माटे स्त्रीने मोक्षे जवानुं कबुल राखवुं जोइए तथा साधु साध्वीने वस्त्र राखवानुं ते परिग्रहमां गणातुं नथी ते तमारा " भगवतीसार " ग्रंथने विषे वस्त्र राखवानी साधुने छापाडी छे माटे वस्त्र

छे ते कंइ परिग्रहमां गणातां नथी माटे एम समु समजीने स्त्रीने मुक्ति पामवी ए वात सत्य जा- णवी ए वातमा शङ्का राखवी नहि एटले स्त्रीने मोक्षे जवानो आठमो अधिकार कह्यो. ८ तथा पुरुषलिंगे सिद्ध—कहेता जे पुरुषवेदे मोक्षे जाय एटले पुरुषाकारे छे, पण वेदनो तो क्षय थयो छे वेदरहित पुरुषाकारे मोक्षे जाय तेने पुरुषलि गसिद्ध कहिये, एटले ए नवमो अधिकार कह्यो ९ हवे दसमो नपुसकलिंग कहे छे नपुंसक कहेता नहि पुरुषवेद अने नहि स्त्रीवेद बन्नेथकी न्यारो ते नपुसकना बे भेद छे एक जन्मनपु सक १ ने बीजो कृत्रिमनपुसक २. ते मध्ये ज- न्मनपुसक सिद्धि न वरे ने कृत्रिम नपुंसक सि- द्धि वरे ए अधिकार भगवतीजीमां कह्यो छे. कृ- त्रीमनपुसक जे मोक्षे गया ते, गंगीआ (गागेय) प्रमुख जाणवा एटले ए दसमो भेद कह्यो १० हवे स्वलिंगसिद्ध कहेता जे कोइ श्री, जैनशासनना मतनो लिंग कहेता जे वेषधारण करे, ते लिंग साथे मोक्षे जाय तेने स्वलिंगसिद्ध कहीए. ते लिंगना त्रण भेद छे प्रथम तीर्थंकरना वारानो

लिग भिन्न छे अने बावीस तीर्थंकरना वारानो लिग पण भिन्न छे तथा जिनकल्पी तथा स्थविर कल्पी इत्यादिक अनेक भेद छे पण ते सर्वे लिग ए जैनमतनो जाणवो. ते लिग धारण कर्या पछी मोक्षे गया तेमने स्वलिगसिद्ध कहीए. ए अगियारमो भेद कह्यो ११ हवे अन्यलिगसिद्ध कहेतां ज्या जैननो लिग नथी ते विनानां अनेक लिग छे. खाखी, योगी, वैरागी, सन्यासी, फकीर प्रमुख अथवा आर्य, अनार्य, सर्वे जैनलिग विनाना जे मोक्षे जाय तेमने अन्यलिगसिद्ध कहीए, एटले वंकचूल प्रमुख अनेक जीव मोक्षे गया तेमने अन्यलिगसिद्ध जाणवा ए बारमो भेद कह्यो १२. हवे ग्रहस्थलिगेसिद्ध कहेतां जे ग्रहस्थपणे जैनधर्मनो पण भेख (वेष) लीधो नथी, तेम अन्य धर्मनो, आर्य अनार्यनो भेख लीधो नथी अने ग्रहस्थावासमां रह्याथकां कोइ कारण वैरागनु मळवाथकी अनित्यादिक भावना आवी अने शुद्ध स्वरूपनी रमणता, आत्म स्वरूपनु एकत्वपणु थातेथके मोक्षे गया तेना बे भेद छे १ अंतगडकेवली तुर्त शैलेशी करण

करीने मोक्षे गया ते मरुदेवा प्रमुख तथा २ जे जेनुं श्रावखुं वधारे होय ते एकत्वभावादिकथकी केवलज्ञान पामे पण श्रायुष्य वधतुं छे तेथी जेने लिंग देवता श्रापे त्यां परमात्मपद तो ग्रह स्थीपणाथकीज थयुं छे केमके केवलज्ञान तो ग्रहस्थावासमांज उत्पन्न थयुं माटे एने ग्रहस्थ-लिंगसिद्ध कहीए, एमां कंइ दूषण छे नहि भ रतादिकनीपेरे एटले ए ग्रहस्थीलिंगे सिद्ध कह्या ए तेरमो भेद थयो १३ एकसिद्ध कहेतां जे ए कलाज मोक्षे गया साथे कोइ साधु प्रमुख बीजा नथी गया तेमने एकसिद्ध कहीए, ते महावीर स्वामी श्रादे जाणवा, ए एकसिद्धनो चौदमो भेद कह्यो १४ श्रनेकसिद्ध कहेतां घणा पुरुषा दि साथे मोक्षे गया पार्श्वनाथ प्रमुख तेमने श्र नेकसिद्ध कहीए, ए पंदरमो भेद जाणवो १५ हवे सिद्धि वरवानो विचार कहे छे के-एक स-मये केटला सिद्धि वरे श्रथवा केटला समयसुधी लागट सिद्ध थाय श्रगर [illegible] वरे श्रने केट-लो विरहकाल [illegible] कहे छे ते श्रा [illegible]

॥ उक्तं च ॥

बत्तीसा अमयाला, सठी बावतरीय बोधवा ॥
चुलसीइ छन्नजइ, डरहिय महुत्तरसयं च ॥१॥
अमसगठपञ्च चउ,तिनिउन्नइक्कोयसिठमाणेसु॥
बतीसाइ सुसमीया, निरंतरं अंतरं उवरी ॥ २॥

अर्थ–हवे प्रथम समय जघन्यथकी एक जीव सिद्धि वरे, उत्कृष्ट बत्रीस सिद्धि वरे एम बीजे समये पण जघन्यथी एक वे उत्कृष्ट बत्रीस एम यावत् आठ समयसुधी जो सिद्धि वरे तो ते उपरांत अवश्य विरहे पमे तथा प्रथम समये जघन्यथी तेत्रीस अने उत्कृष्ट अमतालीस सिद्धि वरे. एम बीजे समये पण जघन्यथी तेत्रीस उत्कृष्ट अमतालीस एम सात समयसुधी जो यावत् सीझे तो ते उपरांत विरहे काल अवश्य पमे. तथा प्रथम समय जघन्यथी उंगणपचास अने उत्कृष्ट साठ एम बीजे समये पण जघन्यथी उंगणपचास अने उत्कृष्ट साठ एम छ समयसुधी लागट सिद्धि वरे तो विरह काल पमे तथा ., जघन्यथकी एकसठ अने उ

त्कृष्टा बोंतेर एम बीजे समये जघन्यथी एकसठ अने उत्कृष्टा बोंतेर एम पांच समय लागट सिद्धि वरे तो विरह पडे तथा प्रथम समये जघन्यथी तोंतेर अने उत्कृष्टा चोरासी एम बीजे समये जघन्यथी तोंतेर अने उत्कृष्टा चोराशी एम चार समयसुधी लागट सिद्धि वरे तो विरह पडे तथा प्रथम समये जघन्यथी पंचासी अने उत्कृष्टा छन्नु एम बीजे समये जघन्यथी पंचाशी अने उत्कृष्टा छन्नु एम त्रण समयसुधी लागट सिद्धि वरे तो विरह काल पडे तथा प्रथम समये जघन्यथी सत्ताणुं अने उत्कृष्टा एकसोने बे एम बीजे समये जघन्यथी सत्ताणुं अने उत्कृष्टा एकसोने बे एम बे समयसुधी लागट सिद्धि वरे तो विरह काल पडे तथा प्रथम समये जघन्यथी एकसोत्रण अने उत्कृष्टा एकसोनेआठ एक समयनाज सिद्धि वरे तो फरी विरहे काल पडे ते छ माससुधी मुक्तिनो मार्ग बंध रहे तथा ओछा वधता जीव सिद्धि वरे तेना विरहकाल ओछा वधता ते अधिकार घणा छे ते सर्वे शास्त्र थकी जाणजो शिष्यवाक्य–स्वामी ए विरहका

ल ते आ भरतक्षेत्र आश्रयीने कह्यो छे के प
भरे क्षेत्र आश्रयीने कह्यो छो तेनो उत्तर. जे
हे भद्र ! सिद्धांतमां तो एक क्षेत्रनुं कंइ वचन
नथी अहियां तो समुदाय सर्व सिद्धपद आश्र-
यीने छे मोक्षमार्गनोज विरह काल कह्यो छे.
पण एम जो समुदाये बोलीए तो परंपरा लो-
किकव्यवहारने बाधकपणुं लागे, शामाटे जे जे-
टला आ भरतक्षेत्रमां तीर्थंकर थया तेमना पांच
कल्याणक दशे क्षेत्र सरखा लहीए छीए ने श्री
रीषभदेव स्वामी तो एकसोने आठ पुरुष साथे
मोक्षे गया ते तो सर्वे उत्कृष्टी अवगाहना
वाला छे ते तो मोक्षे जवानुं आश्रीत मानीए
छीए बीजा नानी अवगाह नाना धणी जो एक
समये एकसोने आठ मोक्षे जाय तोपण छ मा-
सनो वीर हे काळ कह्यो छे ए तो उत्कृष्टी अ-
वगाह नाना धणी मोक्षे गया तो अहीयां अव-
श्य विरह काल छ मासनो होय ए जोता समु-
दाय मोक्ष मार्गनो विरह काल लेतां चक्रक्षे-
त्रे मुक्तिनो मार्ग छ मास सुधी बंध रह्यो जोइए
तेवारे नवक्षेत्रे भगवाननां कल्याणक अहीना

तीर्थंकरनी साथे एक समये मलतां न आवे ते वारे ते तीर्थंकरना कल्याणक अने अहीना तीर्थंकरनां कल्याणक आगल पाछल थइ जाय तेवारे सर्वे तीर्थंकर दश क्षेत्रना तेमनां कल्याणक एक समयनां न ठरे, ते वारे अतीत अनागतना कल्याणकनो सो भरुसो रहे ? ते माटे आ एक क्षेत्रे लेतां सभवे, शिष्य वाक्य ॥ जे विरहे कालना अधिकारने विषे चारे गती चोवीसे दण्डक ने विषे जे विरह काल कहेला ठे ते शुं आ क्षेत्र आश्रयीने ठे के गति आश्रीने छे ? जो आ क्षेत्र आश्रीने होय तो मुक्तिनो पण आ क्षेत्र आश्रीने होय अने ते गति आश्रीने होय तो ते क्षेत्रने विषे सर्व लोकना जीव आवीने उपजे ठे, अने ते गतिमांथी चळीने सर्व लोकमा जाय छे एम जो ए गतीयोने आश्रीने होय तेवारे एक क्षेत्रनुं कंई प्रमाण ठे नही तेम मुक्तिना विरह कालना अधिकारमां ठे ते मुक्ति गति आश्रीने होय, तो सर्वे क्षेत्र आश्रीने ठरे तेनो उत्तर' के जे गतिने विषे उत्पत्ति वा मरण तेने आश्रीने ठे ते तो सर्वे लोकना जीव त्यां

ऊपजे छे अने ते गतियोना जीव सर्व गतियोमा ऊपजे छे, अने विरह काल ते गतिने आश्रीनेज छे पण मुक्तिना विरह कालनुं तें पुछ्युं तेनो विरह काल त्यां तो समुदायेज वचन छे पण अहीयां समुदाय कहेतां पूर्वोक्त विचार आवो आवे छे, तेथी हमे एक क्षेत्र आश्रीने संभववानुं कह्युं पण शास्त्रने विषे जोतां तो मुक्ति गति आश्रीने छे; ए वातनो विचार तो केवली होय तो कहे अने अहीयां तो विचार घणानो छे. पण परुपणामां तो एक क्षेत्र आश्रीनेज करवी पडे, पछी तत्त्व तो अरीहंत जाणे, शिष्य वाक्य स्वामी एम विरह काल पम्हे त्यारे मुक्तिनो मार्ग बंध रहे तो केटलाएक लोको एम कहे छे जे मुक्तिनो मार्ग तो कीमी मंकोमीनी हारनी गोम्हे वहे छे तो ए वात केम बनशे? तेनो उत्तर जे एम कोइ अज्ञानी लोक सद्गुरुना चरण कमल सेव्या विनाना बहु श्रुतनी भक्ति रहीत एवा जे जीवमती कल्पना करवा थकी बोले ते कंइ शास्त्रनी साथे मेळववानां वचन नथी ए पोतानी खुशी पम्हे तेम लवे तेनो उत्तर तो कंइ शास्त्र-

थी नाकले तेम नथी माटे तेना वचन उपर कंइ प्रतीत करवी नही, अने तेनां वचन सांभळवां पण नही एक बहु श्रुत निस्पृही मुनिरायनो विश्वास राखवो श्या माटे जे सिद्धांतमा रहस्य घणा रह्या छे, अने कोइ लख्यु वांचीने टबो तथा टीका समजावशे पण रहस्य हाथमां नही आवे, माटे बहुश्रुत निस्पृहीनी सेवा करीने ते मना मुख थकी समजजो शा माटे के सिद्धांत माही तो अणमळता बोल घणा छे अने शंका केला पण घणी छे ते काचा पुरुष पासेथी सांभळसो तो धर्म भ्रष्ट थइ जासो अने शंका कलामां पडशो अने ज्ञाननु रहस्य तमारा हाथमा नही आवे अथवा जे मत पक्षी छे अने पोताना मत ताणे छे, ते बीजाने खेंचवा चाहे छे तेना वचननो पण भरुसो राखवो नही, ए तो जे मोंढेथी खुशी पडे तेम लवे तेना वचननो भरुसो ते तो सैनो होय, अने असत्य होय माटे ते उपर विश्वास करवो नही एटले ए संक्षेप थकी सिद्धनुं स्वरुप कह्यु पण ते सिद्धपदने कोण पामे के जे परभाव त्यागी, स्वभाव भोगी, शुद्ध स्व-

रुपने उळखी स्यादवादशैळी लही पोतानुं स्वरुप एकत्व भावे थाय ते घणी सिद्धिवरे. शिष्य वाक्य स्वामी एकत्व भाव शीरीते थाय ? तेनो उत्तर जे प्रथम लक्षण गुण स्वभाव कहीने आव्या ते रीते षट द्रव्यने उळखीने चार द्रव्य तो अरुपी छे, ते कंइ आत्माने नमता नथी ते आत्मा भेगा छे पण नही अने पांचमो द्रव्य जे पुद्गल छे ते आत्माने अनादि काळनो भेगो वळगेलो छे, अने तेहीज आत्माने अनादिकाल-नो संसारमां भमाडे छे माटे पुद्गल तथा आत्मा ए बे द्रव्यनी सद्गुरु पासेथी उळखाण करवी, पण पोतानी मति कल्पनाए चालवुं नही, ते द्रव्यने सारी रीते उळखीने जड चेतनना विभा-ग जाणीने जड भावनो त्याग करीने पोताना एकत्व स्वरूपमां रमण थाय तेमने एकत्व भाव कहीए, अहीयां किंचित् जीव स्वरूप उळखावे छे, के जीव कहेतां आत्म द्रव्य ते तो शुद्ध ज्ञान दर्शन चारित्रनो पुंज छे, महा ज्योति स्वरूप साक्षात् छे, एवो जे आत्मस्वरूप दीसे छे एटले सर्व पदार्थ छे तेमां एक आत्माराम प्रत्यक्ष

वस्तु मात्र आश्रयकारी छे, अनेक भत्र रुप एक समय देखाय छे ए सर्व पोत पोतानी द्रष्टिवडे जोवामां आवे कारण के अहीयां द्रष्टि कहेतां ज्ञान द्रष्टि समजवी, चर्म चक्षुवालो न जाणे, बाह्य द्रष्टिवालाने ए वस्तु समजवामां आवे नहीं पनो जे धणी बाहीर आत्माना भावने छोमीने अतर आत्मानो भाव जेने प्राप्त थयो छे ते धणीना जाणवामां आवे छे, अहीयां कोइ कहेशे के देखामो ते वस्तु कई देखामवा जेवी नथी शामाटे के अरुपीनो भाव तो अरुपी जाणे ए वात रुपीना जाणवामां न आवे, ए तो जेनी विभावदशा टली होय राग द्वेष जेना पातला पम्या होय समकित गुण प्राप्त थयो होय ते धणी, ए वस्तुने जाणे पण जेनुं मिथ्यात्व गयुं नथी अने अज्ञानमा राचीने रह्या छे अने इन्द्रिय सुखने विषे जेनी इच्छा छे शुभाशुभ भावने विषे धर्म मानी बेठा छे ते धणी सर्वथा ए वस्तु नज देखे, एतो जेने ज्ञाननी रमणता छे ते ए आत्मस्वरूपने जाणे ए वातमा कंइ पण [illegible] ए प्रत्यक्ष पण जोतां स्वरूप [illegible] वस्तु

ते एक शब्द मात्रथी ओलखीए छीए, एटले शुद्धनय वस्तु मात्र आ एत कहेतां शुद्धनयने वस्तु धर्म प्राप्ति छे एटले एनो अनुभव करतांज समकितनी प्राप्ति थाय शुद्ध स्वरूप ते केवुं छे के एक वस्तु शुद्ध एकत्व ज्योति स्वरूपेज शुद्धपणुं छे ते कोइ काले छुटशे नही, जेवो छे तेवो ने तेवोज वस्तु ए रहेशेज एज स्वरूप सिद्धनुं ए छे, अने ए स्वरूप सर्व जीवनुं ए छे, अहीयां कोइ कहेशे के जीव शुद्धता क्यारे थाशे ज्यारे आ संसारभावथी छुटशे त्यारे शुद्ध थाशे तेनो उत्तर कहे छे के जीववस्तु तो दृष्टिए विचारी जोशो तो त्रणे काळ सदाए शुद्धज छे जेम कंचन चेपारुप छे एनुं मुल्य पण चेपानुंज अपाय छे, तोलनुं अपातुं नथी, जेटलो तोल वधारे हशे, तेटलो ताप दीधे बळी जाय एटले मुळ होय एटलुंज रहे तेम आत्मा पण रागादि विभावनी संगे अनेक नाम धरावे तथापी ते आत्माथकी सर्व भिन्न छे. आत्मा तो शुद्ध रूपज छे तथा जे नव तत्त्व कहीए छीए जीव, अजीव, पुण्य, पाप, सवर, निर्जरा, बंध अने मोक्ष ए

नवे तत्त्वने विषे आत्मा प्रणमेलो छे तथापि ए आत्माथी नवे भिन्नज छे पोते पोताना शुद्ध स्वरूपमांज छे जेम अज्ञानी होय ते अनेक नाम धरावे छे काष्टनी, छाणनी, इत्यादिक अनेक नामनी अग्नि कहेवाय छे, पण एथकी अग्नि न्यारीज छे शा माटे के, दाहक स्वभाव छे ते-नेज अग्नि कहीए छीए अहिया कंइ ए आकारनु नाम ते अग्नि नथी तेम आत्मा पण शुद्ध स्वरूपनु नाम छे जेम ए अग्निना आकारे एने देखीने लोक तेवां तेवां नाम दे छे पण अग्निनो स्वभाव तो एक दाहकज छे तेम चेतन विभावनी संगते अनेक नाम धरावे छे पण चेतन स्वरूप तो शुद्धनुं नामज छे, अने ए नाम तो सर्वे विकल्पे छे, विकल्प छे ते सर्वे जुठा छे, पोते पोतानो एकत्व भाव ज्ञान, दर्शन चारित्रनो पुंज शुद्ध स्वरूपी, साक्षात् परमानंदरूप तेहीज सत्य छे बाकी सर्वे ए विकल्पे छे उक्तंच॥
अत शुद्ध नयोपेत । प्रत्य गुज्योतिश्च कास्तित् ॥
नवतत्त्व गतवे पियदेकत्वमुचती ॥ ७ ॥

एवु शुद्ध स्वरूप तेने आत्मा कोइ काळे

तजे नही, हवे एवो आत्मा छे तोपण भेदनय थी बे पक्ष छे, एक तो अशुद्ध आत्मा ने बीजो शुद्ध आत्मा कहेतां जे विभाव दशा एटले रागादि परिणाम शक्तिरूप ए सर्व जीवने विषेज पामीए. बीजो जे शुद्ध चेतन कहेतां जे वस्तु द्रव्य रूप छे तेनी कोइ मर्यादा नथी जे आटलो कालज जीववस्तु रहेशे, एनो तो सदाय अमर्यादा काल छे एटले शाश्वतोज छे, अने जे रागादि विभाव सहीत ते अशुद्ध चेतना छे, तेना कालनी मर्यादा छेज अहीयां कोइ शंका करशे जे भवी अभवीने विभाव साथे छुटको क्यारे थशे? तेनो उत्तर जे भव्य जीव छे तेतो समकित पाम्यो त्यांथी विभावनो नाश थयो अहीयां पण कोइने शंका थशे जे समकित तो चोथे गुण ठाणे छे अने विभावनो नाश तो दशमा गुण स्थानकने अंते छे तेनो उत्तर जे गुणठाणां छे ते पण एक व्यवहार कथनी छे तथापि चोथे गुणठाणे जे समकित छे तेतो अशुद्धज छे अने शुद्ध समकित तो त्यां दशमा गुण स्थानकने अंते क्षपक [illegible] अपेक्षाए छे, शामाटे जे चोथे गु-

एवाणे समकितनी प्राप्ति थइ त्यातो मिथ्यात्व स्वन्नाव रह्यो ठे अहीयां तो कंइ उपशमे ठे, कंइ क्षय उपशम थाय ठे तो उपशम तो ए मिथ्यात्वसत्ताए साबीतज ठे अथवा क्षय उपशम थयुं तो ए सत्ताए साबीत ठे, शामाटे जे अगीयारमा गुणस्थानकना पडेला निगोदादिकने विषे रख डे ठे तो शा कारणथी के मिथ्यात्वादिक हतु ते ढेकने गया, सत्तामां हतुं ते उदयमा आव्युं तेथी ए जीव रखडे ठे. अथवा कोइ कहेशे के क्षायक समकितवालाने चोथे गुणस्थानके शुद्ध स्वरूप ठे के नही? तेनो उत्तर के आगळ जे बे समकित कह्या तेथी तो ए अनंत घणु शुद्ध ठे परंतु संपूर्ण शुद्ध तो नथी शामाटे जे त्यां संपूर्ण सत्य ने सत्य ने असत्यने असत्य जाणवु ते ज्ञान हजु एने प्रगट्युं नथी अने एकत्व आत्म स्वरूपनी प्राप्ति थइ नथी अने ज्या सुधी न्नेद ज्ञान ठे त्यां सुधी किञ्चित् मिथ्यात्व ठे अने अहीयां न्नेदज्ञानने विषे तो आत्माना न्नेद करवा, ज्ञान आत्मा प्रमुख अथवा उत्पाद व्यय प्रमुख तो आत्मा कंइ निन्न नथी अने ज्ञानदर्शन ठे तेहिज

आत्मा ठे माटे आत्माने विषे भेदपणुं छे नहि. अने भेदपणुं मानवुं तेज मिथ्यात्व ठे अने अभेदपणुं एकत्वभाव थवो ए बारमे गुणस्थानके ठे त्यां तो कंद-मिथ्यात्व छे नही ते कंद हवे पाछा पण पमे नही, जेम कोइए वृक्ष कापी नांख्युं पण तेनां मूलीयां पृथवीमां रह्यां ठे तो ते वृक्ष पाछुं प्रगट थायज अने जेनुं मुल सुद्धां गयुं ते पाछुं प्रगट न थाय तेम मिथ्यात्वनुं मूळ मांही रहेलुं ते अगीयारमा गुणस्थानक सुधीना जीवोने पाछो मिथ्यात्व रूप वृक्षनो फेलावो थाय ठे ते जीव संख्यातादिक काल संसारमां रखमे ठे, जे जीवने बारमुं गुणस्थानक स्पर्श्युं ते जीवने मिथ्यात्व वृक्षनुं मूल ठे नही, तेथी ते जीव संसारमा पागो न पमे, अने ते जीव तरत मोक्ष जाय, हवे अहीयां जे चोथे गुणस्थानके क्षायिक समकित कंदरू शुरू कह्युं तेनी कोइने शंका पमशे जे चोथा गुणस्थानकनो जीव तो पाछो पमे तेने कहीए के चोथा गुणस्थानकनो जीव पागो न पमे अने चोथाथी दशमा गुणठाणा सुधीनुं मिथ्यात्व रह्युं ने मिथ्यात्व किञ्चित् ठे अने

तद्भवमांज ए मिथ्यात्वनो नाश थशे अने ते जीव तद्भव मोक्षे जशे माटे एने शुद्ध समकिती कहीए छीए, जेम कोइ पुरुष मरवा सुतो अने गळे श्वास छे तेने मुवोज जाणीए ते कंइ हवे जीववानो नथी तेम अहींया मिथ्यात्व पण कंइ रहेवानु नथी माटे एने शुद्ध समकित कहीए छीए, पण शुद्ध समकित जे सपूर्ण तेतो रागादि विभाव दशानो नाश थये बारमे गुणस्थानकेज होय एम जाणवु माटे ते कालनी मर्यादा त्यां आवीज रहे माटे भव्य जीव अशुद्ध चेतनावाळो रागादि विभाव सगतिनी काळमर्यादा तो पूर्ण थाय पण शुद्ध चिदानंदघन ज्ञानदर्शन चारित्रनो पुज ज्योति स्वरूपी तेनी तो कंइ काळमर्यादा छे नहीं तथा जे विभाग रूप रागादि परिणाम अशुद्ध चेतना जे छे ते पर्याय मात्र छे विचारीने जोइए तेवारे ए ज्ञानरूप नवतत्त्वरूपमा ढकाइ गयु छे एटले पूर्वोक्त शुद्ध चिदानद स्वरूप नवतत्त्वरूप (तेने) वादले करीने आच्छादित थयुं छे एटले जीव वस्तु अनादिकाळनो ए कर्ममां मा ढकाइ गयो छे तेतो ज्ञानी पुरुष होय तेज

मांहीथी खोळी काढे, बीजाने जमे तेवुं नथी.

॥ उक्तं च-

पाषाणेषु यथा हेम दुग्धमध्ये यथा घृतम् ॥
तिलमध्ये यथा तैलं, देहमध्ये तथा जीवः ॥
काष्ठमध्ये यथा वह्निः, शक्ति रूपेण तिष्ठति ॥
अयमात्मा शरीरेषु । यो जानाति स पंडित ॥

अर्थ-शामाटे के अनादि संबंधे के जेमां धातु कहेतां सोनुं, रुपु, त्रांबु, कलइ, जसत, इत्यादिनी पाषाणमांही उत्पत्ति छे ते कोइने समजवामाज नथी के आ धातु फलाणा पत्थरमांही छे एवुं तो जाणपणुं कोइने छे नहि ए तो जे अकलकला छे तेज ए कांकरीउंने उंळखे छे के आ पत्थरमांही सोनु छे अने आ पत्थरमांही कथीर छे जेम जे पंडित पुरुष छे तेज आत्माने उंळखे छे ने जेम पत्थरमां सुवर्णादिक रह्युं छे तेमज आपणी कायाने विषे आपणो आत्मा परमात्मा सर्व उपद्रव रहित साक्षात् बिराजमान छे तथा जेम दुग्ध कहेतां दुधमांही जेम घृत रह्युं [illegible] आपणी देहनी मांहली कोरे

रित्र आत्माथकी अळगु राखीने,जे मोक्षनुं साधन करवा चाहना करे छे ते अज्ञान छे, अने कोइ दहाडो मोक्षनु साधन थशे नही. एवातमां कइ शंका राखवी नही हवे जे ज्ञान, दर्शन,चारित्र अने आत्मा ए चारे अभेद रुपज छे ते देखाडे छे

पहेला श्लोकनो अर्थ—आत्मज्ञान, महात्मानां कहेतां जे जाण जीव, एटले जेणे पोताना आत्मानु स्वरुप पोते पोताना मांहलीकोरे जाण्यु छे पण ते क्यारे जाणे जे वारे मोहनीय कर्मनो त्याग थाय एटले जेटलो जेटलो मोहनो त्याग थाय ते नवुं जाणपणु थाय, समकीत पाम्या पछी मोहनो त्याग थाय, जेटलो मोहनो त्याग तेटलुं स्वरुपनु जाणपणु थाय तेनेज चारित्र कहीए त्या मोहत्यागना बे भेद छे १ एक बाह्य थकी मोहत्याग जे शरीर स्त्री पुत्र कुटुंब परिवार धन धान्यादि उपर थकी वैराग्य आवे मोह जाडे, पण केवळ ज्ञान विनाना एवा जीव संसारमा घणा प्रवर्ते छे ते थकी कइ तेना आत्मानु कल्याण थाय नही,

अने जे जीवने पोताना आत्मस्वरुपनु जाणपणु थयुं छे, ज्ञान दर्शन चारित्र एक रुपे जाणे छे ते धणीने मोह तथा रागादिक परिणति आ लोक परलोक शुभ अशुभ पदार्थ उपरथी विरक्त पणु होय एम तत्त्वनो जे जाण थयो तेनी पासे चारित्र होय शा माटे ? जे परवस्तु उपरथी रागभाव गयो, अने आत्म स्वरूप सहजानंद ज्ञानरूप ते उपर ए साची श्रद्धा बेठी छे जे मारो आत्मा केवल तत्व छे, एम जाणे अने मनादिक जे पदार्थ ते सर्वे मारा थकी भिन्न जुदा छे. एम जाणी मननो व्यापार बाहिर पसरताने रोके, अने पोताना आत्म स्वभाव ने विषे रमे तद्वत् कहेतां तेहीज जाणपणुं आत्मानु तेनेज चारित्र कहीए, अने ते सर्वे सवरुप जाणवुं, अने तेहीज जे जाणपणुं तेनेज ज्ञान कहीए अने ते ज्ञानवन्दे जे वस्तुने जाणी ते साची वस्तु उपर जे श्रद्धा थइ ते दर्शन कहेतां आत्म स्वरुपनुं जाणवुं तेनेज दर्शन कहीए. शामाटे जे सम्यक् सद्दहणानुं नाम छे. ए-

टला माटे सद्दहणापूर्वक सम्यक्त्वदर्शन कहिए एटले ए बीजा श्लोकनो अर्थ कह्यो

हवे त्रीजा श्लोकनो अर्थ कहे छे आत्मा ज्ञान कहेतां जे आत्मानु अज्ञानपणु एटले आत्मस्वरुपनो अजाण थको जे जे कष्टादिक करे अथवा धर्म धर्म पोकारे ते थकी आत्माने दुःखनी वृद्धि करे पण ए थकी एनो आत्मा सुखी न थाय

॥ उक्तंच ॥

उत्तमा आत्मचिंता च मोहचिंता च मध्यमा ॥
अधमा कामचिंता च परचिन्ताऽधमाधमा ॥ १ ॥

एटले शुं कह्युं जे उत्तम जीव केनु नाम छे जे आत्मस्वरुपनो विचार करी परस्वरुप थकी आत्माने भिन्न करे स्वस्वरुपमां रमण ... तेने उत्तम कह्या छे, पण ते थ...
पना ... मोहदशाम...
माने ते...
स्वरुप
दया ते

ज्ञान कहिए. ते जीव घणा काळ सुधी संसारमां रखडशे अने ते जीवनुं ए भवमां रह्यां कोइ दीन कल्याण थवानु नथी. एवा जीवने शास्त्रकारे तो अधममां अधम कह्या छे माटे ए उपरना श्लोक थकी विचारी लेजो. ते कारण माटे आत्मस्वरुपनुं जाणपणुं करवुं अने आत्मज्ञानने विषेज रमणता करवी, जेम पोतानो आत्मा स्थिर बेसे अने बाह्य अभ्यंतरमां त्याग थाय तेज ज्ञानवडे करीने सर्व दुःखनो नाश थायछे, माटे एवुं समजीने राग द्वेष मोह थकी उपशमवु, एटले सर्व दुःखनो नाश थाय. जेम रविने आव्ये प्रभातकाळ दीसे ने अंधारानो नाश थाय अने उद्योत प्रगट थाय, तेम आत्मज्ञानने प्रगटवे शुभाशुभ कर्मनो नाश थाय ने दुःख मटे, अने संपूर्ण आत्मिक सुखने भोगवे. थोडा काळमां ते जीव मुक्तिना सुखने भोगवे तथा तपस्या एटले तपस्या कहेतां आत्मविज्ञान रहित ते कर्मनो नाश न करे अहीया कोइ जीव शंका करे अने एवुं कहे जे तपस्या थकी पण नीकाचित कर्म जाय. अने [illegible] हीयां कंइ कहेता नथी अने

आत्मज्ञानेज कर्मनो क्षय थतावो छे तेनो उत्तर जे अमो कइ अमारा घरनु कहेता नथी प्रथम तो ए काव्य उपरनो कह्यो तेना बे पद त्रीजा तथा चोथा पदने विषेज कही गया छे तेथी अमें कह्युं छे तथा बीजा प्रकारे अणसणादिक तप एक उपवास थकी ते यावत् वरसी तप लगी एवा आकरा तप कोटानकोटी भव सुधी करे तो पण कर्म क्षय थाय नही, शामाटे जे ए तो अनादि अभ्यास छे अने ज्ञान छे ते तो अपूर्व अभ्यास छे. ते पोताना स्वभावमां स्थिरता कोइ कर्म आववानो हेतु होय नही अने पूर्व कर्म पण मांही रही शके नही एवो ज्ञानना महीमा छे ने श्री हेमाचार्यजी कृतयोग शास्त्र ग्रंथमा कह्यु छे

॥ उक्तंच ॥

अपिहंतिक्षणार्द्धेनसाम्यमालंब्यकर्मतत् ॥
यन्नहन्यातनरस्तीव्रतपसाजन्मकोटिभि ॥१॥

हवे एनो अर्थ कहीए छीए सम समालम्ब्य कहेता जे सम कहेतां समतापरीणाम एटले समपरीणाम रागद्वेष रहीत स्वस्वभावनुं आलंबन कहेतां पोताना स्वभावनेज ध्याइ रह्या छे एवुं जे

धर्म करतो थको क्षण अरध केहेतां जे आंख्य मीचीने उघाडीए तेने क्षण कहीए तेनुं अरध तेने अर्धो क्षण कहीए ए अर्धो क्षणज एवुं ए समभावीक धर्मने विषे स्वस्वभावने आलंबीने तेटली वखतमां जेटलां कर्म प्रणिहंति केहेतां हणे एटले अर्धो क्षण समभावे ज्ञानमां थीर भाव रहेतां टुटे एटलां कर्म बीजा थकीन टुटे ते कहीए छीए एटले जे कोइ जीव समभाव विना राग द्वेष परीणतिनुं उठाण जाणतो नथी स्थीर स्वभाव थयो नथी अने तीव्र आकरा तप करतो थको भवकोटिभि केहेतां कोटानक्रोटी भव सुधी एटले बाह्य तपनो विचार कहुंछुं श्री रीखवदेवने वारे वरशी तप हतो तथा श्री महावीरने सासने छमासी तप हतो वचला बावीश तीर्थंकरने वारे आठमासी तप हतो ते मध्ये श्री रीखवदेवस्वामीना सासननो भाव लइने कहुंछुं जे कोइ आठ वर्षनी उमर थए थके व्यवहार धर्म पाम्यो होय तेनुं क्रोड पूर्वनुं आउखु छे त्यांसुधी वरस दहाडा सुधी उपवास चोवीआहारा करे अने एक दहाडो पारणुं ... रीते क्रोड पूर्वनुं आउखुं पु-

ए करे, एवा कोटानकोटी भव सुधी एवो तप करे अथवा कायक्लेशादीक अनेक रीतना तप करे तोपण कर्म खपे नहि एटले अर्धी क्षणे ज्ञानीनां जेटला कर्म खपे तेटला ए तप थकी न खपे. शा कारण माटे जे ए तप छे ते कर्मबंध हेतु छे पण मुक्ति हेतु नथी जेम श्री बाहुबलस्वामी सम्यग् गुण सहीत अथवा सम्यग्ज्ञान सहीत अथवा व्यवहार चारीत्र सहीत तथा छठा सातमा गुणठाणाना निश्चय चारीत्र सहीत तथा काउस्सगादीक अभ्यंतर तप सहीत व्यवहार थकी अणसणादीक बरशी तप सहीत हता, तोपण कर्म खप्या नहि शा माटे जे यथार्थ समभाव ना आव्यो रागद्वेष परणतिनो उगाळो रह्यो, तेथी करीने कर्म खप्या नहि जेवारे रागद्वेष परीणतीनुं उगाण गयुं, अने समभाव स्वभावीक आत्मस्वरुपमा गुणपर्यायनो भीन्न भीन्न विचार थयो तेवारे पछी एकत्वभाव थयो गुणपर्यायने द्रव्य एक रुपे ध्याया ते अवसरे कर्म क्षय थइने केवलज्ञान उपन्युं तो जुओ के वर्ष दीवस सुधी छुख तृषादीक बावीसे परीसह सह्या पण कर्म खप्यां नहि

अने समजावे अर्धी क्षणे कर्म क्षय कर्या तो एतो समकीतादि ज्ञान दर्शन चारित्र हतुं आत्मस्वरुपनुं जाणपणुं गुणठाणानी परिणति प्रमाणे हतुं, तोपण कर्म क्षय थयां नहिं, अने आज तो समकीत रहीत जीवो प्राय दीसेछे ते जीवनां कर्म शाथकी खपशे माटे तप कष्टादिकथकी कर्म खपे नहि अही कोइ केहेशे जे ए श्लोकमां अडधीक्षणे जे ज्ञानी कर्म खपावे एटलां क्रोडो भवे पण तप वाळो कर्म न खपावे एवुं कह्युं तो अही एवो न्याय मालम पडे छे जे थोडा पण कर्म खपावे अने तमो कहो छो कर्म न खपे तेनुं कारण शुं छे ? तेनो उत्तर जे कर्म खपवानां थानक पहेले गुणठाणेथीज छे पण जे कर्म उदय आवे ते भोगवीने खेरवे, पण ते ज्ञान गुणठाणां सात छे ते कर्म उदय आव्या वा अणआव्यां सर्वेनो नाश करे पण नवुं कर्म न बांधे, अने पहेला जे खेरवे तें नवां कर्म बांधता जाय माटे एने कर्म खेरव्यां न कहेवाय, शा माटे जे नवां बांधे तेने शुं कहेवुं ? जेम नदीनु पाणी वह्युं जाय छे तेम नवुं आवे छे पण कंइ नदी खाली थइ नहि तेम ए

जीव कंइ कर्म रहीत थयो नहिं, अने ज्ञान गुणठाणावाळा तळावना पाणीने दृष्टान्ते छे जे पाणी एमांथी गयुं ते ओछुंज थयु अंते सरोवर सुकाइ जाय तेम ज्ञान गुणठाणावाळो जीव कर्म क्षय करे अने नवां कर्म न बांधे अने सर्व कर्म रहीत थइने मोक्षे जाय एम समजवुं अही कोइ कहेशे के तीर्थंकरादिके तप कर्यु ते ज्ञानगुणठाणां नहि? तेनो उत्तर, प्रथम तो ज्ञान गुणठाणानां नाम कहूं छुं अवीरतीसम्यक्दृष्टि १ अपूर्वकरण २ अनिवृत्तिबादर ३ सूक्ष्मसंपराय ४ यथाख्यात ५ सयोगीकेवली ६ अयोगीकेवली ७ ए सात गुणठाणा मध्ये छठ्ठु जे सयोगकेवली छे ते पण कर्म खेरवे नहि एटले ए गुणठाणे कर्म खेरववानी सामर्थ्य नथी अने ए साते गुणठाणामां व्रतनियम तप इत्यादि कंइ छे नहि. अही कोइ कहेशे जे उपशातमोहगुणठाणुं ते तमे ज्ञानमा केम लीधु नहि? त्या पांचमु छठ्ठं सातमु गुणठाणुं ते पण समकीत पाम्या पछीज होय ते ज्ञान गुणठाणाज छे ते तमे ज्ञानमा केम गवेख्यां नहि? तेनो उत्तर, जे पाचमु छठ्ठु तथा सा-

तमुं गुणठाणु ए नव ग्राही छे एटले भव पुरो थाय त्यां सुधीज रहे, पण आगले भवे भेगुं जाय नहिं अने ए गुणठाणामा जेटली कर्मनी प्रकृतिनो क्षयोपशम थाय एटली ए प्रकृति आवते भवे प्राप्त थाय, तथा आ भवने विषेज ए व्यवहारचारित्रना भावमां क्षणक्षण उठाळो करे, अने क्षणक्षणमां उपशमे माटे ए गुणठाणा ज्ञानभावमां शीरीते गणीए " केमके ज्ञानभावमां जे कर्मनी प्रकृतिओनो क्षयोपशम थयो अथवा क्षय थयो, ते प्रकृतिओ फरी पाछी आवती नथी, शामाटे जे क्षय उपशमनी प्रकृतिओ अंते क्षायकभावमां क्षय पामे छे एटले आठमे गुणठाणेथी ते दसमा गुणठाणा सुधी क्षयोपशम भावनी केटली प्रकृतिओ छे ते गुणठाणानी वृद्धि थये थके ते ते प्रकृतिओनो क्षय करतो आवे ते वारे बारमे क्षायकभावनुं चारित्र थाय अने बारमाने अंते क्षायकभावनु ज्ञान तथा दर्शन तथा वीर्य प्रगट थाय, माटे एने ज्ञानगुणठाणांज कह्यां. गयां कर्म पाछां न आवे. अही कोइ तर्क करशे जे ित पण तमे ज्ञानमां गन्नुं छे

ते गुणठाणाना गएलां कर्म तो पाछां आवे छे तो एने ज्ञानमां शायकी गण्युं ? तेनो उत्तर, जे तमने समजवामां कसर रही शामाटे जे समकीतनु प्राप्त थवुं तेतो अनादिमिथ्यात्व ज्यारे समकीत थाय छे ते अनादिमिथ्यात हवे पाछु आववानु नथी अही कोइ कहेशे जे मिथ्यात्व तो पाछु आवे छे तेने कहीए के तमो मिथ्यात्वना भेद समज्या नथी, केमके मिथ्यात्वना तो अनेक भेद छे, केमके जीव अनादि प्रमुख अनेक भेदे छे ते अहिंआ लखता नथी केमके ग्रंथ बोहोळो थइ जाय परतु मिथ्यात्वना चार भेद छे ते मध्ये अनादिअनतमिथ्यात्व अभव्यने छे, अने अनादिसांतमिथ्यात्व भव्यने छे, तथा सादिसांत मिथ्यात्व समकीतीने छे, शामाटे के समकीत पामीने वमे तेवारे मिथ्यात्व आवे पण ते सादिसांत भांगे होय अने सादिअनत भागो मिथ्यात्वमां लागे नहि, माटे अनादि मिथ्यात्व गयु ते पाछु नज आवे ते माटे ए समकीतगुणठाणु ज्ञानमां गण्यु छे, अने पाचमु छठुं तथा सातमु गुणठाणु एतो समकीतना मांहेला भेदज छे ए

समकीतना शणगाररूप जाणवुं ते समकीतना सम्सठ बोल थकी समजी लेजो माटे चोथु गुणठाणुं ते ज्ञानमांज छे पांचमाथी सातमा सुधी ए त्रणे गुणठाणां ज्ञान मध्ये पण छे तथा अज्ञान मध्ये पण छे शामाटे जे समकीत पामीने जे ए गुणठाणाने फरश्यो अथवा अणफरश्यो ते ज्ञान गुणठाणामां गणाय एटले ए समकीत गुणठाणानी गणत्रीमां छे तथा जे समकीत पाम्या विनाना जीव जे व्यवहारथकी समकीतपणुं तथा श्रावकपणुं तथा साधु पणुं ग्रहे छे ए सर्वे अज्ञान गुणठाणामां छे तथा ए अज्ञान गुणठाणामा मिथ्यात्वनो नाश थयो नथी अने जे समकीत पामीने साधुपणा सुधी पोहोंच्या तेने अनादि मिथ्यात्वनो नाश थयो छे. तथापि चोथे गुणठाणे धर्मध्यान छे पण पांचमा आदि गुणठाणाने विशे धर्मध्यान भासन थतुं नथी एवुं पूर्वाचार्यना घणा ग्रथोमां लेख छे तथापि सर्व ग्रथनी साख्यो अपाती नथी तोपण एक ग्रंथनी साख आपीए छइए जे उमास्वाती वाचक जे मोक्ष थया अने जेण तत्त्वार्थ ग्रन्थ

कर्यो तथा प्रशमरति आदि घणा ग्रन्थो करेला छे, ते धणीनो करेलो गुणस्थानकक्रमारोह ग्र-न्थ तेने विषे कह्यु छे

॥ उक्तंच ॥

प्रणिहन्तिक्षणार्द्धेन साम्यमालंब्यकर्मतत् ॥
यन्नहन्यान्नरस्तीव्रतपमाजन्मकोटिभि ॥ १ ॥

हवे एनो अर्थ कहीए–सम समालम्ब्य केहेता जे सम केहेता समता परिणाम एटले समपरिणाम रागद्वेष रहित स्वस्वभावनुं आलंबन केहेता पोताना स्वभावनेज ध्याइ रह्याने एवुं जे धर्म करतो थको क्षण अरध केहेतां जे आंख्यमीचीने उघाडीए तेने क्षण कहीए तेनुं अरध तेने अडधी क्षण कहीए ए अडधी क्षणज एवु ए समभावीक धर्मने विशे स्वस्वभावने अवलंबीने तेटली वखतमां जेटला कर्म प्रणिहन्ति केहेतां हणे एटले अडधी क्षण समभावे ज्ञानमां थीरभावे रहेतां टुटे एटला कर्म बीजा थकी न टुटे ते कहीए छीए, एटले जे कोइ जीव समभाव विना रागद्वेष परिणतिनुं उठाण जाणतो नथी स्थिर स्वभाव थयो नथी । तीव्र आकरा तप करतो थको भवकोटीभि

केहेतां कोटानकोटी भव सुधी बाह्य तपनो विचार कहुं छुं श्रीरीखवदेवने वारेवरशी तप हतो तथा श्रीमाहावीरने शासने छमासी तप हतो वचला बावीशतीर्थंकरने वारे आठमासी तप हतो ते मध्ये श्रीरीखवदेवस्वामीनां शासननो भाव कहुं छुं. जे कोइ आठवरसनी उमर थए थके व्यवहार धर्म पाम्यो होय ते क्रोड पूर्वनुं आउखु छे त्यां सुधी वरस दहाडा सुधी अपवास चोवीआहारा करे अने एक दाहाडो पारणुं करे एवी रीते क्रोड पूर्वनुं आउखुं पूर्ण करे एवा क्रोडान कोटी भव सुधी एवो तप करे अथवा कायक्लेशादिक अनेक रीतना तप करे तोपण कर्म खपे नहि एटले अडधी क्षणे ज्ञानीनां जेटलां कर्म खपे तेटलां ए तप थकी न खपे शाकारण माटे जे ए तप छे ते कर्मबंध हेतु छे पण मुक्ति हेतु नथी जेम श्रीबाहुबलस्वामी सम्यग्गुणसहित अथवा सम्यकज्ञानसहित अथवा व्यवहारचारित्रसहित तथा छठा सातमा गुणठाणानुं निश्चयचारित्रसहित तथा काउसग्गादिक अभ्यंतर तपसहित

दिक वरशीतपसहित हता

तोपण कर्म खप्या नहि, शामाटे जे यथार्थ समभावना आव्यो रागद्वेष परिणतिनो उछाळो रह्यो तेथी करीने कर्म खप्यां नहि जे वारे रागद्वेषपरिणतिनु उछाण गयुं अने समभाव स्वभाविक आत्मस्वरूपमां गुणपर्यायनो भिन्नभिन्न विचार ते वारे पछी एकत्वभाव थयो गुणपर्यायने द्रव्य एकरूपे ध्याया ते अवसरे कर्म क्षय थइने केवलज्ञान उपन्यु तो जुओ के वरसदीवस सुधी क्षुधादिक बावीस परिसह सह्या पण कर्म खप्या नहि अने समभावे अडधी क्षणे कर्म क्षय कर्या तो एतो समकीतादि ज्ञान दर्शन चारित्र हतुं आत्मस्वरूपनु जाणपणुं गुण ठाणानी परिणति प्रमाणे हतु तोपण कर्मक्षय गया नहि अने आ तो समकीतरहित जीवो प्राय दीसे छे, ते जीवना कर्म शा थकी खपशे माटे तपकष्टादिक थकी कर्म खपे नहि अहीं कोइ केहेशे जे ए श्लोकमा अडधी क्षणे जे ज्ञानी कर्म खपावे एटला करोडो भवे पण तपवाळो कर्म न खपावे एवु कह्यु तो अहीं एवो न्याय मालम पडेछे जे थोडा पण कर्म खपावे, अने तमो कहोछो कर्म न खपे

जे धर्म मुक्तिनो दातार तेने एक अंश मात्र करी बतावे छे माटे ए व्यवहारना शास्त्र उपर कंइपण भरुंसो राखवो नहि अहिंयां कोइ कहेशे, जे सूत्र पण व्यवहारमां गयां तेने कहीए के सूत्र मध्ये तो नयत्रणनांज वचन छे एटले नैगम १, संग्रह २, व्यवहार ३ नां वचन छे अने धर्म तो शब्दनयथी छे अने ए त्रण नयनावचन ते तो एना गजा प्रमाणे काम करशे शामाटे जे पांच चारित्रसूत्र मध्ये कह्यां छे ते मध्ये उपलां बे चारित्र मध्ये तो क्रिया कंइ छे नहि अने प्रथम नां त्रण चारित्रमां क्रियाछे ते मध्ये त्रीजुं परिहार विशुद्धचारित्र तेनी क्रिया घणी उत्कृष्टी छे तो पण एने देवलोक तो बीजुं बतावे छे उत्कृष्टुं आठमुं कहेछे तो त्यां सुधी तो तिर्यंच पंचेंद्री पण जाय ने ए पण जाय तो श्युं विशेष माटे ए गुणठाणा ज्ञानमां गवेस्यां नथी तथा जे पूर्वे बीजो श्लोक लखाव्यो छे तेनो अर्थ समजो के ज्ञानीने प्रतिक्रमण प्रमुख क्रिया करवानी कंइ पण जरुर नथी शामाटे जे ए पदमां प्रथम कह्युं छे ... गुणठाणानी आदे देइने एटले

ज्ञानी पुरुषोने खट आवश्यकादिक कंइ करवानी जरूर नथी अने ते करे पण नहि, एमां कह्युंछे के सत् ध्यान जोगमा रमे एटले ए समभाविक शुद्ध भावज होय एटले ए छगणसाटमा श्लोकनो अर्थ कह्यो माटे ए गुणठाणा ज्ञानमां वर्ते-च्यां नथी ए तो चोथा गुणठाणाने दीपावा वास्तेज छे तथा जे उपसम गुणठाणु अगियारमुं छे ते ज्ञानमाज छे पण ते गुणठाणावाळो पाछो पडेज माटे अमे ज्ञानमां गण्यु नथी ते माटे ए ज्ञान गुणठाणामा तप, जप व्रत, पचखाण कंइ छेज नहि अहिआं कोइ कहेशे जे सथारो करे तेने तपादिक थयो के नहि अने तीर्थकरोए संथारो करयो छे तेनो उत्तर जे जेने असनादिकनु भोग कर्म जे बांधेलु हतुं ते भोगवी रह्या एटले सथारो थइज रह्यो छे कइ एमने सर्वेने सरखी रीते छे नहि जेने जेटलो आहारनो उदय हतो एटलो भोगव्यो भगवान वीरस्वामीने बे दिवस आउखामां थाकता असनादिकनो उदय मटी रह्यो ते वारे बे दहाडा असनादिक न लीवुं अने सथारो तो कर्योज नथी तथा ऋषभदेवस्वामीए

ठ दिवस थाकते आहार बंध थयो बाकीना पांच दिवस अधिक न्यून छे पण आहारनो उदय मटेथी बंध थाय छे तेने व्यवहारवाळा तप माने जेम वीरस्वामीनुं निशाळगयणुं इंडे मिथ्यात्वमां कह्युं ठे अने आजना लोको तेने धर्म मानीने वेगा ठे अने तेज काम करे ठे वळी नगवाननी मूर्ति ब्राह्मणना स्वामी नीचे वेसामे ठे एवुं अज्ञान प्रवर्ती रह्युं ठे तेवुं व्यवहार प्रवर्तन ठे माटे व्यवहार मार्ग थकी अथवा तप कष्ट थकी कर्म क्षय थाय नहि, कर्म तो ज्ञान वडेज क्षय थाय पच्छे ए त्रीजा श्लोकनो अर्थ थयो. हवे चोथा श्लोकनो अर्थ कहिए ठीए-"तअन्नाणी कम्म" कहेता ते आत्मानुं जे अज्ञानपणुं ते वमे जे कर्म दळ आवीने वळग्यां ठे ते कर्मनो नाश करवाने मातमै कहेतां एज आत्मा चिदरुप कहेतां चिदानंदरुपज ठे, शरीर कहेता शरीरने विशे आवीने रह्यो ठे ते कर्मने जोगे करीने शरीर प्राप्त थयुं ठे ते कर्मरुप शरीररुप सर्वनो नाश करवाने समर्थ बाह्य द्रष्टीने निवारीने परजावनो त्याग करीने

वृद्धिनो कर्त्ता तथा पूर्ण थवो, ते कये गुणठाणे छे शामाटे जे अहीआं तो अंशे गुण प्रगट्यो ठे संपूर्ण गुण बारमे गुणठाणे थाशे ते गुण अहिआंथी अंशथी वृद्धि करवी, ते आठमे गुणठाणेथी गुणनी वृद्धि थाय शामाटे जे पूर्वाचार्यकृत ग्रंथने विषे वेदक समकीत आठमे जातां थाय ठे, माटे ए सम्यकज्ञान गुणनी वृद्धि आठमाथी ठे अहिआ कोइ पुठे जे वचला त्रण गुणठाणामां आत्मगुणनी वृद्धि न करे ते माटे पूर्वे कही गया ठीए ने ते पुदगलीक गुणनी वृद्धि ठे पण आत्मगुणनी वृद्धि ए ठेकाणे जणाती नथी शामाटे जे ए गुणठाणावाळानी गति नव ग्रैवेक सुधीनीठे ते उपरांत जणाती नथी ते पण प्रमादगुणठाणावाळानी तो कंइ देवलोकनी गति यथार्थ मालुम पम्ती नथी अने जे आठमा देव लोक उपर जाय ठे ते ज्ञान ध्यानना बलवाळा जाय ठे ते अन्यमति पण जाय स्वमति पण जाय अजव्य पण जाय ठे त्यां मिथ्यात्वी पण जाय ठे एमां कांइ विशेष नथी अहिआ कोइ

कहेशे जे क्रियाना बळवमे जायछे ते वात मिथ्या छे आगळनी गाथामां क्रियानी गति हती ते देखाडी छे जे ज्ञानध्यानवाळो जाय ते आत्मउपयोगवाळो जाय अने आत्मउपयोग रहीत होय ते पण जाय एटले मिथ्यात्वादिक आत्म उपयोग विनाना ए जीवो जाय छे, अने ते ज्ञानध्यान करे छे तेमज आत्मा आत्मा पोकारे छे पण वस्तु धर्म आत्मस्वभाव पाम्या नथी एवा जीव आज पण ज्ञानी ध्यानी देखाय छे ए सर्व व्यवहारथकी कहीए ते पण अन्य मतिमा कंइक विशेष जोवामां आवे छे ने स्वमतिने विषे तो घणा जीवमान पूजाना भोगी छे अने धमाधम आरंभपरिग्रहमा लागेला छे ते नोखे नोखे कारणे जोइ लेजो, अने ज्ञानध्यानमा तो कोइ जवल्ला जीव लागेला जणाय छे, तथा आठमा देवलोक उपर जे जीवनुं जवु ते तो कोइक सख्याते असख्या ते काळे जाय शामाटे जे उपर जवामां तो एक मनुष्यज रूप लागे ... उपला ...लोकना देव प... देवनां

आयुष्य पण असंख्याता काळनां छे, ते असंख्याते काळे आयुष्य पुरु थये एक देव चवे ते वारे एक देवनो समास थाय अने संख्याता देव माटे असंख्याते काळे अथवा संख्याते काळे कोइक अवसरे जाय एटलामाटे उपरनी गतिमां जनारा जीव घणा होय नहि माटे आत्मधर्मना पामवा वाळा कोइक जीव होय एटले आठमे गुणठाणेथी सम्यक् ज्ञान गुणनी वृद्धि थाय ते दशमा सुधी थाय एटले बारमें गुणठाणे गयो त्यां रत्नत्रयीनी प्राप्ति थाय अने ते तेरमा गुणठाणामां जइ ए ऋद्धि भोगवे पण तेरमा गुणठाणामा कांइ पण गुणनी वृद्धि वा प्राप्त थवुं छे नहि माटे ए बारमानी उपार्जेली रिद्धि भोगवे छे ते वारे पछी चउदमे गुणठाणे जे वारे जाय ते वारे भव संबंधी चार कर्म वळगेलां छे तेनो त्यां नाश करे ते वारे आत्मा अवेदी तथा अछेदी, अभेदी अकाय, अविनाशी, अनंत सुखमय मुक्तिमा जइने रहे एम ए बे चोथे तथा बारमे गुणठाणे गुण प्रगटे छे अने चोथाथी गुणनी वृद्धिकर्त्ता आठमुं

नवमु ने दशमुं छे अने तेरमुं गुणगाण पूर्वे उपार्जेली रिद्धिने भोगववानुं छे अने चउदमें गुणगाणे भव संबंधी कर्मनो क्षय करीने स्वस्वरूपमय अनंत सुख प्राप्त थयु ते सिद्ध परमात्म पणे भोगवे छे एटला माटे ज्ञाननो अभ्यास करवो ज्ञान विना दर्शन तथा चारित्र तथा मुक्ति होय नहि ने सर्व सुखनो दातार ते ज्ञानज छे एवो पदार्थ कोइ बीजो दीसतो नथी.

॥ उक्तंच. ॥

त्रिभुवनेस्ति परं ज्ञान, ज्ञान सर्वार्थ साधकं ॥
अनिष्ट वस्तु विस्तार वरकं ज्ञानमीरितं ॥१॥
ज्ञानादि साध्य ते मुक्ति, ज्ञानज्स्वर्गाऽवंसुखं॥
लभ्यंते प्राणिनो यस्मात, ज्ञान ह्युमापम ॥२॥

अर्थ-हवे ए बे श्लोकनो अर्थ कहू ते सांभळो त्रिभुवनेस्ति केहेतां जे त्रणभुवन स्वर्ग १ मृत्यु २ पाताळ ३ ए त्रणे भुवनने विशे ज्ञान जेवो बीजो कोइ पदार्थ तेवो मोटो दीसतो नथी एटले सर्व थकी अधिक एक ज्ञान पदार्थज छे पुनरपी ज्ञान केवु छे के सर्वार्थ साधक केहेतां जे आ

जगतनी मांहेली कोरे जेटला जेटला अर्थ पोताना आत्माना छे अथवा अन्य आत्माना छे, एटले अन्य आत्मा केहेतां विद्या सिद्ध आदे अथवा देवलोक नरलोकादिक रिद्धिनुं प्राप्त थावुं ते सर्व ज्ञानथकीज छे पण अन्य आत्मा केहेवानो हेतु एटलोज छे जे ए जीव सम्यक्त्व पाम्या नथी ते थकी ए जीव पुद्गलीक रिद्धिने चाहे छे तेने अन्य आत्मा कहीए अने तेनुं ज्ञान तेने पण अज्ञानज कहीए तथा जे संवेगधारी जीव छे ते तो आत्मीक रिद्धिने चाहे छे तो तेने मति श्रुत जावत केवळज्ञाननी प्राप्ति थाय तथा यथाख्यात चारीत्रनी पण प्राप्ति थाय तथा अनिष्ट वस्तु कहेतां जे दुःखना कारण जन्ममरणनां वधारनारां अथवा क्लेश प्रमुखना करेलां घणी जातनां विघ्न कह्यां छे तेनो जे नाशकरता एक ज्ञानज समर्थ छे, ते विना कोइपण आपणुं दुःख दुर करे एवा नथी एटले ए पहेला श्लोकनो अर्थ कह्यो. हवे बीजा श्लोकनो अर्थ कहीए छीए. ज्ञानादिक कहेतां ज्ञान आद्य पदे एनुं जे

साधन एटले ज्ञाननुंज साधन करवुं एटले साधन तेज सद ते मुक्ति कहेतां एज मुक्तिनुं साधन ठे ने एज मुक्ति सवाइ रही माटे एवा ज्ञाननु साधन सदा करवु तथा तेना ज्ञाननुं यथार्थ साधन न थाय तोपण ए ज्ञान स्वर्गादि भोवन सुखं एटले जो सर्वार्थसिद्धना सुख आदे देइने जे सुखनी प्राप्ति थाय अने ते भव सुखे सुखे काढे अने पठी मोक्षनु सुख पण पामे एवो ए ज्ञान नो जीव ससारी ठे ते जीवोने ज्ञाननोज अन्यास करवो शा,माटे जे ज्ञान केवु ठे? उपमापमगं कहेता साक्षात् कल्पवृक्षरूप ठे एटले जेम कल्पवृक्ष मनोवांछित पुरे तेम ए ज्ञान पण मनोवांछित पुरे, माटे ज्ञाननो अन्यास करवो, अने जो ज्ञाननो अन्यास नहि थाय अने आत्मस्वरुपनु जाणवु नहि थाय तो तेनी पासे समकित पण नथी शा माटे जे आत्मस्वरुपनी श्रद्धा एने बेठी नहि, तेथी एनी पासे समकित नथी, केमके समकित एवु नाम तो श्रद्धानुंज ठे अने ज्यारे श्रद्धा न बेठी तो ए जीव मुक्ति

क्यारे पामशे ? एतो ज्यारे सम्यग्ज्ञान थशे त्यारे मुक्ति प्राप्त थशे. ए कारण माटे हे भव्य जीवो आत्मस्वरुपनो अनुभव अने जाणपणुं एनुंज नाम ज्ञान छे. माटे तेनोज अभ्यास करजो तो तेथीज तमारी मुक्ति थशे, एटले ए तेरमी गाथानो अर्थ कह्यो.

क्रिया तो मिथ्यात्वी करेछे । तेम अभवि जाणोरे ॥
असंजति कहीने बोलाव्या । पंचमे अंगे चित्त आणोरे ॥ १४ ॥

हवे ए चौदमी गाथानो अर्थ कहीए छीए जे क्रिया कहेतां जे साधु श्रावकनी करणी एटले ते व्रत, नियम, तप, आवश्यकादि क्रिया ए सर्वे मिथ्यादृष्टि जीवो पण करे, तथा समकिती जीवो पण करे, तथा अभव्य जीव पण करे माटे ए कर्तव्यमां कांइपण धर्म नथी ए तो एक कल्पनो व्यवहार बंधायो छे ते व्यवहार प्रमाणे चाले जेम कोइ एक नातिना व्यवहार अथवा कोइक गामनी रीत प्रमाणे व्यवहार कोइ ज[illegible] छे, कोइ जीवने नथी रुचतो

पण ते व्यवहार प्रमाणे चालवु पडे ते मध्ये जे जीवने रुचे छे ते जीव कइ सर्वे परमार्थने जाणता नथी पण तेमां रच्योपच्यो रहे छे ए पण एक लोकरुढी प्रमाणे मार्ग छे. तेमज अद्दियां मिथ्यात्वी आदे चार प्रकारना जीवोनुं कर्तव्य एक रीतनुज होय ते मध्ये कोइ रुचिथी कोइ अरुचिथी ते मध्येथी पण कोइ समजीने कोइ वणसमजाए सर्वे कुळाचार उपर चाले छे ते मध्ये केटलाएक नवा नवा मार्ग द्रष्टिगोचरमां सारा कहेनाय ते मार्गने लोक वळगी पड्यु छे ते तो मार्ग असत्यज छे, तथा आ क्षेत्रने विषे पूजा जिनमदिरे नणावे तेनी पाछळ जमवानु जरुर जोइए ए कोइ देशप्रवर्तने पण चाल नथी तथा कोइ शास्त्र पण ए वात नथी तथा सेंकडो घेरथी जीव मागीमागीने एम पूजाजमण उजु करवु अने कहेवु जे जिनशासननी शोभा छे ए शास्त्र रीते अथवा देशचाल जोता कोइ रीतथी धर्मनो मार्ग नथी तथा पुन्यनो पण मार्ग

लोको ए काम आगेवान थइने चलवे

छे तेनी आजिविका छे अने जे जमना भेगा थाय छे तेने पेट भरवानो स्वार्थ छे अने शास्त्रे तो एवुं कह्युं छे के श्रावक अजाची होय कोइ काळे श्रावक याचना करे नहि. अने आ काळे अहियांना लोकोने जोइए छीए तो वरसदिवसने विषे एक दिवस पण एवो जणातो नथी जे आज तो भीख नहि मागे एवो तो अवसर लाधतो नथी तथा कोइनो काळ आवी पहोंच्यो होय तो तेना घरनां छोकरां तथा सगांवहालां तेने मालम न पडवा देतां तेना घरनुं सुथियुं तथा सावरणी सुधां लइ जाय छे अने पाछळथी इनकार पण जाय छे ए सर्वे देशने ओठे कमाइ खाय छे अने जे पेला पेटभरा कह्या ते लोको तेनी प्रशंसा करता फरे छे पण जिनशासननी रीत ने शास्त्र जोता तो एमां मिथ्यात्व छे अने अनंतानुबंधीनी चोकडी साबित भासन थाय छे. आ माटे शास्त्र तो मानवु नथी तथा परमात्मानी आज्ञा पण मानवी नथी पोतानुं दील चाहा तेम तोफान करता फरे छे ते

पण जिनशासनमां उत्कृष्ट कहेवाय छे. पण सिद्धांतनु रहस्य तथा प्रवर्तन जोतां ए जीव महा मार्ठी गतिना हेतु छे तथा जे कोइ जेख लेइने साधु नाम धरावे छे ने एनी पुष्टि करे छे ने एना जेगा भळे छे ते जीव पण अनंता भव नरकादि दुःख भोगवशे ए वातमां कांइपण शंका राखवी नहि ए वात श्री माहानीशीथ सूत्र तेनु पांचमु रमणसार नामे अध्ययन ते मध्ये सावद्याचार्यनो अधिकार छे ते जोइने वाकेब थजो अमे ए सूत्रनो आलावो लख्यो नथी ग्रंथ भारे थाय माटे एटले आ तो आज्ञा विरुद्धनी वार्ता अमे कही, एटले परमात्मा भाखीत वस्तु सत्य करी माने, अने क्रिया करे तेने क्रियावादी कहीए ते क्रियावादीना मत १८० छे ते मध्ये आ जिनमतोना क्रियावादी जाणवा ते पण क्रियापद्धादिक मत लेइने करे छे ते जीव नरकने विषे उपजे ते श्री दसाश्रुत स्कधने विषे कह्यु छे

॥ उक्तंच ॥

सेकिंतेकिरियावाइयाविजवति अहियवादि आहियपन्ने आहियदिठि सम्मावादी नीयावादी संतिपरलोगवादि अठिइहलोए अठिपरलोगे अठिमाता अठिपिता अठिअरिहंता अठिचक्कवटी अठिबलदेवा अठिवासुदेवा, अठिसुकडदुकडाणं, फलवित्ती विशेषेसुचिणाकम्मा सुचिणाफलाभवंतिदुचिणा डुम्मा दुचिणफलाभवंति, सफले कल्लाणे पावए पिच्चायति जीवा अठीनेरइया, अठीदेवा, अठीसीद्धीसेएवंवादि एवपन्ने एवंदिठा ठंदए गमतिनीविठे आविलवति सेलवंतिमहि जावउत्तरगामिएनेरइए ॥

अर्थ –एटले ए क्रियावादी आटला बोल सर्वे सद्दहे अने क्रियामा राग रहे ते मरीने नरकने विषे उपजे हवे उपर लखेला सूत्रपाठनो अर्थ कहुं छुं. सेकंतं कहेतां कोण ते क्रियावादी ए प्रश्न थए थके भगवान हवे कहे छे जे क्रिया वादी गुरु ते क्रियाने आस्तीरुपे माने छे अने क्रियामां मग्न रहे छे अने क्रियानोज उपदेश

करे छे एवुं जइआवीजवती कहेता एवुज स्वरुप होय अने अहीएवादि कहेता अक्रियवादी ते अहितकारी छे अहीपन्ने कहेतां अहीतपरी गना ते रुप आदरवाजोग आहीएदिठी कहेतां सम्यक्तरुप ते वदेतेहीत द्रष्टी कहीए तथा समावादो कहेता समकीतनेज कहे छे नीआवादी कहेता नीत ते मोक्षनेज माने छे पुनहरागनो नेमननो अन्नाव मानेछे सतीपरलोगा वादे एटले परलोकने मानेछे आलोकने माने छे परलोकने आस्तीपणे माने छे माताने आस्तीपणे माने छे पीताने आस्तीपणे माने छे अरीहतने आस्तीपणे माने छे चक्रवतीने आस्तीपणे माने छे बळदेवने आस्तीपणे माने छे वासुदेवने आस्तीपणे माने छे सुकृत जे सामायकादीक तेने आस्तीपणे माने छे डुकृत जे पाप कर्मने माने छे एना फळनी वरती विशेष करी जाणे छे तेमां विसंवाद नथी पवीत्र कर्म तप सजमादीक तेनुं फळ शुन्न कर्मज माने छे वळी पाप कर्मनु जे फळ ते माठां कर्म रुपज माने छे जेवु जेवु कृत्य तेवुं तेवु फळ माने छे कल्याण ते धर्मनु फळ ने सत

जाणे ठे पावीष्ठ केहेतां पापनुं फळ डुर्गती एटले नरकादीक पचाष्ठंती केहेतां तेने विशे पचे ठे एटले नरकने विषे दूख जोगवे ठे जीवनुं आस्तीपणुं जाणेठे नरकने आस्तीपणे जाणे छे देवने आस्तीपणे जाणेठे सिद्धने आस्तीपणे जाणे छे सएववादी केहेतां एवो जेए क्रियावादी ते पुर्वोक्त जे कह्या ए बोल सर्वेने सत् करी माने ठे अने मुख थकी पण बोल केहेछे एवुं ए प्ररुपे छे एवी ठे द्रष्टी जेनी एवो थको पण ठंद केहेतां जे पोतानी खुशीए एटले पोताना अनिप्राये करीने क्रियाने विशे ठे राग जेने एवी मतीए करी नीवीष्ट केहेतां जेनुं चीत छे तेवा जे पुरषो सेवती महीं ठे एटले मोटी इछा वंछा रहीत ठे अहिआं एटली क्रियाने विशे तथा कोइक जीवने परलोके रीद्धी पामवादीकनी इछा इत्यादीक मोटी इछा होय ते माटे ते जीव ए क्रियावादीज कहीए ते जीव मरीने जाव उतरागामीने रह्या एकेहेता जावत ए जीव मरीने उत्तर नरकने विषे उपजे शिष्य वाक्य. हे स्वामी उत्तर नरकमां उपजे त्यारे दक्षण नरकमा कोण उपजे एम अ

हिंश्रा नरकनो भेद पाम्वानुं शुं काम छे ? गुरु वाक्य, हे देवानुप्रीय दक्षिण नरकने विशे पुर्वे जे श्राज्ञा रहीत नवाडी कह्या ते उपजे ते श्र लावो श्रा सुत्रमा छे पण श्रहीश्रां लखाव्यो नथी पण श्राज्ञा रहीत जे जीवो ते पोताने छंदे प्रव- र्ते ठे ने धर्म धर्म पोकारे ठे ते जीव दक्षिण न- रकने विशे उपजे श्रने जे जीव श्राज्ञा माने छे श्रने क्रीया उपरज रुची रहेठे ते जीव उत्तर न- रकने विशे उपजे एवो श्रा सूत्रनो श्रभिप्राय ठे तथा शो फरक ठे ते सांजळ जे दक्षिण नरक श्रने उत्तर नरक बेनी वेदनामां सिद्धांतनो रह- स्य जोता कइक सामान्य विशेप हशे बीजो फ- रक ए ठे जे ए श्राज्ञा रहित प्रवर्ते ते जीवो कृ- ष्ण पक्षी कह्या ठे श्रने डुर्लभ बोधी कह्या ठे श्रने श्रानतो काळ ससारमा रखडशे तथा श्राज्ञा सहित जे जीव क्रीयावादी कह्या ते जीव शुक्- लपक्षी ठे श्रने सुलभबोधी कह्या छे श्रने थोमो काळज भटकवु थाशे एवो श्रा सिद्धांतनो रह- स्य ठे माटे ए क्रिश्रानो पक्ष तमने श्रोळखाव्यो हवे जे श्रसजती कहीने बोलाव्या केहेता जे स

मकीतादिक गुण नथी पाम्या अथवा पामीने वम्या छे अथवा आनवि छे ए सर्वेने जैनमार्गनी आस्था छे एटले जेने पुर्वे कहेला सिद्धांतना बोल ते सत्य करीने जाणे छे पण आत्मस्वरुपनुं जाणपणुं नथी तेने अज्ञानीज कहीए अने ते जीव जे नवगैवेक सुधी जाय एवु पाचमुं अंग केहेतां भगवतीजीमां कह्युं छे

॥ उक्तंच ॥

भगवती असंजय भवियदव देवाणजहन्नेणं भवणवासोसुं उकोसेणं उवरिम गविज्जेसु॥ एटले ए अभावाने विशे असंजतोने नवग्रैवेके उत्कष्ठु जावानुं कह्युं ते जीव समकीतादिक गुण रहित छे पण जैनमतने विषे दिक्षा अंगिकार करी छे अने वेहेवार ज्ञान ध्यानने विषे रच्या पच्या होय एवो जीव कोइक जवलो जाय अहियां कोइ केहेशे जे क्रिया कष्टादिवालो जाय ते वात तो सर्वथा मिथ्या छे शामाटे जे क्रीया कष्टवालानी गती जघन्य बीजु देवलोकने उत्कष्टु आठमुं देवलोक तो परीहार वीशुद्ध चा-

त्रि वालाने श्रीपन्नवणांजीमां कह्युं ठे हवे ने थ
की अधिक सामायक चारित्र तथा ठेदोपस्थाप-
न चारित्रमां तो कष्ट अधिक ठे नहि के ते धणी
कंइ अधिक जाए तथा सुक्ष्म संपराय चारित्र-
वाळो तो अनुत्तर विमान विना जातो नथी एवुं
प्राये कहीए ठइए, पण ए गुणठाणामां मरण
नथी, पण अगिआरमा गुणठाणानी अपेक्षाए
बोल्या ठइए तथा यथाख्यात चारित्र वाळो तो
मोक्षेज जाय माटे विचारी जुवो के ज्ञान ध्यान
विना आठमा उपर कोण जाय ? माटे ज्ञान
ध्यान वाळोज जाय कदापि तमे केहेशो जे ज्ञान
ध्यान वालाने तमो असजतो केम कोहो गो ते-
नु कारण अमे कइ ज्ञान ध्यान निश्चयथी कीधुं
नथी अने ए वेहेवार ज्ञान ध्यान तेनु कइक जो
मननी स्थीरता होय तो फळ पामे अगर जथा-
रथ मन स्थीर न रेहेतो ए ज्ञान ध्याननु कांइ
पण फळ ठे नहि

॥ उक्तंच ॥

ज्ञाने ध्याने दाने माने मौने सदोद्योतो भवतु ॥
यदिनिर्मळंन चीत्त तदाहृत भस्मनि समग्रं ॥१॥

के जेनुं चित्त केहेतां ज्ञान आत्म स्वभावमां स्थीर नथी थयुं तेनुं ज्ञान ध्यान वलीने भस्म थइ जाय छे एवो ए श्लोकमां अर्थ छे माटे ज्ञान ध्यान विनातो एटले जाय नहि शामाटे जे पुर्वे भगवतीनो अलावो लखाव्यो ते घणो छे पण ते मध्ये सर्व जीव आश्री देवगतिनो भाव कह्यो छे ते जोता असंजती केहेतां जे गति अवरती ठरे पण ते भाव अहिआं नथी शामाटे जे श्रावकने तो बारमा देवलोक उपर बताव्युं नथी तथा सम्यक्त्वादिक पामेला जे त्रीजंच तेने आठमा देवलोक उपरांत बताव्युं नथी अहिआं कोइ केहेशे जे अन्य मतना श्रमणादिक जता हशे तेपण वात अहिआं छे नहि शा माटे जे अन्य मतना परिव्राजकने पांचमा देवलोक उपर जवानुं कह्युं नथी तथा बीजा तो सर्वे एथी निचाज छे, तथा आजिवीकामतिने बारमुं देवलोक कह्युं छे माटे ए ठेकाणे तो जैनना साधुज जाय बीजो कोइ जाय नहि, पण जेनुं ज्ञान आत्मस्वभावमां स्थीर थयुं ते जाय ते पण एक पराए वचन छे, शा माटे जे ए उत्कृष्टी जे गतिओ

कही छे त्यां कंइ घणा जीव गया मालम पन्‍ता नथी शा माटे जे त्रीजच पचेंद्री आठमे देवलोके जाय तेतो कोइ सूत्रमां गयो जणातो नथी तथा श्रावकने बारमु देवलोक कह्यु ते पण कोइ सूत्रमां श्रावक बारमे देवलोक गयो जणातो नथी तो उपरलानो जवाना सेनां होय ? शा माटे जे आठमा उपला देवलोकने विशे देव तो संख्याता छे ते पण एक पल्योपमने असंख्यातमा भागे छे अने ते देवोनु आवखु जघन्य अरान्‍ सागरोपमनु उत्कष्टु एकत्रीस सागरोपमनु छे एटले नवमे देवलोके जघन्य अराड सागरोपमनुं छे अने नवमे ग्रैवेके उत्कष्टु एकत्रीस सागरोपमनु छे अने एक सागरोपमनां तो दश कोडाकान्‍ पल्योपम जाय त्यारे एक सागरोपम थाय छे अने अहिया तो ए सर्वे देव थइने एक पल्योपमने असंख्यातमा भागे देवज छे, तो ए सज्या केदाहान्‍ खाली थाय ने बीजो उपजे माटे एनो कोइक जवलो जीव जाय छे, माटे ए परा ए शद्ध छे ते श्री भगवतीजीने विशे कह्यु जे असजती नवग्रैवेक सुधी जाय इति चउदमी गाथानो अर्थ संपुर्ण १४

॥ गाथा ॥

प्रमाद भावे क्रिया भाखी।
स्वभावे ज्ञान ते दाख्युंरे,
एह वचन शम्मति आदिक देखी।
ज्ञानशु चीत्तरु राख्युं रे ॥ १५ ॥

अर्थ.-हवे ए गाथानो अर्थ कहीए छइ ए एटले प्रमादभावे क्रिया केहेता जे क्रिया छे तेतो परस्वभावने ग्रहीने छे अने सस्वभावनी गती जे आतम उपयोगनी रमणता तेतो थीरता भावमां छे अने तेतो अप्रमादी कहेवाय छे एतो अहीआ छे नहि अने एतो परभावनोज उपयोग ने परभावनीज रमणता छे तेतो छठा गुणठाणानी करणी अथवा पहेलां गुणठाणानी करणी बने एकज छे शामाटे ? जे निश्चे थकी तो समकीत फरसतो नथी अने मिथ्या दृष्टीज छे अने ते व्यवहार थकी चारीत्र अंगीकार करे छे अने बाह्य थकी व्यवहार क्रिया साधुनी करे छे परंतु निश्चे जोता तो ए मिथ्यात्विज छे. माटे पहेला गुण ठाणानी करणी छे तथा कोइक जीव

समकीत पामीने चारित्र अंगीकार करे ते जीव पण प्रमाद गुण ठाणे रह्यो थको एज करणी करे माटे एनेनी करणी एकज छे अने ए करणी कर्या थकी कइ ए साधु थयो नहि साधु तो स्व उपयोगमा रमे अने ज्ञान ध्यानवडे आत्म स्वभावमां स्थीरता थाय तेने साधु कह्या छे

॥ उक्तंच ॥

पाप कारण मात्राद्धि नमौ नविचिकित्सया ॥
अनन्य परमात्मा स्यात् ज्ञान योगी भवेन्मुनि ॥

एनो अरथ जे पाप कारण कहेतां परणाती पातादीक वृत उचरवाथी कंइ साधुपण केहेवाय नहि एनु कल्याण थाय नहि अने परमात्मा तो क्यारे थाय के ज्ञान जोगी भवेध मुनी केहेतां ज्ञान जोगने विशे रमे एटले सस्वभावमा थीरतापणु पामे परस्वभावनो त्याग करे सदा ए आतम उपयोगी राग द्वेश रहीत एवा जे जीवने मुनी कह्या छे ने तेज परमात्मा थाय ते विनाना जे रह्या ते पुरवे ए एवी क्रिया करे ते गावे भणे चाहे तेवी सभा मेळवे एवा जे जीव छे ते तो नरक गामी छे

॥ उक्तंच ॥

अकारणं यस्य सुदुर्विकल्पैर्हतं मनः शास्त्र विदोपि नित्यं ॥ घोरैरघैर्नि ॥ अतनारकायुर्म्रत्यौ प्रयाता नर केसनूनं ॥ १ ॥ योगस्य हेतु र्मनसः समाधि· परंनिदानं तपसश्चयोग· ॥ तपश्चमूलं शिवशर्मवल्यामनाः समाधी भ्रज तत कथंचित् ॥ २ ॥ स्वाध्याय योगेश्चरण क्रिया सुव्यापारणै र्द्वादश भावनाभि ॥ सुधी स्त्रियोगी सदसत्प्रवृ-तिः फलोपयोगैश्च मनोनिरुंध्यात् ॥ ३ ॥

एना अरथ ए उपला श्लोकने विशे जे ज्ञान जोगी भवेन मुनी केहेतां जे ज्ञान जोगी तेने साधु कह्या पण माहाव्रतादी लेवावाळाने साधु कह्या नहि माटे अहीआं ज्ञानीने साधु कह्या पण जे विद्या भणे ने शास्त्र वाचे तेने साधु कह्या नहि. शामाटे जे प्रथम श्लोकमा एवु कह्युं जे शास्त्र विलोकीनीत्यम शास्त्र केहेतां सिद्धांत प्रमुख वांचे ले सर्व लोकोने समजावे ले पोते पण जाणे ले के अमे धरम पाम्या छइए पण ज्यां सुधी मन दूर विकल्प थकी हणाएलु छे ए-

ट्ले अकारण कहेतां जे उपसरगादीक कंइ कारण आव्युं नथी ते विनाज जेनां मन माठा विकल्पमां प्रवर्ते छे ते जीव घोर नरकने विषे जइ ने पमे छे अने कारणे वीकल्प थाय तेथी कंइ साधुपणुं जाय नहि अने एनुं धर्म पण जाय नहि ने ए माठी गतीए पण जाय नहि सुमंगळ साधुवत् ते कारण माटे वगर कारणे जेनुं मन दुर्ध्यानमां रहे छे ते जीव नरक ने विषे जाय ए श्लोकमां ए भावार्थ कह्यो एटले चाहे तो सूत्र वाचो चाहे तो पंचमाहाव्रत पाळो पण मनना माठा विकल्प न मट्या तो नरकेज जाय एटले ए कारण सरवे प्रमाद भावनाज छे अने घणां शास्त्र वाचे भणे घणी प्ररुपणा करे घणा शिष्य शिष्यणीओ करे घणा श्रावक श्राविकाओ मेळवे इत्यादिक करे अने आत्मस्वरुपनुं जाणपणु नथी अनुभव ज्ञान नथी आत्मस्वरुपनी रमणता नथी ते जीव मरीने माठी गतीएज जाय एवु समत्ति ग्रथमां कह्युं छे ॥

॥ उक्तंच ॥

सम्मतो जह जह बहुसु असमत्त ॥ सीस गुण संपरि बुह्रोय अविणीछिज असमए ॥ तह तह सिद्धंत पम्णिीज ॥

एटले ए श्लोकने विषे एवुं कह्युं छे जे मोटो आम्बर करे घणी संप्रदा मेळवे पण आत्मस्वरुपनो अजाण छे ने अनुभव ज्ञान प्रगट्युं नथी तो ए माठी गतिए जाय ते कारण माटे बीजा काव्यने विशे मन शुद्धनो विचार छे ते कहूं एटले मननी शुद्धता केहेतां जे समाधिमां मन रेहे तेनुं नाम जोग कहिए नीदानम केहेतां निश्चे करीने ए तपनुं मुळ ते ए जोग छे माटे तपस्या ते मन थीर करवुं एनुंज नाम छे माटे मननी समाधिमां रेहेवु एज मोक्षनु मूळ एज मुक्ति रुपणी वेल एज मोक्षे जवानी शरम केहेतां मरजादा एवी रीते मननी समाधिमां रेहे ते जीव मोक्षे जाय ते विना बीजे प्रकारे मोक्षे जवानो नथी ते कारण माटे हे भव्य जीवो ॥ तमे मननी समाधिनु भज केहेतां एनुज रखोपु करो ए थकी तमारुं कल्याण छे ए बीजा काव्यनो अर्थ

हवे त्रीजा काव्यनो अर्थ कहतु स्वाध्याय केहे-
ता जे ज्ञाननुं जे रमण एटले ते जोगे रमते थके
चरण केहेता चारित्र कहिए क्रिया केहेतां एनुं-
ज नाम क्रिया कहिए एटले ए ज्ञान जोगमां
रमतां चारित्र तथा क्रिया छेज तथापि ज्ञान
जोग यथार्थ प्राप्ति न थाय ने रमण न करी शके
तो ते जीवने बार भावनामा एवी भावना भाववी
अहिआं कोइ केहेशे जे एवा ज्ञाननी रमणता
न होय तो भावना भाववी एवुं काव्यमां तो
कह्यु नथी तेनो उत्तर जे भावनाओ छे ते ज्ञान
भाव तथा मन स्थिर करवानुं कारण छे,
पण ए कंइ ज्ञानरुप नथी, माटे ज्ञानभाव नहि
प्रगटे तोज भावना भावे जेने ज्ञानभाव प्रगट्यो
ने स्वपरनी वेचण थइ गइ तेने भावनानी ज-
रुर नथी. ए वात योगशास्त्र प्रमुखने विषे कही छे
त्याथी जोज्यो परतु ए भावनाए करीने पण
मन, वचन कायाना जोगने शोधीने शुद्ध क-
रवा अने सत्य प्रवर्त्तिने विषे आत्मस्वरुप लइने
भावना भाववी, पण मनजोगने छुटो मूकवो
रि अने छुटो मुकशो तेवारे सत्य असत्य वे

रीतमां प्रवर्त्तशे, तेवारे फळोपयोगे शचः कहेतां फळनी प्राप्ति थशे एटले शुभ मने शुभ फळ पामशो अने अशुभ मने अशुभ फळ पामशो, ते कारण माटे मन निरुध्यात् कहेतां मनने रुंधवुं एटले मनने शुभाशुभ कारणमा घालवुं नहि अने शुभाशुभ कारणमा घालशो तो एज क्रिया पाछी तमने लागु पडशे अने प्रमादभाव नी क्रियामां पड्या तो चार गतिमां रखड्युंज पड्शे ते माटे ए क्रियाने विषे प्रवेश करवो नहि तोज अप्रमादी आत्मा थशे ए पूर्वे श्लोक गुणस्थान क्रमारोहनो लखाव्यो छे ते मध्ये लखाव्युं छे के अप्रमादीने खट आवश्यक प्रमुख क्रिया होय नहि, माटे क्रिया ते प्रमाद भावेज होय. 'स्वभावे ज्ञान ते दाख्युं रे' ए पदनो अर्थ कहीए छीए एटले ज्ञान छे ते वांचवा भणवाथी आवतुं नथी, कोइनुं दीधेलुं आवतुं नथी ज्ञान तो ज्ञानावर्णी कर्मनो क्षय उपसम अथवा क्षय थाय तो ज्ञान प्रगटे ते तो स्वभावमां रह्युं छे, ते स्वभाव प्रगटवो ते तो आत्मानुं ध्यान होय तेने प्रगटे छे, शा माटे जे आत्मामां अनंता धर्म

छे, ते वस्तुने जाणे अने तेनी श्रद्धा करे, ते जीव तेमांज रमण करे ते पामे ।

॥ उक्तच ॥

नयप्रकरणे अनत धर्मात्मकस्य । वस्तुन एकांशव्यवसायात्मकं ॥ प्रकाशात्मकंज्ञानंनय । श्रीसर्वज्ञमतेसकलवस्तुअनंत धर्मात्मकंवर्णितिम-स्तमयुराम्वत् ॥ यथामयुरांम्मध्ये नानावर्णत्वम स्ति ॥ तदामयुरेजाते ॥ तत्पश्चादौनानावर्णत्वं॥ भवति । असत्तीमपिनोतपद्यते ॥ आकाशकुसुम-वत् शशशृंगवत् ॥ देवमाडुर्भवती ॥ यथास्तृतपि-म्हेघटघटीशरावउदचनादीनासत्तास्ति ॥ तदाम्त-पिम्हे ॥ तेतेघटादिपर्यायाउत्पाद्यते ॥ चेस्पत्त्वअ-नतधर्मत्ववस्तुन्यस्ति ॥ तर्हिवस्तुएकधर्मत्वनक-थमुच्यते ॥ सत्वमनतधर्मत्ववस्तुनिसत्तास्ति ॥ परंएकस्मिन्कालेवस्तुन ॥ परिणामान्संख्येया-असंख्येयावाभवंति ॥ तथायस्मिन्कालेय परि णामोऽस्तितस्मिन् ॥ कालेसएवभवति ॥ नापर यद्द्रव्य ॥ यदायेनरूपेणपरिणतं ॥ तदातेनैव-रुपेणपरिणमतिननुरूपातरेणेतिवचनात् ॥ यथा [illegible] ॥ अयथार्थ अप्रमाणमिति

नय ॥ प्रमाणस्यैकाशभ्यतन्नप्रमाण प्रमाण प्रमा
णं ॥ वाप्रमाणांशस्तथैवह्निनासमुद्भवासमुद्भा
सोयथैवह्नि ॥ १ ॥

एनो अर्थ जे सर्वज्ञना मतने विषे सकळ वस्तु अनंत धर्म आत्मिक वरणव्या छे ते आस्तिस्वभावे छे तेनो विवरो कहुं छुं के छ द्रव्य छे ते मध्ये अनंता धर्म रह्या छे परंतु पांच द्रव्य अहियां कहेवानी जरुर नथी एक आत्मस्वभावने विषे अनंता धर्म रह्या छे ते स्व कहेतां पोताना धर्म छे ते अनंता धर्म कहेतां अनंता गुण अनंता प्रजाय अनंता स्वभाव अनंता लक्षण इत्यादिक अनंता धर्म छे ॥ शिष्यवाक्य॥ स्वामी ए तो समुदाए वात थइ खुलासो करीने अमने समजावो तो समज पडे. तेनो उत्तर के हे देवाणुप्रिया जे अनंता धर्म ते कंइ कथनीमां कहेवाय नहि. शा माटे जे अनंता धर्म कहेतां अनंतो काळज कहीए अने आपणो तो काळ संख्यातो छे माटे कंइ अनंतु धर्म तो कीधामां न आवे. ए केवळीभगवान जाणे छे, तथा अनुभवी पुरुष छे ते ए धर्मने रुडी रीते

अनुभवे छे तथा भोगवे छे ए कंइ मुखथकी उचारणमा तथा कीधामां न आवे ए हुं तने कहुं छुं परंतु किंचित् भेद संक्षेपे अनंताए पण भेद मटी आवी जशे ते हुं बतावु छुं हवे जे अनंता गुण कह्या ते आस्तिकपणे छे एटले जे ज्ञानादिक गुण तेना अनंता भेद छे शा माटे जे ज्ञान छे ते स्वपरनुं जाण छे तेमध्ये परपदार्थ पाच द्रव्य छे. धर्मास्तिकाय एक द्रव्य छे तेना प्रदेश असंख्याता छे तेना गुणप्रजायादिक अनंता छे ते ज्ञानथी जाणवामा आवे छे तथा अधर्मास्तिकायना पण तेज प्रमाणे तथा आकाशना पण तेज प्रमाणे एटले विशेषे जे एना प्रदेश अनंता छे तथा काळद्रव्यना पण तेज प्रमाणे एना समय अनता छे तथा पुद्गलद्रव्य अनता छे तेना प्रदेश पण अनता छे गुणप्रजायादिक पण अनता छे तथा जीव पण अनंता छे, तेना प्रदेश असख्याता छे, गुणप्रजायादिक अनता छे ए सर्वे एक ज्ञानवडे करीने जणाय छे ते ज्ञान एक गुण कहीए तथा एने अनत गुण पण कहीए, शा माटे जे अनंत पदार्थने

स्कंध ठे तथा ए स्कंधने विषे केटलाएक समी जाय ठे, केटलाएक गळी जाय ठे, केटलाएक पमी जाय ठे, केटलाएक मळे ठे केटलाएक विखरे ठे, केटलाएक स्कंध जीवग्राही ठे तेने विषे अनेक जातना रोगव्यापित छे, केटलाएक दोषव्यापी छे, केटलाएक शोकव्यापित छे इत्यादिक सर्व पदार्थने जाणवुं ते नीन्न नीन्न द्रव्य प्रजाय अनंता छे, तेनु जाणपणुं ते ज्ञान कहीए, ते ज्ञान पण नीन्न नीन्न जेवो ज्ञेय पदार्थ तेवुं ज्ञान एटले अनंत ज्ञान तेज अनंता गुण थया, माटे अनंत ज्ञान छे ते सत्य ठे, अने ज्ञान शब्दवाच एकज छे अहियां कोइ कहेशे जे गुणनी व्याख्या श्वेतांबर पक्षमां नथी जणाती ते वात खरी ठे के कोइक कोइक पक्षमां ना पण पामी ठे ते घणी ए ज्ञानने प्रजायमां गवेख्या छे ए वात अहियां कंइ विरोधी नथी. शा माटे जे घणा प्रजायनो समुह तेने गुण कहीए ठीए एटले गुण कंइ नोखी वस्तु ठे नहि एटले अनंत धर्म आत्मिक कह्या तो

उपजे एवुं वचन तो छे नहि अने एवी वात पण संभवे नहि ए तो एक केवळज्ञान सर्व प्रदेशे साथे ज्ञान उपजे बीजां ज्ञान तो कोइ प्रदेशे उपजे ने कोइ प्रदेशे न उपजे ए अवधिज्ञानना अधीकारथकी समजजो तथा मतिआदिक ज्ञान छे ते भिन्न भिन्न उपयोगनु नोखेनोखे प्रदेशे छे माटे सर्व प्रदेशे साथे न उपजे अने जेवारे सर्व प्रदेशे साथेज उपजे तो सर्व प्रदेशनो एकज प्रदेश थइ जाय तेवारे प्रदेश व्याख्या जुठी पडी जाय अने अहियां तो प्रदेश प्रदेशना भीन्न भीन्न उपयोग भासनमा आवे छे तथा प्रदेशव्याख्या छे ते सत्य छे, हवे जे एक प्रदेशे अनंता गुणादिक कह्या ते असख्याता प्रदेशे छे शा माटे जे पुद्गलद्रव्य अनंता प्रमाणुरुपे छे तथा उपचरित द्रव्य स्कंधने कहीए ते स्कंध द्विप्रदेशीथी मांडीने अनत प्रदेशी सुधीना छे तेनो जातिस्वभाव पचीश पचीश गुण एनामां रह्या छे वर्ण ५, रस ५, सस्थान ५, फर्स ८ अने गंध २ ते अकेकाना भजाय परावर्त्तन धर्मना अनंत भेद छे अने ते अनते भेद नोखी नोखी रीतना ए

स्कंध छे तथा ए स्कंधने विषे केटलाएक समी जाय छे, केटलाएक गळी जाय छे, केटलाएक पमी जाय छे, केटलाएक मळे छे. केटलाएक विखरे छे, केटलाएक स्कंध जीवग्राही छे तेने विषे अनेक जातना रोगव्यापित छे, केटलाएक दोषव्यापी छे, केटलाएक शोकव्यापित छे इत्यादिक सर्व पदार्थने जाणवुं ते भीन्न भीन्न द्रव्य-प्रजाय अनंता छे, तेनुं जाणपणुं ते ज्ञान कहीए, ते ज्ञान पण भीन्न भीन्न जेवो ज्ञेय पदार्थ तेवुं ज्ञान एटले अनंत ज्ञान तेज अनंता गुण थया, माटे अनंत ज्ञान छे ते सत्य छे, अने ज्ञान शब्दवाच एकज छे अहियां कोइ कहेशे जे गुणनी व्याख्या श्वेतांबर पक्षमां नथी जणाती ते वात खरी छे के कोइक कोइक पक्षमां ना पण पामी छे ते घणी ए ज्ञानने प्रजायमां गवेख्या छे ए वात अहियां कंइ विरोधी नथी. शा माटे जे घणा प्रजायनो समुह तेने गुण कहीए छीए एटले गुण कंइ नोखी वस्तु छे नहि एटले अनत धर्म आत्मिक कह्या तो

उपजे एवुं वचन तो छे नहि अने एवी वात पण संभवे नहि ए तो एक केवळज्ञान सर्व प्रदेशे साथे ज्ञान उपजे बीजां ज्ञान तो कोइ प्रदेशे उपजे ने कोइ प्रदेशे न उपजे ए अवधिज्ञानना अधीकारथकी समजजो तथा मतिआदिक ज्ञान ठे ते भिन्न भिन्न उपयोगनु नोखेनोखे प्रदेशे ठे माटे सर्व प्रदेशे साथे न उपजे अने जेवारे सर्व प्रदेशे साथेज उपजे तो सर्व प्रदेशनो एकज प्रदेश थइ जाय तेवारे प्रदेश व्याख्या जुठी पडी जाय अने अहिया तो प्रदेश प्रदेशनां भीन्न भीन्न उपयोग भासनमां आवे छे तथा प्रदेशव्याख्या ठे ते सत्य ठे, हवे जे एक प्रदेशे अनंता गुणादिक कह्या ते असख्याता प्रदेशे ठे शा माटेजे पुद्गलद्रव्य अनता प्रमाणुरुपे छे तथा उपचरित द्रव्य स्कधने कहीए ते स्कध द्वीप्रदेशीथी मांडीने अनंत प्रदेशी सुधीना ठे तेनो जातिस्वभाव पचीश पचीश गुण एनामां रह्या ठे वर्ण ५, रस ५, सस्थान ५, फर्स ८ अने गध २ ते अकेकाना प्रजाय परावर्त्तन धर्मना अनत भेद ठे अने ते अनते भेदे नोखी नोखी रीतना ए

फळनुं धर्म विशेषे ग्रहोने वेगो ठे अने तमे पर-
धर्म ग्रहवानी केम ना कहो गे? तेनो उत्तर
जे परधर्म जीवद्रव्य सर्वथा ग्रहण करतो नथी
अने जे प्रत्यक्षमां ग्रहण कर्यु जोवामां आवे ठे
ते उपरथी जोइने तमो कहो गो पण तमे व-
स्तुनो स्वनाव तथा परवस्तुनो स्वनाव जोता
नथी ने ए वातने विचारता नथी तेथी तमने
एम नासन थाय. हवे हुं तमने एनो खुलासो
करीने किंचित् समजावुं ते तमे हृदयने विषे ध-
रजो हवे जे जीव निगोदादिक गतिने विषे
हतो त्या तो काइ जीवितव्यपणानुं प्रगटपणुं
हतुं नहि एतो एक केवुं स्थानक छे के जेम
कोइ जाव असाध्य पड्यो छे तेने गमे तेम करो
तो तेने मालम नथी तेम ए निगोदना जीवने
जीवितव्यपणानी कांइपण खबर नथी. हवे ते
कोइ जीव निगोदादिकथी नीकळीने व्यक्तिनावे
आव्यो तेने पूर्व पश्चिमनी हजी खबर नथी ते
अजाणथको वाळपणे मातापितानो वियोग थयो
अथवा मृत्यु पाम्या पछी ते गोकराने जे लेइ

फलनुं धर्म विशेपे ग्रहोने वेठो छे अने तमे पर-
धर्म ग्रहवानी केम ना कहो छो? तेनो उत्तर
जे परधर्म जीवद्रव्य सर्वथा ग्रहण करतो नथी
अने जे प्रत्यक्षमां ग्रहण कर्युं जोवामां आवे छे
ते उपरथी जोइने तमो कहो छो पण तमे व
स्तुनो स्वभाव तथा परवस्तुनो स्वभाव जोता
नथी ने ए वातने विचारता नथी तेथी तमने
एम भासन थाय. हवे हुं तमने एनो खुलासो
करीने किंचित् समजावुं ते तमे हृदयने विपे ध-
रजो हवे जे जीव निगोदादिक गतिने विपे
हतो त्या तो काइ जीवितव्यपणानुं प्रगटपणुं
हतुं नहि एतो एक केवुं स्थानक छे के जेम
कोइ जाव असाध्य पड्यो छेतेने गमे तेम करो
तो तेने मालम नथी तेम ए निगोदना जीवने
जीवितव्यपणानी कांइपण खबर नथी हवे ते
कोइ जीव निगोदादिकथी नीकळीने व्यक्तिभावे
आव्यो तेने पूर्व पश्चिमनी हजी खबर नथी ते
अजाणथको बाळपणे मातापितानो वियोग थयो
अथवा मृत्यु पाम्या पछी ते छोकराने जे लेइ

एक ज्ञानगुणज अनंता धर्म प्रगट थया अने एवा तो अनंता गुण आत्मामां छे पण मुख्यपणे एक ज्ञानगुणज छे ते वर्णवीने देखाड्यो एम सर्व गुणादिक समजजो तथा पूर्वे ए ग्रंथमा अमे संमतिनो अधिकार नांख्यो ते मध्ये दश सामान्यगुण तथा सोळ विशेषगुण तथा अगीयार सामान्य स्वभाव तथा दश विशेष स्वभाव इत्यादिक त्यां कह्या छे तथा बीजा ग्रंथमां जोखी जोखी रीते कह्या छे ते भीन्न भीन्न रीतना छे ते सर्व एक जग्याए कंइ कहेवाता नथी पण सर्व गुण आत्मामा अस्ति स्वभावे छे ते पण ए गुण कह्यो ते पर अपेक्षाए छे अने स्वअपेक्षाए ज्यां आगळ कारण आवशे त्या कहेवाशे ते समजी लेजो एटले वस्तुनुं धर्म अनंतु कह्यु ते स्वअपेक्षाएज छे ते परअपेक्षाए नथी अने परअपेक्षाए कहीए तेवारे वस्तुनो नाश थइ जाय, अने वस्तुनो स्वभाव तो एवो छे के पोतानो धर्म छोडीने परधर्मने सर्वथा ग्रहे नहि अहिया कोइ कहेशे जे जीवद्रव्य तो पु

फलनु धर्म विशेषे ग्रहोने वेगो ठे अने तमे पर-
धर्म ग्रहवानी केम ना कहो गे? तेनो उत्तर
जे परधर्म जीवद्रव्य सर्वथा ग्रहण करतो नथी
अने जे प्रत्यक्षमां ग्रहण कर्यु जोवामां आवे ठे
ते उपरथी जोइने तमो कहो गे पण तमे व-
स्तुनो स्वभाव तथा परवस्तुनो स्वभाव जोता
नथी ने ए वातने विचारता नथी तेथी तमने
एम भासन थाय. हवे हुं तमने एनो खुलासो
करीने किंचित् समजावुं ते तमे हृदयने विषे ध-
रजो हवे जे जीव निगोदादिक गतिने विषे
हतो त्यां तो काइ जीवितव्यपणानुं प्रगटपणुं
हतु नहि एतो एक केवुं स्थानक छे के जेम
कोइ जीव असाध्य पड्यो छे तेने गमे तेम करो
तो तेने मालम नथी तेम ए निगोदना जीवने
जीवितव्यपणानी कांइपण खबर नथी हवे ते
कोइ जीव निगोदादिकथी नीकळीने व्यक्तिभावे
आव्यो तेने पूर्व पश्चिमनी हजी खबर नथी ते
अजाणथको बाळपणे मातापितानो वियोग थयो
अथवा मृत्यु पाम्या पछी ते छोकराने जे लेइ

गया ने उछेर्यो तेनेज मातपिता जाणे छे तेम आ जीव निगोदथी आव्यो ते ज्या सुधी सद्गुरु नथी मल्या अने स्वभावनी ओळखाण नथी थइ त्या सुधी परभावने वळगीने रह्यो छे अने तेने स्वभाव माने छे. परतु ए परभाव ते परभावज छे अने स्वभाव ते स्वभावज छे हवे ते जीव बे जातना छे एक ज्ञानगुण पामेला स्वअनुभव सहित छे, अने एक जीव ज्ञानगुण नथी पाम्या ने स्वअनुभव रहित छे पण ते बने जीव मोहराजाने वश छे ते बनेनो विचार भीन्न भीन्न समजावु ते जाणो जे जीव ज्ञान नथी पाम्या ते जीव परवस्तुने वळगेला छे ते जीव तो खीरनीरवत् वळग्या छे जे जीव ज्ञान सहित छे ते परवस्तुने वळग्या छे, तेनु पण बाळजीवना जोवामा तो सरखुज आवे, परतु ए बेमां फरक घणो छे ते कहु ते सांभळ जेम कचन छे तेमा अन्य धातु पमी छे हवे ते कचनने सर्व जीव कचन कहे एटले कोण कहे? के जे अजाण पुरुष छे, ते कहे पण जे चोकशी

लोको एना जाणपुरुष छे ते तो ए जोइने कहे के एमां खाटलुं सोनुं छे अने तेटलाज दाम एना उपजे अने वाळे तोपण कुधातु बळी जाय अने कंचन होय ते रहे तेम अहियां जे जीव अजाण एवा अज्ञानी जीव जेवा जेम कुधातु साथे कंचन बधुं मान्युं तेम ए अजाणपुरुष अज्ञानी तेवी रीते शुभाशुभ जे कर्म चेतनने वळगेलां ते पोते पोता रुपज माने छे अने तेना उदयवसे जे जे कर्म करे छे ते पोते एम जाणे छे के हुंज करुं छुं, मनेज सुख छे मनेज दुःख छे, एम ते वेदे छे. एकरुपे माटे ए जीव ज्ञानरहित छे, हवे जे जीव ज्ञानसहित छे ते पण करणी कर्म तो एना सरखांज करेछे पण ते धणीन आत्म स्वरुपनो अनुभव छे तेथी ए आत्माने ने कर्मने बन्नेने भीन्न भीन्न जाणे छे अने बन्नेनुं वस्तुधर्म अन्योअन्य अभावज जाणे छे, तेथी ए पोते मांही लपटातो नथी एटले पोते मांही न्यारो रहीने उदय माफक काम करे पण तेमां कंइ हर्ष वा शोक छे नहि जाणे छे के पूर्वोक्त कर्म ते

उदय आव्या कर्या वगर छुटको नथी जेम कोइ सारो माणस राजाए केद कर्या पछी ते माणस पासे जे कृत्य करावे करे पण तेमां कइ राचे माचे नहि जाणे छे के ज्या सुधी केदमां छीए त्या सुधी जे करावशे ते करवु पडशे तेम ज्ञानी पुरुष जाणे छे के जे पूर्वोक्त कर्म उदय आव्यां ते भोगववां पडशे माटे ते वातमां ते हर्ष शोक राखता नथी अने ते वातमा एनुं रमण पण नथी तेथी पोतानु वस्तुधर्म छडने पोते पोताना स्वभावमांज रहे छे ए कंइ हवे स्वधर्मने छोडी परद्रव्यमां पेसतो नथी तेम ए जीवद्रव्य पण पोतानो धर्म छंडी परधर्मने अंगीकार करतो नथी. परंतु अज्ञानी जीव नथी समजता शावी मोहनी छाकमां पमयावका आत्मस्वभाव जाणता नथी ते एम के जीवद्रव्य परद्रव्यने वळगे छे पण जीवद्रव्य तो सदायकाळ पोताना धर्ममाज रहे छे ए पोतानो स्वभाव कोइ काळे छमे नहि अने ए स्वभाविक वस्तु ते एक असे व्यवहार i मळे ने काम करे पण पोते तो पोतानो

स्वभाव छेमेज नहि अने ज्ञाननय तो पोतानो आत्मस्वभाव प्रकाशज करे अने पोतानी मुक्ति पण ए स्वभाव थकीज थाय ते वस्तुनु धर्म नमुच्यते कहेतां कोइ काळे गमे नहि सतमंतं कहेतां जे पोते सत्य यथार्थ वस्तुनी सत्ता अस्तिरुपे छे ते काळ पामीने प्रगट थशे एटले प्रणमवानो एनो स्वभाव छे जेम आंबो वावीएने तुरत केरी मागीए तो तेम न थाय ए काळेज आंबो फळे ने केरी आपे स्त्री पण तुरत गर्भ धरे नहि काळेज गर्भ धरे अने गर्भ धर्यो तो पण कंइ तुरत छोकरुं थाय नहि ते पण काळेज छोकरानी प्राप्ति थाय पण ते प्रणमीअ स्वभाव होय तेज प्रणमे जेनामां ए प्रणमवानो स्वभाव न होय ते न प्रणमे तेम आ जीवस्वरुपनो प्रणमीअ स्वभाव छे ते पोताना स्वभावमाज प्रणमे अन्य स्वभावमां न प्रणमे पण ज्यां सुधी ते प्रणमवानो काळ नथी आव्यो त्यां सुधी न प्रणमे एटले त्यांसुधी अज्ञानपणे पराधिन छे. हवे जे जीवने प्रणमवुं छे ते जीवने समकिता-

दिक गुणने विषे प्रणमवु ते अंशथी छे ते पण काळ प्रणमवानो संख्यात वा असख्यात तेटले काळे प्रणमे तस्मीनकाळे सएवभवतिपणनापरह दद्रव्य ष्हाएनरुपेनपरणत एटले सर्वथा चेतन-द्रव्य बीजामा प्रणमे नहि नरुपंतरण कहेता ते रुप मुकीने बीजु रुप सर्वथा थाय नहि यथार्थ पोताने रुपेज पोते प्रणमे ए प्रमाणनयनु रुप समजवु ए प्रमाणनय ते समुद्र सरखी छे एटले ए ज्ञान ते स्वभाविक छे ए पोताना स्वभावमा ज्ञानावर्णी कर्मनो क्षयउपसम थयो होय ते धणीने ए गुण प्रगटे एटले स्वभावे ज्ञान ते दाख्यु ए पदनो अर्थ थयो एटले एवी रीतना वचन समतिग्रंथ तथा स्याद्वाद रत्नाकर तथा रत्नाकरावतारिका प्रमुख ग्रंथोमां एवां वचन जोवामा आवे छे ने प्रत्यक्षपणे ते छे अने आत्मस्वरुपना अनुभवमां पण एज वचन तादृश्य भासन थाय छे, ते कारणथी करीने अमारु चित्त तो ए ज्ञानभावमाज रमी रह्युं छे ने एमाज रमायु छे, ने जे भव्य जीव आ ग्रथ वांचीने एवी रीते ज्ञानभावने समजीने ते अनु-

ज्ञानमा रमशे तेनुं कल्याण थशे अथवा जे जीवने क्षयउपसम तेवमो न होय तोपण ए वस्तु उपर जेना चित्तमा श्रद्धा स्थिर करशे तो तेनुं पण कल्याण थशे एटले ए पंदरमी गाथानो अर्थ कह्यो.

ज्ञान विना साधु नहि भाख्यो ।
तो क्रिया कष्ट शु होवे रे ॥
पंचम अंगे शतक पचीशमे ।
तेम वळी समतिमां के'वे रे ॥ १६ ॥

अर्थ जे परमात्माना भाखवामां तो एवुं छे जे ज्ञानी पुरुष होय तेनेज साधु कह्या छे अथवा तेनी आज्ञा प्रमाणे चाले तेने साधु कह्या छे पण बाह्य थकी क्रिया आमंबर घणो करे छे तेने कंइ साधु कह्या नथी साधु तो एक ज्ञान भावने विशे रमे अने मन थीर राखे तेनुं नाम साधु छे पण क्रियानुं नाम तो कंइ साधु छे नहि ए श्री भगवतीजीना पचीसमा सतकमां कह्युं छे

॥ उक्तंच ॥

गीयत्थाय विहारो बीओगीयत्थ निस्सिन्नणीऊ ॥
इत्तो तइय विहारो नाणुन्नाओ जिणवरेहि ॥ १ ॥

एनो अर्थ गीअर्थ केहेता गीतारथ अनेक शास्त्रना जाण त्रण दर्शनना शास्त्रमां जेनुं सुख ठे एवा वहुश्रुत निस्पृही म्पर उपयोगी एवा होय तेने गीतार्थ कहीए शामाटे जे त्रण दर्शवाळाने जवाब देवानी शक्ति ठे अने त्रण दर्शमां पोतानो धर्म थापवाने समर्थ ठे तेने गीतार्थ कहिए विहारो केहेता विहार नाम चारीत्रनुं ठे एटले वव्यहार मार्गने विशे परिग्रह प्रमुख राखता नथी शासन शोभे एवुं काम करे ठे ते माटे तेने गीतार्थ कहीए अने तेनुज नाम साधु पण कहीए वीओगी अर्थ केहेता जे वीजो साधु केनु नाम ठे ? एटले गीअर्थनीसराए केहेतां एटले गीतार्थनी आज्ञा प्रमाणे विचरे ठे तेने साधु कहीए एटले ए वीजो साधु केवाणो अहिआं कोइ अजाण पुरुष एवुं केहे ठे जे सर्वे साधुनी क्रिया सरखी जोइए त केहेवावाळा अणसमजु ठे शा माटे जे भगवान चंपानगरीए समोसर्या. तेमनी साथे साधुनो समुदाय सर्वे छे त्या ते साधुनु वर्णन ठे त्या कोइ क्रिया करता कोइ ज्ञान

अभ्यास करता, कोइ तपस्या करता एमनो खानोखा बोल छे, तेथी कंइ साधु सर्वेनी क्रिया एक होय नहि अहिंआं वेहेवार थकी मुळ गुण एक सरखा जोवां उत्तर गुणने विषे कोइ साधु ज्ञानना अभ्याशी छे कोइ साधु तपना अभ्याशी छे, कोइ साधु ध्यानना अभ्याशी छे कोई क्रियाना अभ्यासी साधु छे इत्यादिक भेद त्यां छे माटे जे साधुने जेनी रुचि होय ते ते मार्गे चाले ए वातमां जे चरचावा निदा करे ते अज्ञान छे शा माटे जे कल्पसूत्रादि क्रियानां जे सूत्र तेने विषे तो एवुं कह्युं छे के आचार्य तथा उपाध्याय तथा थीवीर तथा गणी तथा क्षुल्लक आदेदेइने सर्वे जुदाजुदा छे शा माटे के कोइ वैयावचनो करनार साधु होय, कोई ज्ञानअभ्यासी होय, कोइ तपस्वी होय इत्यादिकने क्रियानो अवसर सचवाय नहि, केमके जे अवसर क्रियानो आव्यो होय तेज अवसरे कोइक चरचा अथवा प्रश्न पूछवा आव्यो होय तेने जो उत्तर नहि आपे तो ` मूर्खमां ठरशे ने शासन लाजशे माटे

तेने क्रियानो अवसर सचवाय नहि तथा वैयावचीओ छे तेने क्रियानो अवसर आवेथके कोइ साधुनु शरीर बगड्यु होय तो ते वखत त्यां जवु जोइए माटे एथी पण क्रियानो अवसर न सचवाय तथा ध्यानी पुरुप होय ने तो ध्यानमांज होय ते क्रियानो अवसर क्या साचवे? शा माटे के कोइ पमीमा चार पहोरनी कोइ पमीमा आठ पहोरनी कोइ पमीमा बार पहोरनी कोइ पमीमा सोळ पहोरनी इत्यादिक पडीमाओ छे ते जेने जेटली वखतनी पमीमा होय ते ध्यानमांज रहे त्या सुधी एनु चित्त बीजामा पेसे नहि तो क्रियाने कोण सचाग्वा जाय? माटे सर्वेनी एक क्रिया होय नहि शा माटे जे गीतार्थनी आज्ञाए चालवु त्या तो करवानु कार्य होय तोए करे ने न करवानु कार्य होय तोए करे कंइ आज्ञा लोपाय नहि अने आज्ञा लोपे तो ते साधु नथी शा माटे जे संभूतिविजयजी युगप्रधान तेमनी पासेथी चोमासु आवेथके चार साधुए आज्ञा मागी ते एक तो सिंहगुफाए रह्यो,

अने सामाचार करोम सोनैया खाधा छे एवी रीतना तो सुख एनी साथे भोगवेला छे अने तेने वगर पूछे चारित्र बारोबार लीधु छे अने ते सांभळीने रातदिन क्रुर्धा करे छे तेवे आ साधुनुं जवुं त्यां थयु छे. हवे ते केवी केवी जातना आहार त्यां करावती हशे ए दुषण ६ इत्यादिक घणा दुषण अहिया लागु छे तोपण आज्ञासहित छे माटे अहिया दुषण कहेवाय नहि तथा धनगिरि ए गुरुने पूछी गोचरीए गया ते अवसरे गुरुए कह्यु जे सचित अचित जे मळे ते लइ आवजो अहिया एणे ते न कर्युं पण ए वातनी शंका करी नथी माटे गीतार्थनी आज्ञा प्रमाणे जे विचरे तेने दश समाचारीमां ते ते समाचारी पदार्थमाज जोइए तोज तेनाथी गीतार्थनी आज्ञा पळे, नहि तो पळे नहि एटला माटे जे गीतार्थनी आज्ञाए विचरे तेने साधु कह्या हवे त्रीजुं पद जे इतोतएव्यवहारो नाएत्राआजिणवरेहि एटले एवा जे गीतार्थ विना अथवा तेनी विनाना त्रीजा कंइ साधु कहेवाय नहि

एज गाथा छे एटले बे ठेकाणे गाथा एकनी एकज छे हवे क्रियाकष्ट शुं होवे कहेतां जे ए गीतार्थ तथा गीतार्थनी आज्ञामां विचरे ए बे विना त्रीजा जे रह्या तेने साधु तो कह्या नथी अने ते क्रियाकष्ट करे छे तेमधे केटलाएक तो शास्त्रना वाकेफ नथी अने गीतार्थनी सेवा करी नथी तेथी बिचारा अज्ञानपणे करीने तपस्या तथा क्रिया करे छे तथा केटलाएक कपटसहित; ज्यां जेवुं क्षेत्र ज्यां जेवो साधुनो समुदाय तेवी तेवी रीतनी क्रिया करे छे अथवा ज्यां जेवा श्रावकनी रीत प्रवर्त्तती होय तेवी रीतनी क्रिया करे छे एटले ए चोथुं डुपण पासथामांहेडुं छे ते साधु पण वांदवा पूजवामां खप लागे नहि हवे जे प्रथम अजाण कह्या ते साधु जे क्रियाकष्ट करे छे तेने पण फळ आकाश कुसुमवत् छे माटे तेनुं पण कंइ कल्याण थयुं नहि कल्याण तो एक आत्मज्ञान स्वभावमां रमवुं तेनु नामज साधु छे पण ज्ञान विना साधु कोइ काळे कहेवाय नहि ते श्रीउत्तराध्ययनजीथकी जोइ लेजो एटले साधु

भाव उठामी दीधो ठे ते जेम पूर्वे सात निन्हव ठाणंगजीमां कह्याछेने आठमाने नव आवश्यकनी वरतीमा कह्या ठे अने आ काळे तो सर्व धर्मउथापक घणा निन्हव पेदा थया ठे गा माटे जे भगवाने तो कह्यु ठे जे मारो धर्म एकवीस हजार वरस सुधी साधुसाधवी प्रमुख प्रवर्त्तशे एटले त्यां सुधी मारो धर्म अखंन रहेशे अने आ निन्हवोए तो अत्यारथीज धर्म उठावी दीधो ए अधीकार श्रीभगवतीजीमांथी जोइ लेजो तथा केटलाएक ग्रहस्थी श्रावक नाम धरावीने साधु साधवीने पोतानी आज्ञामा चलावे ठे, केटलाएक चलाववा चाहे ठे पण जे साधुसाधवी होय ते तो सर्वथा ग्रहस्थीनी आज्ञामा नज चाले ए वचन नयथकी समजी लेजो जे ए चाले छे ते असाधु ने असाधवी ठे एम समजी लेजो एटले गीतार्थ तथा गीतार्थनी आज्ञामा चाले ते बेने साधु कह्या ते विनाना जे रह्या तेने साधु साधवी कहीए नहि ए श्रीभगवतिजीनुं वचन ने तथा समक्ति मध्ये कहेता संमतिग्रंथने विषे पण

ए थयो होय तोपण जो ज्ञानी पुरुष छे, तो ए वहेवारनयने मते तेनेज मानवो कह्यो छे शा माटे जे छेदग्रंथमध्ये वहेवारसूत्र छे तेमध्ये साधुने आलोयण लेवानो अधिकार बहुश्रुत ज्ञानी होय तेनी पासे छे ते बहुश्रुतज्ञानी साधुनी जोगवइ न होय तो पछाकडा पासे लेवी पछाकडो कहेतां जेने पूर्वे साधुपणुं लीधेलुं छे अने बहुश्रुत थएलो छे ते पणी कोइ कर्मना उदयथी चारित्र छोडीने घरमां पेठो तेने पछाकडो कहीए तेनी पासे आलोयण लेवानी कही छे, श्राद्धविधिमां एवुं कह्युं छे के सातसें गाउ सुधी गीतार्थनी खोळ करीने गीतार्थ पासे आलोयण लेवी पण ते विना जे साधु गीतार्थ न थयो तेनी पासे सर्वथा न लेवी तथा आ काळे केटलाएक ग्रहस्थीओ आलोयण आपे छे तथा व्रतपचखाण उचरावे छे ते तो परमात्माना मार्गथकी बाहेर छे एने जैनधर्मी न कहीए अने एना वेसनारा कहे ते जेम गोसाळाने जिन कहेता त्यां तद्वत तेने पण जाणवा एटले चरणसीत्तरी करणसीत्त-

ज खपनी छे एथकीज आत्मानु कल्याण छे एटले ए गाथा सोळमीनो अर्थ कह्यो हवे सत्तरमी तथा अढारमी गाथाना अर्थ एक छे माटे भेगो कहीशु

चरणसीतरी करणसीतरी । हीणा जे मुनि ज्ञान अन्यासेरे॥षटदरशणना शास्त्र जे जाणे। स्वआतमगुणे वासेरे ॥ ज्ञा० १७ ॥ डुक्कर करणी तेहनी दाखी । संमतिग्रथे हरखीरे ॥ उपदेशमाळामाही ते जोजो । एम शास्त्र बहु निरखीरे ॥ ज्ञा० ॥ १८ ॥

अर्थ—हवे ए बे गाथानो अर्थ कहु ते तमे सांभळो चरणसीत्तरी करणसीत्तरी कहेतां जे वहेवारशास्त्रने विषे चरणसीत्तरीना सीत्तेर बोल कह्या छे पचमहाव्रत आदेदेइने तथा करणसीत्तरीना सीत्तेर बोल कह्या छे ते पडीलेहणप्रमुख जाणजो ए वहेवारशास्त्रने मते एथकी अधिक कोइ बीजु साधूपणु दीसतु नथी परतु ए एकसोने चाळीस बोलमाथी हरकोइ बोलथकी हि

ज्ञानमां वाकेफ छे एटले च्यारे अनुयोगनुं ज्ञान कहेतां जे धर्मकथानुं योग कहेतां जे ज्ञातादि सूत्र तथा चरित्रादि कह्या ते कथानुयोगने विषे जेनी वाकेफी छे १ तथा बीजा अनुयोग जे गणितानुयोग एटले चंद्रपन्नति प्रमुख तथा द्वीप समुद्र तेना मापागणत्राने विषे जाणपणुं छे एटले घनमूळ वर्गमूळ करी जाणे छे परवीखाम्बा चोरसां इत्यादिकने विषे वाकेफ छे ते बीजो अनुयोग कहीए २ तथा चरणकरणानुयोग कहेतां आचारांग प्रमुख सूत्रनु जाणपणु छे चरणसीत्तरी करणसीत्तरीने विषे कल्प, अकल्प, उत्सर्ग अपवाद इत्यादिक जाणपणुं छे तथा ते मध्ये जे दुषण लागे तेनी आलोवण निसियसूत्र तथा बृहत्कल्पसूत्र प्रमुखना जाण छे आलोवण आपवालायक ए गीतार्थ छे ए त्रणे अनुयोग व्यवहारथकी छे तथा द्रव्यानुयोग ते मध्ये खटद्रव्यपंचास्तीकायनी व्याख्या अने जो आत्मस्वरुपनुं जाणपणुं न होय तो ए सर्वे व्यवाहार ज्ञान छे एने बाह्यज्ञान कहीए अने जो आत्म-

ते पुरुप मोक्षे जाय शा माटे चरणकरण स्स सार कहेतां ए जे चरणसीत्तरी तथा करणसीत्तरीना करनारा तथा पाळनारा तेने तो संसार बताये छे एटले संसार कहेतां जे चार गति संसारमां रखडशे ए जीवनु कल्याण थाय नहि नथी ए सुधी कहेता एनो आत्मा शुद्ध नथी तेथीकरीने ए जीवनो मुक्त पण थाय नहि. ए जीवनुं कल्याण नथी तेथीकरीने समजवुं जे बाह्यदृष्टि छे ते खोटी छे अने अतरदृष्टि छे ते घणी श्रेष्ट छे माटे एक ज्ञानमाज चित्त राखवुं एथीज आपणु कार्य थशे ए शास्त्रसंमतिनो रेश देखाड्यो तथा उपदेशमाळामाहि जे कह्यु छे ते हुं कहु छु

॥ उक्तंच ॥

नाणाहिउवरतर । हीणोविहुपवयणंपभावंतो॥
नयदुक्करकरीतो । सुहुविअप्पागमोपुरिसो ॥ १॥

अर्थ-हवे ए गाथाने विषे शुं अर्थ कह्यो छे ते कहुं छु नाणाही कहेता जे ज्ञानेकरीने सहित एटले बाह्यज्ञान तथा अभ्यतरज्ञान बंने

अने ज्ञानी पुरुषनी सेवामां रेहेवु ए पण दुःकर छे तथा अन्यदर्शनीजं तथा स्वदर्शन दिगंबरादि मतवाला इत्यादिकनी सभाउं थाय छे ते सभाउंने विषे सामानी वात जुठी ठरावती अने पोताना दर्शननुं स्थापन करवुं ते कंई छोकरानी रमत नथी केमके ते पण सामा पंडित छे माटे शासनतो ते थकी रहे पण कंइ क्रिया प्रमुखवाळा थकी रहे नहि माटे ज्ञान नय छे ते दुःकरज छे माटे तेने दुष्कर कहिने बोलाव्या पण जो सदाए आत्मा नीरमणता होय तो तो ए दुकर करणनो कर्ता छे पण क्रिया कष्टनां करनारने दुकर करणीनां करनारा केहेवाय नहि एटले ए बे गाथानो भेगो अर्थ कह्यो

॥ गाथा ॥

इत्यादीक बहु शास्त्र जोइ, आलपंपालने टालोरे ॥ प्रमादभावने दूर करीने, ज्ञानवाम्रीमां मा'लोरे ॥ ज्ञा० ॥ १९ ॥

हवे ए गाथानो अर्थ कहीए छीए इत्यादिक कहेता पूर्वे कह्यां ते शास्त्रनी सारयो ते

स्वरुपनुं जाणपणुं होय तो ते अन्यतरज्ञान छे एम ज्ञानसहित जे मुनिराज छे पण व्रतथकी हीन छे एटले व्रतादिक कंइ पाळता नथी तोपण बहु केहेता घणोज उत्तम छे शा माटे प्रवचननो प्रभावोक छे एटले जैनशासन स्थापवामा ते अग्रेसरी छे माटे एने उत्तम कहिए. शा माटे जे नय दुकर कहेता जे दु करकरणीनो कर्ता एनेज कहिए एटले जे कष्ट क्रिया आतापना प्रमुख करे छे तथा पंचमाहाव्रत चोखा पाळे छे बेताळीस दोषरहित आहार ले छे इत्यादिक जे कष्ट करे छे तेने कंइ दुकर करणी कहीए नहि एतो राधना माघ छे ए बाळजीवनी करणी छे ए क्रियानय छे, ते दर्शननीजंळखाण आसरी तथा बाळजीव छे तेने वाडामां राखवा वास्ते छे माटे ए क्रियानय छे ते सामान्य छे ते ए क्रियावाळा ने कंइ दुकर कहेवाय नहि अने ज्ञाननय छे ते तो दुकर छेज शा माटे जे क्रियाना करनार सो नीकळे त्यारे ज्ञाननो भणनार एक नीकळे तो भलोज माटे ज्ञाननु भणवु एज माहा दुष्कर छे

रटा ए कोटने विषे कोइ पेसी शके नहि. तथा उपयोगद्वार छे तेनी अंदर जे गुणरुपीआं वृक्ष ते अनंता छे ते वे जातना छे. एक खसबोइ लेवारुप कुसुमनुं झाड छे एक आस्वादन लेवाजोग फळवृक्ष छे हवे तेनो विवरो कहु ते सांभळो. जे ज्ञानादिक अनंता गुण आत्माना छे ते रुप तो वृक्ष छे अने जे आत्माना अनंता प्रजायरुप एना पातरां प्रमुख छे शुद्ध व्यवहार रुप एनां पुष्प छे, अने शुद्धनिश्चयरुप एना फळ छे ते वाग्नीनीमांहिली कोरे अनुभवरुपी एक महेल छे तेने विषे अनेक जातनां क्रिया करवानां स्थानक छे त्यां आत्माराम वेसीने क्रिया करे छे एटले ज्यांसुधी खसबोइनी इछा छे त्यांसुधी भेदज्ञानमां रमे जेने फळना अस्वादननी इछा छे ते अभेदज्ञाने स्थिर थाय अहियां कोइ कहेशे जे फळ मुकीने पुष्पसुगधनी इछा कोण राखे? तेनो उत्तर जे जेनी पासे थोडी पुंजी होय तेनाथी ए फळ लेवाय नहि, केमके ते बहु मोघा मुलनां छे अने थोमी पुजीवाळा छे ते पुष्पादि-

शास्त्र तथा बीजा पण अनेक शास्त्रने विषे ए
ज्ञान तेज मुख्य कह्यु ठे ते वस्तुने हृदयने विषे
धरीने तेनीज श्रद्धा करीने आळपंपाळ कहेता
जे नैगमादिक नयना पक्ष धर्मव्यवहार विनाना
तथा कुनयना पक्ष जे पासत्थादिकना बांधेला
ग्रंथो ते मार्ग ते सर्वे आळपंपाळ कहीए तेने टा-
ळवा नाम दूरे करो एटले प्रमादनाव कहेतां
जेने विषे वस्तुधर्मनो विचार नहि तेने प्रमादनाव
कहीए ज्या आत्मउपयोग छे त्या अप्रमादनाव
कहीए ए आत्मउपयोग विनाना जे कारण क-
रवा ते सर्वे प्रमादनाव जाणवो तेने अळगो क-
रीने ज्ञानवाम्मीमा महाशु कहेतां जे ज्ञानरुप वाम्मी
ठे तेने विषे क्रिमाविनोद करू हवे ते ज्ञानवा-
म्मीनु किंचित् स्वरुप देखाडु हु अहिया स्वनाव-
पुर नामे पाटण तेने विषे ए ज्ञानवाम्मी छे, ते
केवी ठे ते वाम्मीनु नाम ज्ञान तेने फरतो कोट
संवररुपी ठे एटले ज्या मन, वचन कायानो जोग
तथा अशुद्ध उपयोग, ए अहिया रोकाणो ए-
टले त्या राग, द्वेष, मोह, विषयकषायादिक चो-

वर्त् दशमा गुणठाणा सुधी भेदज्ञान छे ते भेद ज्ञानरुप पुष्पनी सुगंध घणीज वृद्धि पामे पण अहियां सुधी फळनी प्राप्ति नथी माटे एने पुष्पवृक्ष कहीए तेज आत्मा अभेदज्ञाने पहोचे, तेने फळवृक्षनी प्राप्ति थाय अने त्यांज आस्वादन छे एटले त्यां मुक्तिरुप फळनी प्राप्ति थइ! अहियां कोइ कहेशे मुक्ति तो चौदमा गुणठाणाने अंते छे अने तमे बारमे गुणठाणे केम बतावी? तेनो उत्तर जे फळ थाय ते एक साथे फळ परिपक्व थतुं नथी जेम केरी फळरूप छे ते आंबाने प्रथम मंगीओ थाय, पछी मरवा थाय, त्यार पछी केरी थाय ते पछी साखतो थाय. पण ज्यांथी मगीओ बेसे त्यांथी फळ कहेवां तेम अहियां बारमे गुणठाणे वीतरागभावरुप मगीओ प्रगट थयो. मुक्ति कहेतां रागद्वेषनी मुक्ति थइ एटले रागद्वेष टळी गयो, माटे अहियां फळनुं आस्वादन थयुं एवां जे बे प्रकारनां वृक्ष ते वाडीमां छे तेमां अनुभवरुपी आ महेलने विषे बेसीने ए पुष्पनी सुगंध लउं छुं अने त्यां अनेक जातनां क्रिडा-

कनी सुगंध लइने खुशी थाय छे अहिया कोइ कहेशे जे ज्ञानभासने विषे ते जाति केम बतावो छो ? जे पुष्पवृक्ष फळ न आपे एवु ज्ञान कोण छे ज्ञानवृक्ष तो सर्व फळ आपेज तेनो उत्तर जे ज्ञान छे ते ने प्रकारनु छे भेदज्ञान १ अभेद ज्ञान २ ते मध्ये ज्ञान छे ते पुष्पवृक्षरुप छे एटले तेनी सुगध घणी उत्तम छे पण फळनी प्राप्ति अहिया थाय नहि तेनो विस्तर सांभळ जे प्रथम चतुर्थ गुणठाणे भेदज्ञान प्रगटे त्या जीवनो ने जडनो भेद नोखो पामे तेवारे जीवरुप वृक्षने भागभावरुप पुष्पनी फूट थाय पछी तेज गुणठाणामा वृद्धि पण थाय कोइने तेटलुं पण रहे त्यार पछी अष्टमगुणठाणे जाय त्यां श्रेणीरुढ कहीए त्या ते पुष्पनी वृद्धि घणी थाय शा माटे पूर्वे तो जडचेतननो विभाग कर्यो हतो अने अहियां तो जे चेतनभाव आत्मा छे तेना गुणपजाय लक्षण स्वभाव ए सर्वे भिन्न भिन्न करे अने ते विचारने विषे स्थिर भाव होय तथा ते प्रजाय प्रमुख गुणने विशे पण सम्मावे ए या-

ना मुळगा श्लोक बत्रीश छे ते उपर टीका त्रण हजार छे तथा संमत्तिग्रंथनो मुळ गाथा ओगणचालीस छे. बाकी भेदक गाथाओ छे तोपण पांचसेंने आशरे छे ते उपर टीका एकतो छत्रीशहजारी छे तथा एक पचीसहजारी छे तथा एक पांचहजारी छे माटे अहियां न्यायग्रंथने विषे मुळ सर्वेनुं थोडुंज होय ने अर्थ तो घणोज होय तथा व्यवहारशास्त्रमां पण एमज छे. शा माटे के आवश्यकनु वसें श्लोकनुं पण पुर जणातुं नथी ने ते उपर टीका बावीसहजारी छे. तथा बृहत्कल्पनुं मूळ पांचसें श्लोकने आशरे छे ते उपर टीका पंचावन हजारी छे तथा बेंताळीश हजारी छे माटे शास्त्रना मुळ उपर टीकानो नियम नहि एम समजवुं हवे ए सर्वे ज्ञाननो महिमा दखाडयो एटले ए स्तवन ओगणीसेने चोवीशनी सालमां माहा वद दशमने दिवसे करेलुं छे एटले ए वीशनी गाथानो अर्थ कह्यो ॥

ते कारण बहुश्रुतने जोइ । सेवा तेहनी कीजेरे ॥ मुनि हुकम कहे ज्ञानने पामी ॥ सेजे

विनोद ते प्रत्ये करुं हुं एटले ए ज्ञानवासी ओ-
ळखावी एटले ओगणीसमी गाथानो अर्थ संपूर्ण
थयो ॥ गाथा २० ॥

भव्य जीवना हितने अर्थे । एह संबंध ते
दाख्योरे ॥ ओगणीसें चोवीसनी साले । माहा
वद दशमीए भाख्योरे ज्ञा० ॥ २० ॥

ए गाथानो अर्थ एटले आ जे स्तवन कर्युं
ते एक भव्यजीवने उपकारनिमित्ते कर्युंछे, तथा
ज्ञाननो महिमा देखाड्वा वास्ते कर्यु हतुं. पण
श्रोताप्रमुख ज्ञानअर्थी जीव ते वळग्या जे अ-
मने ए स्तवनथी बराबर खुलासो न थाय माटे
कृपा करीने स्तवन उपर ग्रंथ बांधी आपो, ते
श्रोताना आग्रहथकी ग्रंथ बांध्यो छे अहियां
कोइ कहेशे जे स्तवननी गाथा तो एकवीसज
छे अने ग्रंथ तो तमे बहु भारे करी नांख्यो तेनो
उत्तर जे न्यायग्रंथ छे ते तो एकेक पद उपरथी
विशेष थइ जाय तोपण अमे तो ग्रंथ भारे थ-
वाना भयथकी विचारी विचारीने संक्षेप वार्ता
नाखी छे यद्यपी जो जोशो तो स्याद्वादमंजरी

ज्ञाननुं बहुमान तो घणुं कर्युं अने क्रियानुं तो अपमान कर्युं, तेनो उत्तर–जे आ संसारनां ए रीती छे के जे पक्षमां बेसे तेनुं बहुमान करे अने सामा पक्षनुं अपमानज थाय एक तो एज कारण छे. हवे बीजुं कारण समजो जे आ ग्रंथनुं नाम ज्ञानभूषण छे एटले ए ज्ञाननुंज आभरण छे जेम आभरणवडे मनुष्य शोभे छे, तेम आ ग्रंथवडे करीने ज्ञान घणुं दीपी उठे छे माटे ज्ञाननयने विशेष करता कोइ रीतनुं दुषण नथी ए तो धर्मनी वृद्धिकरता छे ने महानिर्जरानुं कारण छे अहियां कोइ तर्क करे के भगवाने सात नय कह्या छे ते कंइ खोटा? तेनो उत्तर जे–भाइ तें तर्क करी पण तुं कंइ सात नयमां समजतो नथी अने भगवाने जे सात नय कह्या छे ते तो सत्यज छे पण अज्ञानी जे नयने नथी समजता अने मुखथकी सात नय सात नय पोकार्या करे छे ते धणी नयनी वातमां शुं समजे? ने धर्मनी वातमां पण शुं समजे? हवे जे परमात्माए सात नय कह्या छे ते तो सत्यज छे

शिवसुख लीजिरे ज्ञा० ॥ २१ ॥

एनो अर्थ –अहो भव्यजीवो ! अपारो हेतु उपदेश तमने सर्वने छे माटे बहुश्रुतगुरु जोइने तेनी सेवा करो तेथी तमने धर्मनी प्राप्ति थशे, अने तेज तमने ज्ञानमार्ग देखाडशे पण जेनी पासे आत्मउपयोग नथी ते तमने ज्ञानमार्ग क्यांथी देखाडशे? ते कारण माटे एवा बहुश्रुत स्वस्वरुपना उपयोगवन्त तेनी पासेथी तमो आत्मस्वरुपने ओलखो अने तेने विषे रमणता करवी तेने ज्ञानअभ्यास कहीए ते तमे करो हवे मुनि कहेतां जे अरिहंतपरमात्मा तेनो हुकम कहेतां जे आज्ञाने एवीज रीते फरमावी छे ते कारण माटे एवी आत्मस्वरुपज्ञाननी रमणता करताथका तद्रुप थशो तो एसेज कहेता स्वभावेज मुक्ति थशे ने शिवरमणीनां सुख भोगवशो अनंतासुख अनागतकाळ अनंतो छे त्या सुधी तमे सदाथकाळ सुखमा रहेशो ए एकवीसमी गाथानो अर्थ संपूर्ण तथा स्तवननो अर्थ पण समाप्त थयो अहिया कोई कहेशे जे तमे

माटे ए नय देखीता पदार्थने विषे ए नय सत्य छे तथा रुजुसूत्रनय छे ते तो मनना परिणामने ग्रहे छे ते तो सिद्धसंसारी तेने करीने माने छे, एटले जे समये जेवा पणिाम तेने तेवो कहे छे ए वात ग्रहणने विषे ए नय सत्य छे परंतु परिणाम छे ते तो जड छे ने क्षणभंगुर छे एटले क्षणक्षण परिणामनुं परावर्तन धर्म छेज एम समजवुं माटे ए चार नय सुधी तो कंइ धर्म तो छेज नहि अने धर्म तो परमात्माए उपली त्रण नयमांज परुप्युं छे माटे ए साते नय सत्य छे पण ते सर्वने स्थानके छे माटे धर्मअर्थी जीवोने उपली त्रण नयनोज खप विशेष करवो अहियां कोइ कहेशे के एतो एकांतवाद थाय तेनो उत्तर जे शुगडांगजीने विषे कह्युं छे जे " एकांते होयमिथ्यात" ते एकांतपक्ष बोले तेने मिथ्यात्वी कह्यो छे ते क्रियापक्षने कह्युं छे जेम कोइ जान लइ जाय ने मही वर नथी ने मोटो आआडम्बर करे अने कहे जे वरनुं शुं काम छे ते जान कोइ ठेकाणे आदरमान पामवानी नथी

पण ते सर्व सर्वने स्थानके छे ए कंइ एक नय
वने झालीने फेरवोए तो ते कंइ सत्य ठरे नहि
केमके कोइनी पासे पांच रुपिआ होय ते पण
कहे जे मारी पासे रुपिया छे कोइनी पासे क-
रोड रुपिया होय ते पण कहे जे मारी पासे रु
पिया छे पण कइ ए बे बरोबर थाय नहि अने
करोडपतिना लेखामा पांच रुपियावाळो कइ छे
नहि तेम अहियां निगमादिक नयो ते कंइ श-
ब्दादि नयना आगळ ए नय कइ गणत्रीमा पण
छे नहि ते हवे कहु ते तु समजजे नैगमनय छे
ते आरोप प्रमुखने विशेष लप लागे छे, ए छे
काणे ए नय सत्य छे परतु अवस्तुने वस्तु माने
छे तथा सग्रहनय छे ते गोळा पहेलो वाळे छे.
परंतु गुणीअवगुणी तथा वस्तुअवस्तु नो एने घेर
भेद छे नहि ए सर्वने एकज रुप मानी ले छे
ते काममां ए नय सत्य छे तथा व्यवहारनय छे
ते देखोता पदार्थने माने छे तो ए नयथकी गु
णीअवगुणीनी खबर न पडे तथा सिद्ध निगो
दादिक जे दोगामां न आवे ते असत्य थई गयु

अने क्रिया करे तो शुं फायदो आपे ते बतावो अहियां तो जे गुण प्रगट्या छे ते गुण मुक्तिमा खप लागवाना छे अने अहिया जे क्रिया छे ते पूर्वकृत्यकर्म चार बाकी रह्या छे ते कर्मना उदयने विषे प्रवर्त्तवुं ते क्रिया छे पण प्रतिक्रमण पडीलेहण प्रमुख तमारी क्रिया ते तो कंइ छे नहि. अहियां कोइ कहेशे जे भगवाननो मार्ग तो स्याद्वाद छे अने आ वचनथकी स्याद्वाद रहेतो नथी तेनो उत्तर जे जेने अनुभवज्ञान प्रगटयुं छे ते तो जाणे जे स्याद्वाद सहितज वचन छे अथवा जेणे न्याय प्रमुखना शास्त्र जोयां होय तेना पण समजवामां आवे के वचन स्याद्वाद छे पण जेने ए वस्तुनो खबर नथी ते बिचारा स्याद्वादमा शु जाणे हवे जे स्याद्वाद शब्द छे ते कहु ते समजजो. साते नयनुं स्वरुप छे तेज स्याद्वाद छे तथा द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक पक्षप्रमाण प्रमुख स्याद्वादज छे तेनुं स्वरुप जाणे तेने स्याद्वाद कहीए अने तेनुं वचन ते स्याद्वाद विना होय नहि हवे स्याद्वाद कहेतां कोइ सप्तभंगीना स्व-

अने जो वर घेगो हशे गांमोघेलो तोयपण ए जांन मांन पांमशे अने वर तो एकलो जशे तोए मांन पांमशे तेम अहियां क्रियापक्षी आत्मज्ञान विनाना ते जीवनुं कल्याण पण नथी ने सारी गति पण नथी अने जो गांमोघेलो वैराग्य आत्मज्ञान थोडुं पण हशे तो ते जीवने शुभगति थशे अने जे ज्ञानअनुभव जेने प्रगट्यो ते तो सर्वथा प्रकारे क्रियानो संग नहिज करे ए जीव तो एकांतपक्षे पोताना आत्मस्वभावनीज तेमां रमणता करे अने ते जीव मुक्ति पांमशे शा माटे जे अप्रमादिगुणठाणेथी क्रिया बिलकुल छे नहि अने मुक्ति तो ते गुणठाणामाज छे अने गुणनी वृद्धि पण ते गुणठाणामा छे माटे ज्ञानपक्षवाळाने एकांतवादी शास्त्रवाळा कहेता नथी ते तो महाधर्मीए छे अने महा उत्तम पुरुष छे अहियां कोइ कहेशे जे व्यवहार तो तेरमा गुणठाणामां कह्यो छे तेनो उत्तर जे तेरमे गुणठाणे कांइ नवो गुण तो प्रगट थवानो नथी अने अहिया क्रियाव्यवहार पण कइ छे नहि

रह्यो छे अने क्रिया छे ते आश्रवभावज छे ते संवर थवानो नथी हवे जे आस्तिनास्ति सप्तभंगी छे तेने विषे तो परभावनुं गवेखवुं थाय ते तो नास्तिभावे थाय माटे स्वस्वभावने परस्वभाव ए बे मळीने सप्तभंगी थाय एटले ए स्वपरग्राही सप्तभंगी छे जे सप्तभंगी स्वग्राही छे ते कहुं ते सांभळ सामान्य तथा विशेष तेनी सप्तभंगी थाय तथा ते नित्यअनित्यनी सप्तभंगी थाय तथा एक अनेकनी सप्तभंगी थाय तथा सत्यअसत्यनी सप्तभंगी थाय. इत्यादिक घणी सप्तभंगी थाय छे ते सत्य छे ने स्वग्राही छे माटे ते स्वग्राहीसप्तभंगी तेने स्याद्वाद कहीए एटले ए स्याद्वाद सत्य छे, ते सप्तभंगीनुं स्वरुप संक्षेपे करी देखाडुं छुं. स्यादसामान्य १ स्यादविशेष २ स्यादसामान्यविशेष ३ स्यादअव्यक्तव ४ स्यादसामान्यअव्यक्तव ५ स्यादविशेपअव्यक्तव ६ स्यादसामान्यविशेपजुगपतअव्यक्तव ७ एटले ए सात भांगा थया एनुंज नाम सप्तभंगी कहीए हवे एनो अर्थ कहुं ते समजो सामान्य कहेतां जे सरखो भाव सर्वमा

रुपने माने ते पण सर्व आ ग्रंथने विषे आवेलो छे तथापी स्याद्वाद रुप क्रियापक्षमां लागु पम्तो नथी एतो निष्केवळ एक नास्तिकभावमां पामीए एटले ज्ञान अने क्रिया ए बेनी सप्तभंगी करीए त्या पण नास्तिकभावेज लाधे तथा संवर तथा आश्रवनी सप्तभगी करीए त्यां पण क्रिया नास्तिकभावज होय शा माटे जे स्वस्वभावे आस्ति ने परस्वभावे नास्ति एटले ज्ञानना स्वभावमां क्रियानु नास्तिकपणुं रह्यु छे अने ज्ञान छे ते तो आत्मस्वभावज छे अने क्रिया छे ते पुद्गल स्वभाव छे माटे स्वस्वभावे आस्ति अने परस्वभावे नास्ति त्यां क्रिया नास्ति भावमां रही तथा ज्या संवरभाव छे ते तो स्वस्वभाविक छे अने आश्रवभाव छे ते परस्वभावि छे माटे संवर छे ते आत्मा छे अने आश्रव छे ते जम्भाव छे अहिया कोइ कहेशे जे आश्रवभाव तो मिश्रस्वभाव छे ते वात खरी छे पण ते तो व्यवहारनयने मते छे पण ज्ञानने मते तो ते अजीव छे माटे ज्या सवरभाव छे त्या आश्रव नास्तिभावे

रह्यो छे अने क्रिया छे ते आश्रवभावज छे ते संवर थवानो नथी हवे जे आस्तिनास्ति सप्तभंगी छे तेने विषे तो परभावनुं गवेखवु थाय ते तो नास्तिभावे थाय माटे स्वस्वभावने परस्वभाव ए बे मळीने सप्तभंगी थाय एटले ए स्वपरग्राही सप्तभंगी छे जे सप्तभंगी स्वग्राही छे ते कहु ते सांभळ. सामान्य तथा विशेष तेनी सप्तभंगी थाय तथा ते नित्यअनित्यनी सप्तभंगी थाय तथा एक अनेकनी सप्तभंगी थाय तथा सत्यअसत्यनी सप्तभंगी थाय. इत्यादिक घणी सप्तभगी थाय छे ते सत्य छे ने स्वग्राही छे माटे ते स्वग्राहीसप्तभंगी तेने स्याद्वाद कहीए एटले ए स्याद्वाद सत्य छे, ते सप्तभंगीनुं स्वरुप संक्षेपे करी देखाडुं हुं स्यादसामान्य १ स्यादविशेष २ स्यादसामान्यविशेष ३ स्यादअव्यक्तव ४ स्यादसामान्यअव्यक्तव ५ स्यादविशेषअव्यक्तव ६ स्यादसामान्यविशेषजुगपतअव्यक्तव ७ एटले ए सात भांगा थया एनुंज नाम सप्तभंगी कहीए हवे एनो अर्थ कहुं ते समजो सामान्य कहेतां जे सरखो भाव सर्वमा

लाधे एटले जेम चेतनालक्षण निगोदथकी ते सिद्ध सुधीमा सरखो भाव छे ए सामान्य कहीए ते सामान्य छ प्रकारे कह्या छे तेनां नाम कहीए छीए अस्तीत्व १ वस्तुत्व २ द्रव्यत्व ३ प्रमेयत्व ४ सत्यत्व ५ अगुरुलघुत्व ६ ए ६ सामान्यगुण छे पण ते तो सद् द्रव्यने आश्रीने छे ने अहिया तो चेतनद्रव्यनुज कहेवु छे माटे अहियां बे गुण बीजा पण लेवा चेतनत्व १ अमुर्तत्व २ ए आठ लक्षण सामान्य जीवद्रव्यने विषे छे ते अमे पूर्वे सामान्यगुणमां कह्यां छे. ए सर्वे लक्षणे होय तेने सामान्य कहीए ए सामान्य बे प्रकारे करीने ओळखावु तु बाज्यथकी १ अन्यतरथकी २ जे जीव चेतनालक्षणमात्र छे ते केवळी वचने प्रमाण छे एवा जे अव्यक्त निगोद पृथ्वि आदिक अव्यक्तभावे ए जीव सामान्य कहेता सरखे भावे छे तथापि जे त्रसजीव छे ते त्रास पामे छे तथा दहाह, ताप, क्षुधा, तृषा प्रमुख वेदे छे ते ए भावे ए सरखा सामान्यस्वभावे गतिमा छे ए बाह्यथकी समजवा तथा अ

भ्यंतरथकी जीवमात्र अरुपी गुण सरखो ठे अ-
मुर्त्ति तथा अविनाशी तथा अरागी अद्वेषी तथा
ज्ञान दर्शन चारित्र वीर्य इत्यादिक सामान्य
स्वभाव सर्वे जीव निगोदथी ते सिद्ध सुधी सर
खा गुण लाधे छे ते सामान्यस्वभाव कहीए पण
शक्तिभावे ठे हवे जे विशेष गुण ठे तेना बे प्र-
कार ठे एक बाह्यथकी १ तथा एक अभ्यंतर
थकी २ हवे बाह्यथकी जे निगोदीआ करतां
पृथ्वी आदि जीव तेनी काया प्रत्यक्ष जोवामां
आवे ठे तो निगोदीआ करतां ए विशेषज ठे
अने ते मध्ये पण वनस्पतीने विषे चार संज्ञा
आदि जोवामां आवे ठे तो ए प्रत्यक्ष विशेषपणुं
जोवामां आवेछे ते करतां त्रसजीव ठे तेमा विशेष-
पणुं जोवामा आवेठे तेथी तिर्यचपंचेन्द्रि तेथी मनु-
ष्य एक एकथकी एक एकमा विशेषपणु जोवा-
मा आवे ठे ए सर्वे बाह्यथकी समजी लेवुं तथा
अभ्यंतर विशेष जे ठे ते मनुष्य देवगतिथी नी-
चली गतिवाळा जीवोने ज्ञान ओछुं नामन था-
ठे अने तेनी गति करता मनुष्यनी गतिने

केवळज्ञान तथा केवळदर्शन ए घणो विशेष गुण ठे एटले ए बन्ने सामान्य विशेष ओळखावा वास्ते कह्युं तथा बीजे प्रकारे सामान्य विशेष ओळखावुं ते समजो हवे जीवद्रव्यने विषे सामान्य विशेष लक्षण कहुं छु. त्या प्रथमथकी सामान्यविशेषनु लक्षण कहु छु जे जीवद्रव्य प्रथमथकीज पोताना द्रव्य ते विशेज व्याप्तो होय तथा गुणप्रजायमा पण सदाय पोतेपणामा एटले व्यापक पण सदाय एने विषे ठेज तेने सा सामान्यस्वभाव कहीए ठीए ते सान्यस्वभाव तो एकज होय एनो बीजो भाग थाय नहि ते सदाय काळ नित्य होय, अविनाशी होय तथा अवयव अविभाग रहित सर्वगत कहेता सर्वे जीवद्रव्य आप आपणामां व्यापकपणेज रहे ठे तेने सामान्यस्वभाव कहीए एटले सामान्य स्वभाव कहेवानो सार शु ठे के जीवद्रव्य एक पिंडपणेज ठे एम सर्वगुणप्रजाय ए सर्व मळीने एकज द्रव्य ठे ए सदाय नित्यज ठे एने सामान्यधर्म कहीए ए जीवद्रव्य एक एवा अनंता निगोदथी ते सिद्धपर्यंत एकसरखाज जा

एवा. अहियां कोइ कहेशे जे गुणप्रजाय प्रदेश अनेक छे तेने एकरुपे केम कह्यो छो ? तेनो उत्तर जे ए गुणप्रजाय प्रदेश छे ते सर्व एक पिंड रुपेज छे ए कंइ भिन्नरुपे थाय नहि अने पोतानो सामान्यस्वभाव छोडे नहि माटे एने सामान्यज कहीए, ए सामान्यस्वभावनुं प्रणमन कह्युं ते सामान्यस्वभावना बे भेद छे ते शास्त्र-प्रवर्तन तथा लोकव्यवहारे ग्रहण थाय छे ते कहु छुं महासामान्य १ तथा अवांतरसामान्य २ ए बे भेद छे तेमध्ये जे आस्तित्वादिक सर्वे पदार्थने विषे ए छेज तेने माहासामान्य कहीए एनी श्रुतज्ञानवडे करीने प्रतित थाय पण जाणवा देखवामा आवे नहि एने महासामान्य कहीए तथा केवळदर्शनवाळो होय तेज जाणे हवे जे परोक्ष न ग्रहवाय ते माटे एने माहासामान्य कहीए तथा अवांतरसामान्य ते चक्षुदर्शन तथा अचक्षुदर्शन तथा अवधीदर्शन करी ग्रहण थाय एटले जेम वृक्षप्रमुख तथा जनावर प्रमुख तथा मनुष्यप्रमुख तथा देवप्रमुख अनेक जातिओ छे. तेमध्ये वृक्षपणुं तथा जानवरपणुं तथा मनुष्यपणुं

तथा देवपणु ए एकएक शब्दने सामान्यपणुं छे शा माटे जे वृक्ष ए शब्दमा आम्र सर्वे आवी गया तथा जनावर शब्दे सर्वे जातनां जनावर आवी गया मनुष्य शब्दे मनुष्य सर्वे जातनां माही आवी गया देव शब्दे देव सर्वे जातना आवी गया माटे ए चारे मुख्य शब्द सो सौनी जातिमां ए सामान्य शब्द छे इत्यादिक सामान्य शब्द ते चक्षु, अचक्षु तथा अवधी ए त्रणे दर्शनथकी ग्रहण थाय छे तेने अवांतरसामान्य कहीए अहियां कोइ कहेशे जे अवधीदर्शनने तमे जे महासामान्य ग्रहवानुं कह्युं नहितो शु अवधीदर्शनवालो ग्रहे के न ग्रहे? तेनो उत्तर के पुद्गलद्रव्यनी जो प्ररुपणा होत तो अवधीदर्शन कोइ जगाए खप लागे पण अहिया तो एक जीवस्वरुपनीज व्याख्या छे, अने जे आस्तित्वादिक गुण तथा जीवद्रव्य ए सर्व अरुपी छे माटे अवधीदर्शनथी ग्रहण थाय नहि कारण एवु छे के अवधीदर्शन जे रुपीनो विषय छे ते कारण माटे ए अरुपी आत्मद्रव्यना जे स्वभाव ते कंइ अवधीदर्शनना जाणवामा आवे

नहि माटे माहासामान्य केवळी विना बीजो न जाणे अने श्रुतकेवळी तथा देव जे उपरना मोटी रिद्धिवाळा छे ते जाणे पण केवळीना वचनथकी जाणे पण पोताना प्रत्यक्षज्ञानथी तथा पोताना प्रत्यक्ष दर्शनथी देखवुं जाणवुं न थाय एटले ए संक्षेपथकी सामान्यस्वभाव ओळखाव्यो एटले पहेलो भांगो स्यात् सामान्य ते भांगानो अर्थ कह्यो हवे जे विशेष धर्म छे ते पण ज्ञानगुणेकरीने ग्रहण थाय छे ते विशेषनुं लक्षण कहीए छीए के एक एक जीवद्रव्यने विषे केटलाएक धर्म नित्य छे केटलाएक धर्म अनित्य छे केटलाएक ठकाणे अवयव सहित छे कोइक रीते अवयवरहित पण छे एटले जे स्वपर्याए सामर्थ्यपर्याए करी निरअवय छे अने अविभाग पर्याएकरी सअवयव छे कोइ जगाने विषे सक्रिय छे एटले सक्रिय कहेतां क्रियारुप हेतु, मळवाथकी देशगत कहेतां कोइ कहेशे ए गुणमां व्यापे छे पण गुणांतर कहेता पोताना गुणनी अंतर्भूत व्यापी शकता नथी ते माटे एने देशगतज कहे [illegible] गत ते आखा द्रव्यमां व्यापकज छे।

एटले जीवद्रव्यना असंख्यात प्रदेश ते व्यापे तेथी एने सर्वगत पण कहीए एम विशेष धर्मने विषे ज्यां जेवुं कारण होय त्यां तेवुं जोडी लेवुं जे कार्य जे कारणथकी विशेष थाय ते गुणने पण विशेष धर्मज जाणवु ए सर्वने विशेष स्वभावज कहीए तथा पूर्वे विशेष धर्मनी ओळखाण कही छे ते सर्वे आ भांगामा लेवी एटले ए स्यात् विशेष ए बीजो भांगो कह्यो हवे त्रीजो भांगो स्यात् सामान्य विशेष नामे छे ते सामान्य जे जगाए छे तेज जगाए विशेष पण छे जे जगाए विशेष छे, ते जगाए सामान्य पण छे एटले सामान्य विना विशेष कोइ काळे होय नहि अने विशेष धर्म सामान्य सत्तामां रह्याज छे जो छतिपर्याए छे तो सामर्थ पर्याय थाय छे माटे ए त्रीजो भांगो थयो स्यात् सामान्यविशेष कह्यो. हवे स्यात् अवक्तव्य कहेतां मुखथकी जे उच्चारण न थाय तेने अवक्तव्य कहीए, एटले आत्मधर्मना असंख्याता प्रदेश अनंता गुण अनंता पर्याय ए सर्वे मुखथकी उ-

च्चारण थाय नहि जेटला मुखथकी उच्चारणमा आवे तेने वक्तव्य कहीए जे उच्चारणमां न आवे तेने अवक्तव्य कहीए ॥ शिष्यवाक्य॥ स्वामी ए ते सामान्यने अवक्तव्य कहोगो के विशेषने अवक्तव्य कहो गो? तेनो उत्तर जे सामान्य छे तेमां पण अनंतापर्याय अवक्तव्य छे माटे तेने सामान्यअवक्तव्य पांचमो भांगो कहीए तथा विशेषमां पण अनंतापर्याय अवक्तव्य छे माटे ए छट्ठो भांगो विशेषअवक्तव्य नामे कहीए तथा सामान्यविशेषयुगपत् कहेतां जे भेगुं बोलवुं ते पण अवक्तव्य छे एटले ए सामान्यविशेषयुगपत नामे सातमो भांगो कह्यो एटले सामान्यविशेषनी सप्तभंगी कही तेमध्ये छेल्ला चार भांगानो विस्तार कर्यो नथी ते पंडितो पोतानी बुद्धियी करजो, अथवा शास्त्रथी करजो एटले ए प्रथम सप्तभंगी कही. हवे बीजी सप्तभंगी नित्यअनित्य ते नामे कहुं छुं॥ स्यात्नित्य १ स्यात्अनित्य २ स्यात्नित्यानित्य ३ स्यात्अवक्तव्य ४ स्यात्नित्यअवक्तव्य ५ [illegible]नित्यअवक्तव्य ६ स्यात्नित्यअ-

नित्ययुगपत्अवक्तव्य. ७ हवे तेनो अर्थ नित्य कहेतां जे सदाय काळ छे ने छे कोइ काळे एनुं अनित्यपणु नहि थाय एटले सदाय काळ जीव द्रव्य नित्य छे तथा चेतनालक्षण जीव ते पण नित्य छे तथा गुण कहेतां ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ वीर्य ४ ए गुण सदाय नित्य छे अहियां कोइ कहेशे जे केटलाएक जीवद्रव्यमां ए गुण जोवामां आवता नथी. केटलाएक जीवद्रव्यमां सामान्यविशेष जोवामा आवे छे तेनो उत्तर जे जोवामां नथी आवता ते अव्यक्तव्यभावे रह्या छे एटले केटलाएक द्रव्य छतीपर्याय छे ने सामर्थ्यपर्याय नथी थया ते जोवामां न आवे अने साम र्थ्यपर्याय जे पामेला तेमध्ये सामान्यविशेष नजरे आवे ते क्षयउपसमभावनुं लक्षण छे तथा जे क्षायकभावे सामर्थ्यपर्याय थया होय ते सर्वना सरखा जोवामा आवे एम समजवुं पण कोइ जीवद्रव्य पोताना ज्ञानादिक गुणथकी रहित नथी सदाय ए गुण तो सही रह्याज छे माटे ए गुण पण नित्यज कहेवाय एवुं श्रीभगवतीसूत्रे कह्युं छे

॥ उक्तंच ॥

हे गौतमअथ्थीत्तं अथ्थीतेपरिणमइनत्थीत्तं नत्थीतेपरिणमइ ॥

एनो अर्थ के हे गौतम एवुं श्रीवीरपरमात्मा कहे छे अथ्थीत्वं कहेतां अस्तिपणे प्रणमेलो छे अने नत्थीत्वं कहेतां नास्तिपणे प्रणमेलो छे एटले जे प्रणामिकपणुं एटले स्वधर्मने विषे जे प्रणमवुं ते आस्तिधर्म छे तेने नित्यधर्म कहीए एटले स्वद्रव्य १ स्वक्षेत्र २ स्वकाळ ३ स्वभाव ४ प्रणामिकपणे जे प्रणमे तेने प्रणामिकपणुं कहीए, ते प्रणामिकपणुं ए वस्तुनो मुळस्वभाव ते नित्यधर्म छे तेने स्यातनित्य कहीए तथा तेज श्री गणंगजीने विषे चोभंगी कही छे.

॥ उक्तंच ॥

सियअत्थि १ सियनत्थि २ सियअत्थिनत्थी ३ सियअवत्तवं ४ एटले ए भांगामांहेलो पहेलो भांगो सियअत्थि कहेतां अवितथ एटले निश्चे एटले ते सदाय नित्यस्वभावे छे एटले ए पहेलो भांगो कह्यो. हवे स्यातअनित्य कहेतां जे पर्यायने विषे

अनित्यपणुं छे शा माटे जे उत्पाद व्यय ने ध्रुव ए त्रिभंगी जे छे तेमध्ये ध्रुवपणुं ते नित्यस्वभावे ग्रहण थाय अने उत्पादने व्यये ते अनित्यपणे ग्रहण थाय माटे उपजवुं तथा विणसवुं ए पर्यायनो धर्म छे ते पर्याय बे प्रकारना छे क्रमभावि १ स्वभाविक २ क्रमभावि जे नरनरकादिक गतिनुं उपजवु तथा विणसवुं तथा मतना जे पर्यायनुं परावर्तनधर्म ते क्षणक्षण उपजवुं ने क्षणक्षण विणसवु ए बन्नेथकी एटले उत्पात नेव्ययथकी ए पर्याय ग्रहण थाय छे तेने क्रमभाविपर्याय कहीए तथा स्वभाविकपर्याय कहेतां जे ज्ञानादिक गुणना पर्याय ते समये समये उत्पात ने व्यय थाय छे एटले षट्गुण हाणि वृद्धि ते अगुरुलघुपर्याय कहेवाय ते उत्पात ने व्ययथकी ग्रहण थाय छे अने अगुरुलघु ते ध्रुवथकी ग्रहण थाय छे ते सदाय नित्यज छे जे ज्ञानादिकना पर्याय कह्या ते मतिज्ञानादिक चारे ज्ञान सुधी ए क्षयउपसम उपयोगी छे ए कोइ समे अनंतगुणी वृद्धिनो पण उपयोग होय कोईसमे अनंतगुण

हाणीनो पण उपयोग होय एम अहियां खट्गुणी हाणिवृद्धिनो पण उपयोग होय तथा जे केवळज्ञान छे ते क्षायकभावि उपयोग छे, ते सदाय काळ लाधे ते जे जे द्रव्य क्षेत्र काळ ने भावने विषे सर्वे द्रव्यने विषे ए चारे प्रकारे खट्गुणी हानिवृद्धि थइ रही छे ए केवळने पण खट्गुणी हानिवृद्धि छे एटले ज्ञेयविनाशे ज्ञाननो पण विनाश थाय तथा ज्ञेयने उत्पाते ज्ञाननो उत्पात थाय अहियां कोइ कहेशे जे परनी अपेक्षाए हानिवृद्धि थाय छे पण सअपेक्षाए तो थइ नहि तेनो उत्तर जे स्वस्वभावमां अगुरुलघु पर्याय सदाय छेज ते पर्यायवडे ज्ञानादिक जे उपयोग ते स्वपरनुं जे जाणवुं ते ए पर्यायवते छे अने जो ए पर्याय न होत तो ए ज्ञानादिकनुं जाणवुं ते कुटस्थ थात शा माटे जे संसारनी मांहेली कोर जीवपुद्गळ घणा ते द्रव्योनुं समये समये परावर्त्तनधर्म छे ते जो तेनी साथे ज्ञानानादिकनो उपयोग नहि करे तो ए उपयोगने शुं कहीए केमके जे जगाए सामो दीठो ते छे-

काणे टेकरो थयो छे. हवे ते ठेकाणे ए ज्ञान सामो देखशे अने ज्यारे सामाने सामो देखशे त्यारे ए ज्ञान जुठुं थयुं ते कारण माटे जेम ज्ञाने पदार्थनुं फरखुं थाय तेमज ज्ञानादिक पर्याय फरे एटले ए अगुरुलघुपर्यायनो स्वभावज छे ए रीते पर्यायनो परावर्त्तनधर्म एटले पहेले समये हतो तेनो नाश थयो ने बीजे समये नवा पर्याय उत्पन्न थाय ए रीते पर्यायनुं परावर्त्तनधर्म ते सदाय अनित्यज छे ते श्री ठाणगजीनी चौभंगी प्रथम लखावी छे तेमाहेलो बीजो भांगो अहियां लागे छे ऐ प्रमाणे स्यातअनित्य बीजो भांगो थयो हवे त्रीजो भागो स्यातनित्यानित्य कहीए छीए जे पूर्वे स्यातनित्यने विषे जीवद्रव्यादि सर्वे नित्य कह्यां छे जे समये नित्य छे तेज समये पर्यायादिक सर्वे अनित्य छे एटले एक समये बे भाव भेगा लाधे छे, एटले स्यातनित्यानित्य त्रीजो भांगो कह्यो तथा ठाणंगजनी चोभंगीमां ए त्रीजे भांगे छे हवे स्यातअवक्तव्य चोथो भांगो ते ठाणगजीनी चौभंगीमां चोथो भागोज छे. हवे अ

वक्तव्य कहेतां वचनथकी उच्चारण न थयुं माटे एने अवक्तव्य कहीए ते नित्य द्रव्यादिक अनंता पदार्थ छे अने अनंतागुणादिक पण छे. ते नित्य छे पण ते मुखथकी बधा उच्चारण थाय नहि, तेथी ते स्यात् नित्यअवक्तव्य पांचमो भांगो जाणवो तथा जे पर्याय पण अनंता तथा केटलाएक गुण लक्षण स्वभाव ते पण अनित्य छे ते अनंता छे ते पण कंइ मुखथकी कह्या जाय नहि तेथी एने अवक्तव्य कहीए एटले स्यात् अनित्यअवक्तव्य छठो भांगो थयो तथा नित्यपदार्थने अनित्यपदार्थ युगपत् कहेतां ए बे भेगा जे एक समये उच्चारण थता नथी माटे एने युगपत्अवक्तव्य सातमो भांगो कहीए अहियां कोइ कहेशे जे त्रीजा भांगा ने सातमा भांगामां कंइ फेर पडतो नथी, तेनो उत्तर जे त्रीजे भांगे कंइ वक्तव्य अवक्तव्य कहेवानुं कारण नथी पण नित्य कहीए त्यारे अनित्य बोलाय नहि नित्य कहेतां अनित्यनुं मृषावाद लागे अनित्य कहेतां नित्यनुं मृषावाद लागे शा माटे के बन्ने

साथे तो बोलायज नहि तेतो अनुक्रमे बोलाय ए माटे स्यात्पद लइने बोलीए के कंइ दूषण लागे नहि एटले ए त्रीजा भांगानो विचार कह्यो हवे जे सातमो भांगो छे ते अवक्तव्य आशरी छे एटले जे वचनथकी उच्चारण नथी थया एवा जे पदार्थ गुणपर्याय प्रमुख जे नित्य पण अ-वक्तव्य छे ने अनित्य पण अवक्तव्य छे एकेको बोलवाने पण अवक्तव्य छे तो भेगां बन्ने बोल वा ते तो शेना होयज माटे ए युगपत्अवक्तव्य-ज छे एटले ए नित्यअनित्यनी सप्तभंगी देखाडी ए सप्तभंगी जे जाणे तेने समकिती कहीए जेणे ए सप्तभंगीनु स्वरुप जाण्युं नथी तेने मिथ्यात्वी कहीए ए श्री विशेषावश्यक ग्रंथमध्ये कह्युं छे

॥ उक्तंच ॥

सदसदविशेषणाउ । भवहेउजहछीउवलं उनाणफलाभावाउ मिथ्यादिठीसअन्नाणं ॥ १॥

ए गाथानी टीकामध्ये स्याद्वादोपलब्धिहिना वस्तु स्याद्वादसच सप्तभंगी परिणाम इत्यादिक अर्थ छे तो मुळ ए गाथामा सदसद् एवुं जे पद

छे.तेथकी सत्य असत्यनुं जाणवुं तेने समकिती कह्या छे एटले सदसद् कहेतां जे सप्तभंगी अनेक जातनी वस्तु ग्रहण थाय अने असत्य वस्तु दूर थाय तेने समकिती कह्या ए विनाना जे रह्या तेने मिथ्यादृष्टि कहीए तेमज रत्नाकरावतारीकाने विशे कह्युं छे.

॥उक्तंच॥

एके कस्मिन द्रव्ये गुणे पर्याये च सप्त सप्त भंगाभवंत्येवःअत.अनंत पर्यव परिणते वस्तुनि अनंताः सप्तभंग्योभवंति

एनो अर्थ एने विषे एवुं कह्युं जे एक एक द्रव्यगुण प्रजायने विषे सप्तभंगीओ थाय अनंता प्रजायनुं परिणमवुं वस्तुमां अनंतु छे तेथी सप्तभंगीओ पण अनंती थाय माटे जैनधर्मने विषे जे स्याद्वाद धर्म स्वग्राही पणाने विषे छे ते सत्य छे ते उपलीए टीकाना अर्थ थकी समजी लेजो माटे ए स्याद्वाद वीना जे मार्ग चलवे छे ते अज्ञानी छे एटले ए स्याद नित्यानित्यनी सप्तभंगी पुर्ण थइ एटले ए बीजी सप्तभंगी

पुर्ण थइ हवे त्रीजी सप्तभंगी एक अनेकनी क-
हुं हवे एक कहेतां जे आत्मद्रव्य ते एक-
ज छे ते श्री भगवतीजीमां कह्युं छे के दवट्ठी आ
एगासोआ एटले आत्मद्रव्य सदाए साश्वतो छे
तेनो विचार कींचीत् मात्र कहूं छुं तथा सच जीव
द्रव्य सकरमी तथा अकरमी ते मध्ये ससारी स-
करमीने द्रव्य कहीए क्षेत्र थकी क्षेत्रांतरगमन का
ळ थकी काळांतरगमन भाव थकी भावांतरगमन
ए चारे प्रकारे संसारी जीव एकत्वपणे भोगवे छे
तेज जीव जेवारे सम्यकदर्शन पामे तेवारे सम्य-
कज्ञान पण प्रगट थाय सम्यक चारीत्र पण प्रगट
थाय तेवारे ते जीव पुर्वे द्रव्यादीक चारे भाव
हता ते परभाव ग्राही हता ते द्रव्यादीक चारेनो
आहियां नाश करे अने परभुक्तापणु दुर करे त्या-
रे पोतानुं आत्मस्वरुप नीर्धारपणे स्वरुप भासन
थाय त्यारे पोताना स्वरुपमां पोते रमणता करे
त्यारे स्वरुप एकत्वपणेज स्वधर्मनो कर्ता पोते
थयो अने स्वधर्मनो भोक्ता पण ते थाय त्यारे
सपुर्ण परभावने तजे त्यारे नीरावर्ण नीसंग नी

रामय नीर्धंघ नीमेळ सर्वे कलंक रहीत एवुं पोतानुं स्वरुप प्रगट थाय त्यारे अनंत चतुष्टयनी प्राप्ती थाय माटे ए सर्वे पद कह्यां ते सर्वे मळीने एक आत्मद्रव्य छे माटे स्यात् एक ए पहेलो भांगो थयो हवे बीजो भांगोस्यात् अनेक ते कहीए छइए ज्ञान आत्मा दर्शण आत्मा चारीत्र आत्मा वीर्य आत्मा इत्यादीक अनेक भेद छे तो पण अहिआं गुण अनंता छे ते मध्येथी एक ज्ञानगुणना अनेक भेद देखाडुं छुं ते संक्षेप थकी जाणजो हवे ज्ञान एवो एकगुण तेना पांच भेद छे मतीज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधीज्ञान ३ मनपर्यवज्ञान ४ केवळज्ञान ५ ते मध्ये मतीज्ञानना बे भेद छे इंद्रीग्राही १ मनग्राही २ तथा बीजे प्रकारे व्यंजनावग्रह १ अर्थावग्रह २ ते व्यंजनावग्रहनां चार भेद छे ते कहीए छइए श्रोतइंद्री १ घ्राणइंद्री २ रसइंद्री ३ फरसइंद्री ४, ए चार इंद्रीए करीने जे ग्रहण थाय तेने व्यंजनावग्रह कहीए ते अवक्तव्य भावमां जाय, हवे अर्थावग्रह कहुं [illegible] १ चक्षुइन्द्री २ घ्राण-

इंद्री ३ रसइंद्री ४ फरसइंद्री ५ छट्ठुं मन ए
छ वमे ग्रहण थाय तेने अर्थावग्रह कहीए
हवे ग्रहणना चार भेद छे ४ अर्था १ इहा २
अपाय ३ धारणा ४ ए चारे प्रकारे ग्रहण थाय
ते मध्ये अर्था कहेतां पुर्वे जे छ बोल कह्या ए
छ बोल थकी जे वस्तुनी प्राप्ती थइ तेने अर्थ
कहीए हवे ते अर्थ थकी प्राप्ती थइ पण वस्तु
ओलखी नहि त्यारे तेनो वीचार करे तेने इहा
कहीए के ए शब्द केनो छे १ ए रुप कोण छे
२ ए खुशबोइ शेनी आवी ३ आ रस केवो छे ४
आ फरस शुं थयो ५ आ मन सांमे गयु ६ ए
छ एनी ईहा कहेतां वीचार करे त्यार पछी अ-
पाय कहेता नीश्चे करे जे अमुक वस्तु अथवा
अमुक शब्द इत्यादीक नीश्चे करे तेने अपाय
कहीए त्यार पछी धारणा कहेता जेने जेवो क्षयो
पसम होय तेटला काळ सुधी धारणा रहे एटले
ए अर्थादीक चार बोल साथे छे ए बोल पुर्वना
जोमतां चोवीश भेद थाय अने चार बोल पुर्वे
व्यजना वग्रहना कह्या ए जोमतां अठावीश

भेद मती ज्ञानना थया तथा मती ज्ञाननां त्रणसेने छतरीस भेद पण थाय ते त्रणसेने छतरीश भेद विवरीने कहिए छिए ते तत्वार्थ ग्रंथ थकी

॥ उक्तंच ॥

वहू १ वहुविध २ क्षीप्र ३ अनिसृता ४ अनुक्त ५ ध्रुवाणं ६ सेयराणं ॥१६॥ एना अर्थ बहु कहेतां एक शब्दने विशे घणा पदार्थ आवे जेम पुरुष छे एटलुं कहेतां घणा पुरुषनो समावेश मही थइ जाय अथवा जेम धनो ढगलो कहेतां घणा धन मही आवे १ अथवा बहु वीध कहेता तेज धननो ढगलो बहु वीध कहेतां ए धन चोखा दाळ मग जुवार आदे ए सर्वे एक पदमां समाय अथवा बहु वीध माणश बेठां छे तो ते मध्ये स्त्री पुरुष नपुसक छोकरा अथवा मनुष्यनी अनेक जाती मही समाइ २ क्षीप्र कहेतां उतावळो अर्थने जाणे तेने क्षीप्र कहीए ३ अनिसृता कहेतां निश्चे वीना जे जे वस्तुनु ग्रहण करवुं तथा अर्थनु ग्रहण करवुं तेने अनीस्मृता कहीए ४ अनुक्रम कहेतां कांइक कहतुं अथवा सर्वेने

कहूलु ते अनुक्रमे चे बोल ५ एकवार वस्तुग्रही ते काळतरे जुले नहि ६ ए छए बोल थकी ऊ-पराठा एटले विपरीत ए छए बोल कहेवा एक केवो १ एक बीधकेवु २ घणाकाळे केवुं ३ नीश्री-तकेवुं ४ अकतकेवु ५ अध्रुवकेवुं ६ ए बारे बोल नुं ओळखाण करावुलु एटले कोइ पुरुष कोइ वातने जाणी एटले थोरु कहेवा थकी घणा प-दार्थने समजे तेने बहु कहीए १ तथा कोइ पुरुष एक वात जाणीने महो घणा पदार्थनुं जाणपणुं थाय तेने बहुवीध कहीए २ क्षीप्र कहेतां जे कोइ पदार्थ देखवो तथा शब्दादीकनु सांभळवुं ते तरत अर्थने ग्रहण करे ३ अनस्मरीता कहेतां जे वस्तु पदार्थनो कांइपण नीश्चे करयो नथी तेने अनी-स्मृती कहीए ४ जे एक वचन कोइने कहेवुं अ-थवा सांभळवु इत्यादीक अनुक्रमे करीने समजवुं तेने अनुक्रमीका कहीए ५ हवे जे कोइ वस्तु सां-भळी छे वा दीठी छे इत्यादीक तेनी धारणा घ-णा काळ सुधी पण जुले नहि तेने ध्रुव कहीए ६ हवे जे प्रथम बहु कीधो तो ते एक वचनमा

घणुं समजता तोपण आतो ए थकी उपरांत
छए बोले छे ते मध्ये एक वचने एकज समजे
१ हवे एकविध कहेतां एकज पदनी वात जाणे
बीजा पदनी वात जाणे नहि २ एक वात सम-
जतां घणीवार लागे तेने चीरकाळ कहीए ३
निस्यात कहेता वस्तु तथा अर्थ यथार्थ समजे
नहि ४ अनुक्रम विना आगळ पाछळ समजे ५
अने अध्रुव कहेतां ए वातनी यादी रहे नहि ६
ए बार बोल थया ते पुर्वना अठावीस बोलने
बारगुणा करीए एटले त्रणसेंनेछत्रीस बोल थाय
तथा तेज त्रणसेंनेछत्रीस बोलने उतपातादीक
चार बुद्धिद्वारे गणीए त्यारे तेरसेंनेचुमालीश भेद
थाय ए रीते मतीज्ञानना भेद समजवा. ए बोल
सर्व समकीतीमां लाभे कोइमां ओछा, कोइमां
वत्ता, कोइमा सामान्य, कोइमा विशेष ते सम-
कीतनो भेद कीवीत् देखामीए छइए के,–

॥ उक्तंच ॥

तत्वार्थे निर्देश १ स्वामित्व २ साधना ३
अधीकरण ४ स्थिती ५ विधान ६ सत्तसंख्या ७

क्षेत्र ३ स्पर्श ४ काल ५ अंतर ६ भाग ७ अल्प बहूत्वेश्च ॥

एनो अर्थ लखीए छइए प्रथम जे निर्देष एवो जे शब्द छे एटले ते जीवादिक स्वरुपनुं कहेता तत्वार्थनु सदहवु एटले कोइ अहिंया पुछे जे सम्यक् दर्शन उपजे ते शुं एटले तत्व कहेतां जे नव पदार्थ ते मध्ये जीवादी तत्वनी श्रद्धा एटले नवे तत्वनी श्रद्धा सर्व सर्वने स्थानके जीवतत्व एटले आत्मा अरुपी ज्ञानादीक गुणे करी सहीत तेने सत्य करीने जाणवो बाकी सर्वे असत्य. अहिया कोइ कहेशे जे संवरादिकने असत्य केम कहो छो? तेनो उत्तर जे संवर, निर्जरा अने मोक्ष ए तो पोतेज छे ए काइ भिन्न नथी, अने जे निर्जरा पद छे ते अधुरो छे त्या सुधी छे अहिंयां कोइ कहेशे जे मोक्षथी मुकाय त्यां सुधी होय, मुकाया पछी तो कइ मुक्तिथवानी नथी ए पण अधुराने दीसे छे तेनो उत्तर जे नीर्जरा तो तेरमा चउदमा गुणठाणा सुधी छे अने मुक्ती तो चउदमाने अन्ते छे, जे

जीव अद्दियांथकी मुकाइने सीद्धिपद वर्यो तेने फरी मुकावुं नथी ते सदाए मुक्तज छे अने निर्जरा छे त्यां सुधी बंध पण छे एटले पेहेले गुणठाणेथीज निर्जरातो लागु छेज, माटे अधुराने निर्जरा छे ने मुक्ति संपुरणने छे माटे ए आत्मथकी भिन्नपद नथी माटे एवी आत्मस्वरुपनी जे ने श्रद्धा वेठी तेने समकीत उपज्युं कहिये ए पहलो भेद १ हवे बीजो भेद जे स्वामीत्व केहेता ए समकीतनो स्वामी कोण छे ते समकीनो स्वामी जीव आत्मा पोतेज छे तेने गति आसरी स्वामीत्वपणुं देखाडीए छइए, हवे ते जीव साते नरकने विषे समकीत पामे छे, शा कारणथकी ते कहीए छइए, जे नरकनी वेदना घणी आकरी अने अघोरछी ते उश क्षुधा तृषा प्रमुख वेदतां थकां दुःखथी गभराणो थको दुःखथी छुटवानो उपाय पोते न दीठो तेवारे भावी उपर चीत्त देइने संतोष करे अने समभावे वेदना वेदे ते मध्ये कोइ जीव जातिस्मरणज्ञान पामे कोइ न पामे तेवारे पोताना पुर्व कृत्य कर्म जाणीने दुःख भोगवतो

समजावे थाय ने वैराग्यनी वृद्धि थाय संसारने अनित्य जाणे, एम करता कोइक जीव मोहनी कर्मने उपसमावतो उपसम समकीत पामे १ क्षयोपसम समकीत २ क्षाएक समकीत ३ ए त्रणे समकीत नरकगतीने आश्री लाधे तथा तिर्यचगतिमां तथा मनुषगतिमा तथा देवगतिमा एटले चारे गतीमा लाधे अहिंआ कोइ प्रश्न करे छे जे क्षाएक समकीत एक मनुष्यगतिमातो लाधे छे पण बीजी त्रण गतिमातो क्षाएक समकीत लाधे नहि तेनो उत्तर गत आयुबंध क्षाएक समकीतवाळो चारे गतिमा लाभे एटले ए स्वामीत्वपणुं देखाड्युं २ साधन केहेता समकीतनु साधन एटले कारण ॥ ते कारण वे प्रकार छे एक अन्तरथकी बीजुं बाह्यथकी ते मध्ये अतर कारण छे तेनो समकीत मोहनीना तथा मोहनीकर्मनी प्रकृतिओनो उपसम ते थकी उपसम समकीत थाय १ तथा मिथ्यात्वादीकने कइक क्षय करे, कइक उपसमावे तेने क्षयोपसम समकीत थाय २ तथा साते प्रकृतिनो क्षय करे तेने क्षाएक समकित थाय

ते अंतरंग कारण छे तेतो आत्म स्वभावनो खप करतां मोहीनी खपे ते विना मोहिनी सर्वथा खपे नहि एटले ए अंतर कारण कह्युं हवे बाह्य कारण कहीए छीए जे चारे गतिने विषे वेदना प्रमुख अनुभवतां थका वैराग्य प्राप्त थाय अथवा जातिस्मरणादिक उपजवाथकी कोइ जीवने वैराग्य उत्पन्न थाय एवांज कारण मळवाथकी वैराग्य तथा आत्म स्वभावनी गवेषणा ते थकी मोहनीने उपसम १ अथवा क्षयोपसम २ अथवा क्षाएक ३ ए समकीतनी प्राप्ती थाय एटले ए त्रीजो हेतु कह्यो हवे चोथो अधिकरण एटले समकीतनो आधार ते शुं ? समकीतनो आधार एक आत्मा छे ते विना बीजोकोइ आधार नथी एटले समकीत ते गुण छे, अने आत्मा ते द्रव्य छे ते गुण द्रव्य विना रहेतो नथी, जेम घट ते द्रव्य, अने जळधारण ते गुण, ते जळ धारण घट विना होय नहि एटले घटने आधारे जळ रहे छे तेमज आत्माने आधारे समकीत रेहे छे. अहिआं कोइ कहे छे,जे,–द्रव्य

तथा गुण भिन्न पणे गया, ए जोता अभेद स्वभाव असत्य ठरे तनो उत्तर जे घट अने जळनो दृष्टात दीधो, ते दृष्टात तो देशेज होय पण साकरनी मीठाश ते भिन्न होय नहि, ते एक रुपेज छे तेम आत्मा अने समकित एकत्व भावेज होय पण भिन्नभाव न होय अहिआ जे भिन्नभाव वचन उचारण कर्युं तेनु कारण एम छे जे हेतु ए छए बतावाना छे तेथी ए व्यवहारनयनी परुपणा छे ने व्यवहारनय थकी सदाए भिन्नभाव होय निश्चे थकी अ भिन्न वस्तुज छे एटले ए अधिकरण चोथो हेतु कह्यो ४ पांचमो स्थिती हेतु केहेतां समकीतना काळनु प्रमाण जघन्यथकी अंतर्मुहूर्तनी स्थिती कही छे अने वंच आउखानी स्थिती आ सरीने त्रण तथा चारभव सुधी समकीत रेहे ए क्षाएक समकीतने आसरीने कह्यु छे एटले एनी स्थिती उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपम काझेरी जाण वी तथा क्षयोपसम समकीतवाळानी स्थिती छा सठ सागरोपम काझेरी जाणवी जघन्य अंतर्मु-

हूर्त जाणवु २ तथा उपसम समकितनी स्थिती जघन्य तथा उत्कृष्टी अंतरमुहुर्तनी जाणवी एटले ए स्थिती हेतु पांचमो भेद कह्यो ५ हवे छठो भेद विधान एवे नामे त्यां निसर्ग केहेतां कोइक गुरु उपदेश विना समकित पामे छे कोइक गुरु उपदेश थकी पामे छे तथा उपसमादिक समकीतना अनेक भेदे जीव छे ते विधान कहिए एटले हेतुविधान कह्या ६ एटले ए छए हेतु सक्षेपथी कही देखाडया तथा बीजे प्रकारे पण समकीतनो जीवने निर्णय थाय एवा आठ भेद छे ते प्राप्ती समकीत थवानी ते कहिए छीए ॥ सत्य १ ते द्रव्यादि जीवसत्ता १ सख्याते गणवु २ क्षेत्र ते वसवानुं स्थानक ३ स्पर्श ते चौदराजलोकने फरसवानुं ४ काळमुख तथा वेहेवार ५ अने व्यवहार काळ अंतर ६ भाव ते उपसमादिक. ७ अने अल्प बहुत्व ते आठमो ८ ए आठे प्रकारे करी जीवनो निश्चे थाय, ते हवे वेवरीने देखाडीए छैए. त्यां सामान्यपणे एवो शब्द ... सत जीव मिथ्यादृष्टी प्रथमना छ

गुणठाणा सुधी छे एटले वेहेवारथकी व्रत नेम चारित्रीय श्रावक समकीती ते सर्वे मिथ्यादृष्टी छे वेहेवार नयना पक्षथकी उत्तम कहीने बोलावीए छीए तथा सास्वादन गुणठाणाथकी उत्तम उपला गुणठाणा छे ते पुग्मावार जेनो प्रगट थयो होय तेवा जीवोने जोइ ते केवु नरक तथा देवताउ ए चोथा गुणठाणा सुधी होय तिर्यच पाचमा गुणठाणा सुधी तथा मनुष्य चौदमा गुणठाणा सुधी जाणवा ए सतजीव जाणवा ए प्रथम भेद थयो ॥१॥ हवे सख्या कहेता बीजो भेद कहिए छिए ते सख्याना बे भेद छे सामान्यपणे मिथ्यादृष्टि जीव अनताने अनंती सख्या विशेष पणे चौद गुणठाणाना जीव सख्याता जाणवा एवुं आ टीकामातो छे, परतु चौद गुणठाणा ते चौदमा गुणठाणाना जीव सख्याता ठरे पण चौदे गुणठाणाना भेगा करता तो जीव अनता ठरे माटे चौदमा गुणठाणाना सख्याता ते सत्य ठरे तथा पाचमा गुणठाणाथी मांडीने चौदमा गुणठाणा सुधीना जीव सख्याता ठरे पण चो

था-गुणठाणाना भेगा लक्ष्ए तो असंख्याता जीव जाणवा शा माटे के उत्तम गुणठाणुं चोथाथो केहेवाय छे माटे उत्तम गुणठाणाना जीव असंख्याता छे, ए वात सत्य छे ए बीजो भेद २ तथा क्षेत्रथकी संख्या बे प्रकारनी छे सामान्यपणे मिथ्यादृष्टी आदे देइने चौदे राजलोक प्रमाणे क्षेत्र छे अने सास्वादनादिक गुणठाणाना जीवोनुं क्षेत्र लोकने असंख्यातमा भागे छे. एटले ए जे मिथ्यादृष्टी जीव छे ते लोकव्यापी छे एटले थावरादिक जीव चौद राजलोकमा व्यापीने रह्या छे अने सास्वादन गुणठाणाना जीव ते विकलेंद्रीथी निचि गतिमां नथी अने त्यांपण उत्पन वखत छे तेपण पृथ्वीने आधारे छे अने समकीत गुणठाणाना जीव चार गतिमा लाधे तेपण पृथ्वीने आधारे रह्या छे अने पाचमा गुणठाणाथी जे जीव रह्या छे ते तो मनुष्य क्षेत्रमाज लाधे छे माटे ते लोकने असंख्यातमा भागेज होय एटले ए त्रीजो भेद कह्यो हवे स्पर्शनो ...ो भेद तेना बे प्रकार छे ते मध्ये मि-

ध्याती जीव सघळोए लोक फरस्यो छे अने उत्तम गुणठाणाना जीवो पोतपोतानु स्थानक फरशीने रह्या छे ते मध्ये केवळी परमात्मा समुद्घात करे ते वखत आखो लोक पण फरसे एम ए विशेष प्रकारे जाणवो एटले ए फरमनो विचार कह्यो हवे पांचमो भेद काळ स्वरुपनो तेना बे भेद छे एक सामान्यकाळ बीजो विशेषकाळ ते मध्ये सामान्यकाळ पणे जे मिथ्या द्रष्टी जीव तेने सर्वे काळ लेवो एटले अनविने तो अनादि अनतकाळ छे अने भवी जे मिथ्याती रह्या ते कंइ सर्वे जीव तो मोक्षे जवाना छेज नहि माटे तेने पण अनादि अनत भागा जेवुं छे माटे एने पण सर्वे काळ लेवो एटले ए मिथ्याती जीवनी अपेक्षा आश्री कह्यो ते मिथ्याती जीवना काळना त्रण भेद छे ते कहुछु कोइक जीव तो अनादि अनंतकाळना छे १ कोई अनादि सतकाळना छे २ केटलाएक सादी संतकाळना छे ३ मिथ्याती आश्रीने त्रण भागा जाणवा तथा जे समकीती जीव छे ते मध्ये सास्वादन समकीतनो छआवलीनो

काळ वे अथवा उपसमक्षयोपसमक्षाएक ए सर्वेने गुणठाणाने आश्रीने सादी संतकाळ छे अने भव्य जीवने अनादि संतकाळ होय एटले ए काळनो पाचमो भेद कह्यो हवे आतुर नामे छठ्ठो भेद कहीए छीए आतुर केहेतां विवक्षित गुणठाणाथी अपर गुणठाणानी प्राप्ती तेनी आतुर ठे ते केहेतां जे पाम्या चोथुं गुणठाणुं त्यां थकी आगळ जावानी ईच्छा होय त्यांसुधी जे उपरला गुणठाणानी प्राप्ती न थाय त्यांसुधी तेने आतुरभाव कहीए तथा तेमज समकीत पाम्यानंतर कोइक जीव वमी जाय कोइक न वमे जे वमी जाय तेने अर्धपुद्‌गल परावर्तननुं आतरु कहीए अथवा जे नथी वम्या ते जीव उपरलु गुणठाणुं न पामे त्यांसुधी तेने आतुर कहीए ए आतुरनो छठ्ठो भेद कह्यो हवे सातमो भेदभाव एवे नामे ठे तेना पांच भेद ठे उपसम १ क्षयोपसम २ क्षाएक ३ ओदयिक ४ परिणामीक ५ ते मध्ये मीथ्यादृष्टी जीवने ओदयिकभाव संपुर्ण भेद ते नामे लाधे उदीक कहेतां कर्मना फळनी प्राप्ती उदे

आवे ते वखत तेने उदीक भाव कहीए ते मिथ्याती जीवोने वीशे एकवीशे प्रकार लाधे समकीती जीवमा कोइ लाधे कोइ न लाधे ए प्रथम भावनुं लक्षण तथा उपसम भाव प्रथम समकीत पामती वखत जीवने होय तथा उपसम श्रेणीए होय तथा क्षाएक भाव चोथा गुणठाणाथी मास्रीने सीद्ध पर्यतने होय ते नवे भेद लाधे तथा आठ लाधे तथा केटलाएक आचार्यने मते आठमे गुणठाणेथीज पामीए एटले क्षायकभाव कह्यो तथा क्षयोपसम भाव ते चोथा गुणठाणाथी ते समकीत आसरीने तो आठमा सुधीज पामीए, चारीत्रादीक आसरीने दशमा सुधी पामीए, ज्ञानादिक आसरीने बारमा गुणठाणा सुधी पामिये ते उपरात क्षायकभाव पामिये तथा सासवादन गुणठाणे पण उपसम क्षयोपसम भाव कींचित् लाधे एटले क्षयोपसम भाव कह्यो तथा परणामीक भावतो आ ग्रंथ आसरीने समकीतीने कह्यो छे तथा बीजां शास्त्र आसरीने सर्वे जीवने परणामीक भाव होय ए-

भाव सातमो कह्यो पण ए भाव स्वरुपने विषे जे गुणठाणानो विचार छे ते मध्ये एक एकगुणठाणे उपर चमतां अध्यवसायनां थानक असंख्यातां तथा अनंता अत्यंत सुक्ष्म वार्ता छे ते वात समजणमां आवे तो तेने तो कल्याणकारी छेज अथवा समजमां न आवे तो ते वचन उपरीए रुची राखवी अने ते वातनी श्रद्धा करीने सदाय तेने पण कल्याणकारी छे अहियां कोइ कहेशे जे संजमश्रेणीमां अध्यवसायनां थानक सर्वेमाहे आवी गयां छे तेने कहीए के ए वात ठीक पण संजमश्रेणी जे छे ते देश थकी छे पण संपुर्ण अध्यवसायने ग्रहण करता नथी तथा संजमश्रेणीनां जे शास्त्र तेने विशे आत्माना अध्यवसायज ग्रहण कर्या नथी एतो कर्मनां बंध प्रकृतिना पलीछेद प्रमुख ग्रहण करेला छे माटे अहियां आत्म अध्यवसाय कहेवाता नथी अने आज थानकने विशे आत्म अध्यवसायने ग्रहण करवा छे शा माटे के अहियां तो भावनी ग्रहणता छे द्रव्यनी ग्रहणता नथी एटले ए,

सातमो भेद भाव नामे कह्यो. हवे आठमो अ-
ल्प बहुत्व नामे भेद कहीए छीए त्या सर्वथकी
थोमामा थोमा जीव सासवादन समकीतवाळा छे
ते थकी विशेश जीव उपसम भावना छे ते थकी
असख्यात गुण क्षयोपसमवाळा छे ते थकी अ
नंत गुण क्षाएकवाळा छे ते थकी अनंतगुण
मीथ्यात्वी छे एटले ए आठमो बोल अल्प बहु-
त्व कह्यो ए आठे बोलवमे करीने जीवनी उळ
खाण समकीनी तथा मीथ्यातीनी समज पमे
तथा पुर्वे छ बोल कह्या ते समकीतना हेतु छे
ए सर्वेने जाणवाथकी समकीत गुण थाय अने
तेने समकीती कहीए अने ते जीव समकीतीने
विशे मतीज्ञानना भेद कह्या ते पामीये ते वि
नाना जीव रह्या तेने विशे उलट सुलट समजवा
अथवा अधीक न्युन होय एम समजवु होय
तथा तेरसोने चुवाळीश भेद पण थाय इत्या-
दीक अनेक भेद मतीज्ञानना पण छे तथा श्रुत-
ज्ञानना पण अनेक भेद छे त्या चउद तथा
वीश भेद कह्या छे ते तो उत्पती आदीक कह्या

छे, ते तो द्रव्यथकी छे तथा भावथकी श्रुतज्ञानी जीवो असंख्याता छे अने असंख्याता ए श्रुतज्ञानना उपयोगने विषे सामान्य विशेषपणुं भासन थाय छे तेथी ए श्रुतज्ञानना पण असंख्याता भेद भासे छे तथा अवधीज्ञानना पण असंख्याता भेद छे. अहियां कोइ कहेशे जे छ भेद कह्या छे ते तमे केम बोल्या नहि तनो उत्तर जे एतो परावर्तन काळ आसरी छे अने अवधीना भेद तो जेटला आत्माना प्रदेश एटला ए भेद अवधीना जाणवा ते अधीकार नंदीसुत्र थकी तथा ज्ञान अधीकार थकी जोइ लेजो. तथा मनपर्यवज्ञानना बे भेद छे तथा केवळज्ञान तो एकज छे एटले एक ज्ञान गुण तेना पर्याय असंख्याता कह्या तथा संख्याता पण छे तथा अनंता पण छे एटले केवळज्ञानना अनंता पर्याय कह्या छे तथा चउद गुणस्थानक ए पण चउद आत्मा कहीए ए सामान्यथकी छे अने तेज गुणस्थानकना भावने वीचारीने करीए तो अनंता आत्मा थाय तथा वासठ मार्गणाने वा-

सेठे न्नेद आत्मा थाय इत्यादीक अनेक न्नेद आत्म स्वन्नावना थाय माटे स्यात् अनेक न्नांगो थयो एटले जे समे एक छे तेज समे अनेक ठे. अने जे समे अनेक ठे ते समे एक ठे एटले ए स्यात् एक अनेक ए त्रीजो न्नांगो थयो तथा स्यात् अवक्तव्य ए चोथो न्नांगो एटले एक द्रव्यनु पण सर्व वक्तव्यतामा न आवे तथा अनेक जे गुण पर्याय न्नेदे अनेक आत्मा मानीए ते पण वक्तव्यतामा जे न आवे तेने अवक्तव्य कहीए ॥

॥ उक्तच ॥

अनीलप्पा जे न्नावा अणंतन्नागोय अणभिलप्पाण अभिलप्पाणतो न्नागसुयनिबद्धोय ॥१॥

अर्थ–एटले अनीलाप एटले मुखथकी जे उच्चारण करवु ते अक्षरनो सन्नीपात कहेतां संजोगीन्नाव ग्रहण करीए, ते असंख्याता अक्षर सन्नीपातने ग्रहेवाय एवा जे पदार्थादीकना न्नाव ते अनतगुण छे तेतो वक्तव्य स्वन्नाव कहेवाय. ते थकी अवक्तव्य स्वन्नाव अनंतगुणो ठे शा

माटे जे मतीज्ञान तथा श्रुतज्ञाननुं अभिलाप कहेतां जे न्नासन करवु ते तो परोक्ष प्रमाण ग्राहक ठे तथा अवधिज्ञान पुद्गळने वीशे प्रत्यक्ष प्रमाण ठे एटले पुद्गळ परमाणु प्रत्यक्षपणे ए जाणे तेपण परमाणुना सर्व पर्यायने जाणे नहि ने केटलाएक पर्याय जाणे ते पण असंख्याते काळे जाणवामां आवे अने केवळज्ञान तो ठए द्रव्यना सर्व पर्यायने एके समे जाणे ए प्रत्यक्ष ज्ञान माटे ए द्रव्यमां वक्तव्यपणुं पण ठे तो श्रुतज्ञानथकी ग्रहण थाय छे अने ए थकीज ग्रंथ तथा उपदेश सर्व थाय ठे ए सर्व कामसीद्धी ठे ते कारण माटे वक्तव्यन्नाव पण सीद्ध छे तथा अवक्तव्यन्नाव पण मीद्र छे. अहियां कोइ कहेशे जे अवक्तव्यन्नाव जोवामां नथी आवतो ते केम मनाय? तेनो उत्तर जे अवक्तव्यन्नावने नहि माने तो अतीत पर्याय तथा अनागत पर्याय जुठा पमे शा माटे जे वस्तुमां कारणता परंपराए रही ठे वस्तुमां ठती पर्याय ठे पण सामर्थ्य पर्याय ठे नहि तेथी जोवामां

आवे नहि माटे जेवारे अतीत पर्यायने अनागत पर्याय मानीए तो वर्तमान वस्तु नीशवार थइ जाय तेवारे कुत्स्नपणु आवे अने वस्तुधर्म ने विशे अनंता कारण रह्यां छे तथा अनंता धर्म पण रह्या छे माटे अतीत अनागत पर्याय अवश्ये मानवा जोइए ए सर्व जोग त्या रह्या छे अहियां एक दृष्टान कहीए छिये जेम कोइ जीव जन्म पाम्यो तेने वर्तमानकाळे बाळ अवस्था छे, तेथी एनो पुरुषाकार अवक्तव्यभाव छे, ते अनागतकाळे एनो पुरुषाकार प्रगट थशे ते वात हाल वर्तमानमा कइ दीसती नथी माटे एने न मानवी तो ए हाल वर्तमानमा अवक्तव्यभाव दीठामां आवे छे तथा अतितकाळे एनो पुरुषाकार हतो ते पण अहिया दीठामां आवतो नथी अने एने पुरवे शुभाशुभ कर्म कर्या ते पुरुषाकारपणामा कर्या छे अने ते कर्म अहियां शुभाशुभ वेदे छे ते तो प्रत्यक्ष वक्तव्यभावे छे अने अतीत पुरुषाकार ते अवक्तव्य छे माटे ते वस्तु नहि मानीएतो ए शुभाशुभ शा वमे वेदे छे

तेनो स्वामी खोळी लावो, माटे अवक्तव्यभाव छे ते सत्य छे हवे एनो उपनय जोमीए छैए जेम ए बाळक तेम अहियां द्रव्य अने तेना जे पर्याय. जेम ते बाळक मोटो थाय तेम बाळभावनो नाश तरुणभावनी उतपत्ति तेम अहियां द्रव्यने विशे पूर्व पर्यायनो नाश ने नवी पर्यायनी उतपत्ति एटले अतीत अनागतना पर्याय तेज केटलाएक वक्तव्य कटलाएक अवक्तव्य भावे छेज, एम मानवुं जोइए अने जो वक्तव्य अवक्तव्य भाव नहि मानो तो शुं देखीता भावने मानशो तो नास्तीकपणु आवशे, माटे अवक्तव्य भागो चोथो ते सत्य छे. तथा एक अवक्तव्य ए पांचमो भांगो तथा अनेक अवक्तव्य ए छट्ठो भांगो तथा एकअनेक जुगपत अवक्तव्य ए सातमो भांगो एनो अर्थ पुर्वना सबंधमाथी समजी लेजो एटले एक अनेकनी सप्तभंगी कही ॥ हवे चोथी सप्तभंगी सत्य असत्यनी कहु छुं ॥ स्यात् सत्य १, स्यात् असत्य २, स्यात् सत्यअसत्य ३, स्यात् ४, स्यात् सत्य अवक्तव्य ५,

स्यात् असत्य अवक्तव्य ६, स्यात् सत्य असत्य जुगपत अवक्तव्य ७ ॥ ते मध्ये स्यात् सत्य केहेतां जे जीव द्रव्य चेतना लक्षणरुप अनंत चतुष्टीए करी सहित सर्वे जीव सत्य छे कोण संसारी तथा सिद्ध सर्वे जीव सत्य छे ते द्रव्य द्रव्यक्षेत्र काळ भावे करीने लखावु छुं ॥ द्रव्य जीव द्रव्य केहेतां एक द्रव्य छे ते केवो छे, निरमळ छे जेवु फटक रतन निर्मळ तेवो ए जीव द्रव्य निर्मळ छे एने विशे कोइपण बीजा द्रव्यनो प्रवेश नथी ए द्रव्य एकज छे, एनो नेद बीजो थाय नहि १ क्षेत्र थकी जीव द्रव्यना असंख्याता प्रदेश छे ते क्षेत्र रुप अवगाही छे जीव द्रव्य रह्यो छे ते एकत्व भावे छे २ तथा काळ थकी जीव अनादि अनत छे एटले जीव द्रव्यनी आद्यपण नथी अने अत पण नथी ए सदाय काळ छे छेन छे ३ भाव थकी अस्तित्वादिक अनेक स्वभावे करीने सहित छे तथा ज्ञानादिक अनंत गुण करी सहित छे ॥ ए चारे लक्षणे करीने सदाए काळ शोभित व्हेछे ने जीव द्रव्य सत्य छे

एटले स्यात् सत्य पेहेलो भांगो कह्यो हवे स्यात् असत्य बीजो भांगो देखाडीए छीए हवे ते प्रजाय बे प्रकारना छे एक स्वभाविक बीजा क्रमभावि क्रमभावि ते नरकादिक चारे गतिने विषे शरीरादिक जोग मेळववां ते सर्वे क्रमभावि प्रजाय छे ते जीवे अहिंयां ग्रहण कर्या छे शामाटे जे पुर्व बंधना उदय माफक तथा विषयकसाय प्रमुख ए सर्वे पुर्व माफक अहिंयां कोइ केहेशे जे तमे स्वग्राहीनी वात करी हती आ पुद्गल ग्रहण केम करो छो तेनो उत्तर जे अहिंआं पुद्गल द्रव्यनुं ग्रहण पण नथी अहिंआं तो जीवनुं ग्रहण छे ते कहुं ते सांभळो जे जीवे अशुद्ध प्रणतीने वश थया थकां कर्म दळ मेळव्या ते कर्मदळ चार प्रकारे बंधाणां अने आठ विभागे वेंचाणां ते दळ उदे आवे तेवा जोग तेवा कषाय प्रमुखने विशे प्रवर्ते माटे एनो कर्ता जीवज छे माटे एने स्वग्राही कहीए पण ए सर्वे असत्य छे शामाटे जे ए पुद्गल दळ पोतानां अज्ञानपणेथी पोतानुं मानीने बेठा छे परंतु ए

वस्तु तो पर छे माटे ए क्रमभावी प्रजाय असत्य जाणवां तथा जे राग द्वेष ते अशुद्ध प्रणती कहीए तेना प्रजाय अनंता छे ते समे समे उत्पातने व्यय थइ रह्यो छे माटे असत्यज छे अहिंआं कोइ केहेशे के प्रणति पोतानी छे ते वात खरी छे पण ए प्रणती तो पोतानी पण ते प्रणतीना बे भेद छे एक शुद्ध ने बीजी अशुद्ध ते अशुद्ध प्रणतीने काम्या विना शुद्ध प्रणती थाय नहि जेम इक्षुकनो सांठो प्रथम खारो रस होय अने खारो रस फीटीने ज्यारे मधुर रस थाय त्यारे ए इक्षुक मान पामे तेम ए आत्माने रागद्वेष वळग्या तेथी ए प्रणती अशुद्ध थइ ते अशुद्धता ज्यारे जाय त्यारे आत्मा शुद्ध थाय, अने परमात्मानी सत्तामां वसता पामे. माटे ए अशुद्ध पण तेपण कंइ आत्माना वस्तु नथी तेथी अंने पण ए छोडवानुज छे माटे एने छोडेज आत्मा सुखी थाय, ते कारण माटे ए अशुद्ध प्रणती ते पण ए असत्यज छे माटे पण अमारो केहेवानो आशय अहिंआं एवो छे जे ए अशुद्ध प्रणती

थकी ए चेतनना पर्यायनुं जगाण अनंतु ज छे ते जगाणरुप जे ए पर्याय ते तेने विशे व्यवहार समे समे थाय छे तेथी ए सत्यज ते के मके सत्य पदार्थनो कोइ काळे नाश थाय नहि जे नाश थाय ए असत्य पदार्थनो थाय, माटे ए अशुद्ध प्रणतीना पर्याय ते पण असत्यज ते ए-टले ए परवस्तुना ग्रहणपणाना पर्यायनुं असत्य-पणुं देखाड्युं. हवे स्वभाविक पर्याय कहेतां जे स्ववस्तुना पर्याय तेना ग्रहणनुं स्वरुप देखाडुं छुं हवे जे आत्माद्रव्य तेना अनंत गुण ते, अने एकेक गुणना अनंत पर्याय छे ते पर्याय ते अ-गुरु लघु कहीए कोइ कहेशे जे सर्व गुण अने सर्व पर्याय थइने एक अगुरु लघु पर्याय कह्यो ते तेनो उत्तर जे ज्ञानादिकना पर्याय ग्रहण आश्री पुर्वनी सप्तभंगीमां कह्योछे तेथी अहियां अगुरु लघु पर्याय एक कहीए ते पण ते अगुरु लघु प्रजाय ते सर्व गुणमां तथा सर्वे प्रजायमा ए रह्यो ते, अने आत्मानो स्वभावि प्रजाय ते अगुरुलघुज ते अर्थ क-

रीए तेमा सर्वे प्रजाय समाय माटे ए अगुरुलघु प्रजाय ते मत्य जेगो गणवो आ माटे के ए आत्माना जेगोने जेगो रहे समयमात्र आत्माथकी भिन्न न पडे ए आत्मानो मूळस्वभाव छे. माटे एने असत्य न जाणवो हवे जे असत्य छे ते अगुरुलघुथकी ग्रहण थया, एवा जे प्रजाय ते ज्ञानादिकना ए कंइ निरंतर रहेता नथी माटे एने असत्य कहीए एटले ए अगुरु लघु थकी बार भेद प्रजायग्रहणना छे, ते पण स्वआत्मानाज अध्यवसाय छे ते अनंता छे ते पर्यायरुप जाणवा ते साधक अवस्थाने विषे समये समये हानिवृद्धि थइ रही छे ते सर्वे स्वअपेक्षाथीज छे, अने सिद्ध जीवने ज्ञानना जाणवा आदे देइने जे पर्यायनुं परावर्तन छे ते पण समये समये थाय छे ते परअपेक्षाए छे अने ते मध्ये ज्ञानादिकनु जे फरवु ते स्वअपेक्षा छे एम समजवु हवे बार भेदनो विचार कहु छु जे प्रथम समयने विषे अनंतमे भागे हाणी हती मूळ पर्यामाथी अनतमा भागे हिण हतो तेज १ बीजा

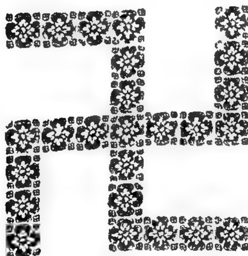
समयने विषे असंख्यातमे भागे हिण थइ गयो १ त्यारे पूर्वपर्यायनो नाश थयो ने नवा पर्यायनी उत्पत्ति थइ ए प्रमाणे सर्वे भागामा समजी लेजो. हवे जे बीजे समये असंख्यामे भागे हिण हतो तेज त्रीजे समये संख्यातमें भागे हिण थइ गयो ३ तेज चोथे समये संख्यात गुणहिण थयो ४ ते पाचमे समये असंख्यातगुणो हिण थयो ५ अने छठ्ठे समये अनंतगुणो हिण थयो ६ ए छए बोल हाणी आश्रीने कह्या. हवे वृद्धिना छए बोल कहुं छुं ते मध्ये जे मूळ पर्याय हता तेथी पहेले समये अनंतमे भागे वृद्धिने पाम्या १ अने बीजे समये असंख्यात भाग वृद्धि थइ २ त्रीजे समये संख्यात भाग थइ ३ चोथे समये संख्यातगुणी वृद्धि थइ ४ पांचमे समये असंख्यातगुणी वृद्धि थइ ५ अने छठे समये अनंतगुणी वृद्धि थइ ६ पहेले ए छए बोल वृद्धिना कह्या ए हाणी वृद्धि मळीने बार बोल अगुरुलघु पर्याय कहीए छैए बार बोल जे लख्या छे ते [illegible] गेन मात्रामा पण लख्या

छे पण ए अनुक्रम प्रमाणे अहिंया समजवुं नहि शा माटे जे कोइक समये हाणीनी वृद्धि पण थइ जाय कोइक समये वृद्धिनी हाणी पण थइ जाय एम अनंता असंख्याता प्रमुखनो नियम न राखवो जे समये जे थाय ते ग्रहण करवुं एटले ए खट्गुणी हाणि वृद्धिरुप स्वभाविक पर्यायमा समकीती जीवने होय अने क्रमभावी पर्याय अथवा अशुद्ध पर्याय ते समकीती तथा मिथ्यात्वी सर्वे जीवने होय ते सर्वे द्रव्यने विषे प्रणमी रहेलो छेज तेज पर्यायनु परावर्त्तन धर्म एटले प्रथम समये जे पर्याय हता ते बीजे समये नाश थइ गया अने नवा पर्याय उत्पन्न थया माटे ए नाश थाय ते असत्य कहेवाय, एटले ए स्यात् असत्य ए बीजो भागो कह्यो २ हवे त्रीजो भागो स्यात सत्य असत्य ते सत्य कहेता जे जीवद्रव्य अगुरुलघु पर्याय चेतनालक्षण, ज्ञानादिक गुण माटे सत्य छे अने जे पर्यायनी उत्पत्ति अने विनाश ते असत्य छे पण ए पर्याय सदाय आत्मानी पासे रहे छे कोइ समये

वत्ता कोइ समये ओछां एम हाणिवृद्धिनां कारणथकी असत्य कहीए छीए पण जे समये ए सत्य छे ते समये असत्य पण छे अने जे समये असत्य छे ते समये सत्य छे माटे ए त्रीजो भांगो स्यात् सत्य असत्य ३ हवे चोथो भांगो स्यात् अवक्तव्य ते सत्य असत्य पदार्थना अनंता गुण अनंता पर्याय ते सर्वे कंइ उच्चारणमां आवे नहि माटे जे उच्चारणमा आवे ते वक्तव्य भावमां छे जे उच्चारणमां न आवे ते अवक्तव्य भाव छे एटले स्यात् अवक्तव्य भांगो चोथो कह्यो ४ हवे पांचमो भांगो स्यात् सत्य अवक्तव्य एटले सत्य जे द्रव्यादिक तेना अनंता सन्निपात प्रमुख अक्षर छे ते कइ उच्चारणमां आवे नहि माटे स्यात् सत्य अवक्तव्य पांचमो भांगो थयो ५ तथा स्यात् असत्य अवक्तव्य छठो भांगो कहीए छीए एटले असत्य जे पर्यायादिक अनंता छे तेना विभाग पण अनंता छे तेना अक्षर सन्निपात ते पण अनंता थाय ते कंइ उच्चारणमां आवता नथी तेथी स्यात् असत्य अ-

वक्तव्य छट्ठो भांगो कह्यो ६ तथा स्यात् सत्य असत्य जुगपत अवक्तव्य सातमो भागो पूर्व प्रमाणे जाणवो ७ एटले ए सत्य तथा असत्य-नी सप्तभंगी कही एटले ए चोथी सप्तभंगी क-हेवाणी एज प्रमाणे स्वग्राह्य पदार्थकी सेंकडोगमें सप्तभंगी थाय छे माटे जेने क्षयोपसमनुं बळ होय ते जाणे, ने जेनी समज पहोंचे ते घणीए ते ठेकाणे सप्तभंगी करी लेवी अहियां कोइ कहेशे के एतो कल्पना ठरे छे ते कल्पना नथी सिद्धात तथा तर्कशास्त्रवाळानु एमज कहेवु छे तथा घणा शास्त्रमा तरेहतरेहवारनी सप्तभंगीओ छे माटे कल्पना ठरे नहि शा माटे के नयो छे ते सिद्धमा लागे नहि ने सप्तभंगी सिद्धमां लागे एम समजवु ते कारण माटे श्रीवितरागदे-वनो धर्म स्याद्वाद मार्गमांज छे ए सिद्धांतमां वचन छे ते प्रमाण करवु ए परोक्षप्रमाणमांहेलो भेद छे तथा प्रत्यक्षप्रमाणमांहेलो भेद ते तो अनुभवज्ञानीने घेर छे ते धणीने स्याद्वाद मार्ग स्वस्वरुपने विषे प्रत्यक्षपणे भासन थाय छे ए

वात सत्य छे पण कंइ कोइने देखाडवानी नथी एनो साक्षी तो अनुभवीए अनुभवी छे. माटे एवी रीते समजीने स्याद्वाद धर्मनो खप करजो एथी तमारा आत्मानुं कल्याण छे ए मारो हित उपदेश छे एटले ए ग्रंथ संपूर्ण थयो ॥



॥ इति श्री ज्ञानभूषण ग्रंथ सपूर्णम् ॥



॥ दुहा ॥

श्रीजिन भाखीत वचन ए, स्यादवाद सुखकार,
ते आ प्रथमा वर्णव्यो, समजो शुद्धाचार ॥१॥
ए प्रथमा जे कह्यु, ते सुणजो अधिकार,
संक्षेपे अहिंआ दाखशुं, किंचित् नाम विचार ॥२॥
प्रथम ज्ञान महातम कह्युं, तेम कह्यो नय पक्ष,
भेद बावने वर्णव्या, समजी लेजो दक्ष ॥३॥
द्रव्यादिकनु ज्ञान जे, जाणग केवली तुल्य,
कर्म न लागे ज्ञानीने, तेपण भाख्युं मुल्य ॥४॥
गुणपर्याय ते भाखीया, भाख्या लक्षण स्वभाव,
तेम द्रव्य ओळखावियो, ज्ञानी आवे दाव ॥५॥
वेदेवास्मार्गनी शुन्यता, तेम त्रण अनुयोग धार,
श्रुतज्ञान बहुमानथी, ज्ञान गुण उदार ॥६॥
सप्तभंगी रुडा भाखीयु, तेम निक्षेप विचार,
प्रमाणपक्ष देखाडीया, बहुश्रुत मुखथी धार ॥७॥
एह ग्रंथ पुरण थयो, पुरण ज्ञानज पक्ष,
अध्यात्म मारग कह्या, आतमस्वरुप ए दक्ष ॥८॥
जाणवाजणी, करजो भवी तुमे खप,

बहुश्रुतने शरणे रही, अहोनिश करजो जप ॥९॥
गुण घणा ए ग्रंथना, कह्या मुखशुं न जाय;
कोइक वीरला जाणशे,जेणेसेव्या ज्ञानीपाय ॥१०॥
केवली पण एक जीभथी, कोरूपुरनतुं आय;
केहेतां पार आवे नहि, आर ग्रंथ उपाय ॥११॥
छद्मस्थतो केम करी, कही न शके निरधार,
गुण अनंता ग्रंथना, केहेतां न आवे पार ॥१२॥
केहेवुं तो अळगुं रह्युं, पण समजवुं दुर्लभ,
क्षयोपसम खरो लागतां,विरला अर्थ ते लभ्य ॥१३॥
ते कारण भव प्राणीउं, मानजो ए उपदेश,
स्वर्गउपवर्गनोसपहोये समजजोग्रंथनो रेश ॥१४॥
बालद्रष्टिने नवि रुचे, तेम अज्ञानी जाण;
अभविनेपणनवरुचे,तेममिथ्यात्वीचित्तआण ॥१५॥
आजीविकाअर्थीजीवमा, चलवे माकरूमाल,
तेने पण रुचे नही, तेम मान पुजाविचार ॥१६॥
सम्यकदृष्टी जीवमा, तेने रुचशे एह;
ग्रंथ हाथथी छोडे नही, जाणी गुणनो गेह ॥१७॥
तेम सुलभ बोधी जीव, अथवा सुसंगती;
तेम ज्ञान खपी वली, ते पामे वांचो रती ॥१८॥

एम ए ग्रथने जाणीने, करजो ग्रंथ अभ्यास;
आपमते नवि चालजो,धारजो बहुश्रुत पास ॥१९॥
ज्ञानने आत्म स्वरुप जे, तेने दीपावनहार;
ज्ञानभूषण ते जाणीए, नाम भलुं मनोहार ॥२०॥
मुनी हुकम रचना करी, भव्यजीवने काज,
जे समजीने आदरे, ते पामे शीवराज ॥२१॥
सवत ओगणीसेचालीसमा, उत्तम श्रावणमास;
शुक्लपक्ष तृतिय तिथी, वार ब्रगु ए खास ॥२२॥
हुकम मुनीनो मानजो, माथे चमावजो आण,
भवभ्रमण मटी जशे, एवो ग्रंथ विन्नाण ॥२३॥
सुरतशेहेर सोहामणु, सुदर श्रावक वास,
श्रोता अध्यातमतणा, माहारी पासे खास ॥२४॥
तेहतणे आग्रहे करी, रह्या अहिआं चोमास,
ग्रथ अहिआं पुरण कर्यो, प्रगट ज्ञाननी रास ॥२५॥
ए ग्रंथ जे भणशे सही, सांभळशे धरी हेत,
शुभभाव ते पामशे, शुद्धपणु पण चेत ॥२६॥
शुद्धभाव निज स्वरुपमा, ते ए ग्रथ मोजार,
मुनी हुकम ते पामशे, ग्रंथथकी नीरधार ॥२७॥
माटे ग्रथ अभ्यास करो, गोभशो नहि क्षणएक,

प्रमादभावने दूर करी, ग्रंथ रम ॥२८॥
एह ग्रंथ अभ्यासथी, पामे स्वर्ग सुख;
सद्दहणा जो एवी रहे, तो जाए नरकदुख ॥२९॥
एहनुं फुळ ते स्वर्ग छे, अने शुक्लप देवाय;
तेविना जे चालवु, ते अमोपमो अधमाय ॥३०॥
शुक्लध्यान पण एह छे, ज्ञान पण उत्तम एह,
उत्तम चारीत्र एहछे, एम समजो गुणगेह ॥३१॥
फळ एहनुं जाणीए, पामे शीव स्वरुप,
अनंत सुख ते भोगवे, जेनुं रुप अनुप ॥३२॥
पुनर्पी जन्म लेवे नही, गयो रागने दोष,
आधीव्याधी होवे नही, हुवो गुणनो पोष ॥३३॥
सुख अनंत आतमतणुं, अव्याबाध स्वरुप,
सादी अनंत भांगे करी, भोगवतां तदरुप ॥३४॥
एम जाणी तमे सेवजो, ग्रंथ ए सुखकार,
मुनी हुकम पद पामशो, शीवसुंदरी भरथार ॥३५॥

॥ इति श्री ज्ञानभूषण ग्रंथ समाप्त ॥

एम ए ग्रंथने जाणीने, करजो ग्रंथ अभ्यास;
आपमते नवि चालजो,धारजो बहुश्रुत पास ॥१९॥
ज्ञानने आत्म स्वरुप जे, तेने दीपावनहार,
ज्ञानदर्पण ते जाणीए, नाम भलुं मनोहार ॥२०॥
मुनी हुकम रचना करी, भव्यजीवने काज,
जे समजीने आदरे, ते पामे शीवराज ॥२१॥
संवत ओगणीसेचालीसमां, उत्तम श्रावणमास,
शुक्लपक्ष तृतिय तिथी, वार गुरु ए खास ॥२२॥
हुकम मुनीनो मानजो, माथे चडावजो आण,
भवभ्रमण मटी जशे, एवो ग्रंथ विन्नाण ॥२३॥
सुरतशेहेर मोह्यामणु, सुंदर श्रावक वास,
श्रोता अध्यात्मतणा, माहारी पासे खास ॥२४॥
तेहतणे आग्रहे करी, रह्या अहियां चोमास,
ग्रंथ अहियां पुरण कर्यो, प्रगट ज्ञाननो रास ॥२५॥
ए ग्रंथ जे भणशे सही, सांभळशे धरी हेत,
शुभभाव ते पामशे, शुद्धपणु पण चेत ॥२६॥
शुद्धभाव निज स्वरुपमा, ते ए ग्रंथ मोजार;
मुनी हुकम ते पामशे, ग्रंथथकी नीरधार ॥२७॥
माट ग्रंथ अभ्यास करो, गोम्शो नहि क्षणएक,